अर्पण

मनहर छंद

परम उपकारी गुनी सरल स्वाभाव धारी।
महान् तपश्वी जपी शुद्ध आचरन है ॥
संसार के पिता जेष्ट संयमें पूजीता ॥
पायो आपही के प्रशाद ज्ञान तप धन है ।
आपके सहाय रचे ग्रंथ भये प्रसार ॥
भयो प्रसिद्ध हैद्राबाद यह दक्खन है ॥
श्रीकेवल ऋषिजी महाराजकोअमोल शिशु
अघोद्धार कथागार रची करत अर्पन है ।

आभार

मनहर छंद

कच्छ स्वच्छ देश माय अष्ट कोटीसम्प्रदाय ॥
मोटे पक्षे पूज्य श्री कर्म सिंह के चेले हैं॥
शुद्धा चारी कविश्वर समीदमी ज्ञानागर॥
मुनिश्री नागचन्द्र ज्ञाना नन्दे खेले हैं ॥
आपनेयाददीकथारी।कितनीताकेअनुसारी॥
स्व बुद्धि गूंथआधार यामे सम्बन्ध मेलेहैं ॥
लिखीपोथीतहांपठाइलेपरशंस्यापीछीआइ॥
तालिये अभार ताको मानत अमोलेहै ॥

प्रस्तावना

श्लोक—अष्टादश पुराणाय । व्यासस वचनंद्वयं ॥
परोपकाराय धर्माय: । पापाय पर पीडनं ॥

चोपाइ—सर्व विस्व में प्रकट बात।धर्म से सुख पापसेदुःखपात
योंजान सूखेच्छु ओं धर्म करे।पाप का नाम लेते ही डरे
परन्तु धर्म पाप का भेद । जानत कोइक यह बडी खेद
धर्म नाम ले पाप निपाय।धर्म कों पाप जान छिटकाय॥
मनुष्य कों अग्नि मांहे जलाय।नरमेध सोयज्ञ कहलाय
यज्ञका कर्ता स्वर्ग में जाय।यों जूलम करतधर्मइच्छाय
जग भूषण नरकों हीजलाय।धर्ममाने यहआश्चर्यआय
तो क्या कहूं अन्यकरेलघुपाप।जो करते भोगतेसंताप।
दुःखी बीमार कों मारने मांय।कितने ही धर्म रहेमनाय
सिंहसर्पविच्छु षट मल तांय।क्षुद्रिकहेमारे धर्मकहाय
यों खोटा धर्म रह केइ कर।जिससे दुःखपाते हैं अपर ॥
ताते केते कहे धर्म दुःख दाय।पापही से कहते सुखपाय
केते बने हैं नास्तिक मति । धर्म पाप सब झूठ कथी ॥
ऐसी भ्रमणा जग की देख।बोले व्यासजी करन विवेक

अहोसूनोअठारपुराणकासार।कहताआधेश्लोकमझा,
परोपकार किये धर्म होय। पर पीडे से पाप लो जोय ।
इस कों ही कितनेकियाविपरीत।स्थापेनिजस्वार्थेप्रित
ऋतु कंन्या गज गो आदिदान।स्थापन कर बनेधनवान
कितनेहीपरोपकारकेकाज।महाआरंभमहाकेरअकाज
कर कर षटकायाघमशान ।मान तेहैं केइ धर्म अजान
कलीमेंरूढीयहफेलाय।प्रत्यक्षबहूतधर्मस्थानेदखाय ।
तासे दुःख बढतोही जाय।रोग दूष्काल से जन पीडाय
दोहा–ऐसा देखीज्ञानी जन। पाये अतिही खेद॥
सुखी करन सर्व विश्वकों।जागी मन उमेद॥२२
सत्य रूप धर्म पाप का।सब समझे ज्यों।विस्तार
रची ग्रंथ प्रकट किये।इसहीकाल मझार ॥२३
ताही माति अनुसार से।"अघोद्धार-कथागार"
रचना करी अमोल ने।जैन शास्त्र अनुसर ॥२४

चोपाइ

परमोपकारी जिनेंद्र भगवान।मध्यस्त भावी सर्वज्ञ गुन खा
दुःखी यों से भरा देखा संसार। करुणा व्यापी करन उपका
दिव्य ध्वनी में प्रकट किया । धर्म पाप भिन्नश्वता दिया

———

॥ अनुसार गणधर महाराज । शास्त्र रचे सो तारे आज ॥
जैन में पृथक२अधिकार । दुःख दायक जो पाप अठार ॥
ष्टांत भी पृथक २ दिये । बहु सूत्री सो जाने रिये॥ २७ ॥
र्व धर्मेच्छु को जानन काज।एकही ग्रंथ में साजा सो साज
ष्टांत से शीघ्र समझ में आय।तालिये छत्तीस कथी कथाय
कृतनी मूल शास्त्र अनुसार। कित्नी ग्रंथ से पढी सुनी धार॥
त्र काल भाव समय के जोग।रचा ग्रंथ ये बुद्धिके योग ॥
छन्द बंध बनाया यह ग्रंथ।परन्तु अशुद्धीयों रही अत्यन्त ॥
पिंगल गण से यह है विरुद्ध।कोविद कवी के भाव अशुद्ध ॥
यों शिशु प्रकट तें जबान।बोले तोतला अशुद्ध उमंगान ॥
ाको शुद्ध करे प्रेमी सज्जन।त्यों यह ग्रंथ मानो कवी जन॥
शिशू आप को जान अजान।हँसो मतसुधारो करुणा आन
विज्ञाप्ति पंडितों से करी।ताके समर्पण पोथी यह धरी।
5 को! पढीये इस दत्त चित्त।यत्ना से सोधी ग्रहण करोहेत
ाल मतिये अवगुण त्याग । अघोद्धार कीजो महाभाग ॥
ो नम्र अमोलक अरजी।मान ना तो है आपकी मरजी।
रक पाठक को आशय प्रमान।फल निश्चय होवेगा सुजान

ग्रंथ रचिता का संक्षिप्त जीवन.

इंद्रविजय–छंद.

मरुस्थल देशके मेडते शेहर में शेठ कस्तूर चंदजीधन धारी।
व्योपार काज आये मालवे में आसटे में रहे पत्नी संगारी॥
चार पुत्र तज मरे अकस्मात्‌सो।पत्नी जवाराबाइदीक्षाधारी।
वर्ष अष्टादश संयम पाल सो।पहोंती स्वर्ग में आत्म उद्धारी।
ताके तृतिये पुत्र केवल चंद।रहे सो शेहर भोपाल में आइ॥
मंदिर मार्गी का प्रतिक्रमण। आदिपढे तात के मत साइ॥
धर्म के स्थान देखे हिंसकृत्य।मात्र माति से सो न रुचाइ॥
पुण्य जोग तहां साधु मार्गी को।साधु कुंवरजीऋषिपधार्याइ॥
सुन सद्बोधसत्य जानदयाधर्म।धर्मका ज्ञान पठण जबकरीय।
व्यापा वैराग्य रुज भये दीक्षाको।बलात्कार सज्जनमोहभरीय।
पुत्र पालन करन लग्नतीसरा।चले मारवाड रतलाम उतरीय।
तहांमिलेश्रावक कस्तूर चंदजी।तरुण स जोड ब्रह्मव्रत धारी
सो लाये पुज्य उदय सागर ढिग।विवहाकीवात दीनीदर्शारि।
पूज्य फरमायवैरागीबनडेबनो।दुलाविषप्यालाफिरस्त्रीकारी।
सुन केवलचंदजी धारा ब्रह्मचर्य।आये भोपाल धर्मकरतारी।
उन्नीसे तेतालीस के चेत में।बत्तीस वर्ष वये दीक्षा लीनी॥
।शिष्यभये श्री खुबा ऋषी जीके।ज्ञान पढे फिर तपस्याकीनी

उत्कृष्ठ तप किया चौमासी। छमांस एकांतर हगिनती क्या चीनी
सो कवीराज तिलोकऋषिजी के शिष्यरत्नऋषिजी संग कीनी
केवलचंदजीके पुत्र अमोलक। तबरहे खेडीमे मामा ढिगआइ
इच्छावर आये सुनमुनोकों। दर्शनआये वैरागी सो थाइ ॥
उन्नीसो चम्मालीस के सालमे। दशबर्षवये साधु भेषलियाइ॥
शिष्य भये चेनाऋषीजीके। ज्ञानपडे सो पितासंग रहाइ ॥
खूबाऋषि जी चेनाऋषिजी। स्वल्पकालमें स्वर्गसीधाये ॥
एकल विहारीबने केवलऋषि। अमोलक भेरु ऋषिजीसंगरहाये
फिरमिले आ श्रीरत्नऋषिजीकों। तानेहितकर ज्ञानपढाये॥
तासप्रशाद यह औरभीअन्यकेइ। गद्यपद्य में ग्रंथबनाये ॥
साठ(६०) की साल पुनःहुवेपितासंग। बृद्धवयजान भक्तिकेताइ।
किया चौमासा बंबइशेहरमे। सहेपारिसह हैद्राबादआइ ॥
अशक्तबृद्धहोरहेस्थिरवासयहाँ। लालासुखदेवशाह सहायपाइ
बेचालीस(४२०००) हजारपुस्तकों आजतक। अमूल्यसर्वदेशोंमें पठाइ॥



ग्रन्थ प्रसिद्ध कर्ता का संक्षिप्त

जीवन चरित्र.

मनहर—छंद.

लाला राम नारायण, के पुत्र सुखदेव सहाय ॥
धर्म ज्ञान नीती दया लक्ष्मी से सोभावे हैं ॥
अग्रवाल वंश में अवतंस जवेरी में श्रेय
लख्खो रुपे लेन देन दरबार में थावे है ॥
संसारिक कार्यों माहे।लख्खो रूपे खरच करे ॥
स्वजन पर जन को सो शक्ति सर पोषावे हैं ॥
दान शाळा चलत मिलत सदाव्रत तहां ॥
"राजा बाहदर" पद्वी सिरकार से पाये हैं ॥ १ ॥
रहते दिल्ली के पास महेंद्रगढ ग्राम मांहे ॥
उन्नीसो वीस पोष पुनम जन्म पावे हैं ॥
पुज्य श्री मनोहर दासजी के समुदाये ॥
मंगळ सेन महाराजाके शिष्य सो कहावे हैं ॥
व्यापार करण आये (दक्षिण,) हैद्राबाद. मांये ॥

खरची हजारों रूपे मंदिर बंधाये है ॥
स्वामी वत्सल प्रभावना आदिधर्मोन्नति करी ।
साधु दर्शन विन जैन मंदिर में जावे हैं ॥ २ ॥
त्रेसठ शाल पुण्य अधिक विशाल भये ॥
तीन ठाने साधुजी महाराज यहां आये है ॥
तपस्वी केवल ऋषीजी अमोलक ऋषिसंग ।
सुखाऋषिजी क्षेत्र नवा यह बनायेहै ॥
चारकमानमांय दीनीलालाजी रहनेको जाय !
ताते जैन धर्म सबगाम में फैलायेहै ॥
लालासुखदेव नितसुनेमुनिके व्याख्यान
ताते सत्यधर्महीका तत्त्वहीये पायेहै ३ ॥
वने द्रढ श्रद्धावन्त शक्तिसी करणी करंत ।
महा लाभकारी ज्ञान दान जान लियाहै ॥
हजारों खरचरुपे छपाइ पुस्तक हजारों ।
भारतके धर्मेच्छुकों अमूल्य लाभदियाहै ॥
तोषसर्व धर्मीयाको कान्फरन्स शभाकरी ॥
धर्मके सबखातेपोष यशजबर लियाहै ॥
ज्वालाप्रसाद जैसे पुत्ररत्न है लालजीके ।
सदारहो सुखी यह ऐसोंका सफल जियाहै ॥ ४ ॥





सूचना



दक्षिण हैद्राबाद, के ज्ञान बृद्धि खाते से जैन तत्वप्रकाश आदि ग्रंथों तथा मदन श्रेष्ट के आदि चरित्रों वगैर. जो पुस्तकें प्रसिद्ध हुइ थी उनकी प्रतों अब सिलक में नहीं रही है. इस लिये कोइ भी साहेब मंगानेकीतकलीफ लेनानहीं

खुश—खबर

(१) ध्यान कल्प तरु . ग्रंथ की द्वितियावृति और केवल नंद छंदावळी की चतुर्थावृति, फक्त इन दो पुस्तकों की थोडी सी प्रतों सिलक मे हैं जिनों को चाहिये सो टपाल खरच के चार आनेके स्टापभेजकरनिम्नलिखितपते से मंगा लीजियेजी·

☞ राजा बहादुर लाला-नेतराम, राम नारायण, जौहरी
चार कमान-(दक्षिण,) हैद्राबाद.

और

गुणस्थान रोहण शत द्वारी

बाल ब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलख, ऋषिजी लिखरहे हैं यह ग्रंथ बहुत ही गहन (ऊंड) विषय का होने से इसे लिखने में बारह महीं नें व्यतित होने ता संभव है. फिर प्रसिद्ध हुवे बाद जो टपाल खरच के आठ आने के स्टांप के साथ चउदह गुणस्थान के नाम अर्थ सहित लिख कर ऊपर लिखे हुवे पते पर भेजेंगे उन को ही भेजा जायेगा.

"सम कीतोस्तव जय विजय चरित्र"

यह ग्रन्थ अति रसिक रास बाल ब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलख ऋषिजी रचितहोलि तक छापकर बाहिर पडनेवाला हैं सो यहांकेज्ञानवृद्धि खातेकेतरफसेअमूल्य दियाजायगा.

सेक्रेटरी—ज्ञानवृद्धिखाता.

अघोद्धार कथागार ग्रंथकी विषयानुक्रमणी.

मंजिल पहिला-प्रणातिपात पापोद्धार.

पूर्वविभाग-हिंसा ३१

मंजिल पहिला का उत्तर विभाग—"दया" ६४

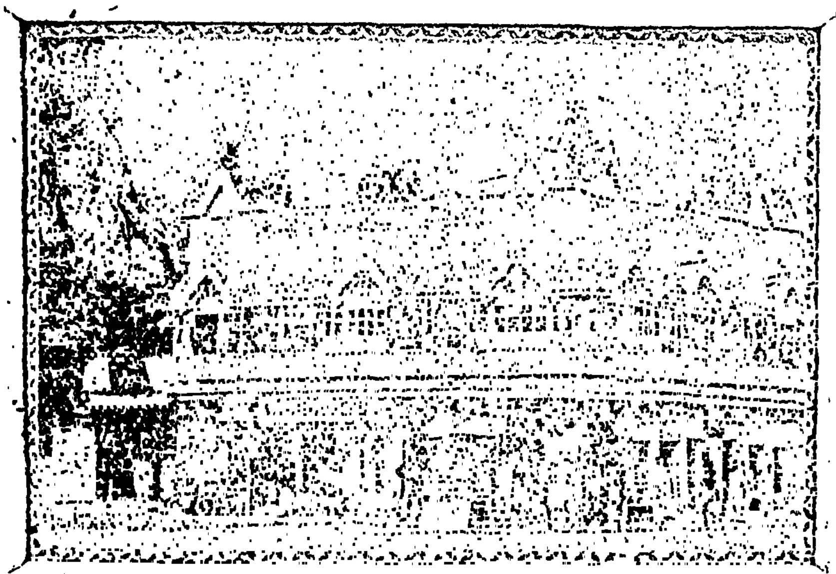
अघोद्धार कथागार ग्रंथ की विषयानुक्रमणी

इति अघोद्धार कथागार ग्रंथकी विषयानुक्रमणी

समाप्तम्

ॐ परमेश्वराय: नमः





मङ्गलाचरणम्

दोहा जय जय श्री जिनदेवकी । जय जय श्रीगुरुदेव ॥
जय जय श्री दयाधर्म की । शिव सुखदे अह मेव ॥ १ ॥
प्रणमूं अरिहंत सिद्धको । आचार्य उपाध्याय ॥
गौतमादि सर्व साधुको । प्रणामूं शीस नमाय ॥ २ ॥
आदि नमूं आदिनाथको । नमूं शांति जिनराय ॥
नमूं नेमि पार्श्व प्रभू । नमूं बृद्ध मानके पाय ॥ ३ ॥
नमन करूं श्रीगुरुचरण । ज्ञान दान दातार ॥
नमस्ते जिनवाणी सुरी । शारदा दाता सार ॥ ४ ॥
गुणोवृद्ध सर्व जेष्ट पद । वारम्बार नमस्कार ॥
इनकी कृपा से रचूं । अघोद्धार-कथागार ॥ ५ ॥

॥ प्रवेशीका. ॥

लोकालोक वरणन्-मनहर-छन्द

सर्वज्ञ केवल धार । अनंत ज्ञान मझार ।
लोकालोक अवलोके । करामल* वत है ॥
अलोक अनन्तान्त । आकास्ति काय व्यापन्त ॥
ताके मध्य लोक पिन्ड । पंचास्ति रूपत है ॥
धर्मा[१] धर्म[२] आकाश[३] । जीवरु[४] पुद्गल[५] खास ।
इनो से व्यवहार सब । सत्यासत्य भाषत हैं ॥
पुद्गल पर्याय रूप । पलटत ज्यू छांय धूप ।
अमोल अनूप गत । जिन बेन सत है ॥ १ ॥

" लोक वरणन् ॥ इन्द्रविजय-छन्द "

तीन विभाग बने इस लोकके ।अधो मध्यपातालबटानो।
नीचे नरक मध्ये तिर्य लोक। ऊंचमें स्वर्ग ऽपवर्गबखाने
घनवायतनवायघनोदधी। ※व्योमवीलये सर्वलोकघेराने
सप्तनरकमध्यद्वीपअसंख्यहै।स्वर्गछव्वीसवरअपवर्गमानो।
प्रथमननरकेकंआंतरमें।दशजातिकेभवनवासीसुररहावे ।
मध्य लोकके अंतरेमे । सोलह जातिके व्यन्तर वसावे ।
मध्य तिर्यंच नर जोतपी दीपे संपूर्ण लोकमें सुक्ष्मभरावे
वादर जीव हैं लोक के देशमें।यह प्रमानसिद्धान्त बतावे।

---

* हाथमें रहे आवले के फलके माफिक. ×मो. ※आकाश

मध्यलोक वरणन्—चोपाई छन्द

मध्य लोकमध्य मेरुपहाड । दशसहस्राजाजनमूलमें जाड
एक लक्ष जोजन ऊंचाकहा । चार वन चुलिका सदिपरहा
उसके चौफेर गोळाकार । जंबूद्वीप लक्षजोजन विस्तार ॥
पूर्वपश्चिममेंमहाविदेह क्षेत्र।उतरदक्षिणागिरीक्षेत्रविचित्र
देव कुरु उत्तर कुरु पास । निषढ नीलवंत पर्वत खास ॥
ताढिगक्षेत्रहरी रम्यकवास । महाहेम रूपी गिरीतापास
ताढिगक्षेत्रहेमवय एरणवय। चूलहेमशीखरींगिरि तांरये॥
ताढिग क्षेत्र भरत एरावंतालवणो दधी सर्व द्वीप घेरंत ॥
ताहे घेरा द्वीप धातकी खंड।जंबू से दुगुने क्षेत्रगिरी मंड॥
ता चौफेर कलो दधी समुद्र।पुष्कर द्वीप ताहे घेरा सुद्र ॥
पुष्करमध्यमानुषोत्तरपहाड।आगे मनुष्यनहीं हे गइआड॥
आगें द्वीप सागर दुगुणे असंख्य । तामेंरहते देव तिर्यंच ॥
अंतिम सयंभू रमण सागर। समुच्चय रचना कही इसपर ॥
अब आगे कथूं मूल मंडाण।प्रमाद तज पढो सुनो बयान ॥

भरत क्षेत्र वरणन—दोहा छन्द

प्रथम जंबूद्वीप में । दक्षिणदिशीमझार ॥
भरत क्षेत्रमें वर्तते । काल उभय प्रकार ॥ ११ ॥
उत्सर्पिणी अवसर्पिणी । सागर बीस क्रोडाक्रोड ॥
छः छः आरे दोनुके। चडते उतरते प्रोड ॥ १२ ॥
सूखमां सुखम सुखम रूं । सुखमां दुःखम तीन ॥

दुःखमां सुखम दुःखमरूं । दुःखमां दुःखम चीन ॥
सागर कोडा कोडके । चार तीन दो एक ॥
सहश्र बेचाली वर्ष नुन्य । पंचम षष्टम लेख ॥ +

चंपानगरी वरणन—चोपाइछन्द

इस अवसर्पणी कालके मांय । चौथा आरा गया वर्ताय ॥
ता समय अंग नामे देशमझार।चंपानगरी वसती मनोहार
बारह जोजन की लम्बी कही।नव जोजन चौढाइसे रही
ऋाद्धी स्मभृद्धी करी पूर्ण भरी ।शोभित सक्षात् स्वर्गपुरी
रजाजी के ऊंचे आवास । जाने जाकर लगे हैं आकाश ॥
साहुकारों की हवेलीयों । दुकानो की श्रेणी छवीलीयों॥
इनो में भलके भरे नवरंग । गुमट कळश देख होवे दंग ॥
धर्मशाळ देवालय जान । दानशाळ विद्याशाळ वखान
पुस्तकशाळऔरओषधाशाळ।अहारपानीकीशाळविशाळ
मध्ये में राज भुवन चौपास।जोहरी बाजार सराफा खास
वजाज,मेवाफरोस सोनार।कंठाली काच्छी मणीआर ॥
लोहकार चित्रकार कुंभार । अनुक्रमें सब भरे भन्डार॥

+ पहिला सुखमा सुखमी आरा चार कोडा कोडी सागरोपमका.

दुसरा सुखम आरा तीन कोडाकोडी सागरोपमका.

तीसरा सुखमां दुःखम आरा दो कोडा कोडी सागर.

चौथा दुःखमा सुखम आरा बयालीस हजार वर्ष कम एक कोडा कोड सागर का.

पांचमां दुखम आरा २१००० वर्ष का.

छठा दुःखमा दुःखम आरा २१००० वर्ष का.

सत्यवंत अल्पइच्छि दयाल ।व्येपारीलेते देते बहून माल॥
सत्य वंत है लक्ष्मी वास । निश्चिन्त करते सुख विलास ॥
दाता भुक्ता दानी विनीत ।गुणी गुणग्राही चले सूरीत ॥
परधन हरण पंगूसे जान । परस्त्री निरक्षण अंध समान ॥
मुक्क बोलन पर अवरण वाद। बहिरे सुणन पर निंदा नाद
चोर चुगल नट खट अरू जार । नगरी मेंनहीं बहुत नर नार
साता पाते सती संत गुणवंत। भिख्यारी थोडे तहां मिलंत
यह तो कहा नगरी अलंकार।और क्या करेंज्याद। विस्तार

दोहा—चंपानगरी को घेरीया । प्रकार द्रढ उतंग ॥
विचित्र कांगूरे लगे । बुरज गौख सुरंग ॥ ११
मूल विस्तीर्ण वर सांकडा । गौ पूछ संस्थान॥
ऊंडी अंध जल से भरी । दुर्गम खाइ जान॥ १२
अस्त्र शस्त्र सब सज भरे । सत्घनी नाल कबान ॥
तीर तेग भालादिके । अनेक अरी गंजान ॥ १३ ॥

पूर्ण भद्र बाग वरणन्—उपजति—छन्द,

बागों बगीचे बहुतगा वारे। पूर्णभद्रबागसबमेंसिरकारे
अनेकब्रृक्षोंवेलीबहूतप्रकारे।षटऋतूकेसुखसदाउसमझारे
आमजामलींबूंरूनीमअनार। मोरछलीनारंगीकचनार ॥
बहुडपिंपलउम्बरकेरकेला।आसोपल्लवसेतूतवेलवेला ॥
सागपलासरूतालममाला अरणीखिरणीतिमरूऔरताल
बदामफणसीताफलरामफल चंदनअगरतगरकोठवल

इत्यादिझाडोंसेवनसोभराहै।घटघोरछाइपेखतहराहै।१६
मंडप पे वेलीयें।केइप्रकार।अंगूरचमेली चंपककचनार ॥
तोरुंककडी घीयारुनागरवेल।जाइजूइमोगरा कदूफेल १७
मध्यमध्यक्यारोंमेपुष्परंगढंग । केइकलीकेईफूलेहैं चंग ॥
गेंदाकेवडारुगुलाबगुलजारसेवतीकेतकीमालतीगंधसार
भ्रमर मकरंद मदमस्तकरेशोर।पक्षियोंकेगमबैठेढोरढोर
हंससारसचकवा रुचकोर।मेनातोतालवातीतरचीडीमोर
बदक बगले कउवेटेंक चंडूल।रुपारेलगणेशवेटेर बुलबुल
नीलकंठकोकिलमुर्गारुकाबराचालिचांसगरुडपपयरुशिकरा
तालावकूवेवावहोदपुष्करणी।नेरोकुंडझरणेलगेजलझरणा
छोडेहैंफूवारेबहूतप्रकार कोठीबंगलेहैंछप्परछटादार॥२१
उसवागकेमध्यआशोकवृक्ष ।अतिरमणिकसर्ववृक्षोंमेश्रेष्ट
मूलउंडाकन्दरहोफलाय।स्कन्धऊपरशाखावहुतशोभाय
प्रतिशाखपत्रपुष्पफलभार। सघनरक्तवरणसदासुखकार
तसतलसपृथ्वीशिलापटएक। सोसिंहासनसंस्थानसूरेक
श्यामवरणकोमलरेशमजैसा।चित्राविचित्रसफांकांचतैसा
इत्यादिवरणनवागकाजानो।अनेकजीवउसमेंरहेसुखमानो।

पूर्णभद्र यक्षकावरणन-शीखरिणीछन्द

उसीवगीचेमांही।पूर्णभद्र यक्ष देवालय ॥
पुराना कहवाइ । घुमट कलशा सुवर्ण मय ॥
ध्वजा पाताका घंटा । पुप्प धूप दीप मुद्गल सय

महिमा जग फेलाइ । जातरी बहु आते आकर्षय॥ २५॥

राजाकावरणन्–मनहरछन्द.

चंपा नगरी के श्वामी । कोणिक नामे सुनामी ।
राज राजेश्वर महा-हेमवन्त समान हैं ॥
बल प्रथम संघेन । तनु प्रथम संस्थान ।
लक्षण व्यंजन वपु शोभे देव वान हैं ॥
न्याय नीति में निपुण । शांत दांत आदि गुण ।
अपनी प्रजा को सोतो । जाने जिन जान हैं ॥
धर्म कर्म मर्म जान । अपने पर को पैछान ।
पलावे अखंड आन । नृप गुण खान हैं ॥ २६ ॥
पुरुषों मे सिंह समान । कमल पुंडरिक मान ।
गंध हस्ती ज्यों प्रधान । ऐसे गुनवान हैं ॥
दल है प्रबल पास । कोष पूर्ण धन रास ।
शत्रू ओं का कीया नाश । दास रहे रान हैं ॥
राज है इन्द्र के जैसा । तेज है अग्नि के तैसा ।
यम जैसा क्रोध । योधा भीम के समान हैं ॥
न्यायी जैसे राम । दोनो देश के हैं श्वाम ॥
इत्यादिक गुणोंके धाम । कोणिकराजन है ॥ २७ ॥

राणी गुण वरणन–हरीगीत छंद

धारणी राणी मधुरवाणी नमणखमणगुणज्ञहै॥
दूषण रहित है शीलभूषण । रूपअपछरा सुज्ञहै ॥

कलावती विचारात कौशल्यता सब मन ठरें ॥
व्यवहार स धन धर्म राधन इन गुणे पतिचित्तरहे ॥

प्रधान गुण वरणन् सवैया (२३) सा

सुबुद्धिप्रधानचौविद्यानिधाननीतिन्यायजानविचक्षणत
रखेराजमान।प्रजासन्मान।भरेहैंकोषान।सुदक्षणते ॥
हंसजोन्यायकरसिमजायासबेसुखदायासुरक्षणेते ॥
रूपतेजवानहेगुणपुण्यखान।ऐसैंहदीवान। हैजकूसनते॥

कोणिक राय का नियम-भुजंगीछंद

श्रीवीरभक्ताकोणिकराया,। जिनवचननित्यसुणनेउमाया
परवादुकंपुरुषरखाइसकामे,जिससेजिनेन्द्रकथानित्यपमे
नोकरवहुतउसकीआज्ञामाहीं, समाचारनित्यसोदेतेपठइ
महावीरजिनआजयहांपेपधारे। औरभीयोग्यदेतासमचारे
वोप्रवादूकदेकोणिककोसुणाइ ।प्रीतीदानउसेदेते वहुताइ
फिरनृपभोजनगृहकार्यकरताजिनदर्शनउंमगीदलधारता
दोहा—यों धर्म कर्म दीपावते। वर्ते कौणिक राय ॥
कर्म कथा तो अपार है।यहा धर्म कथा वरणाय॥२४॥

॥ श्री महावीरस्वामीके गुणकावरणन् ॥

नमुथुणं का अर्थ—खडका छंद

नमस्कार अरिहंत भगवंतको।घनघातिक कर्मचउखपाये

---

१ बहुतों के मिल रहने का स्थान? धर्म कथा करने वाला

ज्ञान वाणी।अपायापागम पूजा। इनचौगुणभगवंतपद्पाय
आदिकरधर्मचउतीर्थस्थापनकिये। गुरुविनस्वयंबोधपये
पुरुषमेंउत्तमपशूमेंज्योंसिंहसम। पुंडरिकपुष्पज्योंमहकाये
शूरगंधहस्थीज्योंअभयदसेवर्को।ज्ञानचक्षुद धर्ममगलगाये
शरणसबजंतुकोजिवितसंयमदेद्वीपसमजगोदधीसुखदाये
भ्रमणभवसागरवेढज्योगुणागर चाउरंतचक्रवर्ती जिनंदा
अप्रातिहतज्ञानदर्शनधारक निवृतछद्मस्तकेवलीदिणंदा
कर्मोंकोजीतेजीतातेहोअन्यकोजगतिरतारोंप्राणीभविंदा
बुद्धतत्वज्ञबोधितकरोसर्वको। मुक्तरागद्वेषमूकावो वन्दा
सर्वज्ञसर्वदर्शीइच्छकशिवअचलआरोग्यअनंतअक्षयस्थान
अव्या बाध सदा पूनरावर्ती नकदा।ते प्राप्त भयेभगवान।

श्रीमहा वीर प्रभू का शरीर का वरणन्-नाराच छंद

श्री वीर धीर का शरीर सुवर्ण वर्ण शोभता॥
सम चतुरस्र सस्थान सप्त हस्त उंच लोभता॥
वज्र वृषभ नारच संघयण प्राक्रमी होजी अति॥
सहश्र अष्ट लंछनें वपु दीपे दिव्याकृति॥ ७॥
जल मल कलंक रज लेप कदा नहींलागता।
नहीं दुष्ट लक्षण व्यंजन न दुष्ट जागता॥
महकेता सुगंध श्वाश प्रकाशिक छांय है।
अत्युत्तम जगके प्रमाणु आप अंग निपाये है॥
शिखरी शिखर सम उंच वारा अंगुल शीश है।

घन श्याम चीगटे फिरते, कुर्वली बाल ईश है ॥
अर्ध चन्द्र सम तेज भल भलाट भाल है।
संपूर्ण शशी सम मुख, कान्ती धर विसाल है
कृष्ण भमुह धनुष्याकार प्रमाणो पेत कान है।
विक्सित नेत्र युगल सो तो कमल के समान है।
गरुढ पक्षी जैसा नाक होष्ठा रूण भाँत है।
दाडिम कली के समान तीसँ दोय दाँत है ॥ ४ ।
सिंह समो स्कंध ग्रिवा चतु अंगुल प्रमाण है।
जानू लग वहां लम्ब करतल रक्त वान है ॥
सूर्य चन्द्र चक्र मच्छ आदि शुभ लक्षणे।
कोमल कर कमल पुष्प दीपते सुचक्षणे ॥ ५ ॥
करां गुली अछिद्र नख अरूण रंग दीपता।
श्री वच्छ स्वतिक युक्तहृदय अरी जीपता ॥ ॥
उतरता उदर मच्छ सम नाभी कमल विकश्वरं।
सिंह समान कटि भाग गुप्तेन्द्री अश्वं वरं ॥ ६ ॥
न लगे ठंडिल स्थान कदा अशुची लेप है।
केली सम उतरती जंघ जानू गुप्त रेप है ॥
चरण कुर्म तुल्य नख रक्त दिव्य साफ है।
पर्वत मगर ध्वजा आदि लक्षण शुभ व्याप है॥ ७ ॥
नख शिख सर्व वपु सूर्य सम प्रकाशता ॥
अप लक्षण दुर्गुण तन किंचत नहीं भासता ॥ ॥

पेखत वदन मन हरण करे नरेन्द्र इन्द का ॥
वंदन सदा होवे मेरा पदे एसे जिन्द का ॥ ८ ॥

चौतीस अतिशय—मनहरछन्द

बधे [1]नहीं नख केश । रोग [2]नहीं तन लेश ।
उज्वल[3] हे मांस रक्त । सुगन्धी [4]उश्वास है ॥
न दिखे [5]अहार निहार । धर्म चक्र[6] नभ मझार
तीन छत्र[7] श्वेत[8] चमर । मणी आ[9]सनास है ॥
ध्वजा पताका[10] परिवार । अशोक [11]तरू हे लार
प्रभा मंडल [12]प्रकाश । भू होवे [13]समरास है ॥
कंटक[14] उलट होवे । ऋतु [15]सुखदाइ सोवे ।
योजन में [16]वायु शुभ । अचित [17]वर्षास है ॥ १ ॥
अचित [18]पुष्पों के ढग । इन्द्री [19]विषय मन लग
शब्द दिक पांचों खोटे [19]नाशी अ[20]च्छे होवे हैं ॥
योजने वाणी [21]सुणाय । अर्ध [22]मागधी भाषाय ।
आर्या नार्य समजे [23]सर्व[24] । वैर भाव खोवे है ॥
मानी नर [25]नमें आय । वादी से [26]उत्तर न थाय
पच्चीस जोजन चौबाजू । [27]उपद्रव्य विगोवे हैं ॥
मरी [28]मारी रोग नाशे । [30]चक्री भय न आवे पासे
अति [31]वृष्टि अना [32]वृष्टि ।दुर्भिक्ष[33] न जोवे हैं ॥ २ ॥
वरोक्त उपद्रव्यहोय । प्रभू आगमसे सोय ॥

नाश पाये क्षीण मांहे । अतिशय चौंतीस कै ॥
जन्म से तो होवे चार । पंदरे केवल धार ।
पंदरे देवता किये । होवे जग दीस कै ॥
तीर्थंकर नाम कर्म । उपार्जन ताके धर्म ।
जाणन जगत् जंतु । होवत पुनीश के ॥
ऐसे पद धारक । निवारक सकल अघ ।
वंदत अमोल पद । नित्यही जिनीश के ॥ ३॥

पेंतीस वाणीगुण–छपयछन्द.

वाणीगुण पेंतीस । संस्कार युक्तउचारे ॥
योजन एक सुणाय । तुच्छतानहीलगारे ॥
गर्जाव जोशब्द । प्रतिध्वनी उपजावे ॥
सरस रागणी युक्त । श्रोता तल्लीन वनावे ॥
यह सात गुन कहे उचारके । अव कहूं अर्थके जेह ॥
शद्द थोडे और अर्थ बहूत । सूत्र कहाते तेह ॥
आद्यअन्त अविरोध । अलंग अर्थसमजावे ॥
संशय उपजत नाय । दोष किंचित् नहीं पावे ॥
सर्वको शब्द सुहाय । देश काल उचितमिल ताकही ॥
तत्व ही तत्वफरमाय । निशार नेवदेकदाही ॥
कहानी जैसी वानी खुली । स्वस्तुति नहीं परनिंदहे ॥
मिष्ट अमृत से अधिक । मर्मन कहे जग विंद है ॥२॥

योग्यता[२२] सैम गुण कथे । उपकार अंत्रस्यर्हा[२३] थावे ॥
छिन्न भिन्नै[२४] अर्थ न करे । नियमैं[२५] व्याकरण से गावे ॥
मध्यस्त बैंचन[२६] सुखदार।श्रोता अँश्चर्य[२७] सुणी धारे ॥
हूबहू प्रैंगमे[२८] अर्थ । विलम्बैं[२९] विश्राम न उचारे ॥
प्रश्नोत्तर[३०] विन पूछे लहे । कहे अपेक्षा[३१] युत स्फुटक ॥
स्तविक[३३] वाक्य अर्थ सिद्धं[३४] करे । थकते[३५] नहीं कभी कथक

अठारह दोष रहित—इन्द्राविजयछन्द

नहीं है मिथ्यात्व[१] अज्ञान[२] रू क्रोध[३], मान[४] माय[५] लोभ[६] र[७] तिअरति
ननिद्रा[९] शोक[१०] अलिक[११] वदन नहीं चोरी[१२] मत्सर[१३] भय[१४] नहीं विपति
करे नहीं हिंसा[१५] प्रेम[१६] जंगन नहीं क्रीडा[१७] हांसी[१८] नहीं करते सोयति
दोष अष्टादश जिनमें न पावत ताही अमोल नमे जगपति ॥
दोहा—यह गुण कथे जिनराजके किंचित संक्षेप मझार
आगे सधू सतीयों तने । कुच्छ गुण करूं उचार
वीर जिनन्दकी आणमें ।साधु चउदह हजार
छत्तीस सहश्र है साधवी ।उत्तमोतम गुण धार॥

॥ साधुगुण—इन्द्रविजयछन्द ॥

उग्र भोग राय नायको रवक्षत्री भट जोधा सेना पति ॥
[५] सत्थरा शेठ इभ और बहुत हीं छोडी भाग हुवे जैन जति॥
जाति कुल बल रूप विनय, विज्ञान लावण्यादि धरे संपती॥

अनित्यऋद्धीकिंपाकजेंभोग,घिनअध्रुव जाणी तजीरती
केइख साधु भये अध मासके,मास वर्ष केई बहुत है जुना
मतिश्रुति अवधीमनपर्यः,केवली त्रियोग बली नहीं नुन
अनुग्रहभियानेहोलकरकेइ, लब्धी धारीप्रगटे जब पुन।
तन अंग स्वेद के मेलखेंकारकेरफर्शसेहोवे रोगसबहुना
केइमुनिकोठगबुद्धधारक । बीजबुद्धिपडबुद्धिधारी ॥
पदानुसारणीसंभिन्नश्रुतिकाखी रमधुघृतवयणउचारी ॥
अक्षिण माणसीउज्जुमतिवराविपुलमतिविक्रयलब्धधारी ॥
जंघाचारणविद्याचारणआकाशमार्गेहोवेइच्छाचारी ॥
ज्ञानदर्शकचारित्रतिहुनिर्मळामहाव्रतसुमितीगुप्तिधरंता
लज्जावंतहळुद्रव्यभावसे । धैर्य,तेज,शोभा,यशवंता॥
क्रोधमानमायलोभइन्द्रियनिद्रानिन्दापरिसहजीपंता
जीवंतआसमरणभयत्यागी,तेमुनिपादअमोलनमंता ॥
वृतगुनचरनकरननिग्रहरु,निश्चयआर्यवमार्दवप्रधाना ॥
लाघवक्षमानिर्लोभविद्यामंत,वेदब्रह्मचर्यश्रेयजाना ॥
णयनियमसत्यशौचउत्तमेहमनोहरमूरतीतपनिधाना ।

---

१ जैसे कोठार में रखीहुइ वस्तुका विनाश नहीं होता है. त्यों पढे हुये ज्ञान का नाश नहीं होवे. व राजा का भंडारी जैसे इच्छित वस्तुदेताहत्योंइच्छित ज्ञान देवे २ जैसे शुद्ध खेत में डाला हुवा बीजयोग्यवृष्टीसेवृद्धीपावे त्योंज्ञानवृद्धिपावे. ३जैसेवस्त्रेकपडलखोलेनमेविस्तारपावे

अदीनअल्प-उत्सूकसूभावी विचरतेआगेकरजिनआन ॥
द्वादशांगगणीप्रतिमाधारकसर्वअक्षरकीउत्पत्तिजाने
भाषासर्वकेपारगामीकेइ,प्रश्नोत्तरनहटकोइटाने ॥
आत्मवादजानकरेस्थापन,तजेप्रवादजोमतपैछाने ॥
गुणरत्नागरधर्मवृद्धीकर, जिननहीतोभीजिनसमाने

साधु को शुभोपमा—मनहर छन्द

कुंलीयावण वणिकसे । अखट गुणों के धर
काँसा पात्र निरलेप । संखसे निरंगणा ॥
रुके नहीं जीव जैसे । कीट न लगे कंचन से
स्वच्छ आरिसा के परे । कुरम इन्द्री दमना
अलेपि कमल समान । निरालम्ब ज्यो असमान
वायु ज्यों विहारी मुनी शशी शीतल करना
सूर्य ज्यों प्रकाश करे । गंभीर समुद्र परे ।

त्यों ज्ञान बधे ४ एक पद के अनुसार से सर्वग्रंथ समज जावे. ५ सूक्ष्म शद्ब सुने- तथा एक वक्त में अनेक शद्ब सुने. ६ खीर के सेहत के और घृत के जैसे उनके वचन प्रग में. ७ अल्प वस्तु उन के स्पर्श से अखूट होजाय ८ ऋजु मती कुछ कमी और विपुलमती संपुर्णइअढाद्वीप के जीवोंके मनकी बातजाने. ९ सरलपना. १० निर्भिमान पना. ११ हलकापना १२ सातनयके ज्ञानमें

पक्षी से अनियत वासी।स्थिर नग शुंडशना ॥१॥
भारंड ज्यों अप्रति बंध । सत्य पक्षी गेंडा शृंग॥
निर्मळ शरद ऋतुनीर ।गंधहस्तीज्यों शूर है ॥
भारी खमेंजैसे बैल।अचल सिंह सकेल ।
क्षमापृथवी समान । वन्ही ज्योंदिसनूर है ॥
सीतल बावना चंदन । निर्ममत्व पडा सदन ।
अखूट द्रह नीरज्यों सास्त्र ज्यो कर्म चुरहै ॥
उदधी द्वीप ज्योंअधरा । नाग कंचुज्यों संसार ॥
ऐसी अनेक औपम शुभ मुनि गुण भरपूरहै ॥२

अप्रति बंध कथन—छपय छंद

श्री श्रमणभगवंतके।प्रतिबंधकिंचित नाहीं ॥
तजेयह चार प्रकार । द्रव्य क्षेत्र काल भावाही ॥
द्रव्यं-सचित अचित । मिश्रकी ममता त्यागी ॥
क्षेत्रं-ग्राम नगरका । पक्ष तजत है सोभागी ॥
काल सेसमय मात्रका । प्रमाद कदापि करेनहीं ॥
भावे पतली कपाय जस । उनमुनीको वंदन सही॥१॥
वर्षाऋतूके चउ मास मे रहे एकही जे स्थाने ॥
बाकी आठही मांस में ।एक एक मांस प्रमाणे ॥
अधिक काल नहा रहे । फिर जन पद में सदाइ ॥
बारे बार एक राती । मांस कों पंच गिनाइ ॥

रक्षा करने संयमकी । और तारन भव्य जनतांय ॥
यों विचरे मुनिवर सदा । सम भाव परिसह सहाय ॥
सम निंदक वंदक । कचन पाषान को जाने ॥
सुख दुःख में सम भाव ।राग द्वेष तजे गुमाने॥
दोनो लोक सुख आस । फास यह मोटी तोडी ॥
कर्म निकंदन खप । प्रीति शिव रमणी से जोडी ॥
पाले संयम सतरह विधे । बारह प्रकार के तप मांय ॥
निज आत्म को भावे सदा । सो ही मुनी मुक्ती पाये ॥

बारह प्रकारे तप-दोहा छन्द.

सर्व तप बारह तरेह । बाह्य षट प्रकार ॥
अभ्यान्तर भी छेही है । करत सदा अणगार ॥ १ ॥
अणसण[1]-त्यागे आहारको । उणोदरी[2] कम खाय ॥
वृती संक्षेप-भिक्षा[3]चरि । रस परि त्य[4]ाग कराय ॥ २ ॥
काया क्लेश[5] धर्मार्थी दे । संलेहना-निग्रह[6] योग ॥
बाह्य तप यह छेःकहे । किये जाने दृष्ट लोग ॥ ३ ॥

दीतवार से दीतवार तक (७ दिन) रहे उसे एकरात्री कहते हैं. ऐसी एक महीने की पांचरात्री होती है.
एक महीनेमे एक वारपांच बक्त आता है.

विनय-सदा नम्र हो रहे । वैया वच्च सुख उपजाय ।
सज्झाय करे मूल सूलकी । ध्यान तत्वार्थ ध्याय॥ ४ ।
अलोचना करे पापकी । कायोत्सर्ग ममत्व त्याग ॥
अभ्यन्तर गुप्त तप यह । करत मुनि बड भाग ॥ ५ ।

सत्तरह प्रकारे संयम-अडील छंद.

संयम सतरह प्रकारे पाले मुनिवरा ।
पृथवी पाणी अग्नि वायु वनस्पति स्थावरा ॥
द्वन्द्री तेन्द्री चोरिन्द्री पंचन्द्रित्रसहै ।
अजीव वस्तु यहदश सदा रक्षक है ॥ १ ॥
मन वच काय त्रीयोग पापसे गोपवे।
प्रीति सब पर धरे । उपयोग न लोपवे ॥
अयोग वस्तू परिठाय पूंजी प्रेक्षी चले ।
आत्मार्थी मुनिराज से यह क्रिया पले॥ २ ॥

संसार 'समुद्र' वरणन्-इन्द्रविजय छंद

संसार सागर महा-भयंकर। जन्म मरण रूप नीर भरा है॥
संयोग वियोग की तरंगउठे।चिंताविस्तार तहां विस्तरा है ॥
बंधन मारण कलोल उठे तहां अपमान रूप फेण उवरा है॥
कर्मकेडॉगरओडेजाआतेहैं । कषाय पाताल कळश उचराहै ॥
तृष्णा की वेल चढे अति ऊंची।मोहभमरपतंगोते खिलाइ ॥

प्रमाद अजगर ग्रासे बहूत । कुगुरु मच्छ रह भरमाइ ॥
मगर इन्द्री रूप फांस में डालत।पाखंड है शंख शीपके साइ
क्लेश कीचड सद्गुण रत्न मोती । ऐसा जयोदधी हैदुःख दाइ

धर्म 'जहाज' वरणन्-इन्द्रविजय छंद.

जग सिन्धुसे तारण कारण।सतरह संयम के पटिये बनाये ॥
बारह तप रुप कीलेसे जोडे ।धैर्यता कूवा स्थंभ लगाये ॥
वैराग्य वायू से ध्यान ध्वजा उडे।उपदेश रुपिय चाटू हलाये
सम्यक्त्व सुकान सुमार्ग दोरत निर्यामक भगवंत कहलाये॥
सार्थ वाहीं साधूजी बणे अरु।क्रिया कियाणा मांय भराया ॥
केवल ज्ञान दुर्बीन लगाकर ।आगम से मुक्तीपंथ बताया ॥
सत्घनी शील उद्यम गोळ से ।कर्म व्याघात्ती पहाड गिराया।
ऐसे वाहन चड स्वर्गगये केइ।केइक सीधे मोक्ष सिधाया॥४।

दोहा-धर्म जहाज आरूढ हो । निर्यामक जिन राय ॥ ॥
जग जंतू उद्धार को । फिरे जग सिन्धु मांय ॥ १
पुर्वोक्तादि गुण भरे । संत साति परिवार ॥
अंग देश चंपा ढिगे । उप नगर रहे उसवार ॥ २
शक्रेन्द्र लख ज्ञान से । धर्मोन्नती के काज ॥
समव सरण रचाना रचना।सुर को हुकम कियाज ॥ ३
चंपाढिग सुर आय कर । अद्भूत रचना रचाय ॥
सोहि ग्रन्थ अनुसार से । किंचित यहां वरणाय ४ ॥

समवसरण वरणन्-अरल छन्द.

प्रकोटे तीन बनाय । पहिला रूपा तणा ॥
सुवर्ण कंगुर सुचंग । दूसरा हेमज भणा ॥
रत्न कंगुरे झलकाय । तीसरा रत्नो मही ॥
कोशीसे मणी रत्न । रवी सम प्रभा कही ॥ १ ॥
एकेक कोटके अन्तर । तेरेसो धनुष्य रहा ॥
प्रथम के पक्तिये हजार । दो सहेश्र दोनों के कहा ॥
पांच हजार सब सेडी । हाथ २ के अंतरे।
अढाइ कोशका ऊंचा । समवसरण इस तरे ॥ २ ॥
समव सरण मध्य भाग । सिंहासरण मणिका किया ।
पाद पीठीका युक्त । सिंह सम शोभी रिया ॥
अशोक वृक्ष तस लार । सर्वगुण शोभिता ॥
अचित्त कुसुम के ढग सुगन्ध मन लोभिता ॥ ३ ॥
उपर लटके हैं छत्र । एकेक पर तीन है ॥
चौसठ जोडे चमर । ढुलत समचीन है ॥
पृष्टे प्रभा मंडल । प्रकाश अतिही करे ॥
यह विध रचना रची । सुर आनंद धरे ॥ ४ ॥

श्रीजिनागम-मनहर छंद.

रजनीको भयो है नाश ।रवी को भयो प्रकाश ।

आवश्यक क्रिया सं । निवृत्ति मुनि पाये हैं ॥
आगेजिनराज । पीछे सर्वही समाज ।
कोटी सुर नर केइ चंपा बार आये हैं ॥
समव सरण मांय । सिंहासण बैठ जिनराय ।
अष्ठ प्रतिहारकर । अधिक सोभाये हैं ॥
बारह प्रकार भरी परिषद मंडल मझार।
चतुर्मुखी जिन सन्मुख नमी रहाये हैं ॥ ५ ॥
साधु साध्वी परिवार । विमानिक सुरिलार ।
नमी बैठे अग्नि कूण । अति हर्षाये हैं ॥
श्राविका श्रावक विमानिक तीनो इशान में ।
भवनी व्यन्तर जोतिषी यह वायू कूण रहाये हैं ॥
इन तीनो की देवीयों सो बैठी है नैरूत्य कूण ॥
तिर्यंच तिर्यंचणी और बहूत ही समाये हैं ॥
भरा परिषदा ठाट हर्षानन्द गह गाट ।
अमोल वाणी सुणन अति उमगायेहैं ॥ ६ ॥

बधाइ की— चौपाइ

कथा प्रवा दुकसो उस अवसरे।यह रचना देखी हर्ष अति धरे
यथा उचित श्रृंगार सजाय।रथा रुड हो सभा में आय॥१॥
उस वक्त कोणिक महाराज । उप सभा में बैठे सबसाज॥
गण नायक दंड नायक पास । सामान्य रायतलार उल्लास
मांडबी कोढंबी अरू मंत्रीस।गणक द्वार पाल आमंच इस॥

शेट शैन्यापति सार्थ वाह । सन्धीपाल दूत आदि बहु ताह
गृह नक्षत्र तारा गण में शशी । नरेश्वर की शोभा इशी ॥
वहां प्रवादुक नमी बधाय।जीते पालो जीतां अन्य के तांय॥४॥
जिन के दर्श की अति इच्छा करो।नाम सुनकर हर्ष उरधरो॥
सोही श्रमण भगवंत महावीर।पूर्ण भद्र बाग में विराजे धीर॥
सुण वयण नृप अतिही उमंगाय।हृदय नयन प्रफूलित थाय।
अंगकी अंगीया तंग अति भई।कुंडल मुकट विद्युत चमकई
हर्षानन्दे उठ तत्काल । सुवर्ण पनही पग सेती निकाल ॥
एकसाडउित्तरासणमुखपेकिया।जिनेन्द्र सन्मुख शभामेंगिया
सतअष्टपग जा विराजिये।वाया ढीचण तळ डाया ऊभाकिये
कर जोड शिरपे आवर्तकिये।तीन यक्त धरणी लगादिये॥८ ॥
नम्र रहेयों करे हैं उचार। अरिहंत भगवंतको नमस्कार ॥
धर्मआदितीर्थ के करतार।स्वयं बुद्ध पुरुषोत्तम सिंहसार ॥
पुंडरीक गंधहस्तीसेप्रधान।लोकोत्तम नाथ हितकर द्वीपमान
अभय चक्षु मार्ग दातार। सरण जीवित्व वोध देनार ॥ १०
धर्मोप देशक नायक सार्थवाह।धर्मचक्रीजगद्वीप अराह ॥
अप्रतिहतज्ञान दर्शनधार।निवृते छद्मस्त जिन।जितावनार ११
तिरे तारो वुद्ध वोधो हो जग। मुक्ता मुक्त कर्ता सर्वज्ञ ॥
शिवअचलआरोग्यअवाध।पुनरावर्तिनहीं ते।सिद्ध साध ॥१२
ऐसा पद पाये उन्हे नमस्कार।पावेंगे उनको नमो वार वार॥
नमूं नमूं भगवंत महावीर। विरा ने आ म पुर तीर ॥ १३

मेरे धर्म गुरू धर्म के दातार। बारम्वार तुमको नमस्कार ॥
यों प्रमोद भाव से वंदन करी । रोमांकुव विकसे हर्ष भरी ॥१४

दर्शन कीसजाइ-चेपाइ छंद

फिर बैठे सिंहासण आय । प्रवादुक पर संतुष्ट थाय ॥
साडीबारलाखदीनीदीनार।राज चिन्हवरजीअंग भूषणसार॥
धन्य तुझ थें जिन दर्शन लिये । सत्कार करी तसविदा किये ॥
शैन्यापतिकोहुकमकराय।शीघ्रचतुरंगणीसेना सजाय ॥१६
कोटवाल को दिया हुकम ।नगर सजाइ करो इस दम ॥
अंतेउर भाइबेटे उमराव।सब को सजवाये अति उमाव ॥१७
अटनशाल में आये राजान ।कसरत मालीस किया स्नान॥
बहू मूल्य अरु अल्प भार।वस्त्र भूषण किया श्रृंगार ॥१८॥
कल्प बृक्ष सम शोभित थाय । कोरंट मालका छत्र धराय
वंदी जन करे जय २ कार। बैठे सभा में चन्द्रऽनुहार ॥
तिनेमें तलवरनगर सजाय। मचाण बंधाये जल छिडकाय॥
भुवन हाट सजे बहुत रंग।द्वजा पताका बांधी उतंग ॥०२
फोजदार फोज करी तैयार । गज गाजी रथ पायक सार ॥
सब राणीयों सज शोले श्रृंगार।औरसजहुवासबपरिवार॥२१
मेहल सन्मुख सज उभी फोज।माचेप भरे नर देखनचोज॥
नरेंद्र हुये गजेंन्द्र पर स्वार ।उमरावादि योग्य वाहन धार
राणीयों रथ में दासीयो घेर । वाजिंत्र नादे गगन गर्जेर ॥

अष्ट मंगल आगे कोतल चेल।और अनुक्रमें शोभितखिले॥
दोंनों तरफ देखत नर नाथ। सब प्रजा नमें जोडे हात॥
नयन हृदय कर माल सेबने।नृप सत्कार सें हर्षे घने॥२४॥
दोहा–यह वरणन हुवा रायका।जिन वंदन विध सार ॥
अब उत्साह पुरजन को। कहूं सूत्र अनुसार॥

पुरजन का दर्शन का उत्सह–इन्द्री विजय छन्द

भव्य जनों जानी जिन आगम।घर बजार में गम जमजावे
हर्षी वधाइ दे आपसमे। सीघ्र चलो वक्त दुर्लभ पावे॥
अहो भाग्य आये भगवंतजी।श्रीमहावीर वर नाम शोभावे॥
पूर्ण भद्र वने सब संगमे। तप संयम से आत्म भावे॥ १
जिन नाम गोत्र सुने श्रवनसे।कोटी भवों के पाप विलावे
तो वंदन प्रश्न पूछन का। फळ का वर्णन् कैसे कहा वे?
महा पुण्योदय भक्ति मिले यह।अपूर्व ज्ञान की कथा सुनावें
कोलाहल मचा यों शेहर में।चलो २ शीघ्र वारम लावे॥२॥
जिन वंदन सत्कार नमन सन्मान सदा सल्याण करंता॥
साक्षात् देव यह ज्ञान गुणागर।विनय किये सब पाप हरंता
पर्युपासना इहभव पर भवमें। हितकर सुखकर क्षेमकरंता॥
निश्चय अनुक्रमें दे मोक्षही। यों कीर्ति सब जन उचरंता
उग्रकुली केइ भोग कुली अरुराजक्षत्री कुल विप्र सुजानो
भांडजोधा सार्थ वह शेठजी। इश्वर तलवर मंडली करानो

इत्यादि सब सज्जन परजन । संग लिये किये बडा मंडानो
निज २ सक्ती सा साज सजाई पदचर केइ स्वारी सजानों
केइ वंदन पूजने के कारण। दर्शन सत्कार सन्मान तांइ ॥
प्रश्न पूछन पेखन रचना। सुणन व्याख्यान अपूर्व तांइ ॥
केइक श्रावक के वृत धारन । अणगार होवन केइ उमाइ
केइ आचार व्यवहार श्रम धरायों नाना विधी जन इच्छाइ।

वंदनाविधि—छप्पय छंद.

यह विधि राज परजा । जिनेश्वर वंदन आये ॥
आयाढिग जब बाग । अतिशय जिन देखाये ॥
वाहन स्थंभ किये । उत्तर धरणी पर ठाडे ॥
अन जान को विधी । जान नर तहां देखाडे ॥
पंच अभिगम संच के । करिये जिनवर धोक
सूत्रानुसारसे सो कहूं । जो किये सबही लोक ॥ १ ॥
[1]खड्ग [2]छत्र और [3]चामर । [4]मुकट [5]पन्ही के ताइ ॥
नृपती तजे यह पंच । अन्य जो जा ढिग थाइ ॥
आये बगीचे मांय । पंचफिर अभिगम धारे ॥
[1]सचित द्रव्य दूर रखे । [2]अचित धारण जोग धारे ॥
[3]उत्तरासणे यत्ना सूखकीकरी। देखत [4]हाथ दोजोडीया॥
एकाग्र [5]मन जिन चरण सो पञ्च अभीगमस्नान सोडिया॥ ॥२
आये भगवन्त पास । नम्र सब सन्मुख रहाई ॥

तीखूत्ता के पाठसे । विधी वन्दे जिन राई ॥
त्रियोग से भक्ति करत । काया से नामि वैठाई ॥
वचन से भगवन्त वचन । तेहत प्रमाण वधाइ ॥
अत्यन्त संवेग मनमें धरत। तीव्र धर्म अनुराग को ॥
यह अवसर जग मांही।मिलता है महा भाग्य को ॥३॥
सुभद्रा राणी आदि । सब बाइयों तहां आई ॥
धर्मानु रागे हुल्लसाय । अनिमेष पेखे प्रभु तांइ ॥
लुळी २ वंदन करे। देखते त्रती नहीं पावे ॥
सबही ऊभी रहे । सुनन जिन बचन उमावे ॥
और भी परिषद भरी है अति।मर्याद धर रहे हर्ष भर॥
उमंग जिन वाणी सुनन की ।यथा मेग मयूर पर ॥४ ॥

देशना वर्णन् खडका छन्द

परिषदगइभरा।श्रावकयतिऋषिवरा ।देवनरांकिन्नरासहश्रगमो
महावीरमहाधीरगंभीरवाणीवेद।शरदऋतुमेघगाजसुरमो ॥१
ज्योंदुंधवीनादकोरंचखगस्वाद हृदय आहलादउल्लहाखमो ॥
ऊठहृदयथकीकंठमेंफिरछकी।मस्तकेघोरजिभ्यासुजमो॥ २ ॥
सर्वअक्षरजोडअखोडअमोड।अतोडशंकछोडग्रोडजवाणी ॥
अमसणमनगमणरमणभव्यगणचितोहितमितपूरजोसुखदाणी।
सर्वदेशभापाभरीसर्वरसजंखरी । वैमसंशयहरी गुण खाणी
सरससुम्तअमरसनविरसहै।हिरसअमीरससवरसप्राणी॥ ३॥

योजनप्रमानभव्याख्यानबयान।सुनातेसुजानसोवानप्यारा ॥
आर्यअनार्यधार्यहितकार्थसो।निज २ भाषामेंसमजेसारा ॥५
देशमागधतणीअर्धवाणीभणी।अर्धसबदेशनीमिश्रधारा ॥
नीरज्यों।हीरहृदयबीजपरगमें।त्यौलबमनरमेंसोउचारा ॥ ६॥
अहोभव्यसांभलोमेटमनआमलो।लोक अलोककीअस्ति मानो
जीवअजीव कर लोक पूर्ण भरा।बंधरू मोक्ष यह सत्य जानो
पुण्य रू पाप के फळ पावे सबी।आश्रव आय संबर रुकानो
वेदते निर्जराहोतहै क्षिण क्षिण।यों जान प्राणी बंध मत ठानो

॥ अठारह पाप वरणन्—चोपाई छन्द ॥

पहिला पाप प्रणाती पात । स्व पर आत्म की करे घात ॥
दूसरा पाप है मृषा वाद ।झूठ बोले उपजावे असमाद ॥१
तीसरा पाप अदत्तादान । चोरी करे लेवे वस्तु विन आन॥
चौथा पाप कहा मैथुन । कुशील सेवे नर नारी निगुन॥२।
पंचम पाप परिग्रह कहा।पर वस्तु की ममत्व जो करी रहा॥
छट्ठा पाप तो जानो क्रोध । आत्म परात्म उपजे विरोध ॥
सातवां पाप तो है जी मान । अहंता भाव धरे अज्ञान ॥
आठवां पाप माया गुप्त रही ।दगा छलनकी क्रिया सही ॥
नववां पाप तो जानिये लोभ।बडे तृष्णा नहीं आता थोभ।
दशवां पाव धरे जो राग । मनोज्ञ वस्तु से करे लाग॥५ ॥
ग्यारवां पाप तो होता द्वेष । अन गमती वस्तु से रेष ॥

बार वां पाप मचावें क्लेश । कूसम्प झगडे करे विशेष ॥६॥
तेरवा पाप है अभ्याख्यान ।खोटा कज़ा (आल) देव अजान
चउदवा पाप होता पैशून्य। चुगली कर पर गुन करे नून्य
पन्नरवापापपरपरिवाद।निन्दाकरेउपजावेविखवाद ॥
सोलवापापरतिअरती।हर्षशोकजोधरतोचिती ॥ ८ ॥
सतरवापापहैमायामोषा।कपटयुक्तझूठकादोषा ॥
अठारवामिथ्यादंशणशल्य।कुमतश्रद्धारखेप्रबल ॥ ९ ॥
कर्मबंधकरताहैअठारेपाप।अनंतकालसेदेसंताप ॥
जहांलगनछूटेइनकासंग।तहांलगनहींसुखकारंग ॥ १॥

दोहा—दुःख भुक्तते जीव यह । घबरावत है अपार ॥
परंतुदुःख दायक यह ।पाप न छोडे को बार ॥१॥
अहासुखेच्छु प्राणियों । सुणो यह सद्बोध॥
शीघ्र तजोसब पाप को । धर्म वरो लोसोध ॥२॥

अठारह धर्म वरणन—चोपाइछन्द

पहिलाहैअहिंसावृत्त।निजपरआत्मदयाजो करत ॥
दूसराअसृपावृतविचार । हितमितनिर्वद्य वयण उचार ॥१॥
तीसराव्रतवृतजोनरगृहे।आज्ञाविनकुछनासंग्रहे ॥
चोथा वृत ब्रह्मचर्य धार।कुशीलइच्छासर्वनिवार ॥ २ ॥
पंचमवृत निर्ममत्वधरो। सचितअचितपरिग्रहपरहरो॥
छठ्ठा वृत है क्षांति प्रधान।खमो परिसह न वदो जबान॥३
सातवां वृत मार्दव-तज मान । विनय कर होवो गुनवान॥

आठवां वृत आर्यव-सरल । वाह्या भ्यान्तर रहे निर्मल ॥४
नववां मुक्ति वृत तृष्णा। त्यागाशास से तोषे बड भाग ॥
दशवां वृत बने बीत राग ।न करे कर्म बंध अनु राग ॥५॥
एकादश वृत प्रेमी बने । द्रोह तजे द्वेष बुद्धि हने ॥
बारवां वृत सबसे खम्प करे। कदाग्रह का मूलपर हरे॥ ६ ॥
तेहरवां वृत करे गुणाकिथापान दे आल अन्य का सहे आप॥
चउदवां वृत गंभीरता धरे।गुणाव गुण जाण हिये संगरे॥ ७॥
पन्दरवां वृत करे गुणानु वाद । कदापि न वदे को अपवाद
सोलवां वृत वैराग्य चित धरे । रति अरति सदा पर हरे॥ ८
सत्तरवां वृत सरल सत्य वदे।वाह्य भ्यान्तर निर्मल सदे रे
अठारवां वृत सम्यक्त्व सम्रा चरे।कुदंर्शण इच्छा कदाना को॥
यह अठारह वृत तिक्षण खडग ।कर्म काटे जो धारे अडग
स्वल्प कालमें मुक्ति पहोंचाय । अक्षय परमा नन्दी बनाय॥

दोहा—संक्षेप रुचि वन्त जो भवी। समजे थोडे मांय ॥
स्वल्प मती को समजाय वा।विस्तारी जिन दर्शाय॥ १
इन अठारह पापका ।जिन २ सेवन कीन ॥
सो इस भव पर भव विषे।नाना विपति लीन॥ २ ॥
इन अठारह वृत का । जिन २ पालन कीन ॥
सो इस भव पर भव विषे।सुख संपते भये लीन॥ ३॥
इन दोनो करतूत का । प्रथक संजिल मांय ॥
सद्वोध विचित्रता कथी।दंतांआगे वताय ॥ ४ ॥

किति सूत्रानु सार से।कितनी ग्रन्थ अनुसार ॥
पढो सुणी युक्ति सजी ।कथुं ग्रंथ विस्तार ॥ ५ ॥
पाठक श्रोता दत्त चित्त पठण करो आद्यन्त ॥
सुगोल मति ग्रहो सारको। आशय लक्ष ठवन्त ॥६
बनो गुन वन्त दुर्गुण तजो ।जाण सत्य दृष्टान्त
कथक प्रकाशक श्रम को।सफल करो श्रेष्टान्त ॥ ७
अघोद्धार कथागार की । भूमी का वरणी येह ॥
अगल भुवन रचना रचुं । ऋषि अमोलख केह ॥

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदा
के वाल ब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलक ऋषीजी
महाराज रचित अघोद्धार कथागार ग्रंथ की भूमिका



समाप्तम्



॥ मंजिल पहिला प्रणातिपात पापोद्धार ॥

पूर्व विभाग—"हिंसा"

प्राणा पात (हिंसा) काअर्थ—दोहा छन्द

'प्राण' जिनश्वर दशे कहे । अति पात करे घात ॥
प्राणाति पात सो पाप है । सर्व पाप वर कहात ॥ १ ॥
पचेन्द्री के प्राण पंच । तीन जोग के तीन ॥
श्वासोछ्वास रु आयुष्य । दश प्राण लो चीन ॥२॥
चार प्राण एकन्द्री के । स्पर्श[1] काय[2] आयु[3] श्वाश[4] ॥
छः प्राण है बेन्द्री के । रसना[5] बचन[6] प्रकाश ॥ ३ ॥
सात तेन्द्री के घ्राणा धिक । चोंद्रीके चक्षु अष्ट ॥ १ ॥
असन्नी पचेन्द्री के कान है । सन्नी के मन दृष्ट ॥ ४ ॥

प्रश्न व्याकरण सुत्रानुसार प्रणातिपात पापका वरणन्

दोहा—प्रश्न व्याकर्ण सुत्र के । प्रथम अध्याय मझार ॥

प्राणती पात जिन वरणवा। सो यहां करूं उचार ॥५॥
पापकैसा? क्या नाम तस?। क्या कारन से होय? ॥
तस फल जो जगमें करे । पंच प्रश्नोत्तर जोय ॥ ६ ॥

प्राणातिपात के दुर्गुण—चोपाइ छन्द

पावा-यहहैप्रथमहीपाप।'चंडो'-कषायकरदेसंताप ॥
'रुद्दो'-बुरा,'खुद्दो-'अधर्म।'सहस्सिओ-'अविचारका कर्म ॥७॥
'अणारिओ'-येहीअनाचार।'णिग्घणो'नहींसुज्ञालगार ॥
'णिस्संसो'-अविश्वासस्थान।'महाभय'अतिभय'येहीमान।८।
'पइभओ'-येहैअनंतहीडर।'बहीओ'-सुणतहीं चमकेनर ॥
'तासणओ'-अतित्रासउपजाय।'अणज्जो-अनार्यकृत्यकहाय ९
'उवेवणओ'-इससेउद्वेगउपजंत।'णिरवयक्खो'-नभलीअपेक्षतं।
'अधमस्थान'गतसुखपिर्वास॥'निक्कलुणो-निर्दयदेनर्कवास १०
'महाअज्ञान'कायहदातार।बहूतमरणेदीनताकरतार ॥
'यहबावीसगुणहिंसाकेकहे।सूत्रार्थगुरुलिखदहे ॥ ११॥

प्राणातिपात पापकेनामार्थ—चोपाइछन्द

प्राणवध,मूलशरीरनाश।अविश्वासस्थानहिंसाहैत्रास ॥
अकृत्यघातमरणकर्मभा।तपतव्रतअतिपापमहलभ ॥ १२ ॥
आरंभसंभारंभमारंभकहाय।आयु-उपक्रव-भेदनिवोर-नठाय।
कलायसंकोचनाश:कमप्रकोप।मृत्युअसंयमकरणामेंद ॥ १३ ॥

श्वांशहरण,परभवगमन।दुर्गतिपडन,पापविस्तरन् ॥
ापलाभशरीरविच्छेद।जीवितअंतकरदेतहैखेदं ॥१४ ॥
अकृतव्यवर्ज्जपरभार।परितापकर, इन्द्रीविनाशनार ॥
जीवनिर्कलनगोपनगुणखंडन।येतीसनामहिंसाकेगिन ॥

प्राणातीपातपाप मे भेद—अरल छन्द

दोय प्रकार के जीव । त्रस स्थावर कहे ॥
स्थावर पंच प्रकार । त्रस चार तरह रहे ॥
पृथवी पाणी वन्ही वायु । वनस्पती स्थावरा॥
बेन्द्री तेन्दी चोरिन्द्री । पचेन्द्री त्रस खरा ॥ १६ ॥
अन्तान्त पुण्य योग्य । पंचेन्द्री पद लये ॥
इस से हीन पूण्य होय । *चौ ती बे एक रहे ॥
इस लिये महापाप । पंचेन्द्री बध का कहा ॥
उस से ओछा पाप । ओछी इन्द्री का रहा ॥ १७॥
येही सूलका मरम । अनुक्रमें लीजीये ॥
प्रथम पंचेन्द्री घात । का पाप सुणीजीये ॥
नंतर चोरेंन्द्री तेन्द्री । बेन्द्री एकन्द्री काकहा ॥
प्रश्नव्याकरण प्रथम । अध्याय के अनुसार यहां॥१८॥
पचन्द्रीके चार प्रकार । नरक देव पशु नरा ॥
नोप कर्म है आयुष्य । नरक और सुरवरा ॥
मुख्यत्व मनुष्य करेघात । तीनो का न करा ॥

*चोरिन्द्री, तेंद्री, बेंद्री, एकेंद्री–रहते हैं.

इसलिये तिर्थंच घात का । वरणन् यहां ऊचरा॥ १९॥

तिर्थंच पचन्द्री के भेदानु भेद—इन्द्रविजय.

जलचरस्थलचरखेचरउरचर।भूजचरमूलभेदपंचजानो ॥
जलचररहेसदापानीकेआश्रय।मच्छकच्छमगरादीमानो ॥
स्थलचरआश्रयरहेपृथवीके।ग्रामवासीवनवासीवखानो ॥
गौ महिषछगअश्वगजखर।ऊंटघोडावानरबेलश्वानो ॥ २० ॥
मृगशशमरचमरीगायमींडा । रोझखरगोषसिंह सियाला ॥
बखरी रोहीवाघ चीताअरू,। तरखसुवरआदि है बिडाला ॥
खेचर गमन करे आकाश में।तोता सारस मयूर मराला ॥
वक कउवे चीडीयों केइ तरह।सूची मुखी चकवे क्रौंचाला २॥
परेवे कावर वदकरू तीतर।होल ढेंक चील आदी बहूताई
उर पर चलते पेट रगडकर अजगर सरप अलासिये साइ॥
भुज वलसे भूज पर चलते हैं।नोल घूंस ऊंदर विस्मराइ॥
इत्यादि भेद तिर्यंचपचेन्द्री।कोसन्नीअसन्नीदोभेदरहाइ॥२२॥

॥ पचेन्द्री की हिंसाका कारण-मनहर छन्द ॥

चरम[1] चरवी[2] धातु[3] मांस[4]। रक्त[5] जगर[6] फिंफास[7]।
भेजी[8] हीया[9] आंतों[10] पित[11]। अव्यें[12] यव कारणे ॥
दांत[13] हाड[14] हाडमींजी[15] नख[16] आंख[17] कान[18] गिजी।
नशों[19] नाक[20] नाडी[21] श्रृंग[22]। दाढ[23] पांख[24] सारने ॥
विषय[25] विपयी केई[26]। प्रश्न व्याकरण ऐसे।
कारण कहे जिनेश। पचेंद्री को मारने ॥

तुच्छ मतलब काज । करत बडा अकाज ।
जैसेतापने को डारे।गोशिर्ष चंदन जारने ॥ २३ ॥

चमडे केलियेहिंसा—मनोहरछन्द

कारण छब्बीस कहे । हिंसाके जिनेशयह ।
प्रथम चरम काज । हिंसा लग होवे है ॥
धर्मात्म बजे अकृत्य कृत नहीं लजे ।
बडे स्थल चर के सो कट्टे शत्रू जोवे हैं ॥
नगारा नोबत ढोल । तबले तासे आदि और ॥
चरम के बाजिन्त्र । बनानेका कहे सो बे हैं ॥
बुलंद आवाजी ताजी जमडी के लावो बनाय ।
ताही हम लेंगे ऐसे जन्म को विगोवे हैं ॥ १४ ॥
जीवते पशु के ताइ । चुनादि जेहर पिलाइ ।
मरते तुरत चरम उदेडे अज्ञानिया ॥
ताका बाजिन्त्र बनाय । देते धर्मीको लाय ।
परिक्षा करत अच्छा मुखे से बखानिया ॥
देवालय चडाय ते वजाइ के धर्म मनाय ।
लग्नादि प्रसङ्ग तस ध्वनी मंगल मानीया ॥
एसी नीच ताइ भाइ कलींमें उत्तम गिनाइ ।
वहते शरम आइ कैसे कथे जानीयां ॥ २५ ॥
धर्म के ग्रन्थोंपर वहीयोंपुस्तकों पर ।

चमडे के पुठे केइ पवित्र चडाव ते ॥
हाथ पाय मोजे अरू सोवन के सेजे ।
आदि वस्त्र के स्थान केइ चरम को लगावते ॥
ऐसे केइ काम मांइ चमडा अधिक आइ ।
महंगा भाव भया तब लोभी लल चावते ॥
आगिनत पशू विन मोत मार चरम कहाडे ।
खरीदे काम मे लेवे ते पाप हिस्सा पावते ॥ २६ ॥

चरबी के लिये हिंसा—मनोहरछंद

इस कली मांही धिनताइ तो फेलाइ भाइ ।
घृतादि उत्तम मांही चरबी को मिलाइ है ॥
कितनेक तेल ठाइ संचे मील गिरनी मांही ।
चरबी ही लगाइ ऐसे खरच बधाइ है ॥
लोभी दमडे बचाइ चरवी की भइ महगाइ ।
अज्ञानी अनेक पशू मारे चरबी त्तांइ है
धूप दीप भोजन मे। अभ्यंग अरू अंजन मे ।
चरबीही भराइ ऐसी भ्रष्टता मचाइ है ॥ २७ ॥

मांसकेलिये हिंसा—मनोहर छन्द

कहा ग्रन्थ पखा नु। बोलतेही अतिखेद मानु ।
रसना लोभानु बने भ्रष्ट विद्वानो है ॥

बजे वेदरु कुरान तांये धर्म शास्त्र मान ।
तामे हिंसा का बयान ठानें अर्थ पलटानो है ॥
विष्ठातुल्य भृष्ट मांस भ्रष्ट भक्षण की आस॥
यज्ञ मांही मंत्रादिसे शुद्ध कीयो मानो हे ॥
खायरु खिलाय अपडूबे अन्य को डुबाय ।
ऐसे मिथ्या धर्मीयोंको कलीको जमानो है ॥ २ ॥
बजत है देवी माता।देव बाप जी कहलाता ।
केइ स्थापना स्थापता । निज मतलब पुराता है ॥
काटे गरीबोंके गले । रक्त के वहां नाले चले ।
कैसे मात बाप भले । पुत्र को जो खाता है ॥
पूरे पेटही की खाड । हित्या देव सिर चाड ।
देखो मतलबी भोले मतलबी ठगाता है ॥
खोटे तेंहवार स्थापायें । क्रोडों पचेंन्द्री मराये ॥
कदा अन्य को सताये।नहीं मिले स्वप्न साता है ॥३॥
देखीये पवित्राचारी।रखे अशुचिही न्यारी ।
न्हाय धोय तिलक धारी तेही मांस ही के अहारी है ॥
स्वजन जो मरे तो स्मसाण जाय अग्नि धरे ।
ताही के तो घर परे रहे सूतक धारी है ॥
पशू मार घर बार करे चूले पर तैयार ।
ताको करे मुख अहार । का सूतक विचारी है ॥
अहो ? सुनो हो प्रवीन । मतत्रनो मही हीन ।

बने चावो सबै लीन । तो दो अभक्ष टारी है॥ ३०॥
अपवित्र मांस अहार । महा रोग का भंडार ।
महा अन्याय करतार । देखत घिन कार है ॥
आभी पेशाबी उत्पत्त । ना पाक पेशाबी सत ।
करते वजूही तुरत । कैसे करें सो स्वीकार है ॥
वासी युरोप अमेरीकान । बने बहूत विद्वान ॥
जान मांस से नुकसान । बहू किया परिहार है॥
नहीं हिंदका आचार । करे शास्त्रही पुकार ।
देखो दृष्टांत विचार । बनो आत्म हितकार है॥३१

रक्त के लिये हिंसा—मनोहर छन्द.

वस्त्र रक्त से रंगाय । रक्त औषधी कराय ।
सक्कर शुद्धही बनाय । जान आश्चर्य आय है ॥
अपवित्र से पवित्र । करे गति यह विचित्र ।
कैसे मन माने मित्र । क्या बुद्धि विकलाय है ॥
क्षिण मोज सुख काज । करे बडा यों अकाज ॥
कैसा मिला ये समाज । बुद्धिवंत कहलाय है ॥
रुद्रनिमित पशूघात । जग में होवे अमाप ।
ताको अधिकारी संगृही भोगवीही थाय है ॥३२॥

हड्डीके लियेहिंसा—मनोहर छंद.

अहो? अनर्थ अति करत है मुढ मति ॥
सित्तर हजार हाथी । बर्षोंवर्ष मारे है ॥
औरभी अनेक जीव । मारत करत रीव ।
हडियों निकाल करे खिलोंने तैयार है ॥
हाथी दाँत के कहाय । मन मूर्ख लोभाय ।
न देखे गजब तांय । तासेभूवन शृंगारे हैं ॥
धरे देख के आनंद । करे कठिण कर्म बंध ।
बनी पाप भार्गी मंद डूबे काली धारे है ॥ ३३ ॥
उत्तम जाती भी कहाइ । दया धर्मी ही बजाइ ॥
खोटि रुढीयों स्थापाइ ।यह देख शरम आइ है ॥
धातु के भूषण तजी । चुडे दाँतो केई सजी
केइ प्रतिमा घडाइ धर्म उपकरण बनाइ है ॥
गिने जाकी असज्झाइ । अशुद्धताही ही मनाइ ।
तेही हडी खंड साइ । धर्मभोजन निपाइ है ॥
हीये कपाल आख्याइ । चारों फुट गइ भाइ ॥
कैसे रुढी यह मिटाइ थाकी सब पंडिताइ है॥३४॥

दवाइयों के लिये हिंसा—मनोहर छंद

नित्य दया होत नाश । हिंसाका बधे प्रकाश।
जिन 'तित पेखतही । हृदय थररात है ॥
वनस्पति की दवाइ । देश काल गुण दाइ ।

बने चावो सच्चे लीन । तो दो अभक्ष टारी है॥ ३०॥

अपवित्र मांस अहार । महा रोग का भंडार ।
महा अन्याय करतार । देखत घिन कार है ॥
आमी पेशावी उत्पन्न । ना पाक पेशावी सन ।
करते वजूही तुरत । कैसे करे सो स्वीकार है ॥
वासी युरोप अमेरीकान । बने वहूत विद्वान ॥
जान मांस से नुकसान । वहू किया परिहार है॥
नहीं हिंदका आचार । करे शास्त्रही पुकार ।
देखो दृष्टांत विचार । वनो आत्म हितकार है॥३१

रक्त के लिये हिंसा—मनोहर छन्द.

वस्त्र रक्त से रंगाय । रक्त औषधी कराय ।
सक्कर शुद्धही वनाय । जान आश्चर्य आय है ॥
अपवित्र से पवित्र । करे गति यह विचित्र ।
केसे मन माने मित्र । क्या बुद्धि विकलाय है ॥
क्षिण मोज सुख काज । करे वडा यों अकाज ॥
कैसा मिला ये समाज । बुद्धिवंत कहलाय है ॥
रक्तनिमित्त पशूघात । जग में होवे अमाप ।
ताको अधिकारी संगृही भोगवीही थाय है ॥३२॥

हड्डीके लियेहिंसा—मनोहर छंद

अहो? अनर्थ अति करत है मुढ मति ॥
सित्तर हजार हाथी । वर्षोंवर्ष मारे है ॥
औरभी अनेक जीव । मारत करत रीव ।
हडियों निकाल कर खिलौंने तैयार है ॥
हाथी दाँत के कहाय । मन मूर्ख लोभाय ।
न देखे गजब तांय । तासेभूषन श्रृंगारे हैं ॥
धरे देख के आनंद । करे कठिण कर्म बंध ।
बनी पाप भागी मंद डूबे काली धारे है ॥ ३३ ॥
उत्तम जाती भी कहाइ । दया धर्मी ही बजाइ ॥
खोटि रुढीयों स्थापाइ ।यह देख शरम आइ है ॥
धातु के भूषण तजी । चुडे दाँतो केई सजी
केइ प्रतिमा घडाइ धर्म उपकरण बनाइ है ॥
गिने जाकी असज्झाइ । अशुद्धताही ही मनाइ ।
तेही हडी खंड साइ । धर्मभोजन निपाइ है ॥
हीये कपाल आख्याइ । चारों फुट गइ भाइ ॥
कैसे रुढी यह मिटाइ थाकी सब पंडिताइ है॥३४॥

दवाइयों के लिये हिंसा—मनोहर छंद

नित्य दया होत नाश । हिंसाका बधे प्रकाश।
जिन 'तित पेखतही । हृदय थररात है ॥
वनस्पति की दवाइ । देश काल गुण दाइ ।

त तो जात है विरलाइ ।अंग्रजी पसरात है ॥
कॉडलीवर आदि केइ । प्रत्यक्ष जाने सबेइ ।
पचेंद्री पिलाइ ताको अर्क कडात है ॥
'कीटक' अर्क की जो थाय । मदीरा तामे मिलाय
कैसे उत्तम से लेवाय जो। अशूचीजनात है॥३५॥

पाँखो के लिये हिंसा—मनोहर छंद

अहा क्षेणिक की शोभा । तामे गये मुढ लोभा ।
पाडे गरीबोंमें रोवा शोभा अपनी बता नको ॥
पक्षी गरीब अनाथ । ताको गृही दुष्टहाथ।
डाले पांखोही उपाड झपट से हैवानको ॥
टोपी आदिके लगाय । चले बडे अकडाय।
तैसे कचकडा बनाय।मारे काछवे की जानको॥
डबीखिलोने ढक्कन ।ओप ताताही को चडन ॥
यों हिंसा रही फेलाय कहां लावडावु वखान को॥३६॥

हिंसक को दंड—मनोहर छंद

ऐसी अनेकही जाय । जीव पचेन्द्री हणाय
मूल सुत्र ही फरमाय । ताको सत्य सब मानिहे॥
तेहे अबुद्ध अबोधी । नही आत्मा को सोधी
होय बहु तों का विरोधी।पावे जगमें सो हानी हे ॥

जो पंचेन्द्री हणाय । सो तो निश्चय नरक जाय
कृत्य कर्म फल पाय । जैसे यहां ठाणिये ॥
एसी दोनो भव मांय । हिंसा हैजी दुःख दाय ॥
छोडो सुख कीजो चहाय।यह अमोल वेन जानीये ॥

बिक्केन्द्री का वरणन्—चोपाईछन्द.

चौरिन्द्री के चार इन्द्री होय।काया[1] मुख[2] नाक[3] आँख[4] जोय
मख्खी मच्छर तीड पतंग।विच्छु खेंकडे आदि भृंग॥ ३८ ॥
तेन्द्री के इन्द्री तीन कही।काया[1] मुख[2] नाक[3] ही लही ॥
ज्यूं लीख चींटी कुंथवे जान।उदइ पिस्सु खटमल दी मान
बेंद्री के काया[1] मुख[2] ये दोय।संख सीप लट गिंडोला होय॥
ये तीन बिक्केन्द्री विकल स्वभाव।कर्म वश रहे दुःख पाव ॥

विक्केन्द्रीकी हिंसाकावरणन्—इन्द्रविजयछन्द.

निज सुख मानी जन अज्ञानी । अर्थ अनर्थ विक्केन्द्री मारे
सेहत के काज मारे भँवरी ।अरु धूंवा कर मच्छर संहारे ॥
दीपक माहे पडे आ पंतगी ये प्रवाही वस्तु मख्खी विदारे ॥
मारे खटमल ज्यूं लीख फोडे।चीटी कुंथु को कौन निहारे॥४१॥
सडी वस्तु केति भाजी भुट्टअरु ।विक्केद्री रहते ता मांही ॥
ताहे पचावत खावत के तहां।प्रत्यक्ष कीटक को सो खाइ ॥
मोरी नाली पर उस्न पाणी से।स्नान करे मारे कीडे तांइ॥
रेशम के अर्थ इंडेके हने बहू।इत्यादि अर्थ विक्केन्द्री मराइ ॥

कितने मुढ क्षुद्री विक्लेन्द्री मारन के माहे धर्म बतावे।
कैसे हैं क्षुद्रीयों पूछीय ताहा से सो कहे नाहक हमको सतां
तासे कहो जो सतावे सो क्षुद्री मारे सो महा क्षुद्री क्योंनी थां
पेट के काज अकाज करो तुम। तैसेही ते करे क्या फेर पावे?

स्थावर जीवों के प्रकार–इन्द्र विजय छंद

पृथवी पाणी अग्नि हवा वनस्पती पांचो स्थावर कहावे
सुक्ष्म सो भरीये सब लोकमे ताकी घात को करन न पां
बादरर सो दीखे चरम चक्षु त्रलोक केदश तिरछे विशेष।
सार्थ अनर्थ दो प्रकार हिंसा अनर्थ करे सो महा पस्तावे॥ ४
एक कण एक बुन्द तिणग्य. एक झपट में जीव असंखे
पारवा भ्रमर जवार सरसव सम तन करे जंबूद्वीप न पंखे
वनस्पती में संख्य असंख्य अनंत जीव एकी तन लखे
अनर्थ दायक स्थावर का वध जाणे सुज्ञाण सो मनमें संखे॥ ४

स्थावर की हिंसा वरणन्– इन्द्र विजय छन्द

पृथवी हने कृषी खेत बनावन। पुष्करणी वावो क्यारी कूवा
सर तलाव कबर रु वेदीका। बाड़ आराम विहार गेढ थूंभ
द्वार ओटे रस्ते पीज पंक्तिये। प्रासाद मोल भवन घर सूवा
लेन दुकान रु प्रतिमा बनावे। देरासर चित्रसभा भी हुवा॥ ४
देहोकर पानेक सुरंग तालाप ओजेन वीतू बनावे ॥

डउपकरणघरविखरेको निम्कक्षार भोजनमें खावे ॥
रिअनेकसंहारणकारण पृथवीकेकोगिनतीलगावे ॥
सीभीअर्थहनेपृथवीसोमंदमूखाजिनेंद्रफरमावे ॥ ४७ ॥
नीकीघातकरेकरस्नानकोपीवनभोजनवस्त्रधोवे ॥
चादिअर्थअरु अनर्थहीपानीकीहिंसाबहूतहीहोवे ॥
नपाचनजालनदीपकआदिअर्थअनर्थवन्हीखोवे ।
ावाजिनत्रकवस्त्रपात्रसपीछिमुखवायुहनेसोवे ॥ ४८ ॥
बकहूवनस्पतीघातकारनधरहथीयारपकानेनिपावे ॥
ाजेनसेजोपाटपाटलामूशलऊखलवनीपडहबनावे ॥
जिनत्रनावावेहनमंडपभेत्रनतोरणपिंजरेपेशू ठावे ॥
ास्थानजालीपक्तियेद्वेरशालपडशालवेदिकोकरावे ॥४९॥
सरणीनोकाचांगखूटियोमढीशिभापर्वआश्रमस्थानो ।
ाभालचंदनवस्त्रझूसरा हलसंमारकुलियारथसानो ॥
वेकापालखीगाढवाहनजोगगुढकोठारमेगपालठानो ॥
रकेपाटअरहटसूलीछडीहथीयारहाथधनएरनजानो ५०॥
ाडीघरविखराओरुबहुतही वनस्पतिबधइनकेकाजहोइ ।

किलेक धर्मस्थान बनाने में हिंसा (पाप)नहीं मा-
ते हैं उनकोयह बात ध्यान में लेना चाहिये. प्रश्न, व्याकरण
त्र के प्रथम आश्रब द्वार के प्रथम अध्ययन में पृथवी काय
ी हिंसा के कारण में (२६) चोबाल प्रतिमा, [२७] देरा-
, (२९) देवालय, और [३०]पोशाल यह [४] धर्मस्थान
ही नाम हैं. इन के बनाने वालेको हिंसक मंद बुद्धि और
गति में उपजने वाले कहे हैं.

कितने मुढ क्षुद्री त्रिक्ुन्द्री मारन के माहे धर्म बतावे।
कैसे हैं क्षुद्रीयों पूछीय ताहा से सो कहे नाहक हमको सता
तासे कहो जो सतावे सो क्षुद्री मारे सो महा क्षुद्री क्योंनी था
पेट के काज अकाज करो तुम। तैसेही ते करे क्या फेर पावे!

स्थावर जीवों के प्रकार-इन्द्र विजय छंद

पृथवी पाणी अग्नि हवा वनस्पती पांचो स्थावर कहावे
सुक्ष्म सो भरीये सब लोकमे ताकी घात को करन न पां
बादरर सो दीखे चरम चक्षुते लोक के देश तिरछे विशेषा
सार्थ अनर्थ दो प्रकार हिंसा अनर्थ करे सो महा पस्तावे॥ ४
एक कण एक बुन्द तिणग्य. एक झपठ में जीव असंखे
पारवा भ्रमर जवार सरसव सम तन करे जंबूद्वीप न पंखे
वनस्पती में संख्य असंख्य अनंत जीव एकी तन लंखे
अनर्थ दायक स्थावर का वध जाणे सुजाण सो मनमें संखे॥ ५

स्थावर की हिंसा वरणन- इन्द्र विजय छन्द

पृथवी हने कृषी खेत बनावन। पुष्करणी बावी क्यारी कूवा
सर तलाव कबर रु वेदीका। झाड आराम विहार गेह थूंभा
छोर कोठे रस्ते पाज पंक्तिये। प्रासाद मोल भवन घर सूवा
लेने दुकान रु प्रतिमा बनावे। देरासर चित्रसभा भी हुवा॥ ४
[illegible] पां[illegible] शृंगार [illegible] [illegible] बनाय ॥

डउपकरणघरविखेरेके।निमकक्षारभोजनमें खावे ॥
ौरअनेकसंहारणकारण।पृथवीकेकोगिनतीलगावे ॥
कसीभीअर्थहनेपृथवीसोमंदमूखजिनेंद्रफरमावे ॥ ४७ ॥
ानीकीघातकरेकरस्नानकोपीवनभोजनवस्त्रधोवे ॥
चादिअर्थअरुअनर्थहीपानीकीहिंसाबहूतहीहोवे ॥
वनपाचनजालनदीपकआदिअर्थअनर्थवन्हीखोवे ।
वाबाजिन्त्ररुवस्त्रपात्रसपीछीमुखवायुहनेसोवे ॥ ४८ ॥
बकहूवनस्पतीघातकारनघरहथीयारपकानेनिपावे॥
ोजनसेजापाटपाटलामूशलऊखलवीनांपडेहबनावे ॥
ाजिन्त्रनावाबाहनमंडपभैवनतोरणपिंजरपेशूठावे॥
वैस्थानजालीपक्तियेद्देरशालपडशालवेदिकोकरावे ॥४९॥
सिरणीनौकाचांगेखूटियों।मढीशभापवेआश्रमस्थानो ।
धर्मालचंदनवस्त्रझूसरा।हलसंमारकुलियारथसानो ॥
विकापालखीगाढवाहनजोगगुढकोठारमागपोलठानो ॥
ारकंपाटअरहटसूलीछेडीहथीयारहाथधंनएरनजानो ५०॥
ोडीघरविखराऔरबहुतही।वनस्पतिबधइनकेकाजहोइ ।

कित्नेक धर्मस्थान बनाने में हिंसा (पाप)नहीं मा-
ने हैं उनकोयह बात ध्यान में लेना चाहिये. प्रश्न, व्याकरण-
त्र के प्रथम आश्रव द्वार के प्रथम अध्येयन में पृथवी काय
ा हिंसा के कारण में (२६) घाबोल प्रतिमा, [२७] देरा-
र, (२९) देवालय, और [३०]पोशाल यह [४] धर्मस्थान
ही नाम हैं. इन के बनाने वालेको हिंसक मंद बुद्धिये और
गति में उपजने वाले कहे हैं.

वरोक्त स्थावर हिंसाके कारण सूत्रानुसार कथे इहां सोइ।
महा मूर्ख रुद्र मति कषाया शक्त निजात्म दुर्गत विगोइ।
धमार्थ काम हणे अज्ञानाही अनर्थ हनेअति दुःखलेहसोइ॥५१

हिंसकों को सद्बोध—मनहर छन्द

सर्व पाप में अव्वल । सर्व पाप में सबल ।
सर्व दुःख काही मूल । हिंसा ही को जानी है ॥
नर्क का है येही द्वार।जगमें भ्रमावन हार ।
विटंबे वहू प्रकार ।हिंसा दुःख खानी है ॥
सर्व को अहित कार । धर्मीयों करे तिस्कार ।
धर्म संयम की कुठार । हिंसा ही बखानी है॥
जो इसका करे स्वीकार । वोही वजते गींवार ।
देख जाती जग मझार।आमोल सोच आनीये॥५२
अहो ? आश्चर्य आय।अहिंसा सर्वी सरसाय ।
निज पर भेद कीयो मोह मुढ अज्ञानीयां ॥
देवता का नाम लेय।पूजादि विधी करेय ।
निज पेट पूरण अनर्थ यह टानीयां ॥
अपने मंगल काज । अन्यका करे अकाज ।
कहां से मंगल होवे । अहो भोले प्राणीयां ॥
हर्ष में विघन होय।सुसल्य दुःख वहू तोय ।
हिंसा के प्रत्यक्ष फल ।देख लेवो जानीयां ॥५३

काल नहीं बृष्टी होवे । अचिन्त जग डूबोवे ।
इच्छित फले न शाख। हिंसाते के प्रसाद ते ॥
कमाइ भी नष्ट थाय । भयंकर रोग आय ।
बाल विद्धा भइ केइ । करे अप वाद ते ॥
खाने नहीं नहीं मिले अन्न। पानी विन मरे जन।
भूकम्प अग्नि रु हवा । होत असमाद ते ॥
इस थोडे काल मांय । जैसे हिंसा बृद्धि पाय ।
तैसे दुःख अधिकाय ।अमोल हिंसा जाद ते ॥५५
नहीं है धर्म जहां हिंसा लव लेश होय ।
नहीं है शास्त्र जामें हिंसा का उपदेश है ॥
नहीं है वृत जामे कोइ तरह हिंसा करे ।
नहीं हैं गुरू जी जो तो हिंसा के थपेश है ॥
नहीं है सुगुन जहा हिंसा का रसीला पन ।
नहीं है देवता जो हिंसा में माने एस है ॥
आत्म के हित काज हिंसा करे सो अज्ञानी।
अमोलकहे दोनो भव ताहे दुःख विशेष है ॥५६॥
निर अपराधी जीव ताही को उपजावे रीव ।
स्वार्थ साधन मारे अनर्थ करत है ॥
रन्न मांहे रहाय । ते तो निर्माल्य घांस खाय ।
पापी ताही केइ जाय प्राण को हरत है ॥
झाड पे किलोल करे मिले जहांसे पेट भरे

दुष्ट मार गीलोल से लाही तडफडत है ॥
अपनाही सुख चावे अन्यकी दया न लावे ।
ऐसे दुष्ट मरकर नरक पडत है ॥ ५६ ॥
हिंसाहीसे जगमांय बहूत नुकशान पाय ।
दंडे राजा रइयत को राज को गमावे है ॥
प्रजा अनीती जो करे दगा कर धन हरे ।
महाजन केद पडे । इज्जत विगोवे है ॥
अंगोपांग हीन होवे।जालम रोग से रोवे ।
अनाथ दरिद्री दुःखी ।हिंसक ही थावे है ॥
ताको द्रष्टान्त आगे । कहूं सूत्र अनुसार ।
जाणी हिंसा दुःख कार।सुज्ञ छिठकावे है ॥ ५७ ॥

कथा-पहिली

हिंसाके फल बताने वाली-"मृगालोढीयेकी"

दोहा- एकादशांग विपाकके।प्रथम श्रुतखंध मझार ॥
प्रथमही अध्ययन में।मृगा पुत्र अधिकार ॥ १॥
हिंसा फल दर्शन को।कया श्री जिनराज ॥
संक्षेप से यहां वरणवूं।सुनियो सर्व समाज ॥ २ ॥

चोपाइ

ते काले ते समय मझार । 'मिया ग्राम' था जा सुख कार ॥
'विजय क्षत्री राज तहां करे।न्याय नीति से प्रजा अनुसरे॥
मृगावती राणी गुन खान।शीलवती रूप इद्राणी मान ॥
ग्राम बाहिर इशान कोन माय।चंदन पादप बाग सुखदाय

दोहा—उसी काल उसी अवसरे महावीर जिन राय ॥
साधू सध्वी परिवारे । विराजे बाग में आय ॥५ ॥
राजा प्रजा सुन हर्षीये । सज हो वंदे जाय ॥
भव्यो द्धारन जिनेश्वरा । धर्मोपदेश सुनाय ॥ ६ ॥

चोपाइ

तहां एक अंध पुरुष भी आया।एक नर जेष्टीका सहाही लाय
दारिद्री अंगहीन पुण्यहीन घालबिखरेमक्षी घेरादीन ॥ ७ ॥
कोलाहल बहूत नरका सुन।वीरागम जाणी हर्ष थुन ॥
विधीसे प्रभूको वंदना करी ।धर्मोपदेश सुनो हर्ष भरी॥८॥
गौतमस्वामीजेष्टशिष्य प्रभूजीके।ज्ञानचरित्रतसअतिहीं नीके।
दयालु उस अंध नरको देख।संशयी विस्मित हुये विशेख ॥
देशना सुन सबपरिषद जाय।गौतम स्वामी प्रभूजी ढिग आय
पंच अँग नमन कर वंदन करी।करांजली जोडी पूछे मन धरी
अहो प्रभू!ऐसी जगमेंकोइ नार।जन्मान्ध बालक जणनार ॥
प्रभुकहेगौतम दत्तचित्त सुनो।इसनगरमेंइससेदुःखीयनो॥११॥
विजय राजकी रानी मृगावती ।मगा लोढा पुत्र प्रसवती ॥

जन्मान्ध बहीरा मुंगा तेह।न हस्त पाद मांस पिंड देह॥१२॥
बहूत रोग अंगमें प्रगट भये।अठध्यय फक्त अंकूर रूप रहे॥
भोंवरा में गुप्त रख पाले तास।भेद न कोई जाने यस॥१३॥
प्रभू वाणी सुन गौतम उमगाय।पुनरपि पूछे शीश नमाय॥ ॥
आज्ञा होय तो देखूं में जाय।यथा सुख करो प्रभू फरमाय॥१४
गौतजी मृगा राणी घर आय।वंदना करी राणी अति हर्षाय॥
नमो कहे भली कृपा करी।मेरे लायक फरमावोचाकरी॥१५॥
गौतम'कहे देवानु प्रिय सुन।तुज पुत्र प्रेक्षन हैं मुंज मन॥
राणी तत् क्षिण घरमें जाय।छोटे चारों पुत्र लाइ सजाय॥१६॥
नमस्कार करा कहे देखो श्वाम।'गौतमजी'कहे इनसे नहीं काम
जेष्ट पुत्र अंगोपांग हीन।मृगा लोढा नाम गुप्तरखा जिन॥१७
सुन राणी अति आश्चर्य भइ।कोन ज्ञानीएसी गुप्तबात कही
गौतम'कहे मुझ गुरुजी सर्वज्ञ।उनने कही उनसे नहीं कुछअज्ञ
'राणी कहे पूज्य ऊभे रहो । सोही बताबू आप जो कहो ॥
शीघ्र राणी भोजन घरआय।वस्त्र बदल काष्ट गाडी लाय॥१९
उसके खपत अहार उसमें धरा।डोरी खेंच चली शिशु परा॥
कहे गौतम से पीछे२पधारिये।गौतम राणी संग भोंयरेमे गये
सविनय राणी करे कथन।श्वामाजी मुख नाक कीजे बंधन॥
दुर्गंध यहां आवेगा असराल।दोनो ही नाक ढके तत्काल॥२१
कोटडी द्वार तब खुल्ला किया।उलटा कर गाडा गुडा दिया॥
गुडता कुँवर आया अहार पास।सब अंग लोटा अहारमें खास

न झरित रक्त पिरु अहारमें मिला। अत्रस उसने वैसाही गिला
त्यक्ष गौतम देखी यह हवाल। आत्म हुई वैराग्यमें लाल॥२३
हो २ दुःख यह नर्क समान। सुने सो प्रत्यक्ष देखूं यह स्थान
से कर्म इस जीवने किये। ताके कटुक फल यह लिये॥२४॥
कर आये भगवंत के पास। वंदन कर दिया देखा प्रकाश॥
वामी पूर्व भव इसका सुनाइये। क्या कठिण कर्म ये उपाइये॥
ो अंत्तराय किया अभक्ष अहार। हिंसादि पाप सेवे अठार॥
ालोचना निंदना विन मरी। नर्क जैसी यह विधि वरी॥२६
ोहा—भगवंत कहे गौतम सुनो। हिंसा अति दुःख कार॥
वाया सो फल पाइया। करूसर्वत उचार॥ २७॥

चोपाई

बुद्दिप के भरत मझार। नगर वसता नामें 'शत द्वार'॥
नपति' राजाराज वहांकरे। उस नगरढिग अग्निकोणपरे॥२८॥
'विजयवर्द्धन' नाम खेडावसे। एकाइ राठोड मालक तसे॥
ोथा अधर्मी पापीष्ट अति। कु कृत्य कर धरता अति रति॥२९
नेर्दय कठिण हृदय वे विचार। दूसरे के दुःख की नहीं दरकार॥
ाजा को अति देता संताप। लांचगृही दंडकरता अमाप॥३०॥
कही गुन्हा बहुते शिर धरी। लूंटे धन लिया कोश भरी॥
योंहायलाहकरेबहुतलोक। खुशीहोवेउनकोसोविलोक॥३१॥
तलब विन नहीं सुने पुकार। लूंट के प्रजा करी निराधार॥

सुनी अनसुनी वनादे बात। नहीं माने ताज वरो से थपात॥३
देखी अदेखी अदेखी देखी कहे। ली अनली यों वदलता रहे
हिंसा सदा करता सो अपार। मृगया उपर बहूत ही प्यार॥३३
ऐसी तरह संचे वहुत कर्म। स्वप्न में नहीं किया जरा धर्म
ऐसे बहूत काल वीता तवी। पाप वांदगी वताइ जवी॥३४
एक दम प्रगट भये सोलेही रोग। महा विकाल दुःख का भो
नीर विन मीन परे तड फडे। क्षिण भर तास चेन नहीं पडे॥३

सोलह रोगके नाम—शार्दुल विक्रीडित छंद.

श्वाश खांस ज्वर दहा ज्वर अरू कुक्षी शूल भगंदरं ।
दृष्ट शूल अजीर्ण हर्ष, मस्तक शूल अरुची धरं ॥
कर्ण चक्षु वेदना महा खुजली कुष्ट जलोधरं ।
षोडश राज रोग यह कहे, पापो दये प्रगटे भयंकरं ॥३६

चोपाइ

नोकर को तव कहे पुकार। उद्घोषणा करो ग्राम मझार॥
एकाइ ठाकुर के तनमांय। राजरोग सोलह प्रगटाय॥३७
एकही रोग जो करे आराम। मुह मंगा तस देंगे इनाम॥
नोकर तव तैसाही करा। ग्राम में सर्वस्थान विस्तरा॥ ३८
वहुत लालची आये वैद्य। जाने शास्त्र मिटावे खेद्य॥
नाडी प्रेक्षी निर्णय करे। जीभ नेत्र मूत्र मल द्रष्टी धरे॥३

कर निरधार करे उप चार।मर्दन विलेपन वमन निहार ॥
स्नान करावे औषधी पाय।छेद भेद दहनादि उपाय॥४०॥
कंद मूल छाल पान विनाश।कडु कटु उपाव किये बहु तास
परन्तु रोग एकही नहींगया।उलटादुःखअधिकहीभया: ॥
दोहा—रोगो पचार बहु जगत् में।कर्मों पचार न कोय॥ ❀
हंस २ बान्धे प्रणीयां । भुक्ते न छूटे रोय॥ ४२ ॥

चौपाइ

कर उपचार थके सब वैद्य ।मनमें पाये अतिही खैद्य ॥
एसा देख ठाकुर उसवार।मरण निश्चय हुवा मन मझार ।
बहुत हिंसा कर संचिये भोग।भोगव न सका त्रष्णा योग॥
मरती वक्त प्रत्यक्ष सो पेख।मुर्छा जागी मनमें विशेख॥४४ ॥
आर्त रौद्र धरता चित्त ध्यान । अढाइ सो वर्ष आयु प्रमान ॥
मरकर रत्नप्रभा नर्कमेंगया । एक सागरोपम स्थितीवहां रया ॥
वहांसे चव यहां लिया अवतार । मृगाराणी कुंक्षीमझार ॥
राणी के. उस गर्भ संयोग । महा उज्वल प्रगटे तनरोग ॥४६॥
पतीकाभी अनुराग कम भया । अती शोग राणी मन रमरया
खोटा गर्भराणी जानलाया । उसे पाडनेका निश्चय किया॥

❀"कडाण कम्मा न मोक्ख अत्थी" उत्तरा ध्ययन सूत्र.
अर्थात् कृत कर्म के फल भोगवे विन छुटका नहीं !

क्षारे कडवे औषद लिये । वमन विरेचन बहुतहरि किये
मंत्रादि किये उपाव अनेक ।तोभी गर्भनहीं पाडाया छे
दुःखे २ गर्भवृद्धिपाय । गर्भमे उसका तन सडजाय ॥
कान आँख नाक अपानद्वार। दो दो नाडीके वहे सदाद्वा
रक्त पीरु पडे सदा बहार । भस्माग्नि रोग लगा दूःखकार
जो अहार आहारे वो जीव । भस्मभूत हो देवेतसरीव॥५
राध रुधीर पीरु रुप थाय । उसीको पीछा ले सो खाय ॥
यों मास नव पुर्णही भये । तव शिशुने जन्मज लिये ॥५
जन्मान्ध बहीरा अंगोपांगहीन।देखके राणी डरी हुइ खी
दासो हाथ दिया उकरडे डलाय।दासी राजाकोखबरदी
कहे राजा राणी पासआय।प्रथम पुत्र यों कीजे नाय ॥
आगे न जीवेगा तुम संतान । इसे पालिये गुप्त घर स्थान
राणी मानी राजाकी कही । तुम देखा तैसे पाले सो स
निर्दय वंधे चीकणे कर्म । महाविस भोगवे हिंसा के वर्म॥५
परन्तु इतने से छूटेगा नहीं। पेखो आगे भवान्तर स
बीसवर्षआयुष्यभोगकरी।वेताड गिरे सिंह होवेगा सरी॥५
वहां सेप्रथम नर्कसागर स्थिती।वहां से नवल होवेगा दुर्मा
वहां से दूसरी नर्क सागर तीन।वहांसेपक्षी होवेगा मलीन५
तीसरीनर्कसातसागरदुःखरोग।सिंहहोकरेगादुष्ट भोग ॥
चोथीनर्क, सर्प, नर्कपंचमी।दुष्टनारी, छट्टी नर्करमी ॥५

हैंसकन्नरहोनर्कसातवीजाया।जलचर ❀कुलकोडीभुक्ताय ॥
थलचरखेचरउरपरभुजपर।चोरिंद्रीतेंद्रीबेंद्रीहोकर ॥५८ ॥
कटु वृक्ष वा।यू अग्नि।विषे।पाणी।पृथवी मर २ उपजसे॥
असंख्य भव योंहोगा दुःखी।भोगववोकर्मछुटेंगेनकी ॥५९॥
सुप्रतिष्टनगर में सांढ होय । मृत्तिकाखिणदब मरेगा सोय॥
सुप्रष्ट नगर धर्मी शेठ वर । पुण्य जोग पूत पने अवतर ॥
धर्मशास्त्र पढ हो प्रवीन।संयम ले तपसे कर्म कर खिन ॥
प्रथमस्वर्गदेवहोमहाविदेह मांय।नरहो कर्मखपामोक्षसिधाय।
दोहा—हिंसाफलदर्शावबा।विपाक सुत्र अनुसार ॥
कथा कथी त पढी सुनी।विचारो हृदय मझार ॥ ६२ ॥
एकही भव हिंसा थकी ।असंख्य भव लिये दुःख॥
विषम फल यों हिंसा के। जाणी तजो लो सुख ॥ ६३ ॥

+कुल कोडिका हिसाब-पृथवी कायकी बारेलाख क्रोड (बारा लाख को क्रोड गुनेकरे) कुल, आप काय के सातलाखक्रोडकुल, तेउकायके तीनलाख क्रोड कुल, वायूकायके सातलाख क्रोड कुल, वनस्पती के अठाइस लाख क्रोडकुल, बेंद्रीके सातलाख-क्रोड कुल, तेंद्री के आठ लाखक्रोड कुल,चोरिंद्री के नवलाख क्रोड कूल, जलचरके साडी बारे लाख क्रोडकूल,स्थल चरकेद-शलाख क्रोड कुल, खेचर के बारेलाख क्रोड कुल, उरपर के दश लाखक्रोडकुल, भुजपर के नवलाख क्रोडकुल, नरक के पचीस लाखक्रोडकुल, देवता के छव्वीसलाख क्रोडकुल, और मनुष्य के बारे लाख क्रोडकुल, यों सर्व एक क्रोड साडीसत्ताणवे लाखक्रोड (९७५०००००००००००) कुल होते हैं.

मंजिल पहिला—प्रणातिपात पापोद्वा

उत्तर विभाग—"दया"

दोहा—प्रथम मंजिल के विषे। जो कहे प्राणी भेद ॥
उन सबकी रक्षा करो। जरा न देवे खेद ॥ १ ॥
बाह्य स्वरूप दया तना । येहीज हे पुण्य वन्त ॥
अंत्तर भेद अनेक हैं। सो वरणू धरी खन्त ॥ २ ॥
प्रश्न व्याकरण सूत्र के। पहिले संबर द्वार ॥
दया भगवति के कहे। साठ नाम जगा धार ॥ ४
ता अनुसारे यहां लिखूं। सूत्रार्थ उभय युक्त ॥
आराधी जीव अनंतही। गये और जावेंगे मुक्त॥ ४

दयाके ६० नाम—चोपाइ

'निव्वाण'[1]-मोक्षकीयेहीदातार। 'निव्वुही'[2] निवृत्तीभवाकरतार
,'संति'[3] शांति, 'किति'[4] कीर्तिकरे। 'कांति'[5]-कान्ती, 'रइय'[6] रतीवरे
,'विरइय'[7]-विरती, 'सुयंग'[8]-सूत्रअंग। 'तित्ति'[9] तृप्तकरे, 'दया'[10]-अभं
,'विमुत्ति'[11] कर्मबंधसेयहछोडाय। 'खंत्ति'[12]-क्षमाअराध कराय॥ ६
,'समत्ताराहण'[13] सम्यक्त्वआराधन। 'महांति'[14]-सबसेबडीगुणधन
'बोही'[15]-बोध 'बुद्धि'[16] दातार। 'धिइ'[17]-धैर्य, 'समिद्धि'[18] समर्थकरतार
[illegible] 'रिद्धि'[19]-ऋद्धि. 'विद्धी'[20] वृद्धीकरे। 'ठिई'-दीर्घायु. 'पुट्टि'-पुष्टीकर

नंदि[23] 'आनन्द, 'भद्दा'[24] भद्रकरतार।'विसुद्धि'[25]निर्मलदयाहोधार
लद्धि[26]-लब्धीअनेक उपजाय। 'विसिठ'[27]'विशेष्टकीर्तीफेलाय ॥
दिठी[28] 'सम्यक्त्वद्रष्टि.मूलगुण।'कल्लाणे'[29]'मंगल[30]'प्रमोद'[31]'भूषण'[32]
[33]क्षा'सिद्ध[34]वास'अश्रे[35] वरोकंत।केवलज्ञा[36]नस्थान,शिवसुख[37]करंत
समिथा[38]-अच्छीरीतीप्रवृताय।सीले[39]-आच,रसबदयामेंसमाय ॥
संयम[40] सीलधर[41] संवर[42]गुती[43]।लाभव्यापार[44] येही उत्सुकति[45] ॥
यज्ञ[46] गुणायतन जा[47]ननहार।अप्रमा[50]दाविश्रा[51]म विश्वा[52]सधार॥११॥
अभय[53]अमरी[54]चोखी[55]पावित्र।शुद्ध[56] पूजा[57] विमल[58] प्रभा[59] अति हित[60]
निर्मल साठ नाम ये कहे।जिनेश्वर पद दया कों यह दये ॥१२॥

जीव दया पालने वाले—मनहर छन्द

साधु सो आत्म साधे । संपूर्ण दया अराधे ।
छेही काय न विराधे । आत्म सम जानके ॥

☞ यहां जो दयाके ६० नाममें ५७ वा नाम पूजा आया है उसका अर्थ कितनेक द्रव्य पूजा ठहरा कर हिंसाकी स्थापना करतेहैं सोजिनाज्ञा विरुद्ध है. क्योंकि जो पूजाका अर्थ द्रव्य पूजा करें तो (४६)वा यज्ञ शब्द आयाहै वहां भीद्रव्य यज्ञका अर्थ कायम कर अन्यमति जो अश्व मेधादीयज्ञ करतेहैं सोभी दयाही माना जाय? परंतु ऐसा कदापि नहीं होनेका. दयाके स्थान हिंसक अर्थ करना सो अनर्थ है. यहांतो दोनो शब्द का अर्थ भावपूजा और भाव यज्ञ करना येही सच्चा अर्थ है की जिससे अपनी और पराइ दोनो आत्माकी दयापले.

स्थावर के मांय । जीव असंख्यात रहाय ।
वनस्पती में अनंत । जीव बशे आनके ॥
संकोचित स्थान जिस्मे जीव वशे वे प्रमान।
ताका दुःख काही भान । रखे जान ज्ञान के॥
संघटा न करे तो वो प्राण कहो कैसे हरे ।
मुनिश्वर पालक सदा बावन ही प्रान के ॥१३॥
जीवदया पालन । सोदेख करेहलन चलन ।
पूंजे अप्रकाशिक आग ।इर्या समिती धरते ॥ ॥
सावद्य दुःख कर वाणी । कभी नही वदे जाणी
हित मित पथ वाक्य । अवसरउचरते ॥
गृहस्थने निजकाम । अहार वस्त्रकिये धाम ॥
मधुकरी वृती करी । उचित आचरते ॥
उपाधी अल्प पखे । यत्ना लेते रखे
मन संयम करी सदा मुनिजीविचारते ॥१४ ॥
गृहवांस रहनहार । जिनके केइ परीवार ।
उनसे मुनि आचार । पालना कठिन है

५२ मान-एकेंद्रीये ४, वेंद्रीके ६, तेंद्रीके ७, चोंरिंद्रीके ८, अस
तिर्यंच पचेंद्रीके९ असन्नी मनुष्य के८ और सन्नी पचेंन्द्री १०
५२ प्राण की रक्षा साधु जी करतेहैं.और श्रावक से एकेंद्रीके
और असन्नी मनुष्य के८यों १२ प्राण की रक्षा होनीमुशक
है इसलिये श्रावक ४० प्राण की रक्षा करसक्ते हैं.

तन स्वजन पालन । स्थावर के हने तन ।
तेही डरते चाहीये सो । ज्यादा तज दीन है॥
नित्य मर्याद करी । पुढवी पानी अग्नि हरी ।
पर्वादि दिवस सोही । तजत प्रवीन है ॥
त्रस घात के जो काम । अनर्थ का जान ठाम।
सदा पर हरे ऐसे श्रावक सु चीन है ॥१५॥
जमीन न खने । स्नान अर्थ जादा जलमने।
चूले दीवे कम करे । पंखान लगाय है ॥
अधिक पाप कारी हरी । और त्रस जीव भरी ।
ताही का त्यागन करी । वश रखे काय है॥
तम्बाखू आदि कु व्यश्न ।लगावे न ते रस्न ।
नाल खीले जूते तज । मर्यादा ते राय है ॥
प्रवही वस्तु दीवा । उघाडे नरखे किवा
इत्यादिक दयाधर । श्रावक वृताय है॥१६॥
रात्रीको भोजन न्हावग धोवण लीपण
मोटे मारग चलन नही करत कदाइ है ॥
आटा दाल शाख । छानेरु लकडी राख ।
घंटी उखल वस्त्र भाजन देख के वराइ है ॥
लेवे न अन छाना पानी । यतना करे जीवानी ।
दिशानही जायन कदा । पायखा ने माही है ॥
और भी त्रस जीवों के घात के कारन जान ।

विषे की श्रावक जन। वरजत सदाही है ॥१७॥

दया की महिमा—मनहर छंद

दया सर्व व्रत मूल। दका सब को अनुकूल।
दया को है नाम प्यारो। धारो दया प्राणीयां॥
देव दयालू ही होवे। गुरु दया वंत सोहे।
धर्म दया हेत करे। सोही जग जानीयां॥
दया का एक शब्द सार। ग्रंथ हिंसाका निसार।
तत्वार्थ सर्व मते। बखाणिया ज्ञानीयां
ज्ञानी ध्यानी महात्मा धर्मात्मा रु जपी तपी।
अवतार अमोल सर्व। दया ते बखानियां॥ १८॥
अहिंसा धर्म उत्कृष्ठ। जैनशास्त्र पंथ विषे
अहिंसा लक्षणो धर्म।पूराण में लखीये॥
अहिंसा परमो धर्म। वेदका है मुख्य वाक्य।
रहीमान रहेमी देव। कुरानी के पेखीये॥
टूशाट नो किल। बाइबल पुकारत।
जरथोस्ती रहेमी को। मानत विशेखीये॥
यों सर्व मतान्तरो में। दया आगेवानी करे।
अमोल धर्म च्छु सब याको हीये रेखीये॥ १९॥
रोगी को औषध। अरु भुखे को भोजन धार।
प्यासे को पाणी हीमिले। हर्षत अपार है॥
पक्षीयों को गगन रु वनमार्ग साथी जन।

चौपद को स्थान । भय भीत रक्षाकार है ॥
समुद्रमें जहाझ । खर खडग मध्य पाज ।
अंध नेन अपून पूत । दालिद्री दीनार है॥
वियोग सुयोग मिले।अमोल आनंद पाय ।
तैसेजगजंतू हीको । दया का आधार है॥२१॥
अहिंसा समान दान पुण्य धर्म व्रत नाहीं ।
जप तप ज्ञान ध्यान अहिंसा ते सिद्ध है ॥
सुख संपत निरोग । संतती रु सुसंयोग ।
इच्छित मनोग्य भोग । अहिंसा ए ऋद्ध है ॥
साधु श्रावक मुनी । शाय राय वाय गुनी ।
महात्मा अदिक पूज्य । दया ते प्रसिद्ध है ॥
आनंद की दाता जग मात तात भ्राता ।
अमोल अहिंसा ही को जाणीये सुविद्ध है ॥२१ ॥

दयाका महात्म—इन्द्र विजय छन्द.

पूर्ण पृथवी रत्नो से भर वरादान में देवे कभी नर कोई ॥
गो आदि पशु देवे सब दान मे।वस्त्रा भूषण जेता हैं लोई॥
अन्न पान सन्मान दे सर्व को।तोषे स्वामी रखे नहीं जोई॥
और तो दानसबीके व्याख्यान हे।दया समानदान नहीं होइ॥
महा पुण्यात्म महा ऋद्धिधर।महा वली महासुखी महाराय
तीर्थंकर चक्रवर्ती हल धर।मांडलिक सेना पति कहाया।

सोभी एकदयाहीकेखातर।ऋद्धी सुख क्षिणमेंछिटकाय। ॥
भिक्षुक हो किया यत्न छेकायका।दया का यह महात्मबता
श्री नेमीनाथ पशु दया करण।तोरण जा तजी राजुल ना
श्री पार्श्वनाथ तापस धूणीसे।नाग युगलकिये सुर अवत
श्री महावीर कु शिष्य गोशाले को।बलता तेजू लेशासे उव
जो जिनवर जीवदया करी तो।करो सबी जिनाज्ञा धारी
धर्म रुची मुनि कटु तुम्ब भोगी।पिपीलिका मरती को वच
मेतारज मुनि सोनी मार सही।कुर्कट का नाम नहीं लिय
मेव मुनी पूर्वें गज केभवमें।शुशल्या वचया देह गमाई
मेघरथराज पारेवा के काज मांसदियो निज तनवधाई॥२
अनेक दाखले स्वमत अनमत।सर्वेही श्रेष्ट दया को माने
जो नही माने तोपूछीयेवाने।तूंक्या तेरा चहावे कहेन्हा
जो तू चावे सो सब चावे। निज से परको ज्ञानी पहचा
अमोल दया भगवती सुखदाता धारले २ अहोबुद्धवाने॥

कथा-दूसरी

दयाके फल बताने वाली-मेघरथ राजा की

दोहा-दृष्टान्त बहुत दया के हैं । सूत्र ग्रन्थ मझार ॥
एक कथा यहां पे कथूं ।जानि दया भन्डार॥ १

मघरथ राय दया करी।हुवे श्री शांति जिनन्द ।
गर्भ से जग के दुःख हरे। पाये परमानंन्द ॥ २ ॥

चौपाइ

जंबुद्वीप के मध्य में जान।क्षेत्र महाविदेह है शुभस्थान ॥
ताकी पुंढरिक विजय मझार।नगरी'अक्षय भूमी'है सार॥३॥
मेघरथ राजा राज वहां करे। जैन धर्म नियोग अनुसरे॥
तत्वार्थ धर्म गृहा पहिचान।जलकमल वत् रहे जग म्यान॥४॥
श्रावक की करणी करे पवित्र।सब जीवों का सच्चा मित्र॥
स्ववश किसीको जरान सताय।जोकभीप्राणआपकेजाय ॥
उसही वक्त उस समय मझार। प्रथम स्वर्ग सो धर्म मझार ॥
साधर्मीशभासक्रसिंहासने।शक्रेंन्द्रबैठेहार्षितघने ॥ ६ ॥
चौरासीसहश्रसमानिकदेव।चौगुनेआत्मरक्ष करे सेव ॥
तीनोंपरिषद देवोंसेहीभरी।बारहचउदहसोलहसहश्रकरी ॥
अष्टइन्द्रीराणीयोंसदासुखकार।सातसेनाऔरबहुतपरिवार ॥
वज्रायुधकरअतिशोभाय।अवधीज्ञानेदेखे जगमांय ॥ ८ ॥
अती दयालुमेघरथनृपदेख।दिलमेंहार्षितहुवे विशेख ॥
हुलासितकहेसुनियेंसुरवृन्द ।धन्य२पृथवीएसेनरेन्द्र ॥ ९ ॥
मेघरथराजाजैसादयाळ।औरकोइ नहींदेखताहाल ॥
सबदेवगुणानुवादकियाप्रमान।दोदेवकोआयाअभिमान॥१०॥
इंद्र भूले ऋद्धी सुखमांय। देव छोडनरके गुनगाय ॥

अभी कहुं तो नही माने बात ।करके बतावूं मैं सक्षात॥
आये दोनों तत्क्षिण भूमंड।अतिही धरते मन मैं घमंड ॥
एकने रूप कबुतर का किय।एक पारधी शिकरा लेलिय॥१
आगे कबूतर उडता आय । मेघरथराय केगोदी बैठाय॥
थर २ कम्पे कोमल तन । देखी भूप करुणा व्यापी मन॥१
हाथ फेर कर कहे बुचकारा।डरे मत तुझे कोई नहीं मारन
उस वक्त पारधी क्रोधातुर आय।कहे नृपसे छाडो पारवा तांय॥
मेरा शिखरा भूकसे मरे।शीघ्र दो पक्षी भक्ष यह करे ॥
कहे राजा सुनो पारधीवान।यह कबुतर है जीवनप्रान॥१
यह तो मेरे से दियानहीं जाय।मंगा मिष्टान लेले जो चहा
निजात्मसम सब जानो प्राण।वैरबदला है दुःखकी खान॥
निजहित चहा मत अन्यको संताय।तेरी आजीविका दूं मैं करा
त्रटकी पारधी कहे ज्यादा मत बोल।मेरे पारवा है अमृततोल॥१
छोड २ शीघ्र इसके तांय । रखे प्यारा शिकरा मरजाय
नृप कहे शरण यह आया मोय।प्राणान्त नहीं देवूं मैं तोय ॥१
और जो मांगे सो देवूं देने योग्य।अनेक वस्तु जगमें मनोग्य
शिकारी कहे ऐसा प्यारा यह तुझ।तो तेरा मांस शीघ्र दे मुझ॥१
नृप कहे यह सुख से लीजीये।क्षण भंगुर देहको क्या कीजी
जो इस से कुछ उपकार ही होय।तो लेले यह लगे तन मोय॥
कमर से छुरी निकाली तत्काल।बोले मंत्री हाथ तब झाल॥
महीप यह कूकार्य क्या करो।एक पक्षी के लिये आप मरो॥२

हुकुम देवें दुष्टकोनिकाल।छोडो कबुतर उड जाताहाल॥
। कहे यहां न होय अन्याय।मेमेरा मांसदेतांइसतांय॥२२॥
गी पुत्रउमराव सुन आये सब।करधरीकेहकरो।क्यागजब॥
पारेवा यहइसकोआप।हमारेशिरलेतेयहपाप ॥ २३ ॥
जमांस देने का कोइ नकहे। रायपरमार्थयह तब लहे॥
।कहे सब तुम दूरही रहो। नहींमानूंमैंकिसकोकहो॥२४॥
सुन चुपसब देखही रहे। नृपतीतबपरधीसेकहे॥
सस्थानका देवुंतुझमांस।अचंभीपारधी करेप्रकास ॥२५॥
ाम का मालजरा मैंनहींलहूं।कबुतर बरोबर मांसदोकहूं॥
जु राय मंगाइ उसीवक्त।एकपलवेमें कबूतर रख ॥२६॥
ाका मांस काटशीघ्रधरा।बरोबर न हुवाफिरमारा छुरा॥
ट के मांसत्राजु मेंधरा।तोभीपरेवेबरोबरनहींचडा॥ २७ ॥
।शक्ति सेकियाबजनअपार।कैसेभीहरावूं नृप इसवार॥
ाधज्ञानसेदेखेरायमन।महावेदनाजरानहुवा खिन॥२८॥
न्तेरायसबमेरातनजाय।तोमुझकोदुःखकिंचितनाय॥
न्तुमत जावोकबुतरप्राण।प्रभूपारपडोमेरीजबान॥ २९ ॥
।कपमांसकाटकाटधरे।देखदेवआश्चर्यअतिकरे ॥
ूर्वदया नृप घटरहीछाय।तहां तीर्थंकरगौत्रउपाय॥ ३० ॥
ातबमनमेंगयामूरझाय।हाराजानअधिकशरमांय ॥
रेवापारधीअदृश्यभये।नृपततनकेदुःख सबगये ॥ ३१ ॥
र्यसमभयाशभामेंप्रकाश।देवताप्रकटातब आकाश ॥

मुकुट कुंडलवरवस्त्रशोभाय।मेघरथरायके सन्मुखआय ॥३२
करांजलीजोडकियाप्रणाम।नम्ररहा करेसोगुनग्राम ॥
शक्रेंद्रपरशंसाआपकीकरी।वोवचनमें मानानहींजरी ॥३३
धरगुमानआयाआपहजूर।दुःखआपकोदियाभरपूर ॥
दयासेंकिंचितनहींचल मन।वारम्वारआपकोहैधन ॥ ३४
मेरेलायक कुछकीजेहुकम । सो ही मे बजावूइसदम ॥
रायकहेमिथ्यामतिदोछोड।धारोजैनधर्महोवोप्रोड ॥ ३५
सुन देवतासम्यक्त्वलीधार।वारम्वारकियानमस्कार ॥
हर्षितअमरस्वर्गमेंगया।नृपयशःजगमेंफेलीरया ॥३६ ॥
दोहा—मेघरथनृपदेखीया।मतलबीयह संसार ॥
वचाकाळ मूख से ।छायावैराग्य अपार॥ ३७ ॥
राजाऋद्धी तज कुटुंम्बको।लीना संयम भार ॥
करणी करी अतिनिर्मळी।वहुत पुर्व लगसार ॥ ३८
सलेपणा आयुपुर्ण करा।गये सर्वार्थ सिद्ध ॥
तेंतीस सागर का अयुपा । सर्व से उत्कृष्ट रिद्ध ॥३९
तेंतीस सहस्र वर्षान्तर । क्षुधा वेदनी प्रगटाय ॥
अत्यन्त श्रेष्ट पुद्गल का।मनसा अहार प्रगमाय ॥ ४०
तेंतीस पक्ष वीते पिछे । लेते श्वासोश्वास ॥
दोसो छप्पन मोतीका । चन्द्रवा शिर खास ॥ ४१ ॥
चौदह पूर्व के ज्ञानके । ध्यान में रहते मग्न ॥
एकावतारी शुद्ध सम्यक्त्वी । लगी मोक्ष से लग्न ॥४२

दया प्रभावे प्राप्त भये । अतुल्य सुख संसार ॥
आगे सुख देवें सर्व को । ईद्र महा पद्वी धार ॥ ४३ ॥

चोपाइ

जंबुद्वीपके भरत मझार। हस्तिनापुर अतिही मनोहार ॥
'विश्वसेन'भूपति पुण्य वन्त।'अचिरा'राणीगुणगेहकन्त॥४३॥
एकदा देशमें पाप प्रयोग । महामारी का प्रकटा रोग ॥
प्रजाअरुश्वामीअतिदुःखपाय।किंचितूहीनहींचलेउपाय ॥४५
'मेघरथ'राय के जीव उस वक्त।'अचिरा'उदर उपनेपुण्यशक्त॥
चौदेंहस्वप्न देखे उसही वार । राजाराणी हर्ष अपार ॥४६ ॥
राणी मन आई दया तुरन्त । मेरी परजा दुःख पाय अत्यन्य ॥
देवूं मेंसबकादुःखगमाय । यों विचारमहलऊपरआय ॥४७॥
चउदिश देखे दृग पसार । मरी रोग भग गया उस वार ॥
शान्ती शान्ति बताई सबस्थान।राजा प्रजाहर्ष अस्मान॥४८
प्राति दिन घर पुर देश के मांय ।सुख पति यशःवृद्धि पाय ॥
सब समजा गर्भ का प्रताप ।यह प्राणी पुण्यात्म अमाप ॥४९॥
सुख से नव मांस पूर्ण होय । प्रसवा पुत्र सर्व जग प्रकाशोय॥
छप्पनकुमारिका चौसठइन्द्र।आसनचलाजानाजन्मजिनेन्द्र॥
सब निज २ परिवार सज आय।जिन जननि को शीशं नमाय ॥

केइ भूंझाडे केइ जल छिटकाय।केइन्हवायदर्पणदेखाय॥५
इन्द्र जिनको मेरु शिखर लेजाय।जन्मोत्सव अति हर्षे करा
फिरलाकर धरेमाताजीपास । रत्नसूवर्णकीकरी वर्षास ॥
प्रातवधाइ नरेश्वरपाय । पुरदेशमेंजन्ममोत्सवकराय ॥
अमारीपडहवजायसवस्थान।छोडदियेसबबंधीवान ।
दानशाळा में दे इच्छित दान।सबकोकराया भोजनपान
गुणनिस्पन्ननाम स्थापउसवार।शान्तीकरीसो शान्तीकुमा
तीनोंज्ञानसहित भगवन्त।सर्वपारंगक्याविद्याभनंत॥
चौंलीस धनुष तनकंचन वर्ण।एकेलक्ष वर्षआयू शुभकर्ण
पचीससहंश्र वर्ष कुमरपणेरहे।मांडलिकेराजवर्षइतने मे
फिर चक्र रत्नप्रगट भया।षट्खन्डका राजजब लया॥
अश्वगजरथ चोरासी लाख । छिन्नूक्रोड पायक सूत्रसार
छिन्नूसहंश्र राणीयोंमनोहार।बत्तीससहंश्रनरेश्वरआज्ञाध
चउदह रत्न वर नव निधान।आत्मरक्षकक सुरदो सहंश्र जा
क्रोडों देवता आज्ञा मांहीं।ओर बहुत ऋद्धि सुत बताइ ॥५
पचीस सहश्र वर्ष भोगवा राज।अनित्य जाने संसारके का
सहंश्र पुरूप संगसंयमलिया।मासान्तरकेवलज्ञानीभया॥
दया धर्म फैलाय जगत् मझार।पचीस सहंश्र वर्ष कियाउपक
कर्म क्षय कर पहोंचे शिव पुर।अजरामर अक्षय अनंतसुख व
दोहा–अहो भव्य अन्तर दृष्टी से । देखो दया के फल
एक कबूतर रक्षा से।ऋद्धि सुख पाये विमल॥६

सम्म दृष्टी मंडलिक चक्र वर्त ।साधु केवली जिन ॥
यह छः पद्वी अति श्रेष्टाएकही भव में लिन ॥६२॥
एसा जान हितर्थि यों । पालो दया सदाय ॥
तो ऐसेही सुख पावोगे । संशय इसमें नाय ॥६॥
स्वपरात्म सुख वरन । प्रणाति पात पापोद्धार ॥
ऋषि अमोलख रचा । यह प्रथम अधिकार॥ ६४ ॥

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज
के समप्रदाय के बाल ब्रह्मचारी मुनि
श्री अमोलक ऋषिजी महाराजरचित
प्राणातिपात पापोद्धार नामक
प्रथम मंजिल समाप्तम्

॥ १ ॥





मंजिल दुसरा--"मृषावाद पापोद्धार"

पूर्व विभाग-" झूठ "

मृषावाद का अर्थ

दोहा-मृषा कुछ रखा नहीं । पाप कार्य जग मांय ॥
मृषा वदि के आत्म को । सर्व पाप लग जाय ॥१॥

प्रश्न व्याकरण सुत्रानुसार मृषावाद पापका वरणन्

दोहा-प्रश्न व्याकाण सूत्र के । द्वितीय आश्रव द्वार ॥
मृषात्वाद के गुण कथे । सो यहां करूं उचार ॥२॥
पाप कैसा ? रू नाम तस । कोन करे जग मांय ॥
तस फल अरू सद्बोध कुछ। इस मंजिलमें कथाय॥ ३ ॥

मृषावाद केदुर्गुण-चोपाइ छन्द

लहु सेलग-सवसे लघु यह । लहु चंचल-गुण लघु करेह ॥

यकरदुःखकरअपयशकर।वेरअरतीरागद्वेषघर ॥ ४ ॥
शर्मायाअविस्वासस्थान।नीचैनरकेयहलक्षनजान ॥
ज्ञारहित अप्रीतितकरतार। साधुनिंद कृष्णलेशाधार ॥५॥
गतिदाता भेमावे संसार। ज्पूनंास्नेहीअनुगतआवलार ॥
ातेअरुधन नशाय । झुठ बोलयहगुण प्रगटाय ॥ ६ ॥

मृषावाद के नाम अर्थयुक्त—चोपाइ छंद

।लियअलिक, अरुसंद्धधुतारा। अणज्जअनार्यमायामोसाठगरा
।संतक'-अच्छत्राबातबनावे।'कूडकवड'विप्रितवदावे॥ १ ॥
निरथ्थयनिर्थकभेवस्तुदुर्गुण। विद्वसेगरणिज्जानिंदकथुण ॥
गणुज्जवक्रकक्रूणेसयपापस्थान। वंचणायेवंचकमिथ्यकर्तजान
ोइपैछाहलकासबसेयह उज्जतउक्कल न्यायसेउलट छेह ॥
ाट्टआर्तध्यानअभ्यारव्यान।किव्विसमलीनवलयलपटान ३॥
हंणउडोमम्मणगुप्तरखे।तूमेगुढणियइनीतपखे॥ ॥
।च्चपओनकहेनिजविचार।अमसंमज्जओअतिखोटाआचार॥
।सेत्रसंधतणझूठहीसंधे।विविखासतुसत्रू अवहीयनंदे ॥
।पाधीअशुद्धवस्तुगुणढको।यहतीसनामझुठकेवके ॥ ५॥

झुठबोलने वाले के नाम—मनहर छंद

क्रोधी मानी मायी लोभी।रागी द्वेषीभयी हाँसी।
लज्जाक्रीडा हर्षी शोकी।चतुरबहुत बोलीया ॥

पापी असंयती ।अ[१७]व्रति [१८]दुर्मतिअति ।
[१९]चंपलखुशा[२०]मंदथिया।खोटमाप[२१]तोलीया॥
[२२]जूगारी [२३]ब्याज व्यापारी । [२४]कपट के भेष धारी ।
[२५]चुगल [२३]ऋणी बला[२७]त्कारी । [२८]जार [२९]चोरे धन लिया
खोटे [३०]मत स्थापी । [३१]आर्थिक [३२]गार्थिक व्यापी।
एते जन झूठ बोले। सूत्र ग्रंथ खोलीया ॥६॥
नास्तिक मति नहीं मानत हैं पुण्यपाप ।
जीव स्वर्ग नर्क करणीफळ न बतावे हैं ॥
कितनेक अछत्ति रु अनमिलती वाणी वदे ।
जगत् और वस्तु सर्व इश्वरही बनावे हैं॥
जगत् व्यापी इश्वर कहते हैं केइ जन ।
अक्रियक आत्मा को केइक ठरावे हैं ॥
इत्यादिक मतन्तर के जो स्थापी जन ।
मृषा वादी अज्ञानी है जिनजी फरमावे हैं ॥७॥

सत्य वचन भी असत्य जैसे—महर छंद.

श्रोतादिक इन्द्रि कर । विषय जो लियेवर।
प्रणमें मन माहीं तासु । उलट उच्चार है॥
अंध काणा कुष्टीजार । चोर लुच्चा गुन्हेगार ।
सच्चे तोभी झूठे वेण । पर को दुःख कार है ॥
जासेकृत भंग होय । कूपंथ से लगे कोय ।

दुर्गुण उत्पन्न करे । ऐस बोलन हार है ॥
सर्व ये हैं मिथ्यावादी । सत्यही असत्या सादी ।
ज्ञानी के अमोल वदो । बचन संभार है ॥८॥

स्थूल झूठ—मनहर छंद

स्थूल मृषावादी के प्रकार पांच कहे जिन ।
कन्या गौ भूमी थांपण शाक्षी के काज है ॥
कन्या शब्द माहें जीव दोपद ही लीजे सब ।
गो में चउपद भू में अपद समाज है ॥
थापण दबाय खोटी साक्षी जो भरे जाय ।
इन पांच काम करे झूठ जो अवाज है ॥
स्थूल मृषा बोल आगे भेद याके देवूं खोल ।
देखीये जग में कैसा निपजत यहांज है ॥९॥

दोपद अलिक—मनहर छंद

पंचम आरे कली मांइ । तात मात हो कषाइ।
पुत्र पुत्री बेंचने का । धंधाइ चलाया है ॥
अंगो पांग बुद्धि हीन । कुलछंनी गुणछिन ।
तही की परशंसा कर । देत सो फसाया है ॥
गुनी जान ले सो जाय । दुर्गुणी देख पस्ताय ।
जन्म जाय क्लेश मांय । कुल धर्म लजाया है ॥

नित्यही देवे सराप । पावत बहूत संताप ।
झूठा-यश धन गमा के । कू गति सिधाया है॥१०
होय के विचमें दलाल।करे है कर्म चंडाल।
हराम का चाहे माल । शाने बन आवे हैं ॥
हजारों का करे ढग। लुच्चे परपंची ठग ।
दुष्ट मात तात धन देख लल चावे हैं ॥
नेन वेन श्रवन हीन । अशक्त शिरबालखिन ।
मशाणिया बुड्ढेकों वो योवनियां बतावे है॥
रूप बल बुद्धिवन्त । जोडी का जो चावे कन्त
बलात्कारे पापी पंच । बुड्ढे कों परणावे है ॥ ११
कल्पे बाल काले करे। पत्थर की बत्तीसी धरे।
अकडाय कमर बान्ध । चस्में चक्षु ढांके है ।
जामा पहेर जाडा बने । गरदन तो नाना भने
निर्लज्ज गधेडी चडे । दो नर पकड राखे है ॥
बजारे धाडेती जाय । निर्दयी सज्जन हर्षाय ।
बिचारी अबला बाल । लावे अश्रू आँखे है ॥
धर्म बुद्धि जाति पर । धन तन जन घर ।
चोडे धाडे देखलो धोला में धूल न्हाखे है ॥१२
नाम चलानेकी रुढी । अजब चली जग मांहीं।
खोले पुल लाड़ तोभी । नाम न रहाही है ॥
क्रय सुखमें लल चाइ । दुर्गुण म्हदुण टेराइ ।

देवे पुत्र दुसरे तांइ। तेतो लेवे हर्षाइ है ॥
फिर दुर्गुण प्रगटाइ । दोनो बाप को लज्जाइ ।
लेनहार पस्ताइ । व्यर्थ पूंजी को गमाइ है ।
नाम धर्मही से रहाइ । देखो ग्रंथ सुत्रमाइ ।
चावो नाम जो रखाइ। तो धुंधीदो छिटकाइ येहै१३॥
दोपद पक्षीभी गिनाइ । तोते मेना रु शीकराइ ।
मयुर कावर कुकडाइ। आदी बेंचन के तांइ है ॥
करे ताहीकी बडाइ । ये तो नाचेरू गाइ ।
आदि गुण के बताइ । देवे लेने जो आइ है ॥
हर्षी स्थान जो लेजाइ । तैसेगुण न देखाइ ।
तब अति पस्ताइ । देवे शराप ता तांइ है ॥
ऐसी झूठ दुःखदाइ । होवे दोनो नर को भाइ ।
आगे दुर्गति ले जाइ। ताते छोडे सुगुणाइ है॥१४॥

चौपद अलिक-मनहर छंद

केइ चौपद के काज । सजते हैं झूठे साज ।
लेने दाम अधिकाज। जोग द्रव्यों का मिलावे हैं॥
भैंस बकरी रु गाय । देवे स्थन तस फुलाय ।
दूध बहुते दे बताय । मोल वहूत उठावे हैं ॥
हाथी घोडे ऊट बेल । अप लछनी करे फेल ।
ताको सणक्षु बताइ । लेन हार को फसावे हैं ॥

लेजाय गुण नहीं पाय । अति मन में पस्ताय।
थोडे नफे काज अज्ञानी। कर्म यों धावे है ॥१५

अपद-या मोसालिक मनहर छंद

अपद खेत अरु घर । बाग कूवा सरोवर ।
वस्त्र अनाज भूषण।आदि बहु प्रकार है ॥
गिलट चढावे । सच्चे साद्दश वनावे ।
भोले लोको कों वह कावे कहे येही जग सार है
देखी भभक लेजावे।सस्ता जान हर्षावे ।
पीछे वहुत पस्तावे । जब निकले निसार है ॥
ऐसी रुढी कलीमांही।स्थानो स्थान ही देखाइ ।
हाथ परतीत गमाइ।चोर वने साहूकार है ॥ १६

थापणमोसा—मनहर छंद

विस्वास से मित्र आय।स्वजनो से धन छिपाय ।
साहुजान थापन धरे। मेरे आगे काम आवेगा ॥
विश्वास घाती महा पापी।दुष्ट लालच में व्यापी ।
पीछे आके मांगे जवाना कही तापवेगा ॥
सुन सो निरास होय।केइ धस्की प्राण खोय ।
इज्जत गमावे केइ । पीछे पस्तावेगा ॥
ऐसे अनर्थी जन ।जिदेही पाये मरण ॥

धन छोड पाप बान्धा नरक सिधावेगा ॥ १७ ॥

कूडीसाक्षी—मनहर छंद

बकीली रु बालिष्टरी । पुण्य जोग पद्वी वरी ।
झूठे प्रपंच रचि करी । दाम को कमावे है ॥
केइ बीच लांच खाय । सेही शरम में आय ।
खोटी शाक्षी भरने को राज शभा मांहे जावे है ॥
झूठे को सच्चा बनाय । सच्चे शिर कलङ्कठाय ।
सत्य वन्त शरमाय । अति पस्तावे है ॥
कर्ता ने कराने हार । दोनों ही है गुन्हेगार ।
आखिर सत्य होवे जहार। पापी दुःख पावे है॥१८॥

सहसा भाषण—मनहर छंद

केइक मत्सरी जन । मेला रखे सदा मन ।
गुणी गुण त्याग कर । दुर्गुण ही लेवे है ॥
ज्ञानी ध्यानी जपी तपी । आचारी शीतल खपी ।
इत्यादि की कीर्ती सुन । मन दुःख सेवे है ॥
करने को यशः हान । रखने अपना मान ।
छत्ते रु अच्छते कलंक । तास सिर देवे है ॥
संत सती को सताय । महा पातक उपाय ।
निंदक छिदर्री दोनो भव दुःख लेवे है ॥१९॥

रहस्य भाषण—मनोहर छंद

सद्गुण दुर्गुण भाइ । सर्व वस्तु मांहे पाइ ।
गुनी गुन गृह दुष्ट । दुर्गनही लेवे है ॥
विरोद्ध का वक्त पडे । रहस्य प्रकाश करे ।
पीडीयों की बीती केइ खोटी बात केवे है ॥
गरीब रहे शरमाय । जबर क्लेश वडाय ।
कितनेक मृत्यू पाय । प्रत्यक्ष दिखेवे है है ॥
अपनें न अवगुन देखे । अन्यका कले जा सेखे ।
गमावे जन्म अलेखे । निगोदे में रेवे है॥ २० ॥

मिथ्या उपदेश—मनहर छंद

केइ जग मिथ्या मति । नाम रखे साधु यती ।
सत्या सत्य जाने नाहीं । झूठी टेक पकडी ॥
दया धर्म को उत्थापे । हिंसा माहे धर्म स्थापे ।
सच्चे को झूठा बनावे । एसीलेखे छकडी ॥
पेट भरेंने के काज । जग का करे अकाज ।
स्थाप के झूठे समाज । पक्षे मारे जकडी ॥
एसे मिथ्यावादी विषवादी गुनी अपवादी ।
संगती को साथ ले । जाय नरक सकडी ॥२१॥

खोटा लेख–मनहर छंद

व्यापारी आधार तृष्णा वश करे व्यभिचार ।
रुक्के वही मांहे सही वे सही बनावे है ॥
पीछे दे अंक चडाय। आगे को दे विन्दु ठाय। ॥
जब्बर हो फरियाद करे । ताहे लूट खावे है ॥
स्टांप नकली बनाय । देते अक्षर ही मिलाय ।
लांच दे सायदी कर । कोरट चठावे है ॥
जान के धस्के लाचार।बिन मोत डाले मार ।
ऐसे जाय यमद्वार खुब मार खावे है ॥ २२ ॥

सत्य वचनभीझूठजैसे—इन्द्र विजय.

चन श्रवण कर धर्मी।धर्म तजी कू मार्ग जावे ॥
चने भांगे लिये वृत को।जो बचने कोइ घात जो थावे ॥
नबचनेगुणी गुणढके । अरुजो जिनाज्ञा विरुद्धक हावे ।
तबजानोअसत्यबचन है।सत्य सोजानभोलेभरमावे॥३३॥
यी पुरुषोंने शास्त्ररचे जे।कोकादिआसन भेदबतावे ॥
ऊंचाटन आदिमंतरु । तंत्र औषधी जेह दर्शावे ॥
यज्ञ शीकारविधी रु अखतरेकर पर प्राण सतावे ॥
तबजानोअसत्य बचननै।सत्यसोजाने भोलेभरमावे॥३४१

झुठ के दुर्गूण—इन्द्र विजय

अप्रतीत लहेजनअसत्य से जमींहुइ पेठ कोतुर्त गमावे ॥
अपकीर्ती अपयश होवे अरु। सत्य कहे सो भी झुठेगिनावे
लवाड लुच्चा ठग धूतारा। गापोडी शंखयों नाम स्थापावे
असत्य कोपाप अमापसंतापदे।ऐसेभावप्रत्यक्षदेखावे॥२५
झूठेकी विद्या मंत्र जंत्र रु बहुत कष्ट सहे सिद्धी न थावे।
देवदानव नरेश्वर रूठत। शभापंचों में बोल न पावे ॥
वंदनीय केई निन्दनीय हुवे।जग बोल गमाइ पीछे पस्तावे
असत्यकोपापअमाप संतापदे।ऐसे भावप्रत्यक्षदेखावे ॥२६
झूठाकहेजग ऐंठ वाडेको।भलाजनताकीसूगलावे ।
भंगी कूकर काग भखे तस।धूल पडे ऊकरडे पठावे ॥
तैसेही झूठा अपमान लहे सवनीच कहे मर दुर्गति जावे ॥
असत्यका पाप अमाप संताप दे ऐसेभावप्रत्यक्षदेखावे॥२७
तोतला चोवडा लेत वागासी।मूंगेगुंगे जेह दिखावे ॥
मुख पाक हीन दाँत दाढ मुख थूक उडे दुर्गंध महकावे।
एकेंद्री वेन्द्री तेन्द्री चोरेंद्री सन्नीअसन्नी तिर्थचजोथावे।
यह सब प्रताप असत्यकेपापकेफल भोगे आँखआँशुवावे।
बहुत असत्य से जाय नरक में।यम देव तापे अ.न दवावे
छुरी कटारी काँटे त्रिशूलादी।शास्त्र से तस मुख भरावे ।
वज्र प्रहार वदान विदारत।थाप अमापही मुह पे लगावे ।
असत्य का पाप अमाप संतापदे।दोनोंहीभवमें देख यहभावे।

कथा—तीसरी.

झूठ के फल बताने वाली—'वसू राजा' की

दोहा—इस असत्य के पापसे । दुःखी हुवे हैं अनंत ॥
ताहीसे यह जग भरा।बचन हार को संत ।।१॥
किंचित असत्य उच्चार से।वसु नृप पाया दुख ॥
शलाका चरित आधरसे। कथूं कथा यहां सुख ॥

चोपाइ—छन्द.

'सुक्ति मति'नगरीमनोहार।विश्ववसु नृपती सुखकार ॥
राय अंगना' श्रीमती 'गुणवन्त ।वसूपूत्रउभयको कन्त ॥ ३ ॥
ता नगरी में कुलाचार्य एक।'खीरकंदबक नाम अधिकविवेक ॥
स्वतीमती'नारीगुण धार ।'पर्वत'पुत्र ताकेमनोहार ॥४॥
कलचार्य की कीर्तीसुनी।नृपती 'वसू'निजपुत्र भनी ।
धर्म कर्म सिखाने काज।ला वैठाये जहां महाराज ॥ ५ ॥
आचार्य हित धर पढाय।ता समय एक विप्र पूत्रआय ॥
'नारद' नामें महा गुणवन्त।आचार्य पद लुली नमंत ॥ ६ ॥
अर्ज करे जोडी दोनो पान । कृपा कर दो विद्यादान ॥
किर्ती सुन चरन में आया।आचार्य जी तसपठनवैठाया ॥७॥
दोनोंको पढत विप्राणी देख । नम्र हो पति से कहे विप्रेश ॥

अन्य को आपदेते होज्ञान। अपनेपुत्र को रखेअज्ञान ॥ ८
यह युक्तो नहीं आपको नाथ। आचार्य कहे सुन मुझवात
अपनो पुत्र है मूर्ख शिरदार। सीधी शिखाये उलटी लेधा
याको हृदय बडो कठोर। और भी है पुण्य का काम जोर
तीनोंकीपरिक्षा बतानेकाज। दमडी २ कीकोडीदी त्याज
कहेतीनों से बजार में जाय। 'पेटभर भोजन कर आवो
खुशहो तीनोंबाजारमें आय। 'पर्वत 'फुटाणे लेकेखाय॥१
वसू नारदभले कर दाम। वस्तुखरीदी कोइ निकाम ॥
वेंचीगरज वन्त धरजाय। दाम बहूत मिले हर्षाय ॥ १२ ॥
इच्छित भोजन किया पेट भर। मूल पुंजी ले आयेघर ॥
तीनो आये गुरुजी के पास। दोनों खुसी 'पर्वत'उदास॥१
पूछा तीनों सें वीता कहा। दम्पति पुण्य का परिचयलह
तो भी पूत के मोह वशहोय। कुछेक विद्या पडाये सोय ॥१
एकदा वसु भूले निज पाठ। गुरू रुष्ट हो मारन लगे का
रक्षा करी विप्राणी आय। मार बचाइ वसु हर्षाय ॥१
कहे वसु मातुश्री मांगो वचन। विप्राणीकहेवक्ते दीजो
वचन भंडारे रख सुखे रहाय। तीनोंही पढे चित्त लगा
दोहा—एकदा जाय आकाशमें। दो मुनि विद्या धार ॥
पढाते देख आचार्य को। करें आपस में उच्चार॥ १
तीनों विद्यार्थियों विषे। दोतो नरक में जाय ॥
एकही जायेगा स्वर्गमें। सुनआचार्य विस्माय ॥ १

चौपाइ

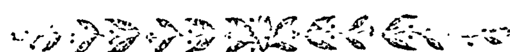
कोन स्वर्ग कोन नर्क में जाय।करने परिक्षा आचार्य चहाय॥
कणिक के तीन कुर्कट बनाय।एकान्त कहे तीनों को बुलाय॥
जहां कोइ देखन नहीं पाय । तहां मार लावो इन तांय॥
र्वत वसु दो एकांन्त में गये।मारी मूर्गा गुरूसामें धरदये॥२०॥
नारद चिन्ते मन मझार । सर्वज्ञ तो देखे सब संसार ॥
त्यक्ष में भी देखी रहा । गुरू आज्ञा कैसे पालूं यहां॥२१॥
गुरु पास कुकडा ले आय । उपजो सो सब दिया सुनाय॥
निज पुत्रकों नर्कगामी जान।आचार्य दुःख पाये असंमान॥ २२
वैराग्य पाय जिन दिक्षा धार।आयुष्य कर गये स्वर्ग मझार॥
विश्ववसु नृप वृद्ध वय जान।वसु पुत्र कों गादी पे ठान॥ २ ॥
ली जिन दिक्षा स्वर्ग गये । नारद भूमंड में फिर रये॥
र्वत पिताका पद संभाल । विप्र शाह के पढावे बाल॥२४॥
दोहा—एकदा वसु सु पति । बन क्रीडा कों जाय ॥
विन आश्रय पक्षियों । पडते देखे अथडाय॥ २५ ॥
आश्चर्य धर कर आगे कर । देखें तहां ते जाय ॥
अदृश्य शिला हाथे लगी । हर्षी गुप्त ले आय॥२६॥
राज सिंहासण तल धरी । वर वैठे करे न्याय ॥
अधर सिंहासण तल लखी।महिमा यों फेलाय॥२७॥
सत्य प्रभावे भूप का । सुर सिंहासण रहे झाल॥
सत्य वादी प्रगट भया । को जाणें कपट ख्याल॥२८॥

चौपाइ

एकदा गुरु भ्रात मिलने काम। फिरत नारद आये पर्वत धाम॥
तब पर्वत वेद छात्र पढ़ाय। "अजैर्यष्टव्य मिति" श्रुति आय॥२९॥
बकरा होमने को पर्वत कियो अर्थ। नारद कहे मत करो अनर्थ।
निर्जीव शाल गुरुजी अर्थ कहा। विवाद तब दोनों के रहा॥३०॥
अज्ञानी पर्वत नहीं छोडे हट। बचन पक्के किये दोनों ही झट॥
सत्य वादी है वसु भूपाल। न्याय करावे ता ढिग चाल॥३१॥
जिसका झूठा निकले सवाल। उसकी जिव्हा छेदना तत्काल॥
पर्वत की माता जाना भेद। मन मांहि अति पाइ खेद॥३२॥
गुप्त आइ वसु नृप पास। वचन मांगा करी अरदास॥
मेरे पुत्र के बक्षीये प्राण। वीतेहाल सब किये बयान॥३३॥
पर्वत झूठा नारद सत्य कहे। यह किये मुझ पर प्रलय॥
न्याय लेने आवेंगे तुम पास। बचावो शीघ्र कोइ कर प्रयास॥३४॥
वसु वचन फस मानी बात। ता समय दोनों लड़ते आत॥
और लोक बहुत ही सराय। वसु नृप पर भरोसा लाय॥३५॥
नृप न्याय सिंहासण हो सवार। मिश्र वचन यों करे उच्चार॥
अजा शाली दोनों अर्थ होय। इम श्रुति का गुरु कहा सोय॥३६॥
यों बोलत धरणी धसे तत्काल। नरक में पहोंचे करके काल॥
देख झूठ का फल प्रत्यक्ष। सहु लोक करे नारद का पक्ष॥३७॥
नारद का हुवा बहुत सत्कार [illegible] के द्वार॥

...ैत अति अभिमान भराय। हिंसक यज्ञ स्थापा अन्ध जाय॥
...लट अर्थ वेदों के कर। वोभी गया नरक में मर
...ारद हिंसा यज्ञ किनेबंध। जिसका आगे वहुत सम्बन्ध ॥१३॥

...हा—इस द्रष्टांत से देखीये। हिंसक झूठ उच्चार ॥
वसु पर्वत गये नरक में। अपयश जग मझार॥ ४१ ॥
जो असत्य सदा उच्चरे। ताकी कौन गति होय॥
आत्म हितेच्छु सुज्ञ हो। झूठ म बोलो कोय॥ ४१ ॥





मंजिल दूसरा–"मृषवाद पापोद्धार."

उत्तर विभाग—"सत्य"

दोहा–सर्व व्रतों में मुख्यव्रत।सत्य एकही जान ॥
इसे आराधे विशुद्धजो।उस के सुख निधान ॥१
धर्मोत्पत्ती सत्य से।करे आत्म कल्यान ॥
विघन हरे मङ्गल करे।गृहो सत्य मतिमान ॥२॥
प्रश्न व्याकरण सूत्र के।द्वितीये संवर द्वार॥
महिमां सत्य वचन की।करी जिनेश्वर उचार ॥३
गुण निष्पन्न नाम अर्थयुक्त।सत्य उचार न विध
महिमा सत्य वचन की। सद्बोध वरणु रिध॥ ४

सत्य वचन के नाम—चौपाइ छन्द

'सुद्धं'-निर्दोष,'सुइयं'-पवित्र।'सिवं'-कल्याण,'सुजायं'-सुजाति
'सुभासियं'-यह अच्छा वचन।'सुदिटं'-सुदृष्ट,'सुपइट्ठं'-सुथपन
'सुपइट्ठयसं'सुयश:जगकरे।'सुसंयमीयुइ'-सुनीचरउचार

पतनरपंतबलीसुविधेजान।सत्यकोसबहीदेतहैमान ॥२ ॥
मसाधु धर्मआचरणकरे।तंपनियमसत्यवन्तसमाचरे ॥
ातीपंथसत्यहीबताय। लोकोमेंउत्तमसत्यगिनाय ॥ ३ ॥
ान गामिनीविद्यासिधसत्यकरे।स्वर्गमार्गमोक्षमार्गसंचरे॥
वतह'-यथातथ्यहैसत्य।उज्जुय'-शरल,अकुटिलपथ्य ॥४॥
परत्थ' सत्यअर्थदर्शाय।'अत्थतो'-परमार्थविशुद्धकराय ॥
जोयंकरं'-उज्वलसत्यकरे।प्रकाशहोयत्रि-लोकसोभरे॥५ ॥
विखवादी-सत्यवन्तहोय।यथार्थकहेसत्यवन्तसोय॥
ुर-सत्थंप्रत्यक्षदेवजिसा।यहतीसनामसत्यकेगुणऐसा॥६ ॥

सत्य भाषा के लियेसंक्षेप में व्याकरण—इन्द्रविजयछंद

ाम'सोनाम,'अख्यात''क्रियापदनिपातअव्ययएकरूपरहाव

---

(१) देव, मनुष्य, पशू, घट, पर्वत इत्यादी को नाम हते हैं.

(२) करा, करताहुं. करेगा, इत्यादि काल बतावे सो कियापद कहाजाता है.

(३) क्रिया पद के जैसे पलटे नही; सदा एक रूप बनारहे जैसे-तथा, अथवा, वहवा इत्यादि को निपात कहते हैं.

(४) शब्द के पहिले अक्षर रखने से शब्दकाअर्थपलटजाय

'उपसर्ग' शब्दके आद अक्षर धरे मूलशब्दमें भेद पडावे ॥
'तद्धित' दो शब्द एककरे जो, 'समास' के भेद सात कहावे ।
'सन्धी' मिलाप करे दो शब्द के पदसो पूर्ण शब्द करावे ॥ ७ ॥

जैसे-निरा×बल सु+बोध. इत्यादि को उपसर्ग कहते हैं.

(५) दो या बहुत शब्द मिलने से एक शब्द बने जैसे ज महल, भाबाप, इत्यादिको ताद्धित कह ते हैं.

६ समास के ७ भेदः- (१) अव्यय भावसो-अर्थ भ[illegible] नेमें काम आवे जैसे-प्रति-वर्ष. बे-शक इत्यादि. [२] त[illegible] सो समास के अंत के शब्द पेही लक्ष रक्खाजाये जैसे राजाजी का हाथीपागलहोगया. इस शब्द का हाथी पे धार है परन्तु राजाजी पर नहीं. इस तत्पुरुष समास विग्रह करती वक्त विभक्ती लगाइ जाती है,

(३) द्वंदसमास सो दो तथा ज्यादा शब्दको एक ही भक्तिलगे जैसे अन्न के फळ (४)बहुव्रही एक दो आदि [illegible] में मुख्य वस्तू का नाम नहीं लेते फक्त विशेषण ही होवे [illegible] मृगानेणी इस से मृगपशू का बोध नहीं होने स्त्री के आ[illegible] का बोध होता है इत्यादि (५) [illegible] पहिला शब्द विभक्[illegible] बोध करे जैसे देवरूप इत्यादि.

(६) द्विगुण सो जिस के दो अर्थ होते हैं जैसे [illegible] भुवन इत्यादि [७] एक शेष एक ही शब्द में बहु [illegible] समावेश हो जाय जैसे [illegible]. [illegible]. इत्यादि यह समास के सात भेद जानना.

दो शब्दों के मिलाप से [illegible] होवे जैसे शब्द [illegible] इत्यादिको संधि कहते हैं.

(८) जो शब्द के अंत में होवे जैसे [illegible] [illegible]

।'अर्थको सिद्ध करे जो ताँहैं शब्द का योग मिलाव ।
याहिक अनेक प्राति यां सेसिधो कि ये[12] क्रिया लसौ क्रिया देखावे
तुं'सो मूलकिरिया पद कादिये[14] सो किरिया का सम्बंध सुधरावे

यादि को पद कहे जाते हैं.

(९) जिस से अर्थका मतलब सिद्ध होवे जैसे जलगया टूट ा वगैरे हेतु कहा जाता है.

(१०) दो शब्द मिलने से एक मतलब पूरा होवे जैसे हरी ा, पद्मनाभ, इत्यादि को योगिक कहते हैं.

[११] जिससे अनेक अर्थ सिध होवे जैसे—ऐसी तरह माला ा, इत्यादिको औणादिक कहते हैं.

(१२) क्रिया करने की रीती, काल, कारण, स्थल, बतावे े-काम अच्छा किया-यह रीति, फलाने काम के लिये फि- ा है. यह कारण, हर घडी मांगता है यह काल, घर गया ह स्थल, इत्यादि को क्रिया विहाण कहते हैं.

(१३) जो क्रिया पद का मूल होय जैसे-कर, जा, सो यादि को धातु कहते हैं.

[१४]विभक्ति—कोइभी नाम दूसरे नाम के साथ क्रियाका म्बन्ध बतावे उसवक्त उसको अलग २ प्रतये लगाकर अलग रूप धारण करे उन प्रत्ययको विभक्ती कहीजाती है. इसके भेद ठणांग सूत्र मे किये हैं सो कहते हैं;—[१] 'निदेस'— सी को बोलाय जैसे यह लो! (२) आदेस-हुकुम करे जैसे यह करो! ३) कारण-उसने किया [४] संपदा-दान देता है. [५] अवा ावण-वो आता है (६) 'सामीवयण'-जो निश्चय करे ऐसा ा है (७) सन्निहाण नजीककी वस्तुका बोध करे यह है. ८] आमन्त्रण-अहो गोतमजी!

१५ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, ए, ऐ, ओ-

'स्वर'सले'व्यंजनबतीसभाषा,बारह'वचन'सोलहजतावे॥

ओं. अं अः यह १६ स्वर हैं, इन के सहाय से व्यंजनका चार होता है.

१६ क, ख, ग, घ, च, छ, ज, झ, ट, ठ, ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न, प, ब, भ, म, य, र, ल, व, श, ष, स, ह, ळ, यह, ३२, व्यंजन हैं.

१७ १ सन्स्कृत, २ प्राकृत, ३ सुरसेनी, ४ मागधी, ५ पैशाची ६ अपभ्रंसी इन ६ के गद्य और ६ के पद्य यों १२ भाषा.

१८ घट पट मनुष्य इत्यादि एक वचन, २ घटा पटा मनुष्य यहद्वी वचन ३ घटौ पटौ मनुष्यो यह बहुवचन ४ देव नर मनुष्य यह पुलिंगी, ५ नदी नगरी यह स्त्रीलिंगी ६ कमल यह नपुंसकलिंगी

७ यह मनुष्य करते आये हैं, यह भूत [गया) काल. ८ यह करेंगे, यह भविष्यआता काल. ९ यहकरताहूं,यह वृतमान काल. १० ऋषभ देवजी से धर्म प्रचलित हुवा,यह परोक्षवचन ११ अभीमिथ्यात्व बहुत बडरहा है,यह प्रत्यक्ष वचन. १२ पहिले गुण बता फिर दुर्गुण बताये, जैसे सक्कर मीठी है परन्तु दो करताहै, सो उपनीत अपनीत वचन. १३ पहिले दुर्गुण फिर सद्गुण कहे, जैसे औषध कडवी परन्तु रोग हरताहै, सो अपनीत उपनीत वचन १४ पहिले और पीछे गुणही कहे जैसे दूध स्वादी है और पुष्टाइ करता है, सो उपनीत उपनीत वचन

१५ पहिले और पीछे दुर्गुणही कहे जैसे यह चोर जबर है और है. सो अपनीत अपनीत वचन और १६

मन में छिपाके रखी हुइ बात सो गडबड में कहदी जाय जैसे के. प्यासाने ने पानी मांगने कइ मांगी. यह १६ वचन. यह बोल प्रश्नव्याकरण सूत्रके अवतरहार के दूसरे अध्याय में हैं.

योग्य बचन के ८ बोल—मनहर छन्द

पहिले बोले थोडा बोल। थोडे बोले रहे तोल।
थोडा बोल पार मीठा बोल। तज दुःख दाइरे ॥
मीठा बोल अवसर देख।अवसरे शोभे विशेख।
अवसर रखी चतुराई।हित पर गमाइ रे ॥
चतुराइ निर्भिमानं। निज बडाइ से गुण हान।
निर्भिमान पर मरम म प्रकाश कदाइ रे॥
मर्म न प्रकाशें पर शास्त्र की शाक्षी युत।
शास्त्री बचन सोभी जिससे सुख थाइ रे॥ ९ ॥

बचन के यत्न—मनोहर छंद.

जौहरी ज्यों रतन के। यतन करत द्रढ।
तैसे नर बचन के यतन कर जानरे ॥
मुख है करंडाकार दंत बने पहरा दार।
होट के लगे कंवाड। ताम जीव्हा ठानरे॥
चले जो मर्याद वर। तो काटे दशन धर।
पीछे पस्ताय ताते पहिले सोच आनरे ॥
योगा योग देख नर। प्रकाश व मौन कर।
अमोलक अवसर सर होत है वखानरे ॥ १० ॥
विन वोलाय म बोल बोले पहिले हिये तोल।

द्रव्य क्षेत्र काल भाव । हीये से विचारि ये ॥
अवसर जो होवे तोइ । बोलना अवसर जोई ।
विन अवसर लखे तहां मौन धारीये ॥
उपकार होता देखाय। तो बोलो विन बोलाय।
निर्थक परिश्रम कर । वयण मत हारिये ॥
अहो मेरे मित्र अमोल। जोहरी आगे करंड खोल॥
तोइ इच्छित पावे मोल । कहूं वार म्वारीये॥११॥

सत्य का प्रभवा—इन्द्र विजय छन्द

मनुष्य जन्म का रूप सोभाग्यही सत्यवचनकोसत्यपहिचानं
सत्य सेआदर सव जग पावत । होवे सो पंचो कोही रानो॥
पिशुन्य भी मान्य करे ता जावानहोवेहैंरान जहां सत्या ठानो॥
सत्य सदा सुख दाइ हैभाइजी धारीयेसत्यअमोलकोमानो॥१
समुद्र होता है स्थल के जैसा रु महा अग्नि पाणी परे थावे ।
विप धर होवत फूल की माल रु विप अमृत जैसा प्रगमावे ।
महा गिर से पडे तोही नामरे । शस्त्र अंग न धाव लगावे ॥
इत्यादि महा संकट क्षणमें सत्य प्रभावअमोलविरलावे॥१३॥
अमृत से अति मिष्टही सत्य है सूर्य से अधिक प्रकाश नहार॥
चन्द्र से शीतल सत्य अधिक है ।सर्वार्थ सिद्ध से सुख कारा ।
निर्मळ नभ से सत्य विशेप है । गंध मागंध से सुगध गारा ॥
सत्य अनोपम है सुखदायक । सुरेन्द्र अमोलक सत्यधारा॥

कथा—चौथी

सत्य का फल बताने वाली'–'सुनंद की"

दोहा–सत्य प्रभाव से विश्वमें । अनन्त तिरे संसार ॥
मैतार्य कोशिक मुनि । हरिश्चन्द्रादि अपार॥ १ ॥
तोभी सद्बोद करन को । कथा बोध अनुसार ॥
सुनन्द शेठ के पुत्र की । करू कथा में उचार ॥२॥

❀ चौपाइ ❀

कौशल्या पुर नगर अभिराम।अरिजय राजा गुण धाम ॥
वैश्य भ्रात दो रहे ता ठाम।नन्द भद्र सु शोभित नाम॥ ३ ॥
नन्दा भद्रा दोनो की नार।पतिवृता रूप गुण आगार ॥
क्रोडी द्रव्य जगमें विख्यात।दान भोग करते सुखे रहात॥४ ॥
जाने जैन धर्म की रहस्य । यथा शक्ति धर्म करे हमेश ॥
एक बडा दुःख उनके मन । पुत्र के नहीं होवे दर्शन ॥ ५ ॥
शुन्य लगेतिपाइ संपदा । भोगोप भोग में धरे आपदा ॥
ज्ञान से समजावे निज मन । अंत्तराय तूटेगा को दिन ॥ ६ ॥
उत्साहे दान धर्म वृद्धि करे । पुण्य प्रगट भये उस अवसरे ॥
नन्द पत्ति नन्दा उसवार ।सगर्भा हुइ हुवा हर्ष अपार ॥ ७ ॥

डोहला ऊपने पुण्य संयोग । वृद्धि करो दान धर्म सुजोग।
नव महिने पुत्र का जन्म भया।सुनन्दगुण निष्पन्ननामठया।
प्राणसें प्यारा अधिक कुँवार । शुक्लेन्दू बढे तन गुन सार।
उस वक्त आयु अंत योग।नन्द शेठ तन प्रगटा रोग ॥ १
असाध्य जान के चिन्ता करे । घर स्वजन की आर्त धरे।
लघु भ्रात कहे समाधी धरो।ममत्व तज धर्म ध्यानजकरो॥
नन्द कहे सुनो भद्र भ्रात।तनुजकी आर्त अति मुझ आत
सुनन्द की वय अभी नादान।कोन संभाले देवे को ज्ञान॥
नरमी भद्र कहे फिकर पर हरो।निज पुत्र सम सो मुझ खरो
अन्तर नहीं धरूंगा लगार।आपके जैसा देवूंगा सुधार॥ १२
यों वचन सुन शेठ पाये पत । समाधी मरण पहूंचे सुगत
ग्रहस्थाचार साधा सब मिली।अपने २ घर करे रंगरली॥१३

दोहा–भद्र शेठ भूली गये । जे दीया भ्रात वचन ॥
फसे प्रपंच तृष्णा विषय । संचय करते धन॥ १४

चौपाइ

माता पाले पुत्र धर प्रेम।लाड कोड करे दे क्षेम ॥
न रखे कोणनंद हितशीख।सुनन्दनिजच्छा वरते अतीख॥१
कर्म जोग कुसंगत पडा।ततों व्यश्न सेवन चित चडा ॥
जैसा सब व्यश्नों का सिरदार।हारे भन करे मांस का अहार॥१
मदिरा पीवे वैश्या संग करे।शीकार चोरी जारी अनुसरे॥

गमाया धनहुवा कंगाल। मात दुःखधरेअसराल ॥ १७ ॥
धन विन व्यश्न पूरा नहींहोय।चोरी अधिक करन लगासोय।
प्रत्यक्ष में सेवेअनाचार ।शरम न किसकी धरेलगार ॥१८॥
एकदा कोइ उपना काम ।'भद्र शेठ आये सुनन्द धाम ॥
नंदादेवर को देख उसवार ।कहनेलगी रुदन कर अपार॥१९
उपालंभ अति दिये हैं तब।भूले बचन तुम हुवा गजब ॥
हमारी न पूछी आज लग थित।सुनन्द गमादिया सब्रवित॥
दुर्व्यसन निर्लज्ज बना येह।मेरा नहीं माने न रहे गेह ॥
धन आश्रय विन मुझ दुःख पूर ।रखेहम होवें परकेमजूर२१
दोनों घर में एक यह बाल।नाम डूबोने की चले चाल ॥
तुम अतिपडे लालच कें मांय।पुत्रविना धन क्या काम आय
भाभी के सुन भद्र बचन ।शरमाया मन हुवा अतिखिन ॥
सुनन्द को तब पास बोलाय । मिष्ट बचन बहुविधसमजाय
भाइ अपना है कुल पवित्र ।तुं करताहे कर्म विचित्र ॥
छोडे कु-कर्म चलो अपनी दुकान ।करोव्यापार बढावोवान॥
सूनन्द कहेमुझसेयहनहींहोय।में एकवक्त द्रव्य लावूंबहुतोय
बहुत दिन खावूं मनावुं चेन।नहीं छूटे व्यश्नकहुं एक वेन॥
और कहा सो करुं अंगीकार।बचन मेरा नहीं पलटे लगार ॥
सुन बचनभद्रअतीहीमुरझाय। अरर अनर्थक्याकरुंउपाय॥
मूल से मैने नहीं करी संभार।पक्के हंड्ड लगे कैसे गार ॥
सोचत बुद्धि उपजी तत्काल।पकडा सुनन्द का बोला सवाल६

भाइ मुझ निश्चय भया। तूं नहीं पलटेगा तेरा कया ॥
मैं नहीं पलटाये चावूं जवान। एकही वात तू मेरी मान ॥
छोडे मत तूं सातों व्यसन। पण मत बोल कभी झूठ वचन
भद्रिक भाव सुनन्द उसवार। हर्ष सेबचनकिया अङ्गीकार
सोग नादिक पुक्त कराय। समजाइ निज स्थान पठाय।
भोजाइ से कहे धैर्य धरो। जो यहबचन निभावे खरो ॥ ३
तो देखो थोडे दिनमांय। कुल दीपक सुनन्द होजाय
सत्य प्रभाव सदा सुख कार। यों कही भद्र आये निजद्वार
दोहा—देखोश्रोता सत्य से। छूटें सातों व्यश्न ॥
सुख संपत सो संपजे। जो वश बरते रश्न॥ ३

चोपाइ

सुनन्दव्यसन पोषणकेकाज। आयेजुगारी अखाडे मां
अन्य जुगारी किया सत्कार। मांडा डाव भरमुष्ठि धार ॥३
बोलत वचन सुनन्द अचकाय। रखे मेरे से मिथ्या बोल
दुकी कहतां निकले चोक। तो मेरा वचन होवे फोक ॥३
कैसे जानूं मैं गुप्त यह वात। प्राणान्त झूठ न मूजसे बोला
हाय मुझ छूटा जुवा व्यश्न। हृदय उसका हुवा तब कृष्ण॥३५
चुपचाप चलेउठकर उसवार। मानी नहीं किस की मनवार
लगी भूख चले खाटीकीके गेह। विचसम्बन्धी पूछेधरीनेह ॥
कहां पधारो कुमर साच। क्याकहुं जावुं मैं जाय ग्वराय ॥
अन्य कहूं नों झुट बोलाय। प्राणांत नहीं सत्य न जाय ॥३७

ां चिन्ती चुप चाप फिर जाय। खेद खिन्न अति मनपाय ॥
ाय मुझ छूटो मांस का व्यक्ष। हृदय उसका हूवा तबकृष्ण।
ाल आया मदिराकी दुकान। देखे लोक बकेते बे भान ॥
चिन्तेमें जो पीवूं सराब। ऐसे हाल मुझ होवे खराब ॥३९॥
ात्या सत्या का नही विचार। तत्क्षण फिरे वहां से उसवार ॥
ाय मुझ छूटा मदिराव्यक्ष। हृदयउसकाहुवातब कृष्ण॥४०॥
ेश्या आवास चलके तब आय। बात सुने गुप्त ऊभा रहाय॥
न्य नरको सोरहीरमाय। कहेतुमविन अन्यनहींसुहाय॥४१॥
ार कहे प्राण प्यारी तूं मुझ। सुनन्द विचारे बचन का गुझ॥
ाह दोनोंबोलेअसत्यबचन। अन्यस्थान दोनों का मन॥४२॥
ाफस्यूं तो मेरे यही हवाल। वहां से फिरचला तत्काल॥
ाय मुझछूटा वैश्याव्यक्ष। हृदयउसकाहुवा तब कृष्ण॥४३॥
ाणिक जात शीकार अयोग। अवश्य झूठ का देते भोग ॥
ायमुझछूटा शीकारव्यक्ष। हृदयउसकाहुवातब कृष्ण॥४४॥
ोर तो सच्चा बोलेही नहीं। साच से चोरी दूरही रही॥
ायमुझ छूटा चोरी व्यक्ष। हृदय उसका हुवातब कृष्ण ॥४५॥
र नारी से धरे जो प्यार। वैश्या ज्यों गुप्त सेवे अनाचार॥
ाय मुज छूटा जारी व्यक्ष। हृदय उसका हुवा तब कृष्ण॥४६॥
स विचार से सातों व्यक्ष छोड। बलत्कार मन को सो मोड॥
ासूता एकान्त घर मांय। खान पान कछु न सुहाय ॥४७॥
ागी की तरह तन कुमलाय। निद्रा उस से गई रीसाय ॥

आधीरात उठा वे हाला व्यक्ष पोषन की ऊठी झाल॥ ४८
चोरी कर के लावू धन । फिर सब इच्छा करू पूरन ॥
शस्त्र ले घर से चला तत्काल।आगे होवे सो सुनो हाल॥
दोहा=देख जागरना जागता । पुश्पति करे विचार ॥
गुप्त जाय चौकस करूं । क्या पुरमे आचार॥५
भट्ट भेष धारन करी । फिरतो पुर के मांय ॥
सुनतो गुप्त जे वारता । द्वारे कान लगाय ॥ ५१

❁ चौपाइ ❁

सुनन्द सामे मिला तब आय । कौन तुम हो राजा बतला
बोलंता सुनन्द अचकाय ।पुन राय ललकारी बोलाय ॥५
निर्भय हो सो सत्य बोलंत । चोर हूं चोरी करन जावंत
सुन नरेन्द्र आश्चर्य अतिपाय । मस्करा भट सदा जणाय
नृप पुछे चोरी कहां करो जाय।सुन्द कहे राजभांन्डार के मांय
हँसके रायचुप चलते भये।सुनन्दनृप भन्डार ढिगगये॥५
पेहरेदार पूछे ललकार ।कौनहेरे यह आवन हार ॥
सुन्द कहेमें तो हूं चोर।चोरी करन आयो इस टोर ॥ ५
मस्करा जान वोभी चुप रहे।सुन्दप्रवेशभन्डार में भये ॥
तोडताला देखे द्रष्टिपसार । वहां पर द्रव्य पड़ा हैअपार
रत्न अमोलक पांच देखाय।दीवेकी जोती ज्यों दीपाय ॥
सो उठाय बांधे निज रुमाल।खीसे में धर चले तत्काल॥

निकलत पुछे वोकहेचोर । रोकायामही कोइभी ठोर ॥
पुनःमिले नृपसामेआयापुछत नाम सो चोर बताय ॥५८ ॥
पहिले गया सोही तूं होयाते हां कहे नृप पूछत सोय॥
चोरी कर लाया क्याभ्रात । सुनन्द रत्न पांचोंही बतात ॥
अपने भन्डारके रत्न कों देख ।आश्चय चकित हुवेविशेख ॥
सुनन्द आगे चलता भया।नृप द्वार लग पीछे गया ॥६० ॥
सुनन्द पेठा निजगेह मझार।राय पान पीक डालातसद्वार ॥
आके सूते महेल कमांय।दिन चडा पन जागे नाय॥६१॥
दोहा—प्राते भन्डारी आयके । संभाले भंडार ॥
रत्न पांच देखे नहीं । देखेखुले द्वार ॥ ६२ ॥
गुप्तद्रव्य बहुतो लही।रक्खानिजघरमांय ॥
फिर पुकार आकर करी।लोक दोड कर आय॥६३॥
प्रधान तालारादिकतबाजो जो लागाहाय ॥
सो सो ले घरमें धरा।कोश खाली यों थात ॥६४ ॥

चोपाइ

हल्ला नृप कान पर गया । जाग्रतहोवो पूछत भया ॥
क्या वस्तु भन्डारसे गइ । भन्डारी कहे कछु नहींरही६५॥
कोश खाली देख आश्चर्यपाय।भेद समझे सब मनकेमांय ॥
पहरे दारको पूछे बोलाय । वो मस्करा का नाम बताय ॥
और कोइ नहीं आया चालावोतो कुछ नहीं लेगयामाल ॥

नृप गुप्त एक भट्ट बोलाय।पानपीक सेनाणबताय ॥ ६९
रुक्माणी तस लावो बोलाय।सुभट सुनन्द के घरतबजा
भट्ट देख नन्दा रोने लगी।पापदिशा आज यह जगी ६
देख भट्ट सुनन्द समजे भेद।रत्न ले संग हुवा नकरीख
आये दरबार नमे नृपाल।नृप पूछे कौन तुम?कहो सचह
निशंक सत्य॰ सो करे उचार।रातकाचोरदिनकासाहुकार
फिर पूछे नृप चोरीकरी कहां!सो कहेआपके भंडार में यां
क्या माल तुम लेगयेनिकाल?।पांचरत्नबतायेतत्काल ॥
चौर होकर कैसे बोले सत्य।उसने कही अपनी हकीगत
काकाजी दिलाये हैं सोगन। कभी नहींबोलू झूठ वचन
प्रत्यक्ष परिचय देख भूपाल।जाने उसकेसच्चेसवाल ॥७
ऐसा सत्य वादीप्रधान।मुझ न मिले ढूंढ कोइ स्थान ॥
सचीव पद की करीबकुशीश।मोर ले सुनन्द नमायोशीः
नृप कहे बुद्धि से भरोभन्डार।तुमनिमित से गया सहुल
सत्य प्रभाव सुबुद्धि तस आय।भंडारी क सचीव कताय
कहने लगा आँखों कर लाल।तुमनेहीलियासबही माल
जेरे बंद हम पांच लगाय।मत पूंछे रक्खे इज्जत जाय॥७
प्रधान की परचा इन्हे नहींकरी।रक्खें अपनी जावे चाकरी
तुम चोर गुन धरा ना माल।भन्डार भरा गया तत्काल
सुनन्द भी समझायो बात।कुछ मंगले भन्डार से आत
खाली भन्डार भरा नृप देखा।आश्चर्य पाया बुद्धिलक्ष्मीविशे

ठकली पोशाख वोरत्नवकसाथ।गजहोदे तस घरपहोंचाय ॥
गजवृन्दे बाजिन्त्र झणकार।सुनन्द चाले मध्य बजार ॥
आइ जब काकाकी दूकान।सुनन्द उतरे विनय मनआन ॥
भद्रजी को लुल किया नमस्कार।भद्र देखआश्चर्यपायेअपार
भारी पट देख जानेप्रधान।पूछे वच्छे कैसे बनेधीवान ॥
नहो एकहीरातीमझार।कैसे निपजा यह विचित्र प्रकार॥
सुनन्द कहे सब आप प्रसाद।बीता सत्य कहा सबसंवाद।।
एकही सत्य से टलीमुझबात।प्रधानपदसत्यहीसेपात ॥८१॥
काकाजीसंगले निज घरआय।नन्दा रुदन करतीदेखाय ॥
भद्र कहेदेखोदृष्टीपसार।सुनन्द ऋद्धि पाये अपार ॥ ८२ ॥
माता देख अतिआश्चर्य पाय।नमी सुनन्द व्रतांत सुनाय ॥
एकही सत्य से गया सबदुःख।क्षण मेंपायेअत्यन्त सुख॥

दोहा—एकदा सुनन्द चिंतवे।एकसत्य प्रसाद ॥
प्रधान बन सुख भोगवूं।काकाजी के संवाद ॥ ८४॥
ऐसा मंत्र काका कने।और भी कितनेक होय ॥
सो भी लेइ साधन करूं।दुःख रहे नहींकोय॥८५॥

चोपाइ

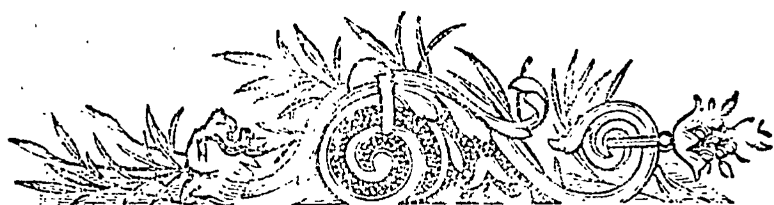
शुभ दिन काकाढिग आय।लुली २ प्रणमी कहे नरमांय ॥
एक सत्य मन्त्रमुझदिया। और भी दीजीये तुम कने राय॥
भद्र शेठ कहे गुरु उपकार। वेही मूनि हैं मंत्र आगार ॥

मुझेही उनोंने बताया मंत्र।तुझही वोही करेंस्वतंत्र॥ ८९
दोनों आये मुनिश्वर पास।नमन कर वीतक कियाप्रकास
मुमुक्षु जान सुनाया धर्म बोध।द्विविध धर्म हृदय सोध॥८९
साधु होवन अशक्त जो होय।बारह वृत्त धार सूनन्द सो
ज्ञानाभ्यास कर करणी करे।दान दया दम प्रीति धरे
सत्य कार्य धर्मोन्नती करी।आयुअंत स्वर्गें अवतरी ॥
थोडे भव कर पावेंगे निर्वाण।देखो सत्य कैसा गुनखान॥

दोहा—ऐसा जान श्रोत सबी।तजाये दुसरा पाप ॥
सुनन्द परे आदरो।पालो विन विखवाद ॥ ९१
तो सुखीये निश्चय होवो।दोनोभव मझार॥
श्रवन पठन का सारयही।सूखेच्छू लो धार ॥ ९
स्वपरात्म सुख वरन । मृषावाद पापोद्धार ॥
ऋषि अमोलक ने रचा । यह द्वीतीया अधिकार ॥९

परम पुज्य श्री कहानजी ऋषीजी महाराज के
सम्प्रदाय के बाल ब्रह्मचारी मुनी श्री
अमोलक ऋषीजी महाराज रचित
मृषावाद पापोद्धार नामक
द्वीतिय मंजल समाप्तम्





मंजिल तीसरा-'अदत्तादान' पापोद्धार

पूर्व विभाग-"चोरी"



"अदत्ता दानका अर्थ"

दोहा-अदत्त वस्तु विन दइ । अदान जो कोइ लेय ॥
सोही पाप है तीसरा । चोरी जगमे केय ॥ १ ॥

"प्रश्न व्याकरण सूत्रानुसार-अदत्ता दान पापका वरणन"

दोहा-प्रश्न व्याकरण सूत्रके । तृतीय आश्रव द्वार ॥
अदत्ता दान पाप को। भाख्या बहूत विस्तार॥२॥

अदत्ता दान के दुर्गुण-चोपाइ

चोरीका नामही देहा उपजाय॥कितनेक तो मरण ही पाय॥
मलीने[3] अहा तासे[4] दातार॥श्रद्धतो लोभ[5] का यह आगार॥३॥

अकाल कृत्य द विसम स्थान।[१०]का स्थान अधो गति पठ
तृष्णा[११] बड़े पश्चाताप[१२] होय। अकीर्ती[१३] करे अना[१४] चीर्ण सोय॥
छिद्र[१५] गवेषी आतुरता[१६] करे । गेज दंडे मूर्छित[२०] कोभी हो
निग्रह करे मारत नहीं डरे। मौन[२३] हरे, दया[२४] परही करे॥५
राज पुरुष[२५] गृह निन्दे संत[२६]।प्रिय मित्र से विरोध[२७] करंत॥
विर्ति[२८] डाले राग द्वेष[२९] बढाय।महा संग्राम[३०] क्लेष[३१] भी थाय॥६
दुर्गति[३१] दाता जन्म[३२] मरण विस्तरे। फिरि२ गर्भ[३३] में अवतरे
मरे पर भी पाप साथ ही आय। चोरी इतने दुर्गुण उपाय॥७

अदत्ता दान के नाम—चोपाइ

चोरिकं-चोरी, परहडं[२]-धनहरे । अदत्त[३]-विन दिया सो वरे
कुरिकडं[४]-करूर चित्त रहे । परके[५] लाभ को आप चहे ॥८
असंयमो[६]-असंजम का काम।पर[७] धनामि गेही[८]- वांछे हराम
लोलिका[९]-लोलुता, तक्कर[१०]-तस्कर।अवहारो[११]-परका आपहर॥९
हत्थलहुत्तणे[१२]-हाथलघुहोय।पाव कम्म[१३] करण[१४]-पाप करे सो
तेणिक[१३] कर्ताकोयह तणाय।हरणै[१४] विप्पणासो[१५]नाश कराय॥१०
आदि येण[१६] नहीं आदर न योग।लुप्पणाधणा[१७]छिपावे धन भो
अप्पच्च ओ[१८]-अविश्वास थान।उंवलो[१९]-पर पीडक जान ॥११
अक्खेवो[२०] अक्षेप दुर्गुण करे । खेवओ[२१]-कुकर्म हिम्मत धरे ॥
विक्खेवो[२२]-विखवाद चढाय।कुडया[२३] कूड कपट से थाय॥१२
कुलमसीकं[२४]-कुल काला करे । कंखा[२५] खोटी वांछा धरे ॥

ठालाप्पणो[२५] दानकर्ता कोवनाय। 'पत्थाणय[२६]' प्रार्थना कराय॥१३
भासासणाय[२७]' करे आसा नास। इच्छ[२८] मूर्छा का स्थान खास॥
नेयणीडिकम्मं[२९]'-निकाचित अरथ। अत्थ[३०]-अप्रार्थ प्रारथ॥१४॥
दोहो—गुण निष्पन्न तीस नाम ए। श्री जिनेन्द्र फरमाय॥
अर्थ विस्तारत इसका। अन्य सबही समाय॥१५॥

सूक्ष्म चोरी अरल छंद

शब्द रूपं रु गंध रस रु स्पर्श से
विनाज्ञा गुप्त रही मनसें आकर्ष से
सूक्ष्म चोरी सोही प्रभू फरमा वही
इसको त्यागे सोही शीघ्र शिव पावकही॥१६॥

बडा चोरी—मनहर छंद

खात देकर भीत फोडे। कमाड छत्त ताले तोडे।
ऊपडवाडा डाक के। उठाइ माल लावे है॥
गांठ नोली डब्बा छोडे। संदूक पिटारा झोडे।
अच्छी वस्तु निकाल के। खोटी तामे ठावे है॥
जथा तथ्यत्यो बनाइ। देते मालक को संभलाइ।
साहु कारी यों जमाइ। विश्वासी को सतावे है॥
रस्ते जाते केइ लूंटे। उजाड में केइ कूटे॥
ऐसे चोरी के करतार। दोनों भव दुःख पावे है॥१७॥

धाडा पाडे लूटे गांम । खेत बाग बाले धाम ।
ताले परकुंजी लगा । लिया भी चोरावे है ॥
नारी पुत्र शिष्य भरमाय । लेके जावे है उडाय ॥
मंत्रादिसे मुरझाय । केकी वस्तु भी खवावे है ॥
माल उमदाही बताय । देते खोटाही मिलाय ।
तोले माप खोटे राखे । केइ घडीयों उडावे है ॥
केइ गिनते हीउडाय । व्याज तिथी भी वढाय ॥
ऐसी चालाकी चलाय । तामें भोले भरमावे है ॥
केइ कसब की चोरी । यहां तो कही में थोडी ॥
एसी चोरी के करतार । दोनो भव दुःख पावे है॥

चोरकी अठारहप्रसुती —इन्द्रविजयछंद

अभय वचन देवे को चोरको डरोमति मै सहायक तेरा।
पूछे सुखे शान्तिस्थान वैनावन पाहिले आप जाके लगावेहेरा
छिपने को जागा बतायन चोरका पूछक को स्थान बनायअनेरा
निज घर आये को शामँन देवन।वाहणे बेठाय पहोंचावत घेरा
गुप्त रखे अपने घरमें माल लेकर भाग जा बांट के लेवे।
ऊंच बेठाये जो हेरू आय तो यहां नहीं है यों मिथ्या केवे।
खान पानी का सहाय देवे सबै स्थान सदैन कर औषधी देवे।
स्वाहिन्द दे चित्त शांत कर आप माले रखे प्रसुति अष्ट दशेवे।

सात चोर—इन्द्र विजय.

ारी करे [1]रहे चोर[2] के पास जो वार्ता[3]लाप करे चोर साथे ॥
ार का भेद[4] लहे जो जायके ।क्रय[5] विक्रय करे चोर हाथे ॥
ान[6] पान आदि दे चोर को।मकान[7] देवे संभाले जो हाथे॥
ात ही चोर बजे चोर संगसे।भंडे लोक दंडे नर नाथे॥२१

चोरी से दुःख—मनहर छंद

रख के सुख की हाम। करत कर्म निकाम ।
चोर चोरी कर पर धन हर लावे है ॥
खावे न खिलावे, प्रगटही नहीं थावे ।
ऊंडे खड्डे मांहे जा के रण में छिपावहै ॥
गुप्त सदा रहे भेद कोइ को न देह ॥
निशी दिन हीयोडरे रखे जान जावे है ॥
भेला किया धन नहीं सुखी मन जन ।
चोरी के करने वाले सदा दुःख पावे है ॥ २२ ॥
वक्त रु कुवक्त मांहें । शीत ताप गिने नाय ।
बन झाडी ही माहीं फिर तन को तपावे है॥
भूख प्यास खमें भार उठा तन दमे ।
पर्वतों खाइ में काँटे कंकर नंगे पावे है ॥

इत्यादिक कष्ट देय । बहुता द्रव्य संभ्रेय ।
रक्षा के कारण यत्न करे जो चावे है ॥
कुछ काम नहीं आवे । व्यर्थ मन कुपोमावे ।
चोरी ही के करने वाले । सदा दुःख पावेहै॥२३
धनी राजा भट जाने । कर धर झट के ताने ।
बोल कु-जबान परी ताप उपजावे है ॥
क्षार तन छांटे तासु तन चर्म फाटे ।
मरचों की धूनी देदें जेर बंद सरडावे है ॥
भाखसी में घाले खोडे वेडी पग डाले ।
तोष खाना गल विच सेहर मे फिरावे हैं॥
काम नीचही कराय । ऐसे परिश्रम केइ पाय
चोरी के क ने वाले सदा दुःख पावे हैं ॥ २४
अग्नि में जलावे उष्ण धूप में ऊभे करावे ।
हीम धरे तन पर बीजली पकडावेहै ॥
तन चर्म कों ऊदेडे नाक कान हाथ हरे ।
पांव काटे दाटे भूमें खंडो खंडहीकरावेहै ॥
फांसी पे चडावे तोफ मुख धर उडावे ।
भालों बाणों से भेदावे वांस पाड के गवावेहै ॥
इत्यादिक भव इस विति ले चोरी बस
चोरी ही के करने वाले सदा दुःख पावे है ॥२५

इन्द्र विजय, छंद.

चोर कों चिन्तारहे आठोंपेरहीठोरकुठारसो नाही विचारे॥
खावत पीवत सोवत जोवत रखे अचानक आ कोइ मारे ॥
धर्मको मर्म जरा नही जानत पाप परिताप ही सदाविचारे॥
इसे दुर्ध्यान करी कर्म बन्धन मरकर चोरही नरक पधारे२६
नरक के दुःख हैं महाकलुख उपजत कुंभी में बोंबडी पाडे ॥
आवे यम दोड धरे तनको सकडेमुख कुंभी संडासीसेकहाढे।
जैसे किये पाप तैसेही संतापदे गुर्जामुद्गलकर तस ताडे ॥
थपेट लपेट धपेटादियेयों चोरीभवो भव दुःख देखाडे॥२७॥
जे साहूकार लबाडबने लियेघनेदामदे वस्तुहीथोडी ॥
पोलादअगाध गरम करी करेगज तराजुपायलीघडीडोरी ॥
हाथ पकडायमपायतोलायेंचटायतने देअग्नि में बोडी ॥
कियेजोलियेकर्मकेफलतहांपर यहांपरद्रव्यगयोसोछाडी॥२८॥
कहे यमरुष्टकहेअरेदुष्ट तेने मालहरीबहूतजीवसताये॥
सो फल भोगनरोगनसोगन लेगठडी यमपुरी में आये ॥
कोये नहीं छोडें फोडे तनतेरोही योंकही विद्रूप रुप वनाये॥
मारन ताडनछेदन भेदन चोरको वहुतसंताप तपाये॥२९॥
नरक से मर कर तिर्यंचनरहो तांहीं विपतीअनेकही पावे ॥
खानपान स्थानसहायक । नमिलेदारिद्री दुःखी रहावे ॥

तसविश्वास यहां कोइ करेनहीं।।शिरपर कलंकचोरीकाआव
ऐसे संताप लहेसोभवोभव।।जानअमोल चोरी छिटकाव॥

कथा—पांचवीं.

चोरीके फल बताने वाली—अभग्ग सेन चोरकी

दोहा—अनंत प्राणी चोरी करा।पायेदुख अनंत ॥
सो स्वरुप दरशावने।कहुं अभग्ग सेन विरतंत ॥१॥
सूल विपाक प्रथम खन्डे।अधेन तीसरे मांय ॥
अभग्गसेण चोरकी चरी।कही सो यहां वरणाय॥२॥

चोपाइ.

पुरमीमताल' नगरसुखखान । 'अमोघ दर्शी' नामे उद्यान॥
'महाबल' राजा राज करे ।अखन्डआज्ञाउसकीफिरे ॥ ३ ॥
इस पुर से ईशाणा कोणमांय।सालटवीनामे पल्लीवसाय ॥
चौतरफ पहाड मध्य भारी।बंशजालविषमवीटली ॥ ४ ॥
जल पूरित खाइ चोफेर । मार्ग विषम अति नमफेर ॥

'विजय' नाम चोरा धीशक्रूर।आज्ञामें तस्करपांचसो शूर॥
ज्ञ अधर्मी करे बहुत घात।द्रढ संघयण नाम विख्यात ॥
ास्त्र अस्त्र कलामें होंशियार।अनेक विद्याके वो जानकार ॥
ोरी कलामें अति प्रवीन।विद्या प्राक्रम से अरीकिये दीन।।
ाजा को भाग देकरवशकिया।अन्यलोक सब त्रासहीरया॥
ंधक श्री नामें चोरपतिनार।कला कौशलता रूपभन्डार ॥
ाम लुब्ध भोगवे सुखभोग।पुण्य पसाय मिला सूयोग।८॥
कदा 'खंधक श्री' कूंख मांय।पापी जीवकोइउपनोआय ॥
ोहला इच्छा तीसरे मांसभइ।पूरुष भेष धनुष्यबाणग्रही॥
ग्न खड्ग स्कन्ध पे धार।पाय घुंघरुकरे झणकार ॥
्यातकी सब नारीयोंपरिवार।स्वेच्छाफिरूं अटवी मझार ॥
न्य नारी जो करेइस प्रकार शरमें मुरझे सो मन मझार ॥
आर्त धरे कुमलायो तन।विजय देख पूछे मधुर बचन॥११ ॥
र्ष समय क्या उदासी काम।खंधक श्री कहे करी प्रणाम॥
तीसरे मांस इच्छा मुज भई।मनमें आइ सो सब कही॥१२
ुण कर अति हर्षा तस्कर।दी आज्ञा तुज इच्छा सो कर॥
वार अहार मद्य मांस निपाय।तस्कर पति सबसज आय॥१
पूर्व पर खंधक श्री सज भइ।सर्व संघ सो अहार भोगवइ॥
मदोन्मत हो फिरे पल्ली मझार।डोहला पूरा हर्ष अपार॥१४
ुखे २ गर्भ मोटा भया।नव मासे कुमर जन्म लिया ॥
जन्मोत्सव कियासज्जनजिमाय।अभग्ग सेनतसनाम दिराय।

पंच धाय पाले विज्ञानी भया। चोर कला सवसीख हीग
योवने युक्ती आठ परणाय। पंच इन्द्रीय के सुखविलसा
एकदा विजय अशुभ अंतलया। अभग्ग सेण मालक तव भ
पिता समान सो पापी अति। कला कौशल्यता निपुण मा
करे पाप नहीं डरे लगार। लूंटे देश सतावे नर नार॥
उजड किये वहूत ही गाम। घवराये देश लोक तमाम॥१
महावल नृप से करे पुकार। शरणागत अहो रक्षन हार
अभग्ग सेन चोर अति पापीया। घर धन रहित हमको कि
नृपति सुन क्रोधातुर होय। दंड सैन्या पति से कहे सो
जावो सेना लेकर लार। साला पल्लि का करो संहार॥२०
विजय चोरको लावो मुझ पास। शीघ्र करोयह काम तुम खा
सेनापति करहूकमप्रमाण। लेसैनासंग शी.घ्र किया प्रयाण॥२
अभग्ग सेन के गुप्त रख वार। आये दोड जानी समाचार
चीतकसव तस्कर पति से कथा। सुन पल्लिपति असुरतेभया
अगक्ष भखी सवहुवेमतवाल। शस्त्रअस्त्रसज चलेतत्काल॥
सन्ध्यासमय सर्वविषमस्थान। छिपऊभेकरेशत्रूअवशान॥२३
नृप सेनापति निश्चित तहांआय। तस्करटुट पडेएकदमजाय
मार कूट कर दिये भगाय। तस्कर हर्षे निजस्थाने आय॥
दंड सैन्यापति हो निर्वल। 'महावल' नृप ढिग आया चल
वीती वात सव करी प्रकाश। वल से चोरनहीं आवे फास॥
छल करो नम दे विश्वास। राजाजी मानी अकल तास॥

बहुतो द्रव्य नृप खरच कराय।कुडागार एक शाल बनाय ॥
संपूर्ण शीघ्र करी तैयार ।दश दिन औछब मांडा उसवार ॥
नगर के मांहे पडह बजाय । दाण हाँसल सब माफ कराय॥
गुप्त बुद्धिवंत सामंत बोलाय।होंशयारि से काम करोजाय ॥
भेटणा बहुत मोलका लइ । अभग्गसेणको देवो जइ २८॥
चतुराइ से तससमजाय । इस उत्सब पर लावो बोलाय ॥
सामंत किया बचन प्रमाण।सर्व साहित्य ले हुवे प्रयाण ॥
धीरपे वास वसंता जाय । सर्व जनको विश्वास उपजाय ॥
आया चोर पल्ली के मांय। चोराधीप को जय विजय बधाय
बहु मुल्य भेटणा अर्पण करी । नृपती प्रेमके बचन ऊचरी॥
मोहोत्सब पर आग्रह कर बुलाय।पधारो सर्व सज्जन संगाय।
भोले भाव चोर मानी बात।बचनलेकर सामंत फिर आत ॥
अभग्ग सेण भी हुवा तैयार। साथ लिया सबहीपरिवार ॥
आये महाबल राजाजीपास।जयविजयबधाय नमनकियातास
रायजी उनका किया सत्कार।कुडागार शाल में दिये उतार।
मदिरा युक्त कराया अहार। सर्व तस्कर मुरछे उसवार ॥
नृपाति भट को आज्ञाकरी ।कुडागार शाल द्वार सबजडी ॥
अभग्ग को लावो मेरे पास पकड।सब चोरोको बांधोजकड॥
भट तैसेही किया तत्काल । महीपती कोप्याजैसा काल ॥
सब संहारण विधी बताय।कोटवाल तस पुर में ले जाय ॥
सुभट बृन्द घेरे चौ फेर।ढोल बजाय करेपापकी टेर ॥ २६ ॥

पहिले चोहटे चोरको बेठाय। आठ काकातस सामें लाय।
अरडाटकरतेआठों ही कोमार। उनका मांसकाकरावेउसअह
दूसरे चोहटे चोर बेठाय। आठ काकी को मार खवाय ॥
तीसरे चोहटआठबडे बापमार। चोथे चोहटे बडीकाकी संह
पांच में चोहटे आठ पुत्रको हने। छट्टे चोहटे पुत्री बहु तने
सात में चोहटे आठ जमाइमारे। आठ में आठ पुत्रीयों संह
नव में पुत्री पुत्र आठ हने। दशमें पुत्री पूत्री प्राण घने ॥
इग्यारमें चक ले दोहित्रीमारी। बारमें दोही त्रा नास तन डा
तेर में भुवा चउदमें फूवा घात। पन्दरमेंमासी सोलमें मासात
सतर मेंमांमाआठर में मामियां। मित्र सज्जन योंसब हत किय
खडोखन्ड कर सब ही की काय। बलात्कार कर तास खिलाय॥
कुल में बीज रखा न लगार। जो आगे होवे दुःख कार ॥ ४२॥
यह देखो प्रत्यक्ष चोरी फल। भोगवे कटु दुःख दे सबल ॥
धान के पीछे कीडा पीसाय। त्यों एक पीछे घने दुःख पाय॥

दोहा—ते काले ते अवसेर। स्वामी श्री वर्द्धमान॥
पुर मिनाल पुरबाहिरे। समोसरे उद्यान ॥ ४३ ॥
गौतम स्वामी उस अवसर। प्रभूका आज्ञालेय ॥
गौचरी आये गाम में। देखा अनर्थ तेय ॥४४॥
करुणा व्यापी चित्त में। चार जिणंद ढिग आय ॥
वंदी पूछे जोडीये। किस पाप यह सताय ॥ ४५ ॥

चोपाइ

गवंत कहे पूर्व भवकथा।गत काल इसही पूर में यह था ॥
दाइ' राजा तब करताराज।अंड वा०ीया यह वसताज ॥
ञ्जव नामे पापी घना। व्योपार करता अन्डे तना ॥
डी कमेडी पारेवे कग्ग। घूघूटीटोडी मयूर बग ॥४८ ॥
लचर स्थलचर खेचर आद। संगाता बहुत नोकर को साद
ळके भूंजके बेचता पुर मांय।ऐसे महापापसे द्रव्य कमाय॥
जार वर्ष का आयुष्य पूरा कर । तीसरी नरकमें सातसागर॥
हां से मर साल अटवी मांय।अभग्गसेण यह उपना आय ॥
हांभी कमायेबहूतहीपाप।सो प्रभू कहके बतायेसाप ॥
ाजतीसरेपहरशूली चडाया।सत्ताबीस वर्षआयु पूर्णथाय ॥
थम नरक में उपजेगा सही।सृगा लोटा ज्यों भमेगा येही।
ग्ते २ बनारसीबार।सुवर होगा सीकारी न्हाके गा मार।
ारसी में ही शेठके घर।पूलहोसंयम ल करणी कर ॥
र्म खपा कर मूक्ति जायगे।चोरी सर्वथा तजे सूखपायगे॥

दोहा—देखे भव्य द्रष्टान्तमें चोरीदुःख की खान ॥
छोडो पाप यह तीसरा।ज्यों मिले सूख स्थान५१॥

मंजिलतीसरा—अदत्तादानपापोद्धार

उत्तर विभाग-'अचोरी,

दोहा—निज परात्म सुख करण। अदत्तव्रत श्रेयकार।
जो आराधे विशुद्ध यस। ताका खेवा पार ॥१॥
प्रश्न व्याकरण सुत्रके। तृतिय आश्रवद्वार ॥
महिमा अदत्त व्रतकी। श्री जिन करी उचार ॥२।
गुण निष्पन्न नाम अर्थयुत। चोरी तजन की रीत।
सद्बोध कथा यहां वरणवूं। पढो सुनो दत्त चित्त।

चोरीके नाम—चोपाइछन्द

सु[1]व्वयं'-सुव्रत, 'महा[2]व्वयं' महाव्रत। 'गुण[3]व्वयं'-गुणकरहै कुम
परद्र[4]व्यहरणकीवर्त्तीकिही। 'कर[5]णयुत्त'-युक्तकरेसोसही ॥ ४
अपरिमि[6]य'-करे परिमाण। अनं[7]त तृष्ण का रुंधन स्थान
मन वच काय की इच्छा रोके। पाप अने के कारण झोंके॥५
सु[8]संयमी', करपगो[9]निश्चलहोयकरे। 'नि[10]ग्रंथ'-गांठरहित यहख
'नि[11]ट्ठिक-उत्कृष्ट यही है। 'निरु[12]त्तं'-सब जन अच्छा कहै ॥६
'निरा[13]स्रवं'-यहरोकेहै आश्रव। 'नि[14]भ्भयं'-भय रहित होवे स
'विमु[15]त्त'-लोभ को यह नजाय। 'उत्त[16]म'-कर्तवी नर कहाय॥७
नर[17]वसभ'-नरमेंवृषभसमतह। 'प[18]वर'-प्रधान, 'वल[19]वेग'-वलले

[२३]ुविहीय-सुविधि सोही करे।जणणे[२४] साम-जनकी माल की धरे
रम साहूं[२५]-सो उत्कृष्ट साधु।धम्म[२५] चैरणं-ले धर्म आराधु ॥
मदत्त व्रत के पच्चिस नाम कहे।प्रश्न व्याकरण सूत्र से लहे॥ ९

चोरी तजे सो प्रकार—मनहर छंद

वस्तु के हैं छःप्रकार।सचित अचित धार ॥
[३]छोटी [४]बडी थोडी बहुत[६] इनकी चोरी छोडीये ॥
दो वस्तु के भंग चार।छःके होते हैं बार ।
विद्वानो युक्ति सती।आगे कहे सो जोडीये ॥
द्रव्य थोडी भावे बहुत ।सो तो रत्न आदि होत ॥
द्रव्ये बहुत भावे थोडी । कंकर पत्थर कोडीये ॥
द्रव्ये भाव अल्प सोय धूल राख तृण होय ॥
द्रव्ये भावे बहुत[४] सो।रत्नकंबल छोडीये॥१०॥
सर्वथा चोरी के त्याग।करते मुनि महा भाग ।
तृण कंकरादि विन आज्ञा नहीं लेते हैं ॥
तो कहां कहुं और बात । अल्प उपाधि है साथ॥
शिष्य के सज्जन रजा सेही दिक्षा देत हैं ॥
जिसके स्थान मांहे रहे । ताको अहार नहीं लेहे
आहार वस्त्र निर्दोष उत्हा दे सो धेत हैं ॥
अप्रति बन्ध सो विहारी।अदत्त व्रत के धारी ।

वंदत अमोल जाको। जग मांहे जेते हैं ॥ ११ ॥
जो धर्मी वसते आगार। सर्व न करे परिहार।
तोभी लोक विरुद्ध जेह चोरी ही कों त्यागे हैं॥
न लेते चोरीका माल। खोटा तोला मापा टाल
प्रमाणिक पणा धर। द्रव्य को उपार्जे हैं ॥
राजाने जो मना करी। उसे को न गेहमें धरी।
गुप्त ता चालाकी से तो दूरही सो भागे हैं ॥
व्याज न अधिक लेय। वस्तु पलट नहीं देय।
संतोष करे निर्वाह। सोही श्रावक सागे हैं ॥१२

चोरी त्याग के गुण—विजय छँद.

चोरी त्यागी सोहैवड भागी अनुरागी बहुतो के विश्वासजम
राज भंडाररु शेठ कोठारमें प्रवेश करे तस वैम न आवे
प्राण प्यारी प्रसस्त वस्तु जन संग्रह करी ताके ढिग ठावे
नीती से कमाइ लक्ष्मी सदाइ ता पास रही नहीं छेह दिखावे
सोही साहूकार सच्चो व्यवहार हींसाव में कोडी कसर न अ
एकही वेण करे लेन देन तोल माप छाप ठगे न ठगावे
जग नाम रमे ग्राहक जमें बहू ताही छोड न अन्य पे जावे
अल्प प्रयास मेले धन रास जीते आस फास सोही सुख पावे

—✣—

कथा—छट्ठी.

चोरी त्याग के फल बताने वाली "चोखा शाह की".

ोहा—चोरी त्याग से विश्वमें । बहूते पाये सुख ॥
तोभी जन मन बोधने । कथा कथु सुनी मुख॥१॥

❀ चोपाइ ❀

सतपुर एक ग्राम मझार।वित संचय शेठ चोर सिरदार ॥
षणा शेठाणी सुख कार ।धनपाल नामे तास कुँवार॥ २॥
करियाणा का वैपार सो करे । चोरी कर्म में कुशल ता धरे ॥
न देन में चालाकी अति।धूर्त न जानी सके तसे मति ॥३॥
मती देवे अधिको लेय । धेंडा धडी उढावे तेय ॥
ल तोल में दशका उडाय।खोटी वस्तु दे चोखी बताय।।४
ाव भी सस्ता बहूत बताय।झुकती त्राजु माल दिराय ॥
ुशी हो बहुते जन लेजाय । घर में जाय सर्व पस्ताय॥५॥
ास्तर्या तस दुर्गुणपरिणाम। 'खोटा शाह'पडचो तस नाम॥
न देन लेख बात के मांय । खोटा शाह सर्व बत लाय ॥६॥
ाभी बोले बहुत हर्षाय । लडतो नाम को अर्थ दर्शाय ॥
ाम प्रमाणे काम में करुं।अब किसी के बाप से नहीं डरुं॥७॥
माइ तो उसको बहूत देखाय।पाप प्रभावे ऊंचा नहीं

दीपवाली दिन पस्तावो सो करे।उपाज्यों द्रव्य कहां जावे॥

दोहा—जब पुण्य प्रगट हुवे। तब मिले सु संयोग॥
अशुभ नाम भी शुभ हुवे।सो सुनियो सब लोग॥

चोपाइ

वसंतपुर से थोडीसी दूर। क्षिती मंडण नगर धन पूर॥
धर्मधवल तहां रहे साहूकार।यशोज्वला उनकी नार॥१
सत्य प्रिया तस कन्या गुण वंता।रूप विवेक कला सोहंत
तीनो सदा करे संत साति संग।धर्म ज्ञान सुण शीख मन ग
सत्य प्रिया घनी हुर प्रवीन। मिंजी भेदी परमार्थ चीन
यौवन वय जब प्राप्त भइ।पाणी गृहण की चिंता थइ॥
युक्ति जोडी मिले गुण धार।तो मुझ पुत्री सुवर कुमार
गवेषणा वर की करै तात मात।दैव प्रमाणे योग बन आ

दोहा—खोटा शाह के कुमारजी। खरीदन आये माल॥
उपाश्रय में मुनि लखी। वंदे कुलकी चाल॥ १४॥
ज्ञाती जन बहु देख करा।आप भी बैठा तहांय॥
धर्म कथा सुने सुस्त चित्त।जास्यूं बजार खुल्याय॥

चोपाइ

धर्म धवल वहां थे साहुकार।उसने देखा धन पाल कुमार॥
व्याख्यान एकाग्र चित्त से सुने।धर्मानुरागी जाणा इस गुने॥

ोजन काज घर लज्जाय । उत्तम रसवती पुरसाय ॥
ामातुर ते शीघ्र गये खाय।निरागी इस गुनल खाय॥ १८ ॥
त्य प्रिया जे ग आना वर।जात पूछे से मिली भलीपर ॥
ागाइ करदी उसही बार।लग्न मूहूर्त होकर करार ॥ १८ ॥
ोटा शाह को लिये बोलाय।सत्य प्रिया को दी परणाय
नी गुली सगा मिला जोय।तीनों ते अति हर्षित होय॥१९॥
बहूको अपने घर आय । धर्म रहित सो घर देखाय ॥
त्य प्रिया दुःख पाइ मन।कर्म गति लख रही सुस्त तन॥२०
ोहा—एकदा शेठ कहे तनुज को।लेवू बेटा किस ठाय ॥
देवूं दिखती नहीं । सो कोटमें बताय ॥ २१ ॥

❀ चोपाइ ❀

वूं देवू यह नाम सुन करी।सत्य प्रीया आश्चर्य चित्त भरी
ोठे में शीघ्र उठ देखे जाय।लेवू देवूं नही नारी देखाय॥
ति से पूछे कहोजी सच्च बात । लेवू देवू कोनघरमें रहात॥
ोले भावे सो करे उच्चार।दो पच सेरी से कर व्यापार॥२३।
ःसेरीका हेवू रखा नाम।चार सेरी देने में आवे काम ॥
ौर कोई चित वैस मधार।इस से ही अपना होवे गुजार॥२४
ुन बचन सत्य प्रिया मुरझाय।अरर डूबी में पापमें आय॥
से घरमें नहीं करना अहार।जहांतक इनका नहीं होवे सुधार
ाभि ग्रह कर बैठी मोन धार।काम काज नहीं करे लगार ॥

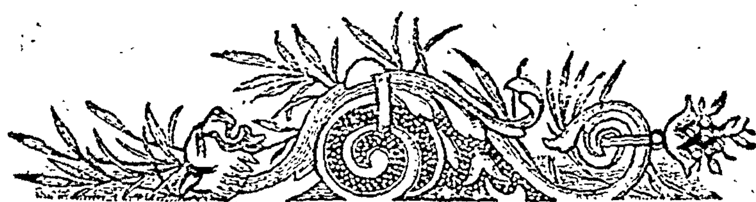
पूछे सासु सूसरा हित धरी।आज बहुजी रीस क्यों करी ॥२६
ते तो उत्तर नहीं देंवे लगार।सबही आश्चर्य पाये अपार ॥
'धन पाळ'सेपूछे सबही।पत्नेरी की हकीगत सो कही ॥ २७
शेठ कहे सूणो शाणी बहूं।सें गरीब मामले में रहूं ॥
जों त्यों कर चाले गुजरान।थोडे बहुत करुं धर्म दान ॥ २८।
'सत्यप्रिया'सोचे मन मांय।समजा कर देवुं अधर्म छोडाय।
कर जोडी कहे सूसराजीसुणीजे।आपको हित शिक्षाक्यादीजे
साहुकार को यह कर्म न छाजे।दगा करेसो चोरही बाजे॥
नाम आपका सून विस्मयपाइ।जिसका भेद आज जानाइ।
कमावो पन लाभनहींदे खावे। पापके फल प्रत्यक्ष जनावे।
बालक की विनंती अब धारो।चोरी तजो करो रोज गारो।
बारह मांस में जो लाभ उपावो।तो प्रतिज्ञा आगे निभावो।
मेरा बचन देखो अजमाइ।तोहूंआहार लेवूं तुम घर मांहीं।
खोटा कहे भोली तूं बाइ।सत्य से संसार निभेही नाहीं॥
बहुत वक्त में देखा अजमाइ।तबही एसी पेठ जमाइ ॥३३।
पेट काज जो कीजे काम।उस में पाप लागेही नहीं नाम ॥
जोकदाही लागेगा पाप।तोतस फल भोगेंगे हम आप।।३४।
यह फिकर तूं परही निवार।उठ जलदी करले अब अहार ॥
इस्तर तन बहुत समजाइ।'सत्यप्रिय'माने ते नाइ ॥३५॥
लोभी बनिया नहीं छोडे हट।तीन दिवस यों चली खटपट।
तीनोंको हुइ चिंता अपार। मरेगी यह बिना किये अहार॥

।मान होवे बदले सज्जन । क्याकरेंयों समझाया मन ॥
थे दन 'खोटशाह'कहेनरमांय।बहुतुंकहे सोमानुंमेवाय ॥
ऐमांस करुं सबोट व्यापार । जो नफो मुझबचे लगार ॥
प्रातिज्ञा निभावुं जाव जीव।नहीं तो तूं मतभोगावेरीव ॥
।बचन 'सत्यप्रिया हर्षाय।खोटाशाह'कोपच्चखाणकराय ॥
:म भक्त पारणा किया । सबसज्जनका हर्षाहिया ॥
।टाशाह'हुवेद्रढवृत्तमझार।खोटेतुला तोलदिये दूरडार ॥
तुला तोला बरोबरकरी।करैव्यापार एकसत्य ऊचरी ॥
ही भाव और एकहीजबान।मानेनहीं कोइपहीलीवान ॥
मास व्यपार बहु हीन भया।पोताकाद्रव्य खरचभीगया ॥
कर बहुततीनों मन होय। पणप्रातिज्ञा नहीं भाँगेसोय ॥
। जो जो लेजातेहैंमाल । परखी तोली बराबर माल ॥
श्चर्य करते लोकअपार।'खोटाशाह' नामभूले उसवार ॥
जमनेलगी पेठ परतीत । सुधरीजाणीसब जननीत ॥
।नेलगीग्रहाकोकीभीडादोडके दुकाने आवेज्योंतीड ॥
यसेलक्ष्मीआइ आकर्षाय टोटापुराया अधिक जोथाय ॥
ह मांसमें हिसाब सो करे।पांचसोमोरअधिक नीसरे ॥
ततनुजमनहर्षाघना । मानाउपकार बहूजीतना ॥४५ ॥
यप्रिया'कोसोनफो बताय।'सत्यप्रिया कहे मेंमानुंनाय ॥
।सेरी इसकी लेवोघडाय।डालो जंगलमें एकान्तजाय ।
पीछीआपसेआवे इसघरे तोपच्चखाण पालेभलीपर ॥

शाह कहे पंचसेरीचल कै। आय।बहु कहे लेवोअजमाय ॥
परतीत तास बचनकी करी। पंचसेरी बना उसअवसरी ॥
घोरी झाडी जंगलमें जाय।तामेन्हाख शेठजी घरआय ॥
बर्षाद अचिंत्य तस ऊपर पडी।धूल कांजीगइ उपरचडी ॥
रबारी ऊंटचरतातहां आय। पंचसेरी पडीउसेपाय ॥
चिलम तम्बाखु की इच्छाय।लायो खोटा शाह के तांय ॥
पंचसेरी देख शाहजी हर्षाय। तम्बाखु देतस पोंचाय ॥
कहे बहुसे पंसेरी आइ चलाइ।बहुकहे देखोखरी कमाइ ॥
तलाव अपने गांमकेबार। अबउसमें इसेदेवोडार ॥
खरी कमाइ कहां नहींजाय:आयगा पीछीघरकोंचलाय ॥
शेठकहे पाणीअंदरपडी। कौनलावेगा यहांयहघडी ॥
बहुकहे यहभी देखो अजमाय।डालीशेठ तलाव में जाय ॥
फेकत मछोदर में जा पडी।शेठ फिर आये घरउस घडी ॥
सोमच्छ फसा धीवरकीजाल निकालाउलटालियाखदेडाल ॥
पंसेरी पेटसेनिकलकर पडी। मच्छ पाणीमेंगया तडफडी ॥
पंसेरी देख धीवर संतोप लाय।'खोटा शाह' देंगे कुछसहाय॥
आकरदूकान-पंसेरीदिनी। इच्छित स्वल्पवस्तु उनलिनी ॥
कहेबहुसे पंसेरी आइचलाइ। बहुदेखो खरीकमाइ ॥
अबन्हाखो बजार में चौवाटे।खरी कमाइ कीआवेगाहटे ॥
शेठकहे देखसो लेजावे। बहुकहे खरी कमाइनजावे ॥
श्याम को डाली चोहटे जाय।ऊपर दीनीधूलकेराय ॥

प्राते में हतर झाडन आया । पंसेरी देख आनन्दपाया ॥
खोटाशाह'हाटेदीनी सा डालालेगया थोडासामाल ॥
कहे बहुसे पंसेरी आइचलाइ।बहुकहे देखोखरी कमाइ ॥
प्रत्यक्ष चमत्कार देखहर्षाय।अचोरीव्रत द्रढउन सहाये ॥
साफ तजा छलरु दगाबाजी।सबजनहोगये अतिही राजी ॥
„चोखाशाह" तस नमथपाण।।थोडेदिन में धन बहुतकमाण।
बहुविनंतकिर साधुसती लाइ।धर्मात्म सबको दियेबनाइ ॥
एक व्रत ऐसाहुवासुखदाता ।यहां यशःसुख शुभ गतीदाता
दोहा—भव्यों दीर्ध द्रष्टी करी । ग्रहो द्रष्टांत का सार ॥
खोटाफिट चोखा बनो । कलुका तोड करार ॥ ६१
तो थोडे दिन में मिले । सूख संपति सूयोग ॥
चोखाशाह तणी परे । सुधरे दोनू लोग ॥ ६२ ॥
स्व परात्म सुख वरन । अदत्त पापोद्धार ॥
ऋषी अमोलक नेरचा । यह तीसरा अधिकार ॥ ६४

परम पुज्ज श्री कहानजी ऋषीजी महाराज
कीसंप्रदाय के बाल ॥ ब्रम्हचारी मुनीश्री
अमोलक ऋषीजी महाराज विरचित
अघोद्धार कथागार ग्रंथ का
अदत्तादान पापोद्धार
नामकक तीसरा
मंजल समाप्तम्



मंजिल चौथा "-मैथुन पापोद्धार"

पूर्व विभाग-"कुशील"

मैथुन का अर्थ—दोहा छंन्द

दोहा—मथन असंख्यपचेन्द्रि का। महा-घमसाण जहां होय
चोथा पाप मैथुन सो। जगमें व्याप्या सोय ॥ १ ॥
प्रश्न व्याकरण सूत्र के। चोथे आश्रव द्वार ॥
वरणन इसका जिन किया। सो यहां करूं उचार ।
दुर्गुण पाप से नाम तस । मैथुन के प्रकार ॥
सद्बोध कथा युत यहां कथुं। वाचीतजो तजो विका

मैथुन से दुर्गुण—चोपाइ छंद

मनुष्य असुर आदि करै चहायै। 'पंक'कादव सें आत्म भराय
पणंफूलण सारपटाओ[3] पटके। 'पासं जालें ज्यो बांधे अटके
तीन वेद चिन्ह से पटनिक । तॅप संयम ब्रह्मचर्य भेदित ॥

बहुत प्रमाद कौं मूल यह स्थान।कायर माने प्याराजो प्रान॥
सूज्ज जाहे नके त्याग न योग।सेवक भमा सदा त्रि लोगं ॥
जरा मरण रोगं सोग का घर।बध बधन विसि घातये कर ॥
अशर्णं चरित्रं मोहका साधक। बहुत काल से यह बाधकं ॥
नरे आगे पापं साथ ही आय।मैथून ऐसे दुर्गुण पाय ॥ ७ ॥

मैथुन के नाम—चौपाई छंद.

अबंभ-अनाचीर्ण मेहूण-मथन।चरतं 'व्यपित'संसार्गिं मिलन
सवण हीं कारी-अकार्य कराय।संकप्पोसंकल्प विकलपउपजाय
बंधणाँ पयाण-बाधाका उपाय।दप्पो-डर भो।हो अज्ञानबढाय।
मण संखो भी क्षोभमन करे।अणिग्गे हो आत्म नहींठरे ॥९
विग्घ हो-विघ्न'विग्यओ करेघात।त्रिफागो-किया धर्म नाशपात
विभभों-केफ सा भरम उपजाय।'अचम्मो'महा अधर्मकराय।
असालैया दुशील इसे जान।गाम धम्मतत्ती अतृसिमान ॥
रत्ती-रक्त होवेमतवाल 'रांय चिंता-महा चिंता की माल ॥
काम भोग करा मोरण हार।वैरंवैरे बृद्धि करतार ॥
'रहस्सं गुप्त' यह चोरी कानाम।गुंझ छिपावे न लेवे नाम ॥
बहुमाणं-बहुतही माने इसे। बंभेचेर बिग्घो ब्रम्हचर्य खसे ॥
वांवत्ति धर्म का वमन कराय।'विराहणा' इस से इराधकथाय
'प्रसंगो परसंग अतिबडाय। 'कामं गुणोति-कंदर्प उपजाय ॥
हेत सिमथुनक नाम कहे। प्रश्न व्याकरण सूत्र से लहे ॥

मैथुन से पाप और दुःख—मनहर छन्द

मैथुन तीन प्रकार । देव नर तीर्यंच धार ॥
नर नारीका संयोग । मोहोदय भावे है ॥
योनी उत्पत्ति का स्थान ।असंख्य असन्नी मा
सन्नी लक्ष नव जीव । भोग से नसावे है ॥
तामे दीर्घ आयु योग । निवार्त्ते होते भोग ।
एक दोय तीन जीव । बचकर रहावे है ॥
महूर्त बारे तांइ । योनी सजीवन रही ॥
ज्ञानी महा पाप जान । ब्रह्मचारी रहावे है ॥
विषय की आसा; सदा प्यासा न,निरासा हो
ज्यों ज्यों वढावे तासा । त्यों त्यों बृद्धि पावे
अग्नि ज्यों इंधन नाखें ।भक्षाति सो नहीं था
तैसे विषय अभि लाखे । तृप्तिन आवे है ॥
अंग रंग भंग थाय । शक्ति रक्त हरे काय ॥
तोऊ इच्छा धाय मन तन को समावे है ॥
येही आश्चर्य भारी । कामकी करारी पारी ॥
भोग रोग जोग पापी जीवोंकों सतावे है ॥
काम अग्नि का ताप ज्ञानाजी कहा अमाप ॥
उपजत मन तन । अतिही तपावे है ॥
हाम में वायद्दु अरु । समुद्र में जो गोता ख्रा

तोही न शीतल थाय संताप समावे है ॥
प्रज्वलन आठो जाम ।बुद्धि बल जाले काम ॥
सत्व रूप हीन कर । कालास बढावे है ॥
जले हैं अनंत । जलरहे हैं अनंत जीव ॥
विटंबना काम एसी । कामी को देखावे है ॥ १७॥
सर्प ताल पुट थकी । विष है विषम नक्की ॥
अन्य जह स्पर्शी तन फिर प्रागमावे है ॥
तस उतारन उपाय अनेक मिले जग मांय ॥
नहीं उतरे तो एक भवमेंही मरावे है ॥
विषय को विष समरण होत व्यापे अंग ॥
मंत्र जंत्र औषधि न कोइ उप समावे है ॥
महा विपत्ति देखाड अनन्तानन्त वार मार ॥
विषय के विष तुल्य विष नहीं पावे है ॥ १८ ॥
वैरी मारे वैर कर गुप्त दगा डाव धर ॥ १
ताही से छुटाने केइ साहाय मिल जावे है ॥
काम मारे हँस खेल । बनाइ छबीली छेल ॥९
नाम के सज्जन ताही जान के फसावे है ॥
कुन्दी पूरी करे अरु लर्व संपति को हरे।।
विन मोत मरे आगे कुगति रुलावे है ॥
ऐसे वैरी संग मुढ जान करे गुप्त गुड ॥
काम के समान अन्य वैरी नही पावे है॥

मनुष्य भव मझारी सब निज इक्क त्यारी
काम वश नर नारी दासी दास ज्योंबिगारी है
अहो निश धावे धन कमावे निठावे
एक एक की गुलामी कर हर्षत अपारी है ॥
नोकरी की वारी देवे मूत्र पाव सामे ठारी ॥
ग्रह जान प्राण प्यारी । एसी गइ मति हारीहै
आश्चर्य आवे है भारी । देख के यह संसारी
किते अकल गइ मारी निज स्वभाव विसारी है

मैथुन का प्रभाव—इन्द्र विजय छंद

ज्ञानी नर अज्ञानी बने अरू चातुर नर सो मूर्ख होवे
शूरवीर का यरेबनरअरूय उद्यमी आलसी कार्य विगोवे
शुद्धा चारी भृष्टेन अरु क्षमावन्त क्रोधे द्रग जावे ॥
यों सद्गुन नाश दुर्गुण प्रगटे काम वशे पतको जन खोवे
हिता हित को विचार रहे नहीं।नीती अनीती को नसंभा
योग्या योग्य देखें नजरा भरा।कामी कुठाम जाइ तन डा
मात सास पुत्री अग्नी अरु पुत्र वधु तरुणी को विगारे ॥
कहा कहूं काम उद्दामकी गत बूडें जो इसे हीये विच धारे
कामी कोकामनी वाक्यअमृत लगे पण हैजेहर प्राण हरनारे
कामी कामनी तन श्रृंगारत सोहे पन विष्टाभंडारे ॥
—नी कामनी मन सुख लागत पणसेईआत दुखकारे

क्या मोह रहा वरकी जो छबी नर दूर चमडा करक्यो नविचारे
कामी कामीनी को चित्त पेखत आश्चर्य निकामी को बहु आवे
कहे तूंही है प्राण से प्यारो ताही को ते हलाहल खिलावे ॥
एक को ध्यावे एक समजावे एक बुलाय एकको सार मोवे॥
केते भोगे भोगगी केतही यह विचित्रतापार को पावे॥२३॥
क्षणमें राजी क्षणमे नाराजी क्षण हांसी उदासीही क्षणमे॥
क्षणमें राज विरागही क्षणमें क्षणमें शुचि अशुचि छनमें॥
क्षण २ रंग अनेक बने यों बाकीन कोइ राखे इनमें ॥
असंख्य वेग वेवहैं ऐसेही कामी कामीनी के एक दिनमें ॥

मैथुन से खुवारी—खडका छंद.

अनंग प्रसंगमतिभंगजन की हुवे।शौच अशौचसोनाहीं जोवे॥
अस्थी मांस रक्त रुधीर स्थान में।रुची मानी तस मन मोवे॥
अशक्ति हो भोग से रोगपेदा होवे।सुजाकप्रमेह पथरी सोवे
काम उदाम निनाम यों बहु करे।उभय भव मांहीकामी हीरोवे
जाय नर के मरी यम कोपे भरी पोलाद कीपुतलीगरम करता
शूलोंकी सेज सोवावे धर हेज तेग प्रहार ऊपर धरता ॥
तन दजाय अरडाय चिल्लाय पण दया न लाय प्राणोंको हरता
देखअब मोजयों कहेधर चोज तब भर भर रोजयों पाप भरता
अग्निज्वालाकरी मांहे उसे दे धरी अरि२कर भगने जो चहावे
कहांजाताहै भाग करभोगअनुराग योंकही२यम उसकोदबावे

काष्ट ज्यों अंगजले मीन ज्यौंतडफडेप्रासकर्म सेकहोकोछु
पल्थ सागर केइविसीथों बहू लइ कामीकामीनी दोनोंदुःख
महा मैथुनी आगे नपुंसक होवे
एकेन्द्री विकलेन्द्रि असन्नी थाइ ॥
हींजडाखोजा रु वन्ध्या मृतबन्धा थोंव्यभीचारनीच गति
भगेन्द्र कुस्मांडआदि गुप्त रोग केयोगसे भवो भव पीडा
काम कोजानदुःख खान मतिमानजोछिट काइ सोसुखीर

कथा—सातवी.

मैथुन पाप के फल बतानेवाली—"काम कुमरकी"

दोहा—विषया शक्त बहूत जीवही । पाये वहूतही त्रास
रावण पद्मोत्तर कीचक।मणीरथ आदि विनास ॥
ब्रह्मा शिव गुरू चन्द्र इन्द्र।पाये विषय वश दुःख
अन्य मते वहूते कथन।कहा २ कहूं मुख ॥ २ ।
तो भी सद्बोध करन को।काम कुमार चरित्र ॥
सुनि कथा सो वरणवूं । कामकी गति विचित्र॥

❀ चोपाइ ❀

मही मंडन मनोहर गाम । तहां अरिजय राजा गुण धा
सोवन शाह रेहे तहां शेठ।धनी गुनीं जमी जाकी पेठ।

{द्र}व्य बहुत है घरके मांय।पुत्र विनासो शुन्य लखाय ॥
{कि}ये बहुत ही उसने उपाय।पुण्य विना नहीं लागादाव॥
ढलती वय यों आये जदा । धर्म कर्म में लागे तदा॥
धर्म से कर्म की टूटी अंत्तराय।शेठाणी के गर्भ रहाय ॥६॥
हर्षित हुवे दम्पती अपार । परन्तु घटा धर्म से प्यार ॥
यह पापी जीव के लक्षण जान।पालेगर्भ उत्सवमंडान ॥७॥
नव मास भये जन्मा बाल । काम देव सा रूप निहाल ॥
काम कुमारतस नामज दिया।प्राण से अधिका पालन किया
किंचित नहीं दुःखा ते मन । इच्छा सब करते पूरन ॥
लाड में सो शीखा कुचाल।मात तात को देता गाल॥९ ॥
अंगो पांग कु चेष्टा करे । लंम्पटी योके संग अनुसरे ॥
जाने हम पुत्र पाता सुख।देखे नहीं आगे के दुःख॥१० ॥
विद्या जोग वय वाकी भइ ।पाठण शाला में जाता नहीं ॥
मात तात जरा नहीं दबाय।दूसरे की कहीमानेही नाय॥ ११॥
लग्न किया ठाठारंभ करी । थोडे दिन नारीपे प्रितिधरी ॥
कुसंगत सेवन लगे व्यभिचार। मनमे वसेपार कीनर ॥ १२ ॥
पण घटाने पणघट नित्य जाय ।करेचाला रुडी नारीआय॥
कुलवंती तो मन लज्जाय ।कुलंछनीसो देतीडुबाय॥ १३ ॥
दोहा—ताही ग्राम मांहे रहे । रजपूत 'जोधा' नाम ॥
सुशीला तस भामानी।नाम समो परिणाम ॥ १४॥
राज कृपा से उस घरे । संपति सुख दास॥

सर्व दिन नहीं एकसे ।जीव बन्ध कर्म पास॥१४॥

चोपाइ

जोधाजी चूके किसी काम मांय।राजा जागीरी जप्त कराय।
धन गये सुख गया उस संग।सुशीला पति भक्ति में रंग॥१६
पडदे की लज्जा परि हरी ।पण घट चली शिरपे घट धरी
रूप अनोपम गज गति चाल।काम कुमर मोहे तत्काल॥१
कंकरी मारी उसको उसवार।वो अतिही शरमी मन मझार
विन बोले जललेघर आइ।विती वात पतिको जताइ ॥१८
सुन जोधा क्रोधातुर होय । खड्ग ले मारन चले तब सोय।
लिया कर धर कहेसमझाय।भूलन कीजे एसा अन्याय॥१९
धनवंत को वो पुत्र देखाय ।झगडा बढे मेरी इज्जत जाय
सुन के ठाकुर मुरजा गया।क्रोध हृदय में उछलरया ॥२०
ठकराणी कहे धैर्य धरो । एसी युक्ति कोइ भी करो।
इस रस्तेवो कभीनहीं जाय।अपनेघर में दोलत आय ॥२१॥
ठाकर कहे सो तूं वताई । इज्जत रहे और धन मिलाई॥
ठकराणीकहे मेरीपरतीत।आप को हो तो करूं में येरीत॥२२॥
उसको लावूं में यहां बुलाय।वोभी आवेगा भूपण सजाय॥
धन सब लेके रखे घर मांय।कम बक्ती कर कहाडे उस तांय॥
हर्षि ठाकर कहे शीघ्र यह करो।मेरा डर जरा मन मतधरो
ठकराणी सब युक्ति मिलाय।ले घडा पणघटपरजाय॥२४॥

केला कुमर को वैठे देख । कहे ठकराणी हर्ष विशेख ॥
ोरी क्या मारो कंकर मार।मजाह चहो तो आवो मुझ द्वार॥
ुन कुमर हर्षित अति भया । रोम २ तब फूली गया ॥
हे ठाकर होवेंगे तुम घर ।सा कहें गये नोकरी पर॥ २६ ॥
क महीना सो घर नहीं आय । आप पधारो कृपा लाय ॥
ाज शाम को देखूंगा राय।इतनो कहे ठकराणी जाय॥२८॥
ाम कुमर मन अति उमंग।सजा श्रृंगार अनोखे ढंग ॥
डी एक वर्ष समी तस जाय।सन्ध्या होवन की देखे राय॥२८
याम होते चले हुवे नोकर संग।ललकार कहे होके वेरंग॥
ोइ मत आवो हमारे लार।कोप देख वैठे चुप धार ॥२९॥
ाकर गये जब घर के बार । काम कुमर 'आ' ठोके द्वार ॥
त्कार ठकराणी लै घर मांय। तत्क्षण दीये द्वार लगाय ॥
ुमरजी वैठे पलंगपर जाय । ठाकर उभे घर बार आय॥
ाक मार कहे खोल कमाड।कुवर जी के कम्पन लगे हाड॥३१
छे कुवर कोन आये यह । ठकराणी कहे ठाकर छह ॥
चिंत कैसे आये जान । अब हरेंगे दोनो के प्राण॥ ६२ ॥
ुन कुमर भुले उन्माद । अतिही पाये मन विषवाद ॥
ज्जत और मरणका डर।पसीने से अंग गया सबभर।३२॥
र जोडी कहे मुझे छिपाय।मानु उपकार मरणसे बचाय॥
ेतातके मे एकही पूत।मेरेमरे डूबे घर सूत ॥ ३४ ॥
छिपने की यहां जागा नहीं । भिजाजीठाकर मारेगासही॥

ठाकरकरे उतावल घणी।'कामके' अंग छूटी धुजणी॥३५
पाव में पड कहे मुझे बचाय।सा कहे शीघ्र कर एक उपाय
दासीके वस्त्र पहले पेर । पीसो धान घट्टी को फेर ॥ ३६
चेटी जान नहीं मारेंगे मार।नींद आये भगजाना बाहार॥
'कामकुमर' तत्क्षण उसवार।वस्त्र भूषण सब दिये उतार
फटी घाघरी ओडणी ओड । चक्की फेरण लगे डर छोड॥
खोले पट ठाकर अन्दर।आय।ठकराणी को बहुतधमकाय
सन्ध्या से चक्की फेरन काज।क्यों बैठाइ इसको आज ॥
नमी कहे आप आगमजान।रसवती करण निपावे धान ।
दंपती बैठे सेजपे जाय । कामको चक्की फेरत नहीं आय ६
क्षण २ में विश्रान्ति लहे।ठाकर कोप कर गालतस दहे॥
दंड को शिर में कियो प्रहार।मुंडित शिर जाना उसवा
पूछे भद्र क्यों तेने किया।कोनसा तेरा पति मर गया॥४
हंसी २ में दे दंडे की मार।शिर पीठ उर कर स्थान मः
जब अटके तब दंडा लगाय।निशी के तीन पहर ऐसे वीत
मारसे काम पडे मुर्च्छाय । तब ठकराणी यों चेताय॥
घर ये मरने से होय फजीती।इस लिये करो ऐसी रीती॥४
पोट बांध रख आवो बझार मांय।प्राते ले जायेंगे सज्जन ः
ठाकर ने तैसाही तब किया।पोट बांध चोहटे रख दिया॥
प्रात लोक बहुत भेले होय।गठडी छोड कर देखे सोय
काम कुमर देख आश्चर्य भया।सोवन साह से जाकर कया॥

ावन शाह शरमाय घबराय। लाये कुंवर को घर उठाय ॥
ावा भिलाष कुंवर तन मांय। गरमी का रोग प्रगट थाय ॥४५॥
ौषधोपचार सब व्यर्थ गये। शरीर सडा आयुष्य अंत लाये ॥
र कर उपजे नरक मझार। रत्न चिंतामणी गये सो हार॥४६॥

ाहा—इस इस द्रष्टान्त से देखाये। मैथुन दुःख कार ॥
विधि दे दोनों भवे। तजो सुख इच्छनार॥ ४७ ॥





मंजल चौथा–"मैथुन पापोद्धार"

उत्तर विभाग–"ब्रह्मचर्य"

दोहा—सर्वव्रत शिर सेहरो। ब्रह्म चर्य व्रत जान
ब्रह्म रूप ब्रह्म चारी है। कहा श्री भगवान। १ ॥
प्रश्नव्याकरण सूत्रके। चतूर्थ आश्रव द्वार ॥
ब्रह्मचर्य के गुण कथे। सो यहां करूं उचार॥ २ ॥

ब्रह्म चर्य के नाम–चोपइछंद

'बंभचेर'[१] ब्रह्म पद आचरण करे। 'उत्तम'[२] सर्व व्रतों में सिरे ॥
नियम[३] ज्ञान[४] दर्शन[५] 'चारित्र। सम्यक्त्व[६]' विनय[८]' का मूल हित॥ ३॥
नियमादि गुणों में प्रधान[९]। हेमंत पर्वत से उंचा[१०] मान ॥
'पसत्थ[११]' प्रसस्त अरू गंभीर[१२]। थिमिय[१३]' निश्चल धारे धीर ॥ ४॥
'मज्झ[१४]-अंतःकरण, अज्जव[१५]-सरल। साधु[१६]जन आचारित विमल ॥
मोक्ख मग्ग – येही मोक्षकापंथ। विशुद्ध-वृती आदरे निग्रंथ
सिद्ध गइ निचल-मोक्ष का स्थान। आलय शाश्वत अव्याबाधिकमान,

पूर्ण' भव-पुनर भव नहीं करे।[23] पसत्थ सदा भला जेआचरे ॥
[24] ॰म-शीतल 'सुहं' [25] सुखखान ।[26] सिवं उपद्रवका नाशकजान॥
[27] लं-अचल [28] अक्षयं ही करे।[29] जइवंर-सारकी यतिहीआदरे ॥
चरियं-यह उत्तम आचरण । [31] 'सुसाहियं-सुबोधक जन ॥
[32] नवर [33] महापूरुष [34] सूर [35] वीर [36] धर्मवंत । [37] धैर्यवंत एता आचरंत ॥
'विशूद्ध-सदानिर्मल।[39] भंद्र कल्याणकर,[40] संबसे सबल ॥
[41] संकियं'-नहीं शरम स्थान । [42] निब्भंयं-निर्भय कारक मान ॥
[43] तुस'-कचरा सेहै रहित । [44] निरासयं-खेदरहित करेचित्त ॥
[45] रुवलेव'-पाप लेप नलगे । [46] निवुंइ-परमशांती जगे ॥ १० ॥
[47] रमं निकंप द्रढता रहे । [48] तप [49] संयम का मूल जिन कहे ॥
[50] महाव्रंत की रक्षाकरे । [51] समिति [52] गुप्ती [53] ध्यान कपाड परे ॥
य, [54] रक्खण सुकृत रक्षक । [55] आश्राव का है यह भक्षक ॥
ह [56] बंध जों लज्जा सुपखे । [57] दुर्गति पंथ तज [58] सुगती रखे ॥
तम सर्व लोक में श्रेष्ठ । [60] पद्म सरोवर प लजोंजेष्ठ ॥
थ के [61] आरा समान । [62] महाबृक्ष की शाखा खन्द मान ॥
[63] नगर के द्वार भोगलसमो।[64] महा इन्द्र ध्वजा धरडोरी खमो
दि सु ब्रह्मचर्य नाम।श्री जिन स्वयं मुख किये गुणग्राम॥

शीलकी ओपमा—इन्द्र विजय छंद.

मं भगवंत" कहे जिन ब्रह्मचारी [1] भगवंत समाना ॥
जोती षी यों गण में इन्द्र [2] चंदा, आगरमें रत्नागर [3] मान ॥

वैडुर्य[४] मणीसर्व मणियें। मेंउत्तम।मुगटकों भूषण से उंचठा।
क्षोमयुगल[६]पट वस्त्रों मेंश्रेष्टहै।अरविंदपुष्पफूलोंमें जाना
चंदन में गोशीर्ष सुगंधी। हेमवंत पर्वत औषधी स्थाना ॥
सर्व नंदियों में शीतों जोंजेष्टहै। सयंभू रमेणा समुद्र में गा
गोल पहाडों में रूचक[१२] पर्वत। ऐरावेण[१३] कुंजर इन्द्राना ॥
मृगादि पशु में सिंह महाबल।वेणु देव[१५] पति असुराना ॥
नाग कुमार[१६] पती धरणेन्दर। स्वर्ग नहीं है ब्रह्म[१७]समाना ॥
सभा सुधर्मी सभा में सोभित। स्थिति श्रेष्ट सर्वार्थ[१९]विमाना
अभयदान सर्वदानों में उत्तम। रंगमें किरमजी श्रेष्टाना[२१] ॥
वज्र वृषभ नाराच[२२] संघयण। श्रेष्टसम चतूस्तसंस्थाना[२३] ॥
ध्यान में शुक्ल ज्ञान में केवल[२५]।लेशापरम शुक्ल[२६] गुनखाना।
मुनियों में तीर्थंकर मोठे।क्षेत्र विदेह गिरि मेरुराना ॥
वनमेंनंदन[३०] वृक्षमें[३१] जंबु नृप चक्री[३२] शूर नारायण माना ॥
योंसर्वव्रतमें ब्रह्मचर्य उत्तम।सर्वज्ञप्रभू स्वयंमुखे वखाना।

शीलकी नववाड—चोपाइ छंद

देवमनुष्य तिर्यंच संग भोग।जोतजे त्रिकरण त्रियोग ॥
नववाडविशुद्ध पालेव्रतजेह।तेही निश्चय मोक्ष पद लेह॥१
स्त्री पशू नपुंशक रहे जिस्थान।ब्रह्मचारि न रहे उसस्थान
जोरहे तो शील नाशहीपाय।जोंउंदर बिल्लीरहे एक जाय
स्त्री के शृंगार की कथा नहींकरे।जिससे विकार अंगसंचरे
जो करे तो शीलनाशही पाय।जोंखटाइनामसुख पाणी आ

अंगोपांग निरखे न लगार।जिससे जागे काम विकार ॥
जो निरखे तो शील नाश ही पाय।ज्यों कच्ची आँख सूर्य देखाय ॥
बैठे नहीं स्त्री के आसन पर । जो मन विषय युक्त दे कर ॥
जो बैठे तो शील नाश ही पाय।जों कणिक कोला रहे एकठाय॥
भींतादि अंतर भोग सेवाय।न रहे करण शब्द जहां आय ॥
जो रहे तो शील नाश ही पाय । घन गरजे जों मोर हर्षाय ॥
पूर्व कृत क्रीडा न करे याद । जिससे मन पावे विषवाद ॥
जो करे तो शील नाश ही पाय।ज्यों शनी 'पाती' सक्कर खाय ॥
दाब चांप के अहार नहीं करे।प्रमाद विषय अंग संचरे ॥
जो करे तो शील नाश ही पाय।ज्यादा खीचडी से हंडी फट जाय ॥
न्हाना धोना न करे शिणगार । देखें उपजे मोह विकार ॥
जो करे तो शील नाश ही पाय।गिंवार के पास रत्न न रहाय ॥
शब्द रुप गंध रस स्पर्श पांच।उसपर न जावे मन से राच ॥
दशमा कोट ब्रह्मव्रत तना।ऐसे रहता वश में मना॥२९ ॥
रमता शील सुधा में सदा मन।विष किंचित नहीं व्यापे वदन
सोही ब्रह्म चारी धन धन।आप समा भाखे भगवन् ॥ ३० ॥

ब्रह्मचर्य की महीमा—मनहर छंद

जिनने ब्रह्म व्रत धारा,उनने सर्व व्रत धारा ॥
आत्म काज सारा,रु सुधारा नर पन को ॥
पाप पुंज वारा । मोह ममत्व कों टारा॥

काम शत्रू जासे हारा रु निवारा सौ अघन को
भव वन जारा फिरते मन को हकारा ।
मूल तत्व ही विचारा रु विडारा कर्म रन को
त्रि रत्न को उगारा।आत्म गुनकों संभारा ।
अमोल नमस्कारा म्हरा ताहीके पदन को ॥३१
जो है जग ब्रह्मचारी।सोही शुद्ध है आचारी ।
ज्ञान ध्यान तप धारी।सच्ची ममता जो मारी है
निज भान को संभारी। नारी जानी विष क्यारी
ताकी संगति जो टारी ।न विचारी ननिंहारी है
लव ब्रह्म से लगारी । अखंड एक तारी ।
लुख सुख तुच्छं अहारी।नही तन को शिणगारी
जिन आणा के विहारी । एक मुक्त की इच्छारी
अमोल नमस्करी ताको वारं वर म्हारी है ॥ ३
ब्रह्मचारी यों विचारे । मन जिनसे ममत्व धारे।
ते तो वस्तु है नठारे । नहीं हितसुख कारे है॥
तन ऊपर शिणगारे ।अन्दर भरा है भंगारे ।
सर्व वस्तु है असारे । घिन कार सूघ कारे है ॥
रुद्र शुक्र अघोद्वारे ।मल मूत्र वहे न्यारे ।
हाड मांस नही सारे । ढके चर्म ने मिकारे है ।
चर्म दूर कर निहारे ! तो मुख स आकारे ।
ऐसे भाव अब धारे। सो अमोल मोह हारे है॥

ब्रह्मचर्य का प्रभाव—इन्द्र विजय छन्द

शील प्रभाव टले सो हुभाव महा विष फिटी सुधाप्रगम वे
केशरी[2] सो कुरंग[3] बने रु मातंग[4] अजा[5] विष धर रज्जु[7] थावे॥
शस्त्र सोपुष्प माल बने। अग्नि ज्वाला बने वारी निधी सावे
अरिगंजन सज्जन रंजन शील को है अमोल प्रभावे ॥ ३४॥
बन मैं रनमें जनमें धनमें अनमें मनमें जो सदा सुखदाइ
जगमें ढगमें अगमें लगमें रगमे भगमें नहीं पीडा कराइ ॥
राजे काजे लाजे साजे खाजे पाजे जो सहायक थाइ ॥
शीलकी लील अपील अढील है धार अमोल सो सिद्ध सिधाइ
इन्द्र चन्द्र नरेन्द्र नमें दानव मानव जस सेव करे है ॥
जिनेंन्द्र मुनेंद्र सदा गुण गावे पिशूनकिसून हुजासे डरे है
दर्श स्पर्श से रोग हरे। केइ वाणी सुज्ञानी चित्त धरे है॥
शील की महीमा अपार सूसार है।धार अमोल भवौघ तरे है

कथा—आठवी

ब्रह्मचर्य के फल बताने वाली—"सुदर्शन शेठकी"

दोहा—अथाग महीमा शील की ।कहां लो वरणी जाय ॥
जो जो जीव मुक्ति गयेसो सव शील पसाय॥ १ ॥

अमृत २ सिंह ३ हरनि ४ हाथी ५ बकरी सर्प ७ डोरी

मल्ली नेमी नाथजी ।बाल ब्रह्म चर्य धार ॥
और अनंत ही संत सती।कहाँ लों करुं उचार॥
ताभी शील ठसावने।योग शास्त्र अनुसार ॥
शेठ सुदर्शन की कथूं।कथा रसिक मनोहार ॥

चोपाइ

अंग देश चम्पा पुरी जान।दधी वाहन राजा गुण खान
अभया राणी रूप अपार।कला कौशल्यता में होंशीया
तहां वसे वृषभदास साहू कार।अर्हदासी नारी गुणधा
दम्पति जैन धर्म में लीन।सूत्रार्थ जाने प्रवीन ॥ ५ ॥
सुभग नामें तस गोवाल एक।गौ भैंसी को चरावे हमे
शाम को पशु ले घरकों आय।वनमें ध्यानी देखे मुनि
प्राते गयो पशु लेकर तहां।मुनिवर देखे ऊभे ही वहां
चिन्ते अत्यन्त शीत के मांय।सर्व निशी खडेरहे मुनि
तब मुनि नमो अरिहंताणं उचार।उडगयेशीघ्रगगनम
गोप गगन गामि नी विद्या जाण।नमोअरि हंताणंनितक
सुनकर पूछे शेठ वृषभदास।कहां तेने यह किया अभ्या
गोपदीनी सब बात प्रकाश।जाणी भव्य शेठ पाये हु
कहे गगन गामिनी एकही गुण।इसमें तूं मतजाणनि
इसमें है सर्व गुण का संच।उसको शिखाये तब पद
इनवक्त करे भी उसका जाप।एकदा नदी में जल

देख उलंघन कूदा जप नवकार।कीला एक पेठा उदरमझार
र कर अरह दासी उर मांय।पुत्र पने गोप ऊपना आय॥
धर्म पुण्य बृद्धि डोहला लिया।हार्षि शेठ सब पूर्ण किया१२।
सवा नव मांस जन्मा कुंवार। पुण्यात्म अंग रूप अपार ॥
उ रूवे सुदर्शन नामथपाय।योग्य वय पढे कला तांय॥१३॥
धर्म ज्ञान में निपुण ही भये।मनोरमा विदुषी सें लग्न किये
धर्म अर्थ काम तीनो साधंत।सुखे २ यों काल वितंत॥१४
दोहा—इसही पुर मांही रहे । कापिल राज पुरोहित ॥
शेठ सुदर्शन का भया।विमल धर्मि मित॥ १५ ॥
धर्म करणी नित्य करे । जाके सुदर्शन धाम ॥
एकदा पूछे नारी तस।क्या करो तुम काम ॥ १६ ॥
उसने सब वरणन् किये । शेठ सुदर्शन के गुन ॥
पुरोहीताणी मोहित हुइ । जानी शेठ निपुण ॥ १७ ॥

चोपाइ.

एकदा पुरोहित परगामजाय।इच्छासाधन नारीअवसरपाय।
एकांत आइ 'सूदर्शन' पास।नरमी मधूरी करेअरदास ॥१८॥
आप मित्र पुरोहित हुवेबीमार।आपको बोलायेसुणननवकार
'सुदर्शन'साज देने के काम।तत्क्षण आये कपिलके धाम॥१९॥
सुतैंकोटडी में योंकही लेजाय।पीछे घरके दियेद्वार लगाय ॥
गुप्त अंग दिखा करे अरदास।प्राणेश्वर पूरो मेरी आस॥२०॥

शील रक्षण सुदर्शन कही। मैं नपूंसकुकछकामका नहीं॥
कपिलाशरनी दियेवा हिरनिकाला। 'सुदर्शन' घरआये तत्काल ॥
अभिग्रह लिया आजपीछेकिस घर। अकेला नहींजानाअन्दर॥
कपिल आया न करी कुछबात। धर्मध्यान करेसुखसे रहात ॥

दोहा—कोइक मोत्सव देखने। कपिला अभया दोय ॥
गोखे वैठी एकदा । शेठपूत्र षट जोय ॥ २३ ॥
माता संग रथ वैठके। जाते उत्सव मझार ॥
विप्राणीपूछे राणीसे। यह है किसकी नार ॥
राणी कहे 'सुदर्शन की। तव हंस कर कहे सोय ॥
नपूंशक नर नारीके। षट पुत्र कैसे होय ॥ २५ ॥

चोपाइ.

राणी कहे नपूंशक कैसे जाने। कपिला वीता कहा वयाने ।
ठगी तेरे को तव राणी कहे। धर्मी पर नारपे नपुंशक रहे ॥
चिडाइ कपिला कहे तुम कलावंत। एकवक्त करो सुदर्शन कंत ॥
राणीकहे कुछ वडी नहीं वात। जो करुं तो सच्ची मुझ जात ॥
वक्त हुये दुनोंनिजस्थानेगइ। राणीधाय को वीती कही ।
धाय कहे कियातुमखोटा विचार। धर्मी कभी नकरेतुम से प्यार।
राणी कहे एक वक्त मुझ पास। लावे तो सव पूरे आस ॥
धाय करा एक करी विचार। शिवका में एक मूर्ति वेसार ॥
ले चाली राणी महेलमां जार। पोल तस दी अटकाय ॥

कोडी मूर्त्ती थाय तब कहे।राणीजी मौन वृत एक गहे॥३०
मौने लाइ मूर्ती पुजा करे। तो ते अहारपाणी आचरे ॥
तेने किया राणीका वृतभंग।नृप से कहे मारावुंकुढंग॥३१॥
सुनके पोलिया अतिडर पाय।कहे अबएसा न करुं मांय ॥
यों सातो द्वार पाल डराय।इतने में पक्षी पर्व आय॥३२॥
शेठ सुदर्शन पोसाकिया।निशी चार प्रहर ध्यान धररिया॥
राय आय पोषधशालमांय।शेठ कों उठा पालखी में ठाय॥
ढकी पालखी लाइ राणीपास।कहे अब पुरोतुमारी आस॥
अभया देख अतिही हर्षाय.कामातुर मिष्ट बचन बोलाय॥
गुप्त अंग शेठ अंग को लगाय।गाढालिंगन दे ललचाय॥
शेठका मन नहीं चला लगार।कर कला अभया गइहार॥
कोपातुर कहे अरे गँवार।सुखइच्छेतोकरमुझअंगीकार ॥
नहीं तो अभी न्हइखावूंमार।तोभी शेठ चले नहीं लगार॥
पुक्त अभिग्रह धारा मन।ध्यान पारुं जब टल विघन ॥
अभया लबूरा हाथें शरीर।फाडा कंचुक लेंगाचीर ॥३१ ॥
दोडो २ रायजी करी पूकार।पकडा दुष्ट करे अनाचार ॥
नी नरेश्वर दोडके आय।देख'सुदर्शन'आश्चर्यपाय॥ ३८॥
राती राणी कहे करे शीलभंग।फटे वस्त्र रु बताया अंग ॥
कोपातुर नृप कहे रे धर्म ठग।जात धर्म गुरु लजाये जग।
कहे भट सेदो शुलीचडाय। ले जावेनगर में फिराय ॥
भट उठा लाये शेठ को बारा।शाम मुख किया 'खर'स्वार॥

शील रक्षण सुदर्शन कही। मैं नपूंसककुकछकामका नहीं॥
कपिलाशरमी। दियेबाहिर निकाल। 'सुदर्शन' घरआये तत्काल ॥
अभिग्रह लिया आजपीछेकिस घर। अकेला नहींजानाअन्दर॥
कपिल आया न करी कुछबात। धर्मध्यान करसुखसे रहात ॥

दोहा—कोइक मोत्सव देखने। कपिला अभया दोय ॥
गोखे बैठी एकदा । शेठपूत्र षट जोय ॥ २३ ॥
माता संग रथ बैठके । जाते उत्सव मझार ॥
विप्राणपूछे राणीसे। यह है किसकी नार ॥
राणी कहे 'सुदर्शन की। तब हंस कर कहे सोय ॥
नपूंशक नर नारीके। षट पुत्र कैसे होय ॥ २५ ॥

चोपाइ.

राणी कहे नपूंशक कैसे जाने। कपिला बीता कहा बयाने ।
ठगी तेरे को तब राणी कहे। धर्मी पर नारपे नपुंशक रहे ॥
चिडाइ कपिला कहे तुम कलावंत। एकवक्तकरोसुदर्शनकंत ॥
राणीकहे कुछ बडी नहीं बात। जो करुं तो सची मुझ जात ॥
वक्त हुये दुनोंनिजस्थानेगइ। राणीधाय को बीती कही ।
धाय कहे कियातुमखोटाविचार। धर्मीकभी नकरेतुम से प्यार।
राणी कहे एक वक्त मुझ पास। लाव तो सब पूरुं आस ॥
धाय कला एक करी विचार। शिवका में एक मूर्ति बेसार ॥
ले चाली राणी महलमां। द्वार पाल तस दी अटकाय ॥

कोडी मूर्ती थाय तब कहे।राणीजी मौन वृत एक गहे॥३०
मौने लाइ मूर्ती पुजा करे । तो ते अहारपाणी आचरे ॥
तने किया राणीका वृतभंग।नृप से कहे मारावुं कुढंग॥३१॥
सुनके पोलिया अतिडर पाय।कहे अबऐसा न करुं मांय ॥
यों सालो द्वार पाल डराय ।इतने सें पक्षी पर्व आय॥३२॥
शेठ सुदर्शन पोसा किया॥निशी चार प्रहर ध्यान धररिया॥
राय आय पोषधशालमांय।शेठ कों उठा पालखी में ठाय॥
ढंकी पालखी लाइ राणी।पास।कहे अब पुरे।तुमारी आस॥
अभया देख अतिही हर्षाय.काम।तुर मिष्ट बचन बोलाय॥
गुप्त अंग शेठ अंग को लगाय।गाढालिंगन दे ललचाय॥
शेठका मन नहीं चला लगार।कर कला अभया गइहार॥
कोपातुर कहे अरे गींवार ।सुखइच्छेतोकरमुझअंगीकार ॥
नहीं तो अभी न्हखावूंमार।तोभी शेठ चले नहीं लयार॥
पुक्त अभिग्रह धार। मन।ध्यान पारुं जब टल विघन ॥
अभया लबूरा हाथें शरीर।फाडा कंचुक लेंगाचीर ॥३१ ॥
दोडो २ रायजी करी पूकार।पकडा दुष्ट करे अनाचार ॥
नी नरेश्वर दोडके आय।देख'सुदर्शन'आश्चर्यपाय॥ ३८॥
रोती राणी कहे करे शीलभंग।फटे वस्त्र रु बताया अंग ॥
कोपातुर नृप कहे रे धर्म ठग।जात धर्म गुरु लजाये जग।
कहे भट सेदो शुलीचडाय । ले जावेनगर में फिराय ॥
भट उठा लाये शेठ को बाराशाम सुख किया 'खर'स्वार॥

आगे बजाते फूट ढोल।हाहाकार पुरमे हूवा बे तोल ॥
शेठ घर सन्मुख आये सहू।मनोरमा देख दुःख पाइबहु
अभिग्रह धारा मन मझार । संकट टले तो लेना।आहार
एकांत वेठी ध्यान लगाय ।पंचप्रमेष्टी मनमें ध्याय ॥ ४२

दोहा—सब आये शूली कने।देतेशूली चडाय ॥
'सुदर्शन'।चित चिंतवे। धर्महीलणा थाय ॥ ४३ ॥
जीवत में इच्छू नहीं।धर्म उजालण काम ॥
सहाय करो सासण पति।जेप परमेष्टी नाम ॥४४

चोपाइ

शासण इष्ट देव सहायताकरी।शूली स्थान सिंहासन ध
शेठ पे छत्तर चामर ढुलाय।जय २ कार गगन में थाय४
सबजन अतिपाये चमत्कार।राजा दोड आ धरे चरणार
अभया मेहल से पडके मरी।शील पसाय विससब टरी ॥
पोषध के पाले पच्चखान।।परन्तु न किया कुच्छ बयान ।
नृपती उनको सजा शिणगार । गज होदे करके असवार४
फिराइ पुरमें दियेघर पहोंचाय।'मनोरमा ध्यानसेमुक्तथा।
दम्पती जान धर्म उपकार।तत्क्षण लीना संयम भार ॥४८

दोहा—धाय भर्गी जीव लेय को।पाडली पुर सांजाय
देवदत्ता गणिका घरे । [illegible] ठहाय ॥४९॥
[illegible] गहु बोहराया।

जो ऐसा नर भोगवुं।तोही सफल मुझकाय ॥५० ॥

चोपाइ

मुनिवर आये करत विहार।दासी ओलख दी उसवार ॥
अहार मिस घरमें लेजाय । कदार्थ ना कर मुनिको सताय ॥
मुनिवर नहीं चले लगार।धक्का देकर कहाडे बार ॥
मुनिवर समतारस में लीन।गाम बाहिर आ ध्यान धरदीन ॥
दोहा—अभया मर हूइ व्यंतरी।सा आइ मुनि पास॥
अनुकुल प्रतिकुल अति । दीनी मुनि कों त्रास ॥
शीत ताप छेद भेदके । परिसह अतिउपजाय ॥
अचल मुनिश्वर ध्यान मे।मेरुगिरीज्योंरहाय॥५४॥

चोपाइ

मुनिवर चिंते मन मझार । अजरामर आत्म निर्विकार ॥
विनाशिक तनका होवे नाश।इस से मुझे कुछ नही त्रास ॥
ऐसा ध्याया शुक्ल ध्यान।कर्म खापा पाये केवल ज्ञान ॥
उपसर्ग सर्वहूवा निवार। जन पद देशमें किया विहार ॥
धर्म उपगार बहुतही करी । अन्ते अजरामर पद वरी ॥
ब्रह्मव्रतसे ब्रह्म ही भये। ब्रह्मव्रत के गुन ये कहे ॥ ५७ ॥
दोहा—धन २ मुनि-सुदर्शन।यथा नाम तथा गुन ॥

अग्निझाल न पीगले । राखा शील निपुन ॥ ५
धर्म कुल उज्वलके । पाये सुख अपार ॥
अहो सुखेच्छु सज्जनों।यों पालो ब्रह्मचार ॥ ५
शेठ सुदर्शन की तरह।थोडे ही काल मझार ।
सर्व दुःख से मुक्त हो ।पावो गे सुख सार ॥
स्व परात्म सुख वरन।मैथुन पापोद्धार ॥

ऋषि अमोलक ने रचा।यह चौथा अधिकार ॥ ६१ ।

परमपूज्य श्री कहानजी ऋषिजीमहाराज के संप्रदाय के
ब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलक ऋषीजी रचित अघोद्धार क
गार का मैथुन पापोद्धार नाम चोथा मंजल समाप्तम्

दोहा—अहो रहा सुदर्शन तहाँ, निर्विकार त्रिय पास
कोरो गोरो कुणर है. मसी उरोकरी वास ॥ १ ॥
मुनिश्री नागचन्द्रजी.





मंजिल पांचवा—"परिग्रह पापोद्धार"

पूर्व विभाग "परिग्रह"

परिग्रहका का अर्थ—दोहा छन्द

निज गुण ज्ञानादि तजी। पर परिणती करे ग्रहेण ॥
सोही परिग्रह जिन कहे। पाप पंचम जगसेण ॥
प्रश्न व्याकरण सुत्र के। पंचम आश्रव द्वार ॥
नाम अर्थ युत जो कथे। सो यहा करुं उच्चार ॥

परिग्रह के नाव—चोपाइछंद

परिग्गहो[1]' -पर को ग्रहणा किया। चयो[2]बधे संचयो[3], संचिया ॥
उवचयो[4]' -विशेष वृद्धि पाय। णिहाण[5]-निधान गुप्त जगेरहाय ॥
'संभारो[6]' -भार कारक यह। 'संकारो[7]-ऊकरडी सा तेह ॥
'आयारो[8]'- बहूत समुदाय मिले। 'पिंडो[9]'-पीडा कारक ठिले ॥
'दवसारो[10]' -द्रव्य को सार गिने। महिच्छा[11]-लालच वधे इने ॥
'पडिबंधो[12]'-प्रतिबंध करतार। 'लोहप्पा[13]'-लोभ आत्म प्रसार ॥५

मैहांदि'-महा त्रिसि दातार। उवकरण'-उपकरण उपाधि धार॥
'संरक्षणया'- रक्षा करनी पडे।भारा-भार वाहक जन खरे ॥ ६
संपायूपुर्ष्पायरका-करे उपाय । 'कलिकं करडो'क्लेशकराय ॥
'पविरथरे'-करेदुःख विस्तार।'अणरथों संतवा'-अनर्थ परिचार
अगुत्ति-तनों अगुप्तिस्थान।आयासो खेद करे असमान ॥
'अविउग्गो'-मुशकलसेत्यागाय।'अमूत्ता'-मूक्तिजाते अटकाय
तण्हो-तृष्णा, अणत्थको-अनर्थ । 'अत्था' धनर्थकरे समर्थ॥
असंतोषा-संतोष नशाय।यह तीसनाम परिग्रहकेकहाय ।।१।।

परिग्रह के प्रकार—चोपाइ छंद-

बाह्य परिग्रह नव प्रकार। खेत घर रुपो सुवर्ण दीनार ॥
धान मनुष्यं पशु धातु सर्व।इसकी ममत से आवत गर्व॥
अभ्यन्तरपरिग्रह चउदे प्रकार।मिथ्यत्व त्रिवेद हांस षट धार
चार कषाय मिल चउदह भेद।भवोभव देताजीव कों खेद॥
मूर्च्छा परिग्रह कहा वितराग ।मिरा २ कर धरे अनुराग ॥
यह मेरो घर हवेली हाट।बाग माला वाडी खेत वाट ॥१२॥
कडा तोडा चींटी बेडी हार।पैसा रूपा महोर गहूं जवार॥

---

१ मिथ्यात्व २ स्त्री ३ पुरुष ४ नपुंसक ५ हांस ६ रति ७ अरति ८ भय ९ शोक १० दुगंछा ११ क्रोध १२ मान १३ माया १४ लोभ. यह १४अभ्यन्तर परिग्रह.

मेरे मा बाप भाइ वेन नार ।काका बाबा मामा मोसार ॥
गाय भेंस गज गाजी रथ । तोता मैना गाडी सथ ॥
थाल कचोला कुंभ कळश।ग्राम नगर देश मेरे वश ॥१४॥
मेरे सब मैं सबका मुक्त्यार।मेही रक्षक रहे मेरे आधार ॥
मेरी वक्त पे आवेंगे काम । संचू पोषू पालूं देवुं आराम ॥
इस विध रहा जीव मूर्च्छाय।निज शुद्ध भूला मोह बसाय
सब जगमें हाय धन की लगी ।भाग्य प्रमाणे पावे जगी ॥

परिग्रहका फंद—मनहर छंद

धनकी अजब माया । सारे जगमें फेलाया ।
कोउ बाकी नहीं रहाय।सबही फसाया है ॥
चक्री हरी हल धर । राय मंत्री तलवर ॥
शेठ सैनाधी चाकर । विप्र शुद्र धाया है ॥
ठकराणी राणी सेठणी । ब्राह्मणी रु मेतराणी ।
तुरकाणी गणिकाणी । आदिक लुगायां है ॥
बाबा जोगी रु फकीर । सब हैं धनके हकीर ।
देख रे अमोल धन कौन छिट काया है ॥ १७ ॥
इन्द्रन को नहीं छोडे । देवन के तंग तोडे ।
भूतादि हुमकें दोडे । धनही की आसते ।
नरेन्द्र बोलाये आवे । आमंत सत्कार ठावे ।
सामंत हुकम उठावे । धनही की खासते ॥

शेठजी तनका बढावे । मुनीम हाजररहावे ।
गुमस्ते करे दे काम । देख धन रासते ॥
वडों की है एसी दशा । गरीबों का कहूं कैसा
कहो अमोलकौन छूटे धनही की फासते ॥ १८ ॥
वाजत हैं महाराया । यती महात्मा कहलाया ।
द्रव्य देखकेललचाया । मांग मान को गमायाहै ॥
वांजे बावाजी वैरागी । सन्याशी रु फकीर त्यागी ।
लव धन ही की लागी ।लोक मुढ चीरा ठेराया है॥
भाग्य जोग वने पूज्य । कर्म जोग रहे धूज ।
दोनो पंथसे अलग । बीचमें डुवाया है ॥
माया की माया अवलोय । अमोल अचंभ होय ॥
शाबासरे धन तोस्यू । त्यागीही ठगाया है॥ १९ ॥
मात तात नारी छोड । वंधू मित्र प्रेम तोड ।
ग्राम पहाड वन दोड । धन को कमावने ॥
कम लूखा सूखा खाय । तुच्छ वस्त्र तन ठाय ।
कोडी का हीसाव करे । खरच को घटावने ॥
संची कोडी २ जोडे । मरते न नाणा तोडे ।
दाटे ऊंडा धरती में । चोर से वचावने ॥
नम सज्जन सतावे । पुण्य में नो क्या लगावे।
कृपण कहावे जाने । धन भंग लेजाव ने ॥ २० ॥

महाजन बाजे महा यम जैसे करे काजे।
गुरू जात से न लाजे । निवाजे वैपारी है ॥
बने कूंजडे कलाल । रेवारी अरु चंडाल ।
कंद मूल बेचे ठेका ले दारू निहारी है ॥
सोवन खत को संचाय । बकरोंकी वागण मंगाय॥
ऐसे पाप से कमाब । धनं बजे साहूकारी है ॥
हाहा धनरे बलाय । लगाइ धर्मी घर लाय ।
तो अन्यका कहा कहाय । सब मति गइ हारी है॥

परिग्रहसे दुःख—इन्द्रविजय छंद.

ान से दुःख अपार संसार में।तोभी वेविचार सूख कर माने
ावत दुःख रु जावत ज्यादे।रक्षण दुःख प्रत्यक्ष प्रमाने॥
राजा पंचको दंड धनी को।जातही भोजन वस्त्र को ताने ॥
अपमान हान ही होत धनी को।सब दुःख धनसे आतआने॥
ेवा कराने को वृद्ध झूरे अहा।भोगके कारण तरुणी तरसे ॥
कोमल देह झुरे सूख कारन । ताह क्षुधा तृषा कर करसे ॥
ीत ताप सहे भमें उजाड पहाडमें।कृत्या कृत्ये धन आकर्षे
ाल तालसहे हम्माल बने।यों दुःख से कमावत हर्षे२३
ेटी तिजोरी कोठार बखार। के पट कमाड मजबूत लगावे॥
ताला नाला सांकल डाला । पहरा वाला शूररखावे ॥
धनपर सोवे दीपक जोवे।जले सब रात नहीं नींद आवे ॥
खडके भडके उठके धूजे।रखे मारी मुझको धनलेजावे॥२४॥

लेवे तोदुःख देने का है। देवेतो लेने काही लागे ॥
तेजी मंदी दोनों दुःख दायक। समाचार जाने दुःख जागे
भारवहे कुवाक्य सहे नरमी कहे।जाने धनमिले आगे ॥
योंरक्षण करते बहू धन के प्राणसे धनपे अधिक अनुरागे
आकर जो कभीं जाय विरलाय तो अभागीदुनियांसबकेवे
खान पान सयन गमें नहीं। मित्र सज्जन आदर नहीं देवे
मरने से दुःख ज्यादा मानत तन क्षिणहोयचिन्ताअहमेवे
तो भी मानत है सुख धन से पेख अमोलख आश्चर्य लेवे

कथा—नववी

परिग्रह पाप के फल बताने वाली–"सागरशेठकी"

दोहा–परिग्रह से संसार में।पाये दुःख अपार ॥
सागर शेठ की कथा। कहुं ग्रंथ अनुसार ॥ १ ॥

चोपाइ

'मगधदेश'राजग्रही नगर।'प्रसेन्नीजीत नामें नरवर ॥
तहां रहे 'सागर' नामे साहूकार।कोड निनांवेण धनरखवा
उस के चलता बड़ा व्यापार।कोईकोनहीं करे उदार ॥
सुन्यायजा किसीका नहीं करे। दान नाम सुण भृकुटी चढे

देता देखे दूसरे तांय। मनमें प्रज्वालित भस्म होजाय॥
जाडे औछे वस्त्र अंग धरे। तुच्छ लूख भोजन सो करे॥४॥
प्रहररात को उठ जंगल जाय। छाने लकडे लावे उठाय॥
बडी शुभेही फिरे बजारके मांय। पडा अनाजभाजी चुगलाय॥
उससे शेठाणी भोजन बनाय। ऐसी विधि से काल खुटाय॥
चिन्दी यें सांध गादी तकीये किये। सयन मेंसदा सोहीलिये
दीपकका नहीं घर में काम। सोवे बैठे धनके धाम॥
खडका सुन चोर का वैम आय। तो दीपक से घर सोधाय॥
हवेली का जो कंकर खसे। सब गिरनेका दिल डरवसे॥
ऐसे संचिया द्रव्य क्रोड बार। प्राण से ज्यादा उस पर प्यार॥
पुत्र सुरुप हुवे तस चार। उनका भी वैसेही करे गूजार॥
कोटी पत 'सागर' को जान। दे निज धूया पुत्रों को धनवान॥
दैव जोग 'शेठाणी' मरी। शेठ मालकी घरकी करी॥
जूने कटे वस्त्र बहूवों को दिये। जो शेठाणी के बच कर रहे॥
पीयर से वो लाइ जो माल। गुप्त रखकर लगादिया ताल॥
बार तेहवारे काम यह आय। बहुओं को यों दी समजाय॥
अबला बेचारी कहे सो करे। पीयर स्वसुर की लज्जाधरे॥
चारों पुत्र को संग लेजाय। इंधन धान भाजी चुगलाय॥
अन्धारे में दे बहुवों तांय। उसका वो देवे खान बनाय॥
भोजन से निवृत्ती बहुसे कहे। वन में जावो टोपला लये॥
इंधन वीण लावो आवे काम। वस्त्रबनाने होवेंगे दाम॥

बेचारी शरमाइ तैसेही करे । बेटे बहू बुड्ढसे डरे ॥ १४
महा कृपण तस नाम प्रकटाय।परन्तुवो जरा नही शरमाय
सी खामण दे उसी से ही लडा।सज्जन मित्रकी परवानहींव

दोहा——एकदा चारों बहू। इंधन को गइवन ॥
इंधन संग्रही चिंतवे । अभी बहुतहै दिन ॥ १६
जावे तो काम बतायंगे । शामको जावेघर॥
विश्रांती ली तरुतले । पुण्य जोगते अवसर ॥१७

चोपाइ

विद्याधर जावे गगन मझार।विमान स्थंभा करे विचार ॥
नीचे सातियों देख दुःख मझार । ढिग आ वंदी करे उचार ।
बहिनों दुःख मेरे से कहो । चाहिये सो मेरे से तुमलहो ॥
चारों सुन के विचारे यों । घरका भरम गमावे क्यों ॥ १९
चारोंही कहें भाइ हमे सुखी । क्या कारण तुम कहते दुःखी
सुसरा पतिधन सब हम घेर।फिरने आइ यह काम हेर ॥ २०॥
संतोष बन्ती चारों को जान । खेचरकहे हर्ष अतिआन ॥
गगन गामिनी विद्या लहो । उडके जावो जहा चित्त चहो॥२१॥
हर्षे के सीखा मंत्र तत्काल । विद्या बता खग गया तबचाल
चारों तब साधी उसवार । घरको आकर किया विचार॥ २२॥
रत्नद्वीपमाहिसाठ्याग्यानसंपूर्नी।तब से इच्छा देखन बनी॥
पहर रात गये सब जन सो जाय।तब आगे चले मंत्र ध्याय ॥

पिछली रात को यहांही आंय।अपना भेद कोइ नही पाय ॥
चारों के सला जाची यहध्यान।उठ आइ संकेत प्रमान ॥
लक्कड बडा पडा घर बार।चारों उसपर हुइ स्वार ॥
मंत्र स्मरा उड चली उसवार।रत्नद्वीप आइ हर्षअपार ॥
फिर आइ घर पिछली रात।निजस्थान सूती हुवा प्रभात॥
धान पिसाने सुसराउठाय।चारों उठ कामें लगी आय ॥२६॥
घर बाहिर लक्कड उखडा देख।शेठ विस्मय पाये विशेख॥
बहुतकालका जमा उखाडाकष्ट।यहकोनकर्मीकरेमुझघरनष्ट॥
इसकी चौकस करना जरुर। दिन पुरा किया चिंतापूर ॥
रात कों छिप ऊभे अंधारे मांय।चारों बहूवें तब चल आय॥
लकड पर बेठ उड गइ तत्काल।पिछली रात आइ घर चाल ॥
शेठ चिंते डाकणी मुझ घरमांय।कल देखूंगा कहांयहजाय ॥
प्रातेगुप्त सूतार बोलाय।यह काष्ट कोरो जैसे मनुष्यसमाय ॥
कंजुस गरजी जान धन बहुलेय।काष्टसुतारसो कोरीदेय॥
शामको सुताउसमें आय।चारों सतीसो खबर न पाय ॥
नित्य प्रमाणे चली हो स्वार।रत्नद्वीप में उतरीगइपगचाल॥
बाहिर निकल शेठ रत्न ढग जोय।अतिहीहर्षितमनेंमेंहोय॥
चिंते मूर्खणीचारों ही बहू।यहलक्ष्मीकचेर ज्यों पडी यहांबहु
थोडी २ उठा जो लाती घर मांय।तो मुझदारिद्र देती गमाय
आजतो यहां प्रगट नहीहोन।थोडा धन ले चलुं भरखुना॥
कालसमजा कर थेले ले आवूं।सर्व यह धन समेट लेजावूं ॥

यहां मुझे देख वहूओं दुःख पावे। रखेमुझे यहांछोडके जावे।
योंकेइ विचार करता मन में।रत्न भरे वहूते खोलन मे ॥
और ढग किया काष्ट मुख आगे। काष्ट में आंप पेठे होनागे।
तनअंतरजहां जगाह रही खाली।वहां२ लिये रत्न सो घाली।
कान नाक मुख अंदरभरीये। लटका लिये वंधेपोटालिये३६।
इतनेचारों आ कर वैठी पाटे।मंत्र पडा उड चली नभ वाटे।
द्वीप वहिर धन जान न पावे।अटका काष्टसीम जहां आवे।
वहुंचिंतेआजक्या हुवाकारन।मंत्र भूली पुनःकरेउचारन ।
थोडा चल काष्ट फिर अटका।चारोंका दिल दुःख से खटका।
देर हुइतो सुसराजी रीसावे।लोकों में इज्जत अपनी गमावे।
सुने शेठ पनवोला नहींजावे।मुख के रत्न कैसे वोल गमावे।
वोवडाता वोले धीरे २ चालो। सुनी शब्दडरी वहूं चालो ।
घाइ लक्कड में भून भराया।छोडो इसे चल चदरविछाया ४०।
ओडणे पे वैठी मंत्र पढचाली।काष्ट पडा समुद्र से ते काली।
'सागर'शेठ सागर में गये।धन नहीं छोडा मरण ही लये ॥
मरके उपने नरक मझार। सागरों तक सहेंगे दुःखभार ॥
परिग्रह ऐसा है दुःख काल। देखो कथा यह हीये विचार ।

दोहा—आगे जा एक वहूवदे, सैंदी वोली लगी तेह॥
रखे सुसराजी गुसरह। आये अपने पीछेह ॥४१ ॥
लोभ कर रत्न संचिये। काष्ट अटका इसकाम ॥
वोनो हाथ आवेनहीं। चलो शीघ्र देखें धाम॥

चोपाइ

होन हार सो होवेइ बाइ । यों चिंता करती घर आइ ॥
सुसराजी नहीं सदन देखाइ । बीती बात पती को चेताइ ॥
तात मरण फिकर सोलाये।द्रव्य मालक हो मनहर्षाये ।
बात नहीं किस आगे प्रकासी।जाने नहीं कहां गयेसो नासी
देख पिता गत सो समजे मन । लोभ तजी सुकृत करेधन ॥
कोन कमावे कौन विलसावे। धन के मालक कोन न थावे ॥

दोहा—अहो सुखार्थीप्राणियों। परिग्रह जान दुखःकार
ममता तज समता वरो।तो पावो सुख सार॥ ४९॥





मंजिल पांचवा—"परिग्रह पापोद्धार"

उत्तरविभाग—"अकिञ्चन".

दोहा—सर्व सुखका स्थानहै।अकिञ्चन यह व्रत ॥
ममता तज समता भजे।जो है मुनि सामर्थ ॥ १ ॥
प्रश्न व्याकरण सुत्र के।पंचम आश्रवद्वार ॥
आकिंचन गुन को कथे।सो यहां करुं उचार ॥

चोपाइ

अपरिग्गहजो करेपरिग्रह त्याग।सवुडेसोआश्रवतजमहाभाग॥
सेमणे-सोही साधू कहाय। आरंभ परिग्रह से निवृताय ॥१ ॥
क्रोधादितजे चारकपाय।तेतीसबोल आरॉध सकाय॥
ओर अनेक होवे गुनका धार।तीर्थकर यश ?करं उचार २॥
पसत्थेसु-प्रशस्त तस अर्थ।'अविततेहैसू'- जाने यथातथ ॥
सासेय भावे सु-शाश्वतेभाव।अवठियेपु अवस्थित स्वभाव ॥
संके कंखे निर करिता सोए।शंका कांक्षा रखे नहीं कोए ॥
'संईढ्' श्रद्धे श्री जिन वेण।संसैन- भगवंत का चले तेन ॥
अपिमाणे निदान रहीन। अगारवे- गर्वतजे विनीत ॥

अलुद्धे' सो लंपट नहीं होए।अमूढ सुज्ञ कहावे सोय॥६१
मन वच काय की गुप्ति धार।जो सो वीरे-शूर वीर जुजार
यों परिग्रह त्यागी की महिमा कही।प्रश्न व्याकरण सूत्र महीं

दोहा—पूर्व विभागे जो कहे । परिग्रह दो प्रकार ॥
वाह्या भ्यन्तर जो तजे।सो अकिञ्चन अणगार ॥७॥
आसा दुःख सब से बडा । निरासा सर्व सुख ॥
व्रति वर्तै मर्यादमें । तो नहीं पावे दुःख ॥ ८ ॥

चोपाइ.

जो करे सर्व परि ग्रह त्याग।सो अणगार होवे महा भाग्य
वस्त्र उपकरण रखे जो पास । फक्त धर्म लज्जा रखे खास॥
ममत्व उसपर जरा नहीं करे ।खप उपरांत जरा न संग्रहे॥
निष्परि ग्रही उनको जिन कहे।जो जिनवर की आज्ञा मैं रहे॥
ग्रहस्थ से परिग्रह नहीं तजाय।ममत्व मोचन मर्याद कराय
नव प्रकार वाह्य परि ग्रह कहे।जितना जिस मालकी में रहे
आवक जावक स्थित अवलोक । और सब इच्छा दे रोक॥
तो अव्रत बहुत घट जाय।संपति घटे विप्ति कम रहाय ॥१

परिग्रह त्याग सद्बोध—मनहर छंद

आतम हित धनी सो घटाते ममत्व मनतनी ॥
जितनी मिले उतनी में संतोष मन लावे है ॥

खाने को तो अन्न। तन ढकन वसन।
रहवने मकान एताही ज जन चावे है ॥
दैव के प्रमान मिले सर्व ही तो स्थान आन।
किये खेंचा तान नहीं आवे नहीं जावे है ॥
काय को विपति करे पुण्यका खजाना हरे।
अमोल विचार धरे सोही सुख पावे है ॥१३ ॥
निष्परि ग्रही निश्चिन्त। रहे अहो निश चित्त।
चोर रु ठाकर विरादरी न सतावे है ॥
लघुता किसीके पास। कभी न करे अरदास।
आस पास काटे सोही, पूज्यनिय थावे है ॥
सब जग सन्मान लये।चहावे सो आग्रह से दये।
।सिद्धि रिद्धि विन साधे। ता ढिग चल आवे है ॥
अकिंचन व्रत भाइ। सब से उत्तम कहाइ।
अमोल अकिंचन कोइ पुण्यात्मा पावे है॥ १५ ॥

निष्परि ग्रही के सुख-इन्द्र विजय छंद

जो मुनिराज गरीब निवाज ममत्व तजा जो जगत पूजावे।
निर्दोष स्थान सदासु अमान विना दिये दाम रहने को पावे
नित्य सरस अहार इच्छित प्रकार देइ सत्कार सहुकार बहरावे
उज्वल वस्त्र मांगे मिले तल परिग्रह त्यागी सदा सुखी रहावे
संचे नहीं कन कोडी नहीं धन हुकमे लख्खन सु कृत्य लगावे

गज गाजी भी नाय स्वारीन ठाय इच्छेजहां जाय चावे सोपावे
सब करे दर्श पाते अति हर्ष न रूप आकर्ष मनोग्य देखावे
फकीरी की होड क्याकरेअमीरीअमीरोंफकीरोंको सिरझुकावे
जो सुख बारह मांस पर्यायकेधारक मुनीकी आत्म पावे ॥
सोसुख नहीं सर्वार्थ सिद्ध में।जो सुख सब से अधिक कहावे
छूटे मम त्व परपंचसे जोमुनि ज्ञानानन्दे निजआत्म रमावे ॥
अमोल अनन आनन्द अकिञ्चन।व्रतीकी महिमाकैसे कहावे।

कथा—दशवी

परिग्रह त्याग के फल बताने वाली—"लक्ष्मीपतीशेठकी

दोहा—त्रिलोकपतिषटखन्डपती । महाराज साहुकार ॥
अनंत जीव परिग्रह तजी। पायेसुख अपार ॥ १ ॥
पण यहां लक्ष्मी पतीतणी।कहुं चरी मनोहार ॥
परिग्रह ममत्वत्याग ते ।हुवा सो केवल धार ॥ २ ॥

चोपाइ

चंपानगरी ऋद्धी भन्डार।राजा कोणिक है सुख कार ॥
वसूपती। शेठशेठ सिरदार । वसूईभ धन भरा कोठार॥१॥
पांच५००००० लाँख दूकानो प्रसार।और सायवी उनके अपार ॥

कमला नाम प्रेमलासती।सुरूप इंद्री पुर्ण गुण वती ॥ ४ ॥
एकदा प्रवल पुण्य पसाय।अपराजित स्वर्ग से चवीआय ।
पुण्यात्मकमलाकूँखअवतरे।लक्ष्मीस्वप्न देख हर्षसाधरे ॥५।
तीसरे महीने शुभ डोहले लिये।दानपूण्य धर्म बहुते किये।
सुखसे करे सा गर्भ प्रतिपाल।सवा नव मांस में जन्मे बाल ।
दिव्य रूपे हुवा भूवन प्रकाश।सुखसंपत्ति की प्रगटी रास ।
कुलदेवी का चला आसन।अवधि ज्ञाने करोविलोकन ॥ ७ ।
महा पुण्यात्म प्राणी जान । भक्तिकरन हुलसे तस प्रान ॥
तूर्त आइ शेठ घरके पास।सप्तकोट ।विच मेहल कियाखास
सप्त मजल षट ऋतु सुख पूर।इच्छित पावे किया सो सुर ।
उस में सुख कुँवर जी पावे।देवी देवे वो जो चावे ॥
लक्ष्मी स्वपनाके अनुसार।लक्ष्मी पती नाम दे उसवार ॥
शुक्लेंदू ज्योंवृद्धी पाया । विज्ञान वय में वो जब आया ।
मेहल मेंही देवी कला पढाइ।योवन अवस्था जब प्रगटाइ
कुलवंती गुणवंती रूपाली।नमणीखमणी गुण उत्कृष्टभाली॥
आठ कन्या देवी देख लाइ । मेहल के अंदर दि परणाइ ॥
सुखविलसेंदेवदोगुंदकसमाना।जाताकाल जरा नहीं जाना॥
मेहल का देवी देती पहेरा।अन्दर नर नहीं आवे अनेरा॥
पुण्य प्रताप से सुखप्रगटावे।सो भोगवंत काल वितावे ॥

दोहा—एकदा धनपती शेठजी । हुवे बहुत बीमार ॥
कुँवर बुलाने दासीतव।आइ मेहल मझार ॥ १ ॥

श्री मती कूँवराणी तब। पूछे क्या है काम ॥
खबर दार आज पीछे यहां। दुःखका मतलेनाम ॥

चोपाइ.

वसुपति जब मृत्यु पाये। गुमास्ते बहु समाचार पठाये॥
कोइ कहे नहीं कुँवर पे जाइ।दहन क्रिया करीसबघबराइ॥
मालक विन कौन काम चलावे।सज्जन गुमास्ते सबघबरावे॥
बंधपडी पंच लाख दुकानों।होय नूकशान औरशोरफेलानों॥
कोणिक राजा सुन घबराये।शाग्निशेठ के घर चल आये ॥
सर्वजन उठ आदर देइ. । उंचस्थान राजाजी वैठेइ ॥१८॥
कर जोडी सब अर्जी करते।कुँवर साहेब नीचे नहीं उतरते॥
मालक विन काम कैसे चलावे। राजाजी तब हुकम फरमावे॥
कोइ जाकरलावोकुँवरकेतांइ।सबकेहसुरी शक्ती से नजवांइ॥
दासियों हाथ खबर जो पठाइ।पीछा उत्तर कोइ नहीं लाइ ॥
एक दासी को नृपती पाठावे। बोभीखबर नहीं लेकर आवे॥
दो तीन दासी भेजी धमकाइ । शाम हुइ कुछ खबर न पाइ ॥
आसुरुत राजा हो घर कौ जाये।शक्तउपाय शोचशुभआये ॥
उसवक्तसबसेबडीदासीआइ।मुनिमजीउसकाओलखवताइ ॥
जेरबंधसे नृप उसे मराइ । शक्त हुकूम तब यों फरमाइ ॥
जोखम कुशाल तुमसबचावो।एकघंटे में कुंवरले आवो॥
नहीं तो तोपसे महल उडावूं। मुलायजाकिसका नहीं लावूं ॥

सुणकर चेटी अति घबराइ।तत्क्षणभाग कूमर कने आइ ।
कहनेकी हिम्मत नहीं चाले।रुदन करे नयनेनीर डाले ।
कुमरदेखकर आश्चर्य पाये।यह क्या गायननवे सुनाये॥
जिससे आँख में पानी आये। सुनते देखतेआति उमंगाये॥
श्रीमति उसे दिलासा देती।रोनेका कारण पूछे उस सेती॥
उसने वीती सब सुनाइ।अतिही कोपे कोणिक इ ॥
मुझे यह मरी सोभी वताइ.नही जावे तो मेहलदेतेगिर॥
सुन लक्ष्मी पती हर्षी कहता।देखें राजा कैसा कहां रहता
शीघ्रपोशाख सजके चाले।आयेशभामें सब ने निहाले
गुलाबी मेहताव जोंपडाउजाला।राजानजीकलियेतत्काल।
सब ऊभे होकिया सत्कारा।देख पुण्याइ विसमय अपार।
कहेनृप नगरशेठ पद्वी संभालो।नामबढावोसबकोंपालो
आगे कैसे सब काम चलाना।सोहुकुम इनको फरमाना
कुमर कहे पुछो पिताजीताइ।में इसमेंकुछ समजुंनाइ ॥
राजाकहेशेठपरभव सिधाये।कुमर कहे पुछना उन आये
सुनी सभा जन हंसने लागे।रायकहे कुमर बड भागे
मरण दुःख की बात नजाने।जन्म से सुरकीये हैं पुणयवा
कुंवरसे नृप कहे मरेनहींआवे। कैसे अब यहकामचलावे
कुंवर कहे कह गये पिताजी।वैसा सब करो मेंहूं राजी॥३
गरमी से दिल मेरा घबरावे।यों कही उठ हवेली में आ
नृप कहे अब इने मत सतावो।पाहिले फिक काम चलाव

दोहा—कुमर आ बैठे सेजपर । किये अंग वस्त्र दूर ॥
कुमलाये धूप पुष्पजों।उतरा मुख का नूर ॥ ३५ ॥
शिखा पडी मुख सन्मुखे । श्वेत बाल तब देख ॥
यह क्या कहां से आगया । करते सोच विसेख ॥
एकाग्र शुद्ध उपयोगसे । जाति स्मरण पाय ॥
देख भवान्तर श्रेणिको ।धर्म ध्यान मन ध्याय॥३८॥

चोपाइ

संयम से अनुत्तर विमानसिधाय।वहां से चवकर यहां सुख पाय
एसा अवसर पा करणी न कीनी।पिता मणी साठे कोडी लिनी
धर्म कर्म का भेद न पाया । विषया नन्दमें जन्म गमाया ॥
निश्चय मर पर भव को जाना।खाली खजाना फिर पस्ताना
ऐसे ऊंडे पडे फिकर के मांही।श्रीमती देख जाणी चिन्ताइ
कर जोडी कहे फिकर तजोजी।चाहीये सो धन मुझसे लोजी
आठ कोटी में पीयर से लाइ ।आठ कोटी मुझ बेनो काही
इस से सब टोटा पूरा कीजे ।निश्चिन्त होकर भोग भोगीजे
कुमर कहे अहो सुनीयेशाणी ।धनकी चिन्ता मननहींआणी
मरने का फिकर पडा अति भारी।धर्म विन मेरी होगी खुवारी
जरा गरमीसे इत्ना दुःख पाया।नरका दिका दुःख कैसे सहाय।
एक दिन काल जरूर ले जावे।धन सज्जन नहीं उससे बचावे
श्रीमती कहे न दुःखावो जीया।यह उपाय मैने पहिले कीया॥

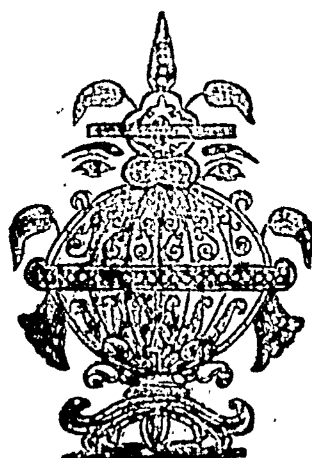
चिन्तामणी रत्न रखा द्वारे।निजराणा करें आवे जम जा
खुम होगा कहेंगी कृपा कीजे।सपरिवार शेठ अमर कर दी
नहीं मरोगे नहीपरभव जावो।न्ही किंचित् मात्र दुःख पा
सुन लक्ष्मी पती को हांसीआइ।कहे भोली ऐसा होता कह
जग जंतु सब जीवना चहावे।कर निजरान अमर होज.वे
मेरे तात का किया संहारो।प्रत्यक्ष वैसो होवेहमारो ॥
कृत्य कर्म फल निश्चय पावे।येही चिन्ता से मन घबरावे ।
शेठ हसें शेठाणी खिशाणी।अचंभी कैसे बने ऐसे ज्ञानी ॥
चिडकर कहे कीजे उपाव साचा।जोंनहीं जावें कालके डा
शेठ कहे उपाव में लिया विचारी।सो करनानिज२इकत्य
कठण ताइ तो उसमें पडेगा।परन्तु यमजोरजरा न चलेग
श्रीमती कहे शीघ्रही फरमावो।वोही करें हममनमेंउमावे
शेठ कहे संयम आदरना।निश्चय मिटेगा जिससे मरना॥
आठों कहे सच्ची सापकी शिक्षा।आपके संगहमलेंवगीदीक्ष
लक्ष्मीपती तब लोच कियाइ।बेश गृहस्थ का दूर धराइ
सांसणपती सूर वहां तब आया।संयमवेशसबकावहांठाय
लक्ष्मी ऋषिजीलिया वेशधारी।आठेंभामनी कोदीदीक्षा
आगे ऋषिपीछेआर्जिकाचाली।क्षपक श्रेणी ऋषिवरझाली
मेहल उतर ते कर्म खपाये।केवल ज्ञान दर्शन वांही पाये
धर्मानुरागी सुरहर्षाये । गेबीबाजे गगन मेबजाये ॥
सुन राजा शभा विस्मयपाइ।इतने में ऊभे लक्ष्मी ऋषिआ

अत्यन्त आश्चर्य सबही तबपाये।अबीही केवल कैसेउपाये ॥
नरसूर वन्दे अति आन्दे।दे उपदेश जिनजी भव्य बृन्दे ॥
अनित्य सम्पतिसंसार असारो।कुटुम्बस्वार्थीअशूचिदेहधारो
आयु अनिश्चित जन्म न हारो।बनी वक्त कुछ करो सुधारो
एकही धर्म सदासुखदाइ । अनगार सागार दो परथाइ ॥
शक्तिसम ग्रहो पालो उमाइ।जोअव्याबाध सुख चहाइ ॥
इत्यादि बोध सूनि उमंगाया।वैराग्य बहुतोंके मन आया ॥
एकसो आठ नर सोलेसोनारी।तज परिग्रह हुवेसंयमधारी॥
श्रावक श्राविका हूवे बहुताइ।ग्राममें धर्म महिमा फेलाइ॥
विहारकर भव्य जनउद्धारे । लक्ष्मीऋषीजी मोक्षपधारे ॥
और सभी ऊंची गती पाये।जिनने परिग्रह ममत्व छिटकाये ॥
दिगंबर मते यह सुनीकथा । जोड़करी यथाबुद्धियहांयथा ॥

॥दोहा—भावार्थ दृष्टांतका । सोचो सूज्ञ मन मांय ॥
पाप परिग्रह पर हरो । जोंआरम सुख पाय ॥ ६२॥
अपार सुख संपतिकों । एकही क्षण के मांय ॥
त्यागी लक्ष्मी पतीजी ।मोक्ष विराजे जाय ॥ ६३
स्वास्थिती सम यों सभी । करो परिग्रह त्याग ॥
तो तुम भी यों पावोगे। अक्षय सुख सोभाग ॥६४॥

स्व परात्म सुख वरन।परिग्रह पापोद्धार ॥
ऋषि अमोलख ने रचा।यह पंचम अधिकार ॥ ६५ ॥

परमपुज्य श्री कहानजी ऋपीजीमहाराजकी संप्रदायके
बालब्रह्मचारी मुनिश्रीअमोलकऋषीजी रचित
अघोद्धार कथागार का परिग्रहपापोद्धार
नामक पन्चम मंजल समाप्तम्





मंजिल छट्ठा–"क्रोध पापोद्धार"

पूर्व विभाग–"क्रोध"

दोहा–जो करे क्रूर स्वभाव कों।सोही क्रोध कहाय ॥
निज पर आदि अंतमें। क्रोध महा दुःख दाय॥१॥
भगवति शतक पंचवे । पंचम उदेशे मांय ॥
क्रोध नाम गुण निष्पन्न। कथे सो यहां कथाय॥२॥

क्रोधके नाम—चोपाइ छंद

'कोहे'-क्रोध,-'कोवे' कोप जान।'रोसे'-'रोश'-'दोसे' द्वेषवखान
'अखमा'-करे क्षमा का नाश।'संजले'प्रजले ज्यों अग्नि घांस॥३
कलह-क्लेश का हे करतार। 'चंडिजे'-चंडाली होवे जहार॥
'भंडणे' भंड जगत में होय। 'विवांदे'-विवाद करे हैसोय ॥४॥
दोहा–यह दश नाम क्रोधके। कहे सूत्र अनुसार ॥
आगे भी सूत्र से कहूं। क्रोध के जे प्रकार॥ ५ ॥

क्रोधके प्रकार–चोपाइ छन्द

क्रोध का कहा है चार प्रकार।चारों ही जीव को है दुःख कार॥

चारोंही करे सद्गुन का नाश। चारों ही से होवे चउ गति वास॥
जो अमरोष जाव जीव धरे॥ अनन्ता नु बन्धी तास उचरे
सम्यक्त्व उस जीवों को नहीं आय। नरक गति में मर कर जाय
बारह मास लग रीस जो रहे। अप्रत्याख्यानी उसको कहे।
श्रावक पणा सो तो नहीं पाय। तिर्यंच गति में मर कर जाय
चार मास लग धरे जो विरोध। प्रत्याख्यानी है सो क्रोध।
साधु व्रत सो धर नहीं सके। मनुष्य गति में उपजे मरके॥९।
दो मास लग रहे अमरोष। संज्वल क्रोध का सो है दोष॥
केवल ज्ञान उपजे नहीं तास। होवे देव गति में वास॥१०।
इसतरह क्रोध के जानो भेद। चारों गति में देवे खेद॥
ज्यादा सो ज्यादः दुःख देखाय। ओछो किया ओछा दुःख पाय

क्रोधसे दुःख—मनहर छन्द

क्रोध हैजी महा आग। जावे जिस घट लाग॥
जावे सब गुन भाग। वन्ही घृत ज्यों भडकावे है
सत्य रू संयम। तप जप सम दम॥
करे सद्गुन भसम। कु गुण प्रगमावे है॥
करी सम्यक्त्व नाश। बने मिथ्या राख रास॥
करे कृष्ण आत्म भास। जली दूजे को जलावे है।
विस्तार बडे अपार। होवे बहूतही संहार।
प्रबल क्रोध अंगार। ऋषि अमोल दर्शावे है॥१

क्रोधाग्नि—इन्द्र विजय

क्रोधा नल अनल से अधकी पाणी से सो बुजी न बुजावे
अग्नि अभ क्षे बंध पडे।यह बडे विन भक्ष अपारही जावे ॥
अग्नि प्रजले ते स्थान जले।यह दृष्टि मात्र से अन्य तपावे
महा ज्वाल प्रबला क्रोधाग्नि।कोई अमोलक संत समावे ॥

क्रोधके दुगुर्ण—मनहरछंद

जैसे कोई अन्ध नर । देखे नहीं निज पर ।
जावे इत उत चर ॥ शुद्ध न लगारी है ॥
तैसे क्रोध अंध भये । ज्ञान चक्षु जास गये ।
भली बुरी देखे नये । करे अविचारी है ॥
अपवित्र अंध स्थान । पड लोटे जाइ जान ।
भक्षा भक्ष खान पान । करे निर धारी है ॥
केई अंध ज्ञान वान । गुन वान पुण्य खान ।
पण क्रोधी पुण्य हीन । एक पापा चारी है ।१६॥
महा चंडाल क्रोधी बजे।कु कृत्य करतो न लजे ॥
कीडी को कटक सजे । दया को नसावे है ॥
मात तात भग्नि भ्रात । स्त्री पति पुत्र जात ॥
स्वजन सेवक श्वामी । घात तस चावे है ॥
अधिक संताप मारे । आगे पीछे न विचारे ।

अन्य पे न वश पूगे । आत्म घात ठावे है ॥
जेहर शस्त्र अग्नि जोग । देवे निज तन भोग ॥
क्रोधी जन महा चंडाल । इन गुने भंडावेहै॥१५॥

इन्द्र विजय छन्द

जेसे राक्षस पैसत अंगमे । रंगमें भंग सब संग में करता ।
तन कॉंपतहापत उर चांपत। अरूण नेत्र जग नहीं डरता ।
कोइको मारत ताडत काइको। उल्लुकीमाफिक वाक्य उचारत
वेशुद्ध होय हंसे कधी रोय इज्जतखोय यों क्रोधीके उचरत
जो खावत जेहर चढे तस लेर ।मरे एक वेर उपावे उतारे
चडे क्रोध विष तपे अहो निस।बुरी हो जगीस मरे अरु मारे।
भव अनंत मझार करे संहार। मरे रु मार हावत अपारे।
क्रोध महा जेहर महा बुरी लेहर।प्रभू करे खेरन और ही तां

मनहर–छन्द

क्रोध कृत्घनी होय । सत्कार न देवे कोय ।
मित्रता न निभे । शत्रुता सबी से करता ॥
जमी बात तांइ । क्रोधी विगाडे है क्षिण माहीं ।
स्थिर तन मन नाहीं । दुर्गुण उर भरता ॥
बुद्धि बल नष्ट होय । सत्व रूप भृष्ट सोय ।
जमी पेठ देवे खोय । सब अपयशः उचरता ॥

क्रोधके दुर्गुण अनेक।कहां लग कथुं छेक।
अमोल विवेकी जन।क्रोध पर हरता ॥ १८ ॥

कथा—इग्यारवी

क्रोधके फल बताने वाली "बन्धुमति बन्धुदत्तकी"

दोहा—क्रोधके वश अनंतही।डूबे जीव संसार॥
प्रत्यक्ष दुःख दायक यह।क्या कथे कथनार ॥ १ ॥
तोभी जन मन रंजने।ग्रंथानुसार कथन ॥
बंन्धुमाति बंधुदत्त का । सुणो श्रोता एक मन॥२॥

चौपाइ

'भृगुकच्छ'पुर, है सुख दाय।'विमल शेठ,धनवंता रहाय ॥
'बंधूदत्त, तस पूत्रप्रबीन । विद्याकलारुप गुण लीन ॥ ३ ॥
'ताम्र लिप्ती नगरी के मझार।'रतीसार, शेठ धनधार ॥
'बंधुलीनारी, गुणवंत। बंधूमती, तस धूया सो हंत ॥ ४ ॥
सो परणाइबन्धू दत्त साथ।वामा लघू वय पीयर रहात ॥
'बन्धुदत्त, धन कमाने काम।प्रदेशचला लेकर वहु दाम ॥
समुद्र रस्ते वो जबजावंत। पापोदय तस झहाज फुटंत ॥
काष्ट लगा हाथे उस सहाय।'ताम्रालिप्ति,नगरी ढिग आय॥
जाना निज सूसराका गाम।बाहिररहा शरम दिल पाम ॥

सूता एक देवालयमझार। मित्र हाथ भेजे समाचार ॥ ७
उस वक्त 'वंधुमति,सज्ज सिनगार। खेलन कों गइ घरके बहा
कंकन तस करमें बहु मोल। देख तस्कर कियालेने तोल॥८
देलालच लेगया एकंत। जहांकोइ नर नहीं देखंत
निंकाले कंकननिकलेनांय। हाथ काट ले भगकोजा
'वंधुमती, तब करी पूकार। राज पुरुष दोडे उसलार
भागता आयाग्रामेकबहार। तस्कर चिंतन छुटूंइसवा
बचन उपायदेखंताजाय। 'वंधूदत, निद्रामें देखाय
छूरी कंकनरख दिये उस पास। छुपा गुप्त जगेसोनास
राज भट पछिसे बहां आय। माल साहित 'वंधुदतपा
मकर चोरजाणा धर उठाय। पूछीतलास नकोइकरा
मारते लाय नृपती पास। मालयूक्त वतामकरप्रकाश
हूकमदिया शूलीदोंचडाय। चटभट धारा शुलीपरजा

दोहा—बंधूदत्त का मित्र तब। आया शेठ के पास ॥
जमाइ आये आप के। सब वीतक प्रकाश ॥ १४ ॥
हर्षी शेठ उठ लाने कों। सुने धूत्री समाचार ॥
चोर पेखन आये शुली ढिग। ले सो मितको लार

चोपाइ.

मित्र शुली पे 'वंधूदत,जोय। हाहाकर मूर्छित पडासोय ॥
शेठजीनिजजामात पाहिचान। असराल रुदन मांडाउसस्थान

तलार अचंभी पूछे तास। शेठ कहे यह जमाइ मुझ खास ॥
कैसे इसकुं जाना तुम चोर। तलार वीतक कहा देखा ठोर ॥
मित्र कहे थक के सूताकुमार। कपटी चोरकोइ किया अत्याचार
राजाजी सुन शीघ्रतहां आय। शेठमित्र संतोषे समजाय॥१८॥

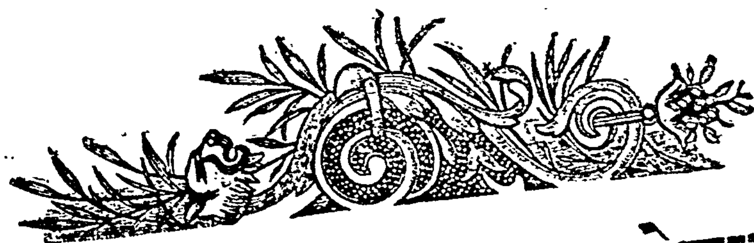
दोहा—वन पाल तब आय के। बधाइ हर्षी सुनाय ॥
बाग में आज पधारीये। ज्ञानी गुनी मुनिराय ॥
राजेश्वर कहे शेठ से। चलोमुनि श्व पास ॥
यह जुलम कैसे हुवा। पूछके करें तलास ॥ २० ॥

चोपाइ

सब जन मिल मुनिवर ढिगआय। लूली २ नमीने वंदे पाय ॥
कर जोडी पूछे नरपाल। इस जुलम का मूल फरमावोदयाल।
मुनिवर कहे नृपादिक सुनो। क्रोधकै ऐसे कटुक फल छुनो।
बांधा भोगवे दोनोंही जीव। जिनकी कथा कथु ये तीव॥२२॥
'शालीग्राम वसे सुख स्थान। एक दुर्गा, नाम नारी रहे जान
एकही पुत्र है विद्वा भइ। दारिद्रता दुःख से तन दही॥२३॥
गौवच्छ चराने जावे बाल। दुर्गा करे चाकरी धनपाल ॥
एकदा शेठ घर काम वहूजान। शीख्खीपायाखानरुपान॥२४॥
छींके पे रख दुर्गा जाय। दो पहरे बच्चा आया धेनुचराय ॥
घर में नहीं देखी निजमात। क्षुधा वस अतिही विलविलात॥

क्रोधातुर हो भु लोटंत । तीजी जाम जनीता आवंत ।
काम करी अति थाकी तेय । कोप बचन तनुज तस केय ॥
क्या तुझे दीथी शुली चडाय।तीन पहर गये आइ चलाय॥
भूखी प्यासी थकी तव मात।क्रोधातुर कटू बचन सुणात ॥
अरे तेरे क्या कटे थे हाथ । छीके से लेभोजन क्योंनिखात॥
आति संतापेहुवे करुर भाव ।वयण भी खोटे खोटा वरताव॥
तीनों जोग यों एकत्र कु भये।बन्ध निकाचित दोनोंके थये॥
संताप चडा शिर कियाप्रहार। आयू पुर्ण हूवा उस वार ॥
कुछेक दान पुण्य प्रभाव । दोनों मनुष्य भव पाये यहभाव॥
बंधुदत' बंधुमती, यह । माता पुत्र स्त्री पती बने तेह ॥३०॥
'कर्मकी विचित्र गति ये देख । क्रोध बस बचन फल लेख।
पुत्रकहाथाक्याचडिाशुलोजाय।बंधुदत्तकोदियाशूलीचड़ाय।
माताने कहाथाक्याकटेतेरेहाथ।बंधूमतीकेकटे हातावख्या
यों क्रोध वसे वचन फल लये।आगे भी विती भवांत दये ।
नृप शेठ सुन वैराग्य घटलाय।साधू हुवे ऋद्धि छिटकाय ।
करणी करके पावेंगे सुख।गौतम पुछा ग्रंथमें यहकथामुख३३

दोहा—क्रोधवश एक बचन से ।अनर्थ ऐसा होय ॥
जो जो बदे कुगालीयां।उसकी गती क्या जोय॥३४
यों जाणीतजो क्रोध कों।करो क्षमा अंगीकार ॥
तो आत्म सुख पायेगी । सुनो आगे अधि कार ।



मंजिल छट्ठा—"क्रोध पापोद्धार"



उत्तर विभाग—"क्षमा"

दोहा– धर्म मूल क्षमा कही । सुख मूलभी येह ॥
धारो धर्मी शूरहो । निजात्मिक धरनेह॥ १॥

❀ चोपाइ ❀

पूर्व कहे क्रोध शत्रु के काम।उससे उलट क्षमावंत परिणाम॥
श्री जिनवर बताया उपचार।उपशम से होवे क्रोध संहार॥२॥
उत्तराध्यान में कहा जिनराय।क्षमा से ही परिसह जीताय॥
क्षमावंत पर पडे दुःख आय।सम भाव धर सर्व सहाय॥३॥
दुःख का दुःख वेदे न लगार।दुःख कों जाने सुख दातार ॥
जैसे बांधे कर्म इस जीव।तैसीही पावत यहां यह रीव ॥४॥
विना भुक्ते तो छूटही नहीं। संताप किये दुगुणे वंधसही॥

मेरे वन्धे भोगूंगा मैंही । कटु वाक्य क्यों अन्य कों केही ॥
दुःख दाता उपकारी घना ।बंधन मुक्त करता हम तणा ॥
जोसागरोपम से कर्म छुटाय।उन से क्षण में छुटका थाय॥
इस से हर्ष ज्यादा क्या होय।अज्ञानी कर्म वन्धे अरू रोय॥
मेरा ज्ञान पाये का सार। चुकावुं समर्थ हो करी उदार॥
यों सम भाव धर परिसह सहे।मन परिणाम जरा नहीं दहे
उनेही क्षमवंत जनो सही।कर्म संचित पुंज क्षण मेंदही ॥

क्षमावंतो की भावना—मनहर छंन्द.

जो को कटु वाक्य कहे ।ज्ञानी न कटुक गहे ।
शब्दार्थ निघा दये।क्या इसने उचरीया ॥
चोर जार रु धुतार।चुगल चंडाल ठगार ।
इत्यादि कहे सो कर्म । बहुधा मैने करीया ॥
यह कहे सो साच कहे । साच को न आंच दहे॥
जो यह लगे बुरा तो ते कर्म कर परीया ॥
कु कर्म पे कोप कर । इसका उपकार वर ।
वैर विरोध जावे हर । आत्मर्थ सुधरीया ॥ १ ॥
वैद को बतावे नाडी।पहिले देता द्रव्य कहाडी ।
फिर वो कहे तन रोग। यह ये दुःख कार है ॥
अरि बिन नाडी देखे । द्रव्य भी न ग्रह पेखे ।
दुर्गुण प्रकट करे । जालम दुःख दातार है ॥

औषध लेइ रोग हरे। त्यों दुर्गुण दूर करे।
ज्ञानादिक पथ्य किया। हो आत्म सुधार है॥
येही क्षमावंत आचार। आप पर सुख कार।
धार अमोल हित धार। होत यों उद्धार हैं॥१०॥
जो आत्म है तेरी शुद्ध। बुरा कहे को अबुद्ध।
चोर जार नीच ठग। तो बुरा न मानीयें।
सोना पीतल कहे कोय। तोते न पीतल होय ॥
कहने से गुन नहीं जावे। निश्चय मन आनीये॥
खोटे कों जो खोटा कहे। तो उसकी आत्म दहे।
में हूं चोखा कहे खोटा। तो इसमे क्या हानी ये॥
यह है अज्ञानी अजान। में बनाहू ज्ञान वान॥
इतनाही जो रखू भान। तोही सुख खानीये॥११
जैसे कोहूं केवल ज्ञानी। भव्यन पर कृपा आनी॥
कहे भावांतर कहानी। जैसा कर्म थैं किया॥
तैसे वैरी वेण जान। सम भाव से पिछान।
बुरा मत जरा मान। अर्थ सोचरे जिया॥
जार चोर नीच ठग। कुत्ता गद्धा मक्षी कग।
चंडालादि योंनी माहिं। जन्म पहिले थे लिया॥
सोही यह चेतावे ऐसा जान सम भाव लावे।
वो एसा न जन्म पावे। एसा सार चित्त दिया॥१२

क्षमावंतकोलिये हित वाक्य—इन्द्र विजय छंद

सीधी ले सिधीले वात को चैतन्य।सीधीलियां सेसीधी हीथावे
सीधी अस्सी ग्रह अरि विजयहोयउलटीअस्सीग्रहहाथकटावे
तैसे सीधे तीन अक्षर"समाता"है।जो आदरेतो महासुखपावे
तीनों सो उलटे "तामस"होवे। सो आदरे दुर्गति ले जावे॥
जो कोइ तोय बुरा कहे चैतन्य । ताका बुरा तुं रंचन मानो॥
बूरा सक्कर का मीठा होवेहै । तासे अनेक बने पकानो॥
तुं न कहे बूरा का हुं को कब हूं । अपने औगुण आप पिछानो
जिस दुर्गुणको बुरा तुं कहता है।ता दुर्गुण का तूंही हैस्थानो
जो कोइ देतहै गाली तुझको।जोतुझको बुरीसो सब लागे॥
तो काहेको ग्रहे बुरी चीजको।विना गृहे से क्रोध न जागे॥
जैसीजिसपास तैसीतोहीदेतहै।कहांसे लावे भलीजोतूंमांगे॥
मलीन संग मलीन न होयरे।तो तुझ चिंता होवे न आगे१५॥
सबही गाली बुरीमत जानोहो।पहिलही उसका अर्थ विचारो
सालो कहे तस नारीसहोदर। उत्तम रखे सब से बेहेन चारो॥
अकर्मी रु कर्म हीनकहेहै।सो गुन सिद्ध में ताको दातारो॥
खोज जावे तब मुक्ति पावे। योसीधीले गाली होवे सुखकारो॥

क्षमासे फायदा—छपय छंद

नरमी कहे करज दार। शेठजी कृपा कीजे ॥
पोणे दाम मुझ सो लेय । फारकी पूरी दीजे ॥
दया ला सेठ कर मेहर। थोडे में फारकी देवे ॥
करे करडाइ कर्ज दार।तो व्याज सहित सो लेवे॥

ऐसेही करजा कर्म का।क्षमा धरी जो चूकावेसही॥
अनंत काल दुःख क्षण में खपा अजरामरपद सोलही

क्षमा का फल—इंद्र विजय छंद.

कर समर्थ क्षमा जो करते। धन्य २ सबउन्ही कों उचारे ॥
सट्क्रोडउपवास सेज्यादाही फल होवेएक गालीसहे ज्यारे
शस्त्र सहन। सहज है शूरको।क्षमा करना होता अति भारे ॥
महा लाभ अचिन्त्य होतहै।लेले रे चेतन्य अब मत हारे॥१८॥

कथा—बारवी

क्षमाका फल बताने वाली—"खन्धकमुनीकी"

दोहा—अनंत बली महावीरजी।सही ग्वालीयोंकी मार॥
महावीरके अनूयायीयों । करो उसी प्रकार ॥ १ ॥
गज सुकुमाल मेतारजमुनि । प्रदेसी रु काम देव ॥
आदि बहु क्षमा आदरी । पाये सूख अछेव ॥ २ ॥
क्षमा गुन दर्शान को। वरणू खंधक चरित्र ॥
सुनी गुनी श्रोता बने। करे सो आत्म पवित्र ॥ ६ ॥

चोपाइ

सावत्थी नगरी सुख दाय। 'कन्क केतु, तहां दीपता राय ॥

मलीया राणी, शील गुन खान। तस नंदन 'खंधक, गुन वा।
सुनन्दा, तस कन्या गुन वंत। भाइ वेहन के प्रेम अत्यन्त।
दोनों सर्व कला में हों श्यार। धर्म ज्ञान भी पढे विस्तार ॥५॥
'सुनन्दा, उप वय में आय। कुंती नगरी, पति को परणाय।
वंधव विरह साले तस मन। निरंत्र मन वीर का चिंतन ॥ ६॥
बचपन सें 'खंदक,जी वैरागी। ग्रहवासे रहे ज्यों त्यागी।
नहीं रूचे पंचेंद्री के भोग। लेनेकी इच्छा लगी जोग॥७॥

दोहा—पुण्योदय उसअवसरे। 'धर्मघोष' ऋषिराय॥
अनेकमुनी संग परिवरे। उतरे वाग में आय ॥ ८॥
राजा रु खंधक कुमर। और सब सुन हर्षाय॥
सज आये वंदन भनी। प्रणमी वैठे उमाय॥ ९॥

चोपाइ

धर्म देशना 'धर्मघोषजी' फरमाय। श्रोताबृन्द सुने चितलाय॥
अहो भव्यों! यह जीव अनाद। जन्म मरण जग किये अगाध॥
घबराया चाया छूटन उपाव। सोही अबके मिले यह दाव॥
नर जन्मादि सामग्री करी। छुटो दुःख से जो वरो शिवपुरी॥
जो चूके तो फिर गोताखाय। बहुत पस्ताय फिर दूर्लभ थाय
इस लियेअभीही चेतोसही। आपका हित आप करो उमंगही
इत्यादि सुन बोध भविक। चेते जो थे मोक्ष नजीक ॥
यथा शक्ति व्रत कर अंगिकार। वंदन कर गये निजआगार॥

'खंदक' कुमर कहे कर नमस्कार। मैं इच्छु लेवा संयम भार ॥
मुनि कहे करो शीघ्र यह काम। वंदना कर आये कुमरजी धाम॥
तात मात से करे अरदास । संयम लेवूं मुनिश्वर पास ॥
सुणी बचन मावित्र मुरछाय। सावध हो कहे सुन वछवाय
संयम मार्ग अति दुक्कर कार। तुं सुकमाल कैसे निभेगा भार
कुंवर कहे यों कायर से कहो। क्षत्रीपुत्र को शिक्षा नादहो
जो दुःख देखे चतुर गति मांय। वैसे दुःख संयम में नाय ॥
ऐसे प्रश्नोतर बहुतही भये। दीआज्ञा मात पिता थक गये ॥
दीक्षा उत्सव बहुत कराय। शिनगार कुमर शिवका में वैठाय
गायन बाजित्र गगन गर्जाय। मध्य बजार हो बाग में आय॥
सब संतो कों वंदना करी। इशान कुण में रहे हर्ष भरी ॥
तज शिणगार शिरलोचन किया। साधूवेष सज गुरु सुखरिया॥
सज्जन आज्ञाले गुरु दीक्षा देय। नवे मुनि तवही अभिग्रहलेय
मास २ तपश्चर्या निरंतर करुं। एकल विहार ममत्व परहरुं ॥
विराजे मुनि पंक्तिये जाय। विनय कर अंगे कंठ कीयाय ॥
सज्जन वंदी निजस्थाने आय। मुनि तप संयमें आत्म भाय ॥

दोहा—मातापिता खंधक के। चिंते मन मझार ॥
मूनिजी विचरसी एकला। कर तप दुक्कर कार ॥
रखे अनार्य तरफ सें। उपजे परिसह कोय ॥
रखवाला रखुं साथमें। ज्यों तन रक्षाहोय ॥ २३ ॥

सुभट पांच सो से कहे। सदा रहो मुनि संगात ॥
भेदन जाने मुनिवरा। त्यों सुख सहू उपजात॥ २४

चोपाइ

एकला मुनि किया उग्रहविहार ।ज्ञान ध्यान तप संयमें प्या
जन पद फिरतकुत्ती ग्राम आय।मास खमण तप पूरण थाय
पांच सो सुभट करे विचार।यहां मूनि के वेन्योंइराजकरत
उपसर्ग करने वाला नहीं कोय।आज अपन को पुरसत होय
क्षौर मुंडण और करे स्नान।चित्त चहाता बनावे खान पा
यों सब लगे काम मझार।टले नहीं ज्यों होवन हार ॥२७
पहिले पहर मुनिकर स्वाध्याय।धर्मध्यान दुसरे पेहर ध्याय
तीसरेपहर अहारकेकाज।पात्रादि प्रति लेखे त्यांज ॥२८
कुंती नगरी में किया प्रवेश।इर्या सुमती पेखत चलें मुनेश
तप से दूर्बल हूवा अतिही शरीर।खड२हड्डी बजे स्वेदझरेनी
कोमल पग तपे भूमी दिणंद। आये नीचे जहां महेल नी
उसी वक्त राणी अरू राजान।चोपट खेले वैठे गौकस्था
'सुनन्दाने देखे तब मुनिराय।प्यारा सहोदर चितमें आय
ऐसा कष्ट सहता होगा मुज वीर।आँखोंसे वर्षन लगातबनी
आंश्रूं देख राजा आश्चर्य पाय । हर्षसमय रोना कैसे आय
देखे मार्ग जाते मुनिराय.एक दम नृप को कोप चडाय ॥

स मोडेका राणी पर प्रेम। इस वक्त भंग किया मुझ क्षेम॥
त्क्षण उतर मेहल नीचे आय। शक्त हुकम नफर सेफरमाय
स मोड्या को धक्के लगाय। पकड ले जावो मशाण के मांय॥
ब तन की उतारो खाल। शरम दयानहीं करना हाल॥
फर सो आज्ञा शीस चडाय। पकड मुनिवर को धक्का लगाय
मासागर पूछे मुनिराज। क्यों भाइ यह करो तुम काज॥
य आज्ञा मुनि को सुनाय। मुनि सुनी जरा नहीं घबराय॥
र्यधर कहे में चलुं तुमलार। तुम कहो उसस्थान मझार
फर संग मुनि मशानमें आय। आलोइ निन्दी शुद्धात्मकराय
दोपगमन संथारा ठाय। उभे मेरू ज्यों ध्यान लगाय॥
फर पासणे किये तैयार। झगमगते तीक्षण तस धार॥
से पटीया छोले सुतार। तैसे मुनिका चर्म रहे उतार॥
रड २ टूटे नशा जाल। तरड २ रक्त बहे प्रनाल॥
त्यन्त प्रज्वल वेदना प्रगटाय। मुनि जरा नसीसाट कराय
नन्ते ऋषिरे जीव परवश्य। नरकमें दुःख देखे वे कस्य॥
ससे अनन्त गुनी अनन्तवार। सकाम निर्जरा नहुइ लगार
न्ध भोगे विन छूटका नाय। बंधे उदय भये संशयमलाय॥
लभ्य लाभ प्राप्तभया यह। हर्षके ऋणदे फारकती लेह
खंड अविनाशी आत्म मुझ। छेद भेद न सके कोइ तुझ
नाशीक का विनाशही होय। लाभ निर्जरा तूं क्योंखोय
किंचित् दुःखसे सुख अनन्त। ले उलसी यह मोका तंत

ऐसे धर्म शुक्ल ध्यान ध्याय। सब तन चरम रहित जवथाय
द्रव्य आभरण टला तन चर्म।भाव आभरण टले तव कर्म।
केवल ज्ञानले छोडा शरीर । तात्क्षिण पहोंचे जग पेले तीर
महा संकट करी क्षमा अपार । धन्य २ मुनि तुमे वारम्वार
परमोत्कृष्ट क्षमा परमोत्कृष्ट सुख।पाय क्षमा फल सवसमूल
दोहा——सुभट पांचसो ता समे । करे मनमें यों विचार॥
मुनिश्वरजी गये गोचरी । आज लगी बहू वार ॥
ढूंढण चाले पूर विषे । नृप दासी मिली तास ॥
ओलखी हर्षी पूछे तस । क्यों आये क्या तलाश
उनने कही मुनि की कथा । आये गाम मझार॥
मिलते नहीं हम ढुंढते । जाने तो कहो समाचार

चोपाइ

दासी दोड गइ राणीजी पास।भाइ मुनि आये करीअरदास
गोचरी आये गये किस जाय।ढूंढे सुभट मिले नहीं उनतांय
राणी तब राजाको चेताय । सुन राजा मन अति मुरझाय
आंखोंसे छूटी आंश्रूधार । राणी पूछेकर अग्रह अपार ॥
वीतक बात राजा तब कही । सुन राणी मुरछी पड गइ॥
फिट २ कन्ता कियो अनर्थ । मुजवीर मुनि हने अकर्थ ॥
राणी रोदन करे असराल । पांच सो सूभट जाने हाल ॥
कोपातुरहो कहे निकल राजान।विन गुन्हे हने मुनिके प्रा-

मार तुझे हमभी मरजायँ । यों रहे पांच सोही गर्जाय ॥
राजा छिपगया मेहल मझार।लोक मिल तस समजायअपार
जो सुने सो खेदाश्चर्य पाय । धिक्कारे सब नृप के तांय ॥
होणहार नहीं टाली टलंत।एसा जान सब समता धरंत॥५९

दोहा—पुण्योदये पधारीये । तहां केवली भगवान ॥
पुरीससेण नृपादिके । वंदे मुनि ढिग आन ॥ ६०॥
नृप पूछे प्रकाशीये । विन गुन्हे किम जगाद्वेष ॥
अनर्थ मेने बडा किया । हने शाले मुनियेश॥६१॥

चोपाइ

मुनिवर कहेसुनो नृपादिसर्व।कर्म महा बली मत करो गर्व ॥
वसंत पूर प्राजापाल भूपाल।तस नंदन सर्व कलामें कूशाल॥
एकदा बैठा सभा मझार। माली काचरा लादिया उसवार॥
कौशलता ए तस कोरा कुंवार।गिर निकाला छाल के बहार ॥
जमा तस छाल लोकों को बताय।कहो गिरहे के नहीं इसमांय
लोक कहे यह अखंड कुमार।कुमर खोल खाली किया जहार॥
सब शभा देख अति आश्चर्य पाय।कौशल्यता कुमर कीसरसाय
मान में फुले कुमर उसवार कर्म । निकाजित्त बंधन डार ॥
तेरा क्रोड भव भ्रमण करी । शाला बेनोइ यहां अवतरी ॥
कचराका वैर प्रगट भया।विन गुन्हेद्वेष तुम मने गह्या ॥६६॥

लिया वैर त समतासे चुकाय । जाके विराजे मोक्षके मांय ॥
सहजे कर्म यों बंधे जीव । भोगवते दुःख पाय अतीव ॥६७ ॥
सुन कथा भव्य प्रतिबोधपाय।कर्म बंधन तोडन उपाय ॥
पूरीषसेण नृप सूनन्दा संग।पांचसोसूभटभींजेवैराग्यरंग ॥
लिया संयम खूब करणी करी।मूक्ति गये क्षमा धर्मआचरी ॥
और भी अनेक ली क्षमाधार । यह कथा कहीग्रंथानुसार ॥

दोहा—धन्य २ खंधक ऋषिश्वरा । अखंड क्षमाधार॥
आप तिरे बहू तारीये । बार २ नमस्कार ॥ ७० ॥
अहो सब आत्म सुखेच्छु ओं।धारोक्षमा इस पर ॥
तो खंद ऋषीकी परे।होवोगे अजर अमर ॥७१ ॥
निज पर आत्म सुखवरन । क्रोध पापोद्धार ॥
ऋषि अमोलख ने रचा।यह छट्ठा अधिकार ॥७२ ॥

परम पुज्य श्री कहान जी ऋषीजी महाराज के संप्रदायके
बालब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलक ऋषिजी रचित
अघोद्धार कथागार का क्रोध पाप उद्धार नामे
छट्टा मंजिल समाप्तम्





मंजिल सातवा —"मान पापोद्धार"

पूर्वविभाग — "अभिमान"

दोहा— जोकरे कठिण स्वभावकों । सोही मान कहाय ॥
मान वसे मांनही विषे । मानही ज्ञान नशाय ॥ १ ॥
ज्ञानविना तत्त्व न लखे । तत्त्वविन जत्नन होय ॥
जत्नविना शिवपद नहीं । यों मानही सर्व वीगोय ॥ २ ॥
सूत्र भगवती पंचवे । शतक उद्देश मांय ॥
गुणनिष्पन्न नाम मानके । कथे सोयहां कथाय ॥ ३ ॥

मानके नाम — चोपाइ छंद

'[1]मांणे '-मान, '[2]मेहे'-मदज्यों छके। '[3]दप्पे'-डरे, '[4]थंभ'-नमतेथके ॥
'[5]गव्वं'-गर्व, '[6]अत्तुकोसे'-उत्कर्ष । '[7]परपरिवाए'-परानिंदासेहर्ष॥
'[8]उक्कोसे'-उत्कृष्ट आपको जाने । '[9]उणणएंउत्तामे' -उत्तमताहने
'[10]दुंन्नामे'-रहे दुष्ट परिणाम। यह दश कहे मानके नाम ॥५॥

मानके ८ प्रकार—चोपाइछंद

मान आठ प्रकार से आय।शास्त्र में हैं सो देता बताय ॥
जाँति कूलका करे अभिमान । मात पिता मेरे पुण्यवान ॥६॥
मेंहूं क्षत्री विप्र शेठ पटेल । यों अकड कर चलता गेल ॥
कोन है बलवंत मेरे समान । रूप तेज का मेंहूं निधान॥७॥
जहां जावूं तहां लाभ कमांवुं ।खाली फिर कहां से नहीं आवुं
विद्यावंत मैं ज्ञान भंडारी । सबही खुशामद करे हमारी ॥
तपश्चर्या हमने करी घनेरी । कौन बरोबरी करता मेरी ॥
मेरे बहूत है दासी परिवार । ऋद्धि सिद्धि मेरे हूकम मेंसार॥
मेरे विन न होवे किसका काज।मैं ही रखतासवकी लाज॥
मेराही है सबी कों आधार।और विचारे सब लाचार ॥१०॥
यों मगरुरी के बचन उच्चारे।हित शिक्षा किसकी नहींधारे॥
देव गुरू को नमन नहीं करे। यह लक्षण अभिमानअनुसरे॥

दोहा—चार प्रकार अभिमान को।सुनियों चतुरसुजान ॥
घटे उतनाही घटाइये।उतनाही सुख खान ॥१२॥

चोपाइ

अनन्ता बन्धी पत्थरकास्थंभ । जाव जीव लग सो धरे दंभ
अप्रत्याखान काष्ठ स्थंभ जान। बारह मास रहे अभिमान॥
पत्यख्यान बेत स्थंभ साय । चौमासी नंतर नम जाय ॥

सज्वल तृण को स्थंभ बखान।महीने पीछे नमे गुन वान ॥
यह चारों चारी गति दातार।चारों उत्तम गुन घात करतार
सम्यक्त्व देशव्रत साधु आचार।मोक्षका चोथारोके द्वार १५।
ऐसा चारों का ज्ञान स्वभाव।घटे उतना घटावे कु भाव ॥
उत ना ही आत्म अधिक सुख पाय।येहीसुखका सच्चाउपाय

मान के दूर्गुण मनहर छंद.

मानी मान माहे छके । अयुक्त वयण बके ।
हूइ अनहुइ केइ । बातों सो बनावे है ॥
नगारा के जैसा पोला । गून गन करढोला ॥
मानका तो स्थान खाली । बहूत कर पावे है ॥
पोल प्रगट होय । अपमान करे सोय ॥
पेठ को गमावे । बहूत मन शरमावे है ॥
ऐसा अभिमान । स्वल्प सुख वहूत दुःख स्थान ।
तोही अज्ञानी नहीं । मान को घटावे है ॥ १७ ॥
मद कहा मान को । सो सागे हैजी मद सम ॥
छाक चडे मान की तो । शुद्धि बुद्धि नाशे है ॥
धन धरा नारी पूत । अपना जीवन सुत ।
तुच्छ जान तृण वत् । गमावे कु आसे है
शक्ति आगे खरचकर । मरे पहिले जावे मर ॥
आप पर आत्मा सो । हर वक्त त्रासे है ॥

मरे मारे केइ तांइ । अनर्थ अधिक निपाइ ।
आगे को कुगति मांही । पडे यम फासे है ॥ १८ ॥
मानी मछराल । भूपाल छकी मद व्याल ।
विकराल सैना सज । अरी को न शावे है ॥
आवे नहीं डाव तो । ते घाव सन्मूख खाय ।
प्राण तजे रण में नफिरी घर आवे है ॥
शेठ चड मान कों ।सजावे खूब ज्ञान कों ।
नहीं देखत खजानकों । ओसर में खरचावे है ॥
भींतडा गीतडा रेथ । कहनीं ऐसी जन केय ।
मान के मडोडे मर । कुटूंव रोवावे है ॥ १९ ॥

मानका पराक्रम–इन्द्रविजय छंद.

कहा पराक्रम वरणुं मेंमानको, ज्ञान को जोर इसीने न शायो॥
बडे २ तपी जपी खपी नर, मान में छक के धर्मगमायो ॥
ज्ञानी ध्यानी मानी प्राणी बन ।कहे सद्बोध ही पक्ष थपायो ।
मुनि गुनि पडे मान के फंद में, छोड संयम अमीरी चित चायो
त्यागी के भोगी योगी बने । तज मान शिर पग नंगे कियेहैं।
चडे पालखी चले वरदावली संग, चामर झापट छत्र लिये हैं॥
गज गाजी पायक जिनोके, लाखों के लेखे होय रिये हैं ॥
मान के छंद में अंध बने यों।गुरु यजमान डुबाय दिये हैं।२१
मानकी आन त्रिजग म्यान।सूलतान राजान को वश कियेहैं

चडाय २ गिराय यह मान।फुलाय २ निचोय लिये हैं ॥
योमाय २ लगायसर्वस्वय।गमाय २ के झुरे हिये हैं ॥
मान की तान अपमानसमान।।दोड २ अज्ञान न पार गियेहैं।।
मानीही जान अपमान लहे अरु। मानीजन अपशोष करे हैं॥
मानी को पानी उतरे अरुमानी के सब सुख विछरे हैं ॥
मानी सब को खारा लगे अरु मानी चड के नीचे पडे हैं।
ज्ञान सूजान विचित्र योंमान को तोही चित्तसे नाहीं हरेहैं॥
मान वस लडे भरत बाहुबल।ध्यान धरा बर्षज्ञान न पाये॥
महा ऋद्धि विद्या धर रावण।मरा कौरव कुल नाश कराये
श्रेणिक मान से नरक गतिलइ।कोणिकमृत्यु अकाले पाये॥
अन्य कथा क्या कथुं अमोलक। मान ने ऐसे के मानगमाये

कथा—तेरवी

मान के फल बतानेमाली—"शंभूचक्रवर्तीकी"

दोहा—शंभु चक्री मान से। डुबे समुद्र मझार ॥
पहोंचे सातमी नरक में। वरणु सोआधिकार ॥१॥

चोपाइ

दो देवता स्वर्ग मझार। चरचा कर ते इस प्रकार ॥
विश्वानर कहे जैन धर्म सार। धन्वंतरी कहे शिवमतउदार

दोनों कहे करो धर्म गुरु परिक्षा।जो द्रढ धर्मी निकलेसमक्ष
वो धर्म सत्य करें अंगी कार।ऐसा कर चाले निरधार॥३॥
जैनी कहे मेरे नौतम गूरु । तेरे ज्यूं न की परिक्षा करुं ॥
आये मध्य लोक रुप बनाय।पहिले तो जैनी कों चलाय ॥
मिथुला नगरी 'पद्मरथ'राय,तुर्त के दिक्षित मार्गे जाय ॥
वैक्रेय रुप शिवमति करी।तीनों दिशा दी जीवों से भरी ॥
चौथी दिशी ऊभी करी शूल।मुनि अचंभे देख ए मूल ॥
प्राणांत नहीं प्राण हणाय।यों सोची मुनिशुल पें जाय ॥
भेदत कंटक छूटे रक्त धारा।तोहुं न कम्पे जीव उगार ॥
उभेय अमर हर्षानंद पाय।दुःख हर वंदी मूनिवर जाय॥

दोहा—शिवमती कहे मम गुरु।चउवेद पाठी महंत ॥
ताकी परिक्षा कीजीये । ते कदापि न चलंत ॥८॥

चोपाइ

'मृगकोष्टपूर, बाहिर आय । तपोवने बहु तपस्वी देखाय ॥
'जमदग्नी, तापस सिरदार । ज्ञान तप जप में श्रेयकार ॥
जटा दाढी मूंछ भूंलगीआय ।ध्यानारुढ बैठे कृश काय ॥
चिडा चिडी रुपदोनोंनेकिया।आ [illegible] ज [illegible] ७।कहे त्रिया।
हिंमाचल में जाकर आता। [illegible] बनाता ॥
मुझे छोडकरे दूसरी नार । [illegible]
चिडा कहे गौ ब्र [illegible]

चडी कहे मानुं नहीं येह। में कहुं सो सोगन तुं लेह॥१२
जितना पाप इस तपसी शिर चडे। न आये ओ पाप तुझ अडे
सुनि बचन तापस कोपाय। दोनों पक्षी ग्रहे झपटाय॥
पूछे कहो पाप मुझे क्या लगे। सो कहे पुराण देखो तुम ढिगे
अपुत्रया कभी स्वर्ग न जाय। यों बोलत दोनों लूप्त थाय॥

दोहा—सूनी तापस चमका चित। सच्ची खगकी बात॥
पूत्र विना मुझ जन्म तप। सबही व्यर्थ एजात॥
ज्ञान से सुर मन जान के। शिवमती जैनी होय॥
दोनों गये स्वर्ग में तदा। करी परक्षी सोय॥१७॥

❀ चोपाइ ❀

तापस मन में खटका बचन। पुत्र होयसो करूं यतन॥
मृग कोष्टपुर, जीतशत्रूराजान। सौ कन्या रूपगुनानिधान॥
तापस आया तहां याचनाकरी। श्राप सें डर नृप यों उचरी
जोतुमे चहावे उसे ले जावो। तापस मेहलमें आयाधरचावो॥
देख विद्रूप सब थूथू करे। श्राप दे कूबडी सबकों करी जरे॥
धूल में रमती थी एक बाला। कुसूम बताया सो ग्रहे तत्काल॥
कहे इस ने करी मेरी चहाय। दीनी राय उसको परणाय॥
सब सालीयों को सू रूपा करी। रेणूका ले आया निजघरी॥
ऋतु प्राप्त हुइ रेणुका जब। दो चरूं तापस मंत्रे तब॥

ब्रह्मचरु भक्ष रेणुका किया । क्षत्री चरु बेनकाज रखलिया
हस्थिनापुर 'अनंतवीर्य, रायावहा दिया दुसरा चरु जाय ॥
दोनों के दोपुत्र तब भये । तापस पुत्र 'राम' नाम ठये ॥
अनंत वीर्य दिया कृत वीर्य नाम । दोनों सुखबधेनिजधाम
कलापढे दोनों हुवे परवीन । सूखे रमे पुण्य फल चीन ॥२४

दोहा—एकदा एक विद्या धरु । पडा विपी में आय ॥
राम सहायता तस करी । ते तब संतुष्ट थाय॥२५
फरसी मंत्र पढाय के । खेचर गया निज घर ॥
राम मंत्र साधनकरी । फरसू राम बजे नर ॥२६

चोपाइ

एकदा रेणुका बेन घर गइ । बेन्योइ संग लुब्ध सो भइ ॥
पुत्र प्रसव्या तापस जान।सखेद पुत त्रिया घर आन॥२७
फरसुराम देख क्रोधे भराय । अनन्त वीर्य नृप माराजाय
कर्त वीर्य तब राजा भया । यमदग्नि तापस मारी वैर लया
फरसुराम कृत वीर्य को मार।हस्तिनापुर का राज आपधार
कृत वीर्य की राणी डर पाय । गुप्त तापस आश्र में आय
दया कर तापस भोंयरें में छिपाय।पुत्र प्रसुती वहां उसेथाय
भूमी ग्रह जन्मासंभूमनामदिया।वैरी से डर गुप्तदोनोंरिया

दोहा—फरसुराम कोपा अति । करुं क्षत्री संहार ॥
क्षत्री स्थाने फरसी तसा भल के दिव्याकार ॥३१ ।

जानी क्षत्री तस हने । बने बहु क्षत्री विप्र ॥ ❀
सूत गले में देख कर। उसको छोडे क्षिप्र ॥ ३२ ॥

चोपाइ

एकदा तापस आश्रमआय । फरसुराम फरसी भल काय ॥
पूछे तापस से क्षत्री यहां कोइ।कहे तापस ग्रहस्थे हम होइ
संतोष धर निज राज मेंआय।मारे क्षत्रियों की दाढग्रहाय॥
थाल भरी छींके पर धरी।निरखत हर्ष हीयो जाय भरी ॥
एकदा तहां निमितिक आया । फरसुराम पूछे मान भराय ॥
जाग में कोइ मूझे मारन हार । होवे तो यहां करो उचार ॥
कहे निमितिक सूनराजान । इतना मत कर मन में गुमान।
जो नर बैठगा सिंहासन आय । दाढोंकी तब खीर बनजाय ॥
उसे खावे वो तुझ कों मारे । फरसु राम वचन अवधार ॥
वहां पर दीने पहरे तब ठाइ । आतेही मूझको देना चेताइ ॥

दोहा—गिरि बैताढ कूशलपुरे । मेघानंद नृपाल ॥
निमितिक से पूछीया । पद्म श्री कंत हाल ॥३८॥
संभुत चक्रवर्तीकी । यह होगी पट नार
कहां संभूम प्रकाशिये । उन कही वात विस्तार ॥

संभूम पूछे माता से बात । पृथवी सब इतनी ही है मात ॥
माता कहे पृथवी बहुतेरी । निकलना नहीं सतावेंगवैरी ॥

❀ अबीभी बहुत से क्षत्रीयों जनोइ के धारक देखे जाते हैं

नहीं मानी देखन वाहिर धाया।मेघानंद भी उसवक्तआया।
हर्षी उभय मिले आपसमांही।रानीसें सब बात जताइ ॥
संभूत कहे मुझे अरी बतावो । मार के पूरुं मेरो उमावो ॥
खेचर हस्तिना पूर ले आये । देख सिंहासन आरुढ थाये ॥
क्षुधित थाल में खीर निहाली । सो भोगवे पहेरायत भाली
फरसुराम से कहे समाचार।वो दोडा मारन उसीवार ॥४३॥
खेचर ने तब अरीबताया । संभूम थाल का चक्र बनाया॥
फरसुराम को नरक पठाया । अपने पिता का राज सोपाय
मेघानन्द कन्या परनाइ । षट खंड ऋद्धि संभुम पाइ ।
अभिमान अति मन में छाया।सब विप्रोंको मार गिराया
कहे छः खन्ड सब चक्री साधे । में चक्र वर्त्ति करुं कुछ जादे
चले सातमा साधन खंड । सब कहे भलानहीं अति घमंड
धातकी खंड साधनकरी तैयारी।चरम रत्न नाव समुद्र मेंडा
सब कहे यह न हुइ न होवे । देव मानव खडे २ जोवे ।
चली नाव तब संभूम कहे ।देखो मेरे पुण्य देव दुरही रहे
देव कहे नवकार मंत्र प्रभाव । तिररहीहै समुद्र में नांव ॥
अभीमानी नवकार घिस मिटाया।पुण्य खुटे सुरमनपलटाय
हजार सुर चरम रत्न के सहाइ।एक में न उठावूं तोक्याथा
यों हजार ही देव छिटकाइ।नांव तत्क्षण पाताल सिधाइ ।
द्रव्य भावे पातलसो पाया।संभूम सातमी नरकासिधाया

दोहा—चक्री जैसे पूण्यात्मकी। अभिमाने गति येह
तो क्या कहु में अन्यकी। तजी मान सुख गेह ।



मंजिल सातवां —"मान पापोद्धार"

उत्तरविभाग—"नम्रता"

दोहा—मर्दन करे जो मानका। धरे नम्रता अंग ॥
ज्ञानादि सुख संपत्ति। तजे न वाको संग ॥ १ ॥
विद्या वृद्धि मोहणी। नम्रता है महा मंत्र ॥
धार सार रे आत्म तूं। जो तेरे स्वतंत्र ॥ २ ॥

चोपाइ

अष्ट प्रकार मान जबआय। ज्ञानी सोचे मर्दन उपाय ॥
उंचता लही उंचता कर। लगा नीचमें मत गुन हर ॥३॥
जाति मद जब व्यापे मन। तब ऐसा कीजे चिंतन ॥
लक्षचौरासी जातिके मांय। उंच नीच फिरकर तुं आय॥
चक्रवर्ति सम हो महाराय। ऊपनो नीच नरक गतिजाय॥

ब्राह्मण शेठ पवित्र कहलाय । होइ चंडालादि विष्टापठाय
बूकशादि नीच कुल पायो । अनेक तात को तूं कहलायो॥
कुलका मद जो कभी मनआवे। केतो वल कहे तुज में पावे॥
दश[1]लक्ष[1] अष्टापद बल जे ताइ । बल देव एक में बल पाइ॥
दुना वासुदेव चक्रवर्ती दुना । तीर्थंकर में बल है अनंगुना॥
ऐसे २ महावली सिधाये । तुझ बल कौन गिनतीमें आये ॥
रुप[4] मद कहा करेरे प्राणी । दुर्गंधी देह अशुची की खानी ॥
पांच क्रोड झाजेरा रोग।तन में भरे होवे क्षिणमें वियोग ॥
लाभ[5] बंत हो आवे गर्व । तो क्या तुझ को मिला है सर्व ॥ ॥
नरपति सुरपती होगये जगमांइ।तेरा लाभ कौन गिनतीमेंआइ
एश्वर्य[6] ता बहुत कुटूंब की पायो ।बहुत नर रहे हूकम के मांया
याको गर्व जो मनकभी आइ । तो रावण गति देखले भाइ॥
सूत्र[7] पाठी कवीपद पाया । बादी विजय हो गर्व जो आया ॥
तोदेखोगणधर आदि ज्ञानी।चउदह पूर्व त्रिपदे चित्तठानी॥
तपन्तराय टूटेतप होइ । तपस्वी बज मद जो करेकोइ ॥
तोदेखो श्रीमहवीर श्वामी।साडाबारा बर्ष एक पक्ष जामी॥
फक्त मासग्यारे उन्नीसदिने । अहरकिया अभिगृहकीने ॥
कहे तुझसें किती तपस्या होवे।करी गर्वक्यों तपफल खोवे॥
योंविचार आठों मदवारो । करो करणी नम्रता धारो ॥
प्राप्त वस्तु लेखे लगाडो । थोडेमें होवे खेवा पारो ॥ १५॥

नम्रताकेलिये बोध— मनहरछंद

अहोमेरे मन । लोय मिल्यो ऊंचपनघन ।
तासुं होय म पतन । यहकथन मेरो मानीये ॥
जाति कुल बल रूप । लाभ विद्या तप अनूप ॥
ऐश्वर्य ता पाइ । यहतोपुण्य के प्रमानीये ॥
जो याको गर्व करे । ऊंचा चड नीचा पडे ॥
बनी वक्त को बिगाडे । ऐसा कैसा है अज्ञानीये ॥
तजे अभी मान सो तो । पावे है उंचज स्थान ॥
अमोल ऐसे ज्ञान वान । मन माहें आनीयें ॥ १६ ॥
जो जो ऋद्धि पाइ भाइ । नुन्या धिक नहींथाइ॥
छिपी लुपी नहींरहाइ । देखत प्रत्यक्षेर ॥
ओप नहीं मान चडे । ओप मान सें उतरे ॥
जान बूज बुरा करे । भ्रष्ट भये लक्षरे ॥
अरे भोले प्राणी जाणी । मत कर हाथे हाणी ॥
ले ले लाभ बने तेतो । लगा के सू भक्षरे ॥
येही प्राप्ती का सार । अमोल हित वेण धार ॥
पाइ सामग्री सुधार । होजा अब दक्षरे ॥ १७ ॥
मान तजे ज्ञान होय । ज्ञान वान जान सोय ॥
जान हिता हित जोय । हित नहीं खोय है ॥
साधे पर हित सोय । सुज्ञों का सो मन मोय ॥

पाखंड विगोय । मिला संत पर चोय है ॥
विनय धर्म मूल । विनम्र सर्व अनुकूल ॥
उंचता का लक्षण सो । विनय से चोयरे ॥
ऐसे भले गुन जान । करो विनय तजो मान
हो अमोल गुन खान । वर शिक्षा मोयरे॥ १८

नम्रता के गुण—इंद्र विजय छंद.

मान चाहीयेतो मान मती करो। मान तजेसो मानहीपा
कठिण धातूकी कीमत कमती है।नरमसो मूंगे भावबीका
कठिण पत्थरसो ठोकरमें गुडा।नम्र धूल उड ऊंची जावे
नीचापन उंच पदका दाताहै।सुज्ञ अमोल नमी जोरहा
मोटापना जन चावतहै पन, मोटेपनमें दुःख है भारी ॥
चंद्र सूर्यको ग्रहण लगतहै । ताराही न्यारा रहेहै सदा
पूर नदीमें झाड बहीजाय,तृण नमें सो रहे स्वस्थारी ॥
कीडीको सक्कर हाथीको अंकुश,अमोल लघुपनहै सुखका

कथा—चउदवी

विनयके फल बताने वाली—"नंदीषेणजीकी"

दोहा मान तजी विनयकी । ति जीव अनंत
तोपन नंदीषेण क र ॥ १ ॥

चोपाइ

मगध देशमें नन्दीग्राम । प्रिय राष्ठ ठाकुर अभिराम ॥
तहां सोमल विप्र विद्यावन्त । तस सोमीलानारी प्रियकंत
नन्दीषेण पुत्र तस थया । गुणवन्तो कुरुपे दुभया ॥
लघुवय मावित्र मरण जोपाय । मामा के घर जा कर रहाय।३।
प्रकृति गरीब कार्य में दक्ष । वयण मधुर सब काम में लक्ष ॥
मामा को प्यारो सो घणो । काम प्यारो मत चाम को गणो।४
ज्यों ज्यों वयमें मोटा होय । त्यों त्यों रुप विद्रूप भयो सोय ॥
श्याम बदन मुख मोटे दाँत । चपटी नाक चीभडी आंख।५
तुरल बाल चाल भींवंक । उर उन्नत कर पग कृषन्त ॥
इस लिये इच्छे नही कोइ नार । सो मन में दुःख धरे अपार ।६
मामा कहेरे फीकर मत कर । मुझ सात पुत्री एक तूं वर ॥
सातों सुणी कोपी कहे ताता । नंदी को दोतो करें हम घात।७
सुनी नन्दी षेण आर्त अति धरे । विश्वास दे मामा कहेइसतर
भोगांत राय भाइ तुझ अति । यहां हमारी नही चाले माति ।८
नन्दी निज आत्मा को देधिक्कार।गयो पहाड पर मरणो धार ॥
झंपा पात करतो थो तहां । ध्यानस्त मुनिवर देखे तहां ॥ ९ ॥
नमन कर बैठो आतस पास । पूछें कर्म गति करि. प्रकाश ॥
मुनि कहे भोला यों क्यों करे । नर भव चिन्तामणी व्यर्थ हरे॥
सुर भोग विलसेवार अनंत । तो यहां क्या लसी आवंत ॥

पुद्गल भोग तज कर निज भोग। जिससे मिटे अनादि रोग १
इत्यादि सुन मुनि उपदेश। हृदय ठर्सा धर्म की रेश ॥
तजी ममत्व लिया संजम धार। विनय से ज्ञान गुण स्वीकार।
अभि ग्र० दुक्कर किया धारन। करूं भक्ति मुनि की एक मन।
लघु जेष्ट का भेदन धरूं। बृद्ध रोगी की सेवा समाचरूं ॥ १३॥
गिल्याणी मुनि सुंणु तहां जाय। औषधोपचार करूं हितलाय ॥
यों सब को साता उप जाय। विनय से कीर्ती विश्व फेलाय ।

दोहा—एकदा प्रथम स्वर्ग में। शकरेन्द्र सपरि वार ॥
सुधर्मा शभा विराजीये। इस तरे करे उच्चार ॥ १५ ॥
अहो भाग्य मध्य लोक के। नन्दी षेण सम साध ॥
महा विनीत नम्रा रमा। अहंता ममता तजबाध ॥१६।

चोपाइ

दो मिथ्यात्वी देव उस वार। श्रद्धा नहीं इन्द्र बचन लगार।
गुरू शिष्य दो साधु रूप धार। रत्नपुरी के उतरे बाहार ॥१
अति बृद्ध गुरू रोग अती सार। जिने ग्राम के बाहिर बैसा
शिष्य आया नन्दी षेण पास। कोपातुर यों करे प्रकाश
रे विनीत! सुखे अहार तूं करे। मुझ गुरू रोग से अति तडफडे
उनकी भक्ति तूं तो करे नाथ। फोकट नाम विनीत धराय ॥१
अहार तज तत्क्षण उठे नंदी षेण। करवंदणा कहे नमी मधुरे
खमो अपराध में जाणा नाथ। कृपा कर देवो गुरु जी बताय २

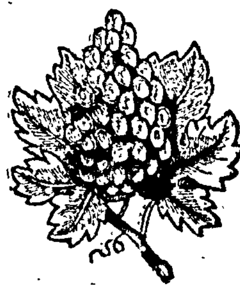
ानी याचने घरो घर फिरे । देव असूजतो जहां तहां करे ॥
तो भी मुनि वर लब्धि प्रभाव । लेपाणी गुरूजी ढिग आय ॥
ुरू कोपे दे ओगे की मार । आप लुल २ करे नमस्कार ॥
अपराध खमाइ करे अंग शुद्ध ।वार २ वो करदे अशुद्ध २२।
ुर्गंध अति तासे प्रगटाय। पण मुनि नाके न शल्य चडाय ॥
ग्रहो कह पधारो उपाश्रये । औष धोप चार करूं सुखथये
ुरू कहे दुष्ट मुझ से नचलाय । उठाइ आप खंधे पे बैठाय॥
ार्ग क्रमतां तन पर विष्टा करे । ओगो मारीकहे बॉकोक्योंचले
नंदीषेण लावेकरूणा मन । महा मुनिवर के महा वेदन ॥
मे पापी सुख दे सकूं नाय । व्यर्थ विनीत मुझ नाम कहाय।
ेजा स्थानक करुं उपचार । होय शांति तोमुझ सफलजमार
ऐसी भावना भावते जाय । वार वार अपराध खमाय ॥२६
सुख सेजा पर उन्हे पोडाया । वस्त्र अंग सब शुद्ध कराया ॥
औषधादी करे कर मन स्थिर। सहे परि सह नहीं खन्डे धीर।
देखी देव खेदा श्चर्य पाय । नाहक सताये महा मुनि राय ॥
ुरू शिष्य रूप अदश्य करी । दीव्य देव रुप दोनों धरी ।२८
लुली २ करे वार २नमस्कार । खमो आपरध अहो गुनआगार
इन्द्र आपके किये गुन ग्रास। हम नहीं माने परिक्षा कान॥
दीया परि सह किया अपराध । सो सब खमोअहोगुनअगाध
धन्य आपका सफल अवतार । नमी देव गये स्वर्ग मझार ॥
इत्यादि रचना नयन निहार । मुनि नहीं लाय जरा अहंकार

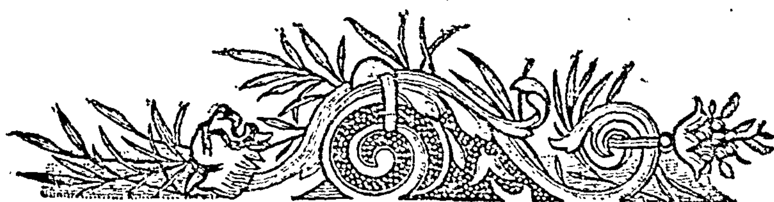
संयम पाला वर्ष बारह हजार । ज्ञान ध्यान दुक्कर तप धार।
अंत अवसर अनसन आदरी । रहे समाधी चित में धरी॥
दर्शनार्थ चक्रवर्ति आये । श्री देवी को साथे सो लाये ॥२
मोह वश हो मुनिकियानियान।स्त्री बलभ होवूं जगम्यान।
महा शुक्र स्वर्ग मे उपने मुनि।अनोपम सुख भोग वी गुन
यादव कुल में हुवे वसुदेव । कृष्ण जनक जाने सब हेव ॥
बहोत्तर हजार परणी वहां नार।अनोपम सुख भोगे संसार।
आगे मोक्ष जावेंगेयह सही।अधीकार ढाल सागर के मही।
विनय गुन दर्शाने काम । कथा कथी संक्षेप इस ठाम ॥२

दोहा—धन्य २ नंदिषेणजी । निर्भीमानी विनीत
सुख संपतीपाये सहु । चतुर वरो यह रीत ॥२६
निज पर आत्म सूख वरन।मान पाप उद्धार ॥
ऋषि अमोलक ने रचा।यह सप्तम् अधिकार ॥२७

परमपूज्य श्री कहानजी ऋषीजी महाराजके संप्रदायके
बाल ब्रह्मचारी मुनिश्री अमोलख ऋषिजी रचित
अघोद्धार कथागार का मान पाप उद्धार नामे

सप्तम्मंजिल समाप्तम्





मंजिल आठवां—"माया" पापोद्धार



पूर्वविभाग—"कपट"

दोहा—मांय रही अनर्थ करे । माया ठगारी जान ॥
यह शल्य महा विकराल है। दोनों भव दुःख खान ॥
पंचम अंग पंचम शतक । पंचम उदेशे मांय ॥
माया नाम बखाणीयें । गुण निष्पन्न अर्थ सहाय ॥

चोपाइ

'माया'-मायरहे, 'उवेही' उपाधी। 'वियंडी' विकट वलैये वक्र साधी
'गहणे'-गहन, 'णूंमे'-नीचो करे। 'कक्के'-कर्कस, 'कुरुपो' रूप हरे २॥
झिमो विछेडे किंव्वीसे कलसुख। आमरणा यो छिपो त्रगुण दुःखी
'गुहणैया'-गुप्त, 'वंचणयैा'-ठगाइ। माया के तेरे नाम कहाइ ॥४॥
तीन शाल्य कहे जिनराय। माया प्रथम शाल्य गिनाय॥ ५ ॥
मायाचारी को जिन कहे चोर। देखो उत्तराध्येन सुत्र ओर ॥
तपे नहीं तपस्वी नाम धराय । तपस्या का सो चोर कहाय ॥

तन वृद्ध वयवृद्ध गुणवृद्ध नांय । वय चोर जो वृद्ध बजाय॥
नीच जाती उत्तम रूप संठाण । ऊंचवजेसोरूप चोरजाण॥
अथवा रुपे साधु साहुकार । चोर वो जो सेवे अनाचार॥
अचार लोकोंमें उत्तम बताय।गुप्तकु-कर्मीआचारचोरथाय॥
बगला भक्ति करे जो भक्त।भाव चोर गुन महिमा फक्त॥
यह पांच चोरी महां दुःख कार।मर उपजे किलविषीमझार॥
नीच देव मिथ्यात्वीकुरूप।एलक तिर्यंच होय आगे स्वरूप॥
नरकादि दुर्गति मझार।भ्रमणकरे सो अनंत संसार ॥१०॥

दोहा—ऐसे मायाचारी के।फल हे बहु विकट ॥
चार प्रकार याकेकहे।घटे ज्यों घटा कपट ॥ ११॥

चोपाइ

अनन्तानु बन्धी ज्योंवांशकीगांठ।उम्मर भर नहींछोडेआंठ॥
अप्रत्यां[२] ख्यानी मींढे का श्रृंग।बारह मांस रहे कपटकाढंग॥
प्रत्याख्यानी[३] चलते बेलनीत।चार मांस लग रहेविपरीत
संज्वल[४] माया पतंग रंगजान।रखे कपट एक पक्ष प्रमान
चारों चारों गतिमें लेजाय।चारों चार गुन घात कराय
ज्यों घटावे ज्योंहै सुखकार। सारांश येही हीये धार॥१५

कपट के फल—मनहर छंद

नर करेमाया तो । मरी के सोनारीथाय ।

नारी करी माया मरी नपुंसक थावे है ॥
नपुंसक दगाकार पशु में उप जे मर ।
पशु करे कपट सो विंक्लेन्द्री कहलावे है ।
बिंक्लेन्द्रीकपट करी । एकेंद्री में जावे मरी ॥
एकेन्द्री कपट वश निगोदे उपजावे है
ऐसी नीच मायाचारी। नीचासे नीचो उतारी
नीच नीचा होनाचहावे सो माया पोसावेहैं ॥१६॥
माया वन्तो का तो मन।सदाकरे हैं भ्रमण
रखे जाने कोइ जान । मान म्हारों जावसी ॥
मुख को छीपावे झूटी बातों को बनावे ।
केइ परपंच रचावे । जाने म्हारो दाव फावसी ॥
तोभी कोइ दिन । प्रगटे पाप होवे खिन्न ॥
बर्षों को जमाइ पेठ । क्षीण में गमावसी ॥
पीछे क्रोडोंही उपाव । आवे नही गये भाव ॥
दगाबाज लाज गमा । आखीर पस्तावसी ॥ १५॥
बने साहुकार करे मोटे २ व्यापार ।
मन में सो दगा धार । चोरीही करत हैं ॥
खोटे तोले माप । खोटे खत में जवाप ॥
बनी पोशाख जो साप । कहा पाप से डरत है ॥
दगा से गमाइ परतीत करी लपताइ ॥
न्यायाधीश आगे सोतो कोपे थर थरत हैं ॥

पडे खोडा बेडी, जात धर्म लाज कों वेखेडी ॥
ऐसे दुष्ट जन आगे कुगति सडते हैं ॥ १८ ॥
बने साधु जन पन वसे कन्क नारी मन ॥
सो तो जग को ठगन बग भक्ति ही रचावे है ॥
टीके लगा बने नहार । मोटी २ माल डार ॥
जटा भभूत ललकार । वेद पुरान बचावे है ॥
मांगे बांह को पासार । लेके भग जाय नार ॥
सेवे गुप्त व्यभि चार । वो प्रगट जब थावे है ॥
धर्म गुरु को लजावे । फिर पाखंड फैलावे॥
ऐसे पापी साधु मर कर यम मार खावे हैं ॥१६॥

इन्द्र विजय छंद

माया की छांया पडी सहू जाया । राया वाया नाहीं बचे हैं॥
ज्ञानी ध्यानी जपी तपी खपी । गुणी पुण्यी माया में रचे हैं ॥
चाकर ठाकर लेउ देउ शाह । स्वजन पर जन यामें पचे है॥
जित पेखो तित मायाही माया है । बचे माया से ते बजे कचे है
माया की ओपसी ओपन दूसरी । सबही ओप माया की चडावे
रजत सूवर्ण वासन भूषण। हीर चीर माया से सोभावे ॥
हीरा पन्ना मणी मुक्ता फल । माया की छांया दियां भलकावे
कलजुग में आगे बानीमाया बनी।नहीं माया ऐसोठामकोपावे
गरीब होड करे अमीरों की । नक ली वस्त्र भूषण सजावे ॥
कोडी को माल क्रोडो कों दाब दे ।माया कोप्राक्रम कोनदबावे

गोले भरमावत देख ये भूत को जोहरीयों पाससोमूल्यनपावे॥
हारी वहा माया जग मांया।मायाही होय के गलो कटावे॥

कथा-पंदरवी

माया का फल बातने वाली "पाताल सुंदरी की"

दोहा-इस माया प्रभाव से । दुःखी हुवे हैं अनन्त ॥
पाताल सुंदरी कपट का । कथूं यहां विरतन्त ॥ १ ॥

चोपाइ

विशालापुर नगरी में जान । जयवंत सेन नृप गुन खान ॥
एकदा बैठे शभा मझार । गर्व धरी यों करै उचार ॥ २ ॥
रे से कोइ कला अजान । रही होवे तो करो वयान ॥
तब कहे आप होजी सब जान ।एक कहे त्रिया चरित्रअसमान
तो पूर्ण जाने नहीं कोय । नृपति सुन कर आश्चर्य होय ॥
खे त्रिया के चरित्र अनेक । सती तास मिली नहीं एक
तरा सब नारी से मन । एक उपाव कीया चिंतन ॥
पाताल घर एक ऊंडा बनाय । एकही द्वार उसके सो रखाय
न्म ती सूरूप कंन्या मंगाय । तागेह में तस पालन कराय ॥
य मात्त एक पोषण रखी । विन बोले पोषे शणगारे तखी॥
दर तस अवलोकी काय । पाताल सुंदरी नाम तस ठाय॥
बन वंतीहुइमपरणयोतांय। इच्छितसुखाविलसेतसंगलराय

दोहा-मणी द्वीप का शेठ तब । अनंग देव अनंग नार ॥

क्रियाणा चउ विध लइ । करन आया व्यापार ॥८ ।
धनदे मित्रहुवा राय का । करे इच्छित रोजगार ॥
द्रव्य उपार्जन बहू किय । नित्य जावे नृप द्वार ॥ ९ ।

चोपाइ

काम पताका गणिक वहां रहे । छत्र चमर राजातस दए ॥
अनंग देव तस द्रव्य बहु देय । निज वसमें कर सुख विलसेय।
एकदा शेठ गणिका से पूछंत । नृप का चित भ्रमित क्यों रहंत
। किसीक दिन शभा में आय । क्षणिक ठेहर पीछे चले जाय
पाताल सुंदरी चरी वैश्या कही। नृप मन हरा सदा उसढिग रहे
सुनी शेठ का मन मोहाय । पाताल सुंदरी देखनचहाय ॥१
निज देश के कारीगर बोलाय । निज घर में ससुरंग खोदा
तामसेआयोपातालसुंदरी पास । जब गये नृप शभामें खा
तब आया शेठ सुंदरी पास। देखी रूप पाया अति हुलास ॥
चिन्तोऊभा तहांमन माय । यह भोली मुझ वस कैसे थाय ॥
सुंदरी उसे देख हर्षी अति । तत्क्षण मिली ज्यों ज्युनी प्रीति ।
सुरंग से घर लगदी डोर लगाय । घंटा तस दीनी लटकाय
राजा जब शभा में जाय । सुंदरी अनंग कोलये बोलाय ॥
यों नित इच्छित विलसे सुख । भेदन कोइ जाने मनुख ।१६
एकदा सुंदरीशेठ से कहे । नगर देखन को मुझ मन चहे ॥
किसी मिस नृप तुम घर जीमाय । मैंभी आवुंगीउस वक्त म

में पुरस्पु जीमावूं राजा भणी।देखो कला तुम नारी तणी॥
जो न करो मुझ बचन प्रमाण। तो मैं तुमारे हरंगी प्राण॥
सुनी बचन ये शेठ थरराय। सर्प छिछुंदर न्याय मिलाय॥
बंदर गारुडी हुकम आदरे। त्यों शेठ सुंदरी कहनी करे॥१९॥
शेठ राय से करी अरदास। जीमावा लायो निजघर तास॥
पाताल सुंदरी सूरंगसे आय। राजाकुं पास बैठ जीमाय॥
राजा देख अति विस्मय पाय। ये यहां कैसे आईचलाय॥
के ऐसीही है शेठकी नार।साक्षात् पाताल सुंदरीअनुहार॥
यों चकडोले चडा नरेश। भोजन की रुची नहिंलिवलेश॥
तब सा सुंदरी कहे कर जोड।क्या रही हैं इस अहार में खोड
राज भोजन आप नित्य भोक्ताय। वणिक घर का कैसे भाय॥
सुणी वचन नृप अति विस्माय।अन रुचता कुछ भोजनखाय॥
घृत छांटा गुस डाला तस परी।सूंदरी लखी हसी मनमेंजरी।
जीमीराय शीघ्र गये मेहल माय। सुंदरीभी अंगसाफ कराय॥
शीघ्र आ सुती गइ नींद घेराय।देखी नृप मन वैम विरलाय॥
पाताल सुंदरी हर्षी अतिचित।कला मेरी सब सिद्ध खचित॥

दोहा—एकदा सुंदरी चिंतवे। विन गुन्हे पडीमें केद॥
शिक्षा करुं राजा भणी। पूरुं मेरी उम्मेद॥ २६॥

चोपाइ

अनंग से कहे चालो निज देश।मैं तुम साथही रहूंगी हमेश॥

पहोंचाने राय समुद्र लग आय।ऐसा करो तुम पुक्त उपाय
वायुवेग वाहण सज करो । काम फते करें जरा न डरो
डरतो वाणीयें कहे सो करे । राजा पास जाकर ऊचरे
मेरे पिताश्रीमुझ बोलाय । आप दर्शन की पडे अंतराय
जैसो मान मेरोबढायो आपतैसी एक कृपा ... ।
समुद्र लग मुझ दो पहोंचाय। यह उपकार न कभी भुलाय
महीपतीमानी शेठ की बात।शेठ सव अपनी सजाइ . ज .
राजासेठ और पातालसुंदरी । चाल एकही वाहन चडी
देखी सुंदर राय अतिविस्माय।अरे यहक्या मुझ प्रेमलाजाय
जीमनके दीन की बात याद करी।पीछामानको लियासंवरी
सुंदरी नमन करी तब कहे । आप पसाय हमसुख सबलहे
उपकार आपका हमपर अगाध।खमना हमारा सब अपराध
सेवक की याद कभी कीजीये। ऐसे बचन सुंदरी वहूकिये
राजासेठ दोनों मुग्ध हो रहे ।नारी कपट काअंत कोलहे
सबजन समुद्र कंठलग आय।वायुवेग शीघ्रवाहन सजाय
शेठ सुंदरी नृप को नमीकरी।तत्क्षनगये वाहनमें चडी
आगे जातें सुंदरी चेताय।उवट चलो ज्यों घतानहीं थाय
डरके मारे उलटही चले । सुंदरी मन हर्ष अति फले
नारी चरित्र हैअपरम्पार। देखो इसका आगे व्यभिचार

दोहा—सुकंठ नामे एक था । अनंग देव लघु भ्रात
गायन सुनके सुंदरी । ते साथे लूब्धात ॥ ३९

अनंग देवको न्हाखीयो । कपट करीजल मांय ॥
देखी सुकंठ डर्यो अति । तास हुक्म में रहाय ॥

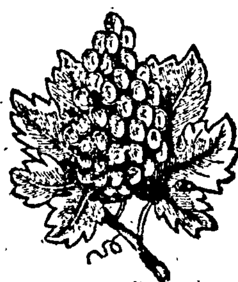
चोपाइ

नंगदेव कर काष्टज आया।सिंहलद्वीप उतरा मुनिपाया ॥
ीनी दीक्षा ध्यान लगाया।दैव जोग बाहणभी तहांआया
कंठ पाताल सूंदरी संग लेइ । वनक्रीडा को तहां संचेरइ॥
व मुनि सूकंठ शरमाया । करी वंदना अपराध खमाया ॥
ाना संयम करणी कीनी । दोनों गये स्वर्ग मूक्ति ढिगकीनी
ताल सूंदरी भगी वन मझार । तस्कर ग्रही करी निजनार
ााबाज जाणी व्यभिचारीणी।वेचन भणीवजार में आणी
श्या लेगइ रुप निहाली । मार मार तस कला सिखाडी ॥
भक्षभख्यो कियो मदिरापान।कुष्ट रोग प्रगट्यो तन म्यान
क्का देइ तस घरसे निकाली।हुइ भिकारिणी ठीकरो झाली
दोहा—जयवंत सेणजी नरपति । अनंग श्रेष्ठ पहोंचाय ॥
तत्क्षण आये मेहल में।सूंदरी दीठी नाय ॥ ४६ ॥
चौकस चउदिश में करी।पत्तो न मिल्यो लगार ॥
देखी स्त्री चरित्र कों।वैराग्य व्यापा अपार ॥४७॥
दिक्षा ली करणीकरी । घातिक कर्म खपाय॥
सात में दिन केवल लियो । धर्मोपदेश फरमाय ४८

चोपाइ

भो भो भव्यो! सुणो मुझ वीती । कपट कलासे कैसी फजीत
पाताल सुंदरी पाली भूमी मांही। कूड कपट तस कोन पढाइ
मूझ देखत अनंगदेवसाथे गइ। सूकंठ की फिर नारी भइ
दोनों संयम ले गति सूधारी । तस्कर पत्नी हुइ मुझ प्यारी
आगे वैश्याका कर्म कमाया । पाप बांदगी फल प्रगटाया
कुष्ट रोग से तन सडी याइ । होभिकारणी दुःख भुक्त्याइ
संतापे मरी नरक सिधाइ । यमदेव तस गाडी सहाइ ॥
पोलाद पूतला उष्ण बनाइ । ता संग ताको भोग कराइ
भोगी नरक का दुःख अपारो । दुःख भुक्तेगी अनंत संसा
माया कपट ऐसा दुःख कारो। प्रत्यक्ष देखे सो किये उपा
सुनकर भव्य माया छिटकाइ । सो दोनों भव सुख पायाइ
जयवंतसेनजी मुक्तिपाया । कथा अनुसारे यहकहाया

दोहा–पाताल सुंदरी माया करी। पाइ अनंत भव दुःख
योंजाणी माया तजो। ज्योंमिले इच्छित सुख॥५





मंजिल आठवी—"मायापापो द्धार"

उत्तर विभाग—"शरलता"

दोहा—बाह्य अभ्यन्तर एकसा । शुद्धवृत्ति के धार ॥
सोही सरल माया तजी । तस खुले शिवद्वार ॥१॥

❀चोपाइ ❀

रल पनेमें सम्यक्त्व रही । सरल शिव मार्ग शुद्ध पाले सही ॥
नेशल्योव्रती " सूत्रही कहे । सरल ही व्रत धारक सदेह ॥
रल ही हैं जिनाज्ञा धार । सरल ही होते भव सिंधु पार ॥
रल पना ही सुख दे सार । धार धार जीव सरलता धार ॥

सरलता के गुन—मनहर छंद.

कपट निवारी, जिन शरलता धारी ।
होवो साधूया संसारी । सुखी जगके मझारिहै ॥
शरल डरे न लगारी। छिपे नहीं कहां जवामारी ॥
होय जो उचारी, सभा माहे साहूकारीहै ॥
जमे परतीत भारी । माने सब गुण कारी ।
ते तो कार न लाचारि । अन्य करत लाचारीहं ।

ऐसी हितकारी, जानो सरलता सारी।
लेवो हितेच्छूओं धारी ऋषि अमोल उचारी।

सरलता से सूख-इंद्र विजयछंद.

सरल राय प्यारे बने राष्ट्रकोसरल शेठ निजपेठ जमावे ॥
सरल साधू सोही धर्म दीपावतासरल सज्जन को सब चावे
तप, जप ध्यान अधिक फल देवताजो सरलताधरजगत करे
"अंज्जु धम्म गइ तचं" यों सुत्र कृतांगे जिन फरमावे ॥५



कथा—सोलवी

शरलता के फल बताने वाली-"वीमल समलकी"

दोहा—सरल की सुधरे सदा।यह कहवत जग मांय ॥
विमल और समल की।सुनी हुइ कथा कथाय ॥१

चोपाइ

वसंतपुरी नगरी सुख दाय । जितशत्रु राजा कहेवाय ॥
धारणी राणी शील गुन खान । सुबुद्धि नामें तस प्रधान॥
धन्नो शेठ उस पुर में रहे । भद्रानारी गुन की गेह ॥

विमल जिनका पुत्र गुनवंत । रुप कला गुन से सोहंत॥३॥
पढीया धर्मशास्त्र सुचंग । धर्मकरण मन अति उमंग ॥
संपती पायो दान पसाय । यों चिंती दान अधिक कराय॥
समल नाम एक वाणिक पूत । कपटी लोभी निर्लज दूत ॥
दैव जोग विमल के संग । प्रीति जमी उरु की अंतरंग ॥५॥
विमल को दान करंतो देख । समल मन दुःख धरे विशेख॥
कहे अधिक नहीं कीजे दान । धन के साथ गमावोगे मान॥
विमल कहे दान से मान बढे । धन के साथ सुखभी चडे ॥
समल चुगली धन्ना ढिग करी । पुत्र तुमारो धन को अरी ॥
विमल से धन्नो शेठ यों कहे । अति कष्ट हम धन संग्रहे ॥
तूं तो सहज बाबा को लुंटाय । करो कमाइ खबरज थाय ॥
विमल सुणियों तात बचन । प्रणमी तात चला तत्क्षण ॥
समल भी उस के साथे भया । ग्राम छोड बहूत दूर गया ॥
समल कहे देख मित्र मुझबात।नहीं मानी तो दुःख तूं पात॥
चलो पीछा समजावुं शेठ । छोड दान सूखे घर में बैठ ॥
विमल कहे विदेशे धन कमाय।घर आ करुंगा दानसवाय ॥
पुण्य जोगे धनीका पुत्र भयो । घर छोडा पन पूण्य न गयो
समल कहे धर्म सेथेंदुःख लिया।तोभी धर्महट तुझ नहींगयो
विमल कहे धर्मसदा सुखदाय।इस में संशय किंचित्नाय ॥
समल कहे जो तुं मेरा माने नाय।तो पूछें आगे गाम में जाय।
जो कहे लाके पाप से सुख । तो क्या देगा बोल झट मुख॥

तेरे पास का द्रव्य सब लहूं। विमल कहे भले देवुंगा सहु ॥
आगे एक कुग्राम में आय। मूढ बहुत बैठे एक ठाय ॥१४॥
समल पूछे सब जन सत्य कहो। धर्मसेसुख के पाप से लहो ॥
सब कहे पाप किये पावेहैंसुख। धर्मीभाकारी पावे हैं दुःख।
समल हर्षी कहे दे सब धन। विमल निकाल दियावस्त्रभूषण
आगे वली समल कहे भाइ। प्रत्यक्ष धर्म से तूं दुःख पाइ ॥
अब भी छोड धर्म का पक्ष। चालो घर होवो जरा दक्ष ॥
विमल कहे धर्म सदा सुखकार। पूर्व पाप यह दुःख दातार ॥
सलम कहे तेरे कहे क्या होय। अन्य कहे तो बतावो मोय ॥
चलो वली पूछें आगे गाम। जो कहे पाप से सुख तमाम ॥
तो क्या देवेगा मुझे इनाम। विमल कहे मुझ ढिग क्यादाम
समल कहे झूठ जिसकी साख। उसकी तुरत फोडना आँख
सरल विमल यह मानी बात। आगे और एक कूग्राम आत
पूछे सब पापसे सूख बताय। धर्म से दुःख प्रत्यक्ष जनाय॥
दान दिये से धन होवे नाश। शील पाले कुलका है विनाश॥
तपसे तन दुर्बल हो जाय। भाव से संसार चलता नाय॥
विमल कहे यह मिथ्या बचन। दान दिया तो पाये धन ॥
शील से कुल तपसे तन सुख। सुभाव धरेसे जावे दुःख ॥
पण माने नहीं मूढ लगार। समल हर्षा मन में अपार ॥
वन में आये कहे फोडुं आँख। विमल कहे तूझमन जिमराख

पार्पाये फोडीया विमलका नेत्र।कुवामें धक्कादिया तत्र ॥
विमल वृक्ष धरलटका तहां।कर्म फल प्राप्त ये दुःख लहा ॥

दोहा—समल विमल संताप के।हृदय आनंद पाय ॥
कपट से चंपट मिले तुरत।पाप फल प्रगटाय ॥
चोरमिली जरुलूटीयो । मारीअतीहीमार ॥
अंग भंग आइ पड्यो । एक गाम मझार ॥ २५ ॥
मांगी खावे टूकडा । करा कुछ उपचार ॥
अबसरल विमलका । कहूं आगे अधीकार ॥ २६

चोपाइ

विमलमन समरे नवकार । अहोजिनराज थारों आधार ॥
निशासमय दोयक्षतहां आय । वृक्षारुढ हो वातोंवनाय ॥
बात २ में कुरापात भइ।एक एक को अवगन कइ ॥
तुझ सम दुष्ट और कोइ नाय।विचारी राजकन्याकोसताय
अंधी करी पडीरहे मुरछाय । यह पाप भोगे कहांजाय ॥
में जानू हुं तेरा उपाय । कोइ कूप पींपल पत्र लाय ॥
आँखमें आंजे तो खुले पट ।धूनी दिये तूं भागे चट ॥
दूसरा कहे तूं पापी अति।तेरे कुटुंब को तूं घाती ॥३० ॥
क्रोड निन्याणवे द्रव्य दवाय।एकला रहे हवेली माय ॥
उष्ण सरसव तेल छांटे उसजाग।तोतुं वहांसे जावे भाग॥
लडते दोनों यक्ष भगे उस वार।विमल दोनोंवात लीधार।

पत्र तोड रस अमी में मिलाय।आँखो आंजे सूधरे नैन तांय
औषधी संग्रही बाहिर आय।यक्ष कहा उस गाम में जाय॥
ढंढेरा पिटता सुण्या जहांय।राज पूत्री का दूःख जो गमाय॥
उसको राजा अर्ध राज देय । कन्याभी परणावे तेय ॥
सूनी कुमर पढहे ते ग्रह्यो ।झट चट ले राज ढिग गयो ॥
राजा उसे कुमरी ढग लाय । विमल यक्ष को तब चेताय ॥
चुप चाप शीघ्र जावो अब भाइ।नहींतो बहुत बिंटबनापाइ
मस्ती करे ते माने नहीं बात।तब पती ग्रही विमलहाथ ॥
अमी मिला कुमरीके नेत्रलगाय ।यक्ष चिलाइ तबभगजाय
नेत्र खुले कुमरी हुइ होंशार । राजादि तब हर्षे अपार ॥
कुंवरी परणाइ दिया आधाराज।इछित सुख विलसे ते साज
हवेली में उक्ष तेलछिडकाय।उसी यक्ष को दियाभगाय ॥
निन्याणुक्रोड धन कर निज हात उसी जगह में सुखेरहात ॥
करामती सब विमल को जान । राजा प्रजा देवे अतीमान ॥
सरलतासे सब पाये अराम।अब समल का सुनिये काम ॥

दोहा—समल सबल शरीर हो ।इसही पुर में आय ॥
भिकारी के बेश में ।मांगी तन निभाय ॥ ३८ ॥

चोपाइ

विमल फिरन निकले पुरमांय। समलको देख के आश्चर्यलाय
आदर दे निज संग लेजाय।वस्त्रभूषण तस अंगसजाय ॥

विमल एकान्त में पूछेबात।कहो विमल ऋद्धि किम पात ॥
विमल वीतक सब बात सुनाय।ऋद्धी मिली भाइ तुझ पसाय॥
दोहा—कुटिल न तजे कूटिलता।करतें क्रोड उपकार ॥
जिनके पडे स्वभाव जो। मरे भीजावे लार ॥४३॥

चोपाइ

विमल किसकाम को बोहिरजाया।समलजीमनभाभीढिगआय
पुरसा थाल नहीं ग्रास जो लहे।राजपुत्री तव नासीकहे ॥
क्या भोजनमें दोष जनाय।देवर क्यों नहींखावो इसतांय ॥
कपटी कहे कहेतां दुःखलहूं।सच्चीवात में कैसेकहूं ॥४५॥
कुंवरी कहे डरोमतजरा। समाचार कहदो सबखरा ॥
समलकहे यह ढेडकापुत्र।किस विध अहार करुं मैं अत्र ॥
जातछिपावण मुझ आदरकरे। कहो में डूबूंकैसी तरे ॥
राजपुत्री मुरझाइ सुनीअति। अरे भ्रष्टकरीमुझे दुर्गति ॥
नृपति कों जा किया समाचार।नृपति भी कोपा अपार ॥
मारने को गुप्त सुभटवैठाय। भाट हते जमाइ बोलाय ॥
विमल लगेथे जरुरी काम। समलसे कहे जावो नृपधाम ॥
सुभटविमल को आयोजाण। दी तरवार की हननप्राण॥
समल भागा चुकाकेघत। विमलके आगे कही नववात ॥
विमल कोपित हो शैन्यसजाय।श्वसुर को दूत हाथ चेताय ॥
दोहा— विनागुन्हे मुझ मारने। रचा गुप्त परपंच ॥

क्षत्रीहोतो रनमे लडो । डरनवीआणोरंच ॥५१॥

चोपाइ

सचीव पूछे नृपसेकर जोड । यह क्याजुलमअहो महीमोड।
नृप कही पुत्रीकही बात । मंत्री कहे में निर्णयकरुं नाथ॥
गुप्त प्रधान विमल कने आय । रायपुत्री को साथहीलाय॥
समल कही सो बात जनाय। सूनी समल डरके भागजाय।

दोहा—समल धुर्त चितचिंतवे । निशीरही कुपकेमांय॥
करामात कोइ करलगे।तोविमल ने देवुंभगाय ॥
विमल डाला उस कूपमें । पडाआपभी आय ॥
राते आये देवता । कहे आपसे नरमाय ॥ ५५ ॥
फूट भली नहीं भाइयों । दोनों पाये दुःख ॥
अरी रहे इस कुपमें । पूरो इस का मुख ॥ ५६ ॥
कूप पूराजब देवता । दबे समलजी माय ॥
दगा किसीका नही सगा। सोचोदृष्टी लगाय ॥

चोपाइ

समल भगा जानी सबबात।सबी के मनका वैमविरलात।
संतोषे चुपबैठे निजठाम । सरलता जोगसे हुवेसुकाम ।
विमल समल की चौकसकराय।किसी स्थान नहीं पत्ता पाय।
तब बुद्धिसे करा विचार । कुप से लिया सोसब निकार ।

सब से कहा सच्चा विरतंत । दगाबाज यों दुःख पावंत ॥
अपने सज्जन को लिये बोलाय। सबको परतीत हुई सवाय ॥
दान धर्म विमल अधिको करे। बाह्य अभ्यन्तर एकसो संचरे॥
आयुष्य अन्त पायो स्वर्ग । ऐसे क्योनी वरे अपवर्ग ॥

दोहा– श्रोताइस दृष्टान्तसे । समजो सरलता फल ॥
तजी कपट निर्मलबनो । सुखपावो ज्योंविमल ॥६२ ॥
निज पर आतम सुखबरन । माया पापउद्धार ॥
ऋषिअमोलख ने रचा । यहअष्टम अधिकार ॥६३ ॥

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराजकी
सम्प्रदायके बालब्रह्मचारी मुनीश्री
अमोलख ऋषीजी महाराज रचित
अघोद्धार कथागार ग्रंथका
माया पाप उद्धारनासे
अष्टम मंजिल
समाप्तम्





मंजिल नवमा—"लोभ पापोद्धार"

पूर्वविभाग—"लोभ"

दोहा—थोभन आवे लोभका । सोही लोभ है पाप
बडे विद्वरों यों कहे । लोभ पाप का बाप
लोभ तृष्णा वस पडे। वो नहीं पावे सुख
लोभ समा इस जगत् में। और नहीं है दुःख ॥
'क्रोध'कपाल' 'मानज' गले' । 'माया 'पेटमे'रेय
लोभ वसे सब अंगमें। सबसे बडा है एय ॥ ३
विवहा पन्नंती सूत्रके। शतक उदेशे पंच ॥
लोभ के नाम जेवरणवे। सो यहा कथुमंरच ॥

चौपाइ

'लोहे[1];लोभ, 'इच्छा[2]; 'मूर्छा[3]जान । 'कंखा[4]; वांछा, 'गोही[5];ग्रधा
'तण्हा[6];तृष्णा। भिज्जा[7]द्रव्य ध्यान।अंभिज्जअभीलाषा करे पुमा
,आसा सेणया[8]आसा करे । 'पत्थणया[10]प्रार्थन अनुसरे ॥

'लाल[११]प्पणया'लालसा अति।'कामा[१२]सा'भो[१३]गासा'जी[१४]वासारतिः
'मर[१५]णासा'मरणसे नहीं डरे। 'नाह[१६]रागेःअनुराग अतिकरे ॥
यह सोल हनाम लोभ के कहे। भगवती सूत्र से सं गृहे ।९ ॥
ठाणांग सूत्रके मझार । लोभके कहे हैं चार प्रकार ॥
अन[१]तानु बन्धी किरमजी रंग । प्राणांते न करे द्रव्य भंग
अप्र[२]त्या ख्यान खंजर का लेप। बार मांस रहे लोभ का चेप
प्र[३]त्या ख्यानी कीचड मेल। चार मांस में लोभ दे ठेल ।९
सं[४]जल लोभ पतंगरंगजान । क्षण में ममत्व घटे भगवान॥
एचारों चउगति में ले जाय । जो कमी करे सोही सुखपाय

लोभसे दुःख-मनहर छंद.

तृष्णा की लाय बडी । लगी है जगत् मांय
कभीन बुजाय जो । खिलाय जग सारो है ।
करे सब भूमीस्वामी। कोश भरे रत्न नामी ।
तोहू नहीं मिटे खामी। आगेही विचारो है ॥
धन सब लगे हाथ । होवे सब पशु नाथ
तोहू मन चावे आथ । मिले परिवारो है
लाभ जैसे वधे लोभ । अब नहीं कभी थोभ ।
अहो अमोल लोभ अति सदा दुःख कारो है
एक वालो दश चावे । दश धणी शंत भावे ।
सहश्र लख क्रोड अरब । बढे विस्तारो है

भट तलार होने खपे । तलार दीवानी ऊपे ॥
दीवान इच्छे राजपद । कैसे होवे म्हारो है ॥
राजा लूंटे अन्य राज । तोही नहीं सीजे काज ॥
यों खपी के जन्म रत्न हारत गींवारो है ॥
लाभ जैसें वधे लोभ । आवे नहीं कभी थोभ ।
अहो ! अमोल लोभ । अति दुःख कारी है ॥ १२ ॥
लोभ के प्रेरेही जीव । भोगत हैं अतिरीव ।
भूख प्यास शीत ताप सही तन सुखावे है ॥
उन्नत गिरी पे चडे ऊंडी खाइ में ऊतरे
वसे रन वन मांय। द्रव्यही वधावे है ॥
करे नीचन की सेव । पूजे पत्थर के देव
एक धनही की हेव । लछी घर आवे है
उदधी उलंघ जाय । गांठडीयों बांधलाय ।
तोही न धपाय यों तृष्णाही सतावे है ॥ १३ ॥

इन्द्र विजय छंद

राज महाराज लडे तृष्णा वस । अनेक नरोंका नाश करावे
शाहा शाहाके विरोधही होवत । आसामी एककीएक फट वे
पटेल पटेल के जूद्ध मचे । जाने मेरेही खेत में ज्यादाथावे ॥
जहां पेखो तहां झगडे हैं लोभके लोभी नर कैसे सुख पावे ॥
लोभ करी राजा राज गमा कर । दास पना भोगव रहे हैं ॥

लोभ उल्लंघी कुल मर्याद को । महाजन नीच के काम यहैं॥
लोभ के वश भये है साधु यती । मान गमाइ विपती सहैं हैं
ऊंच को नीच किये इस लोभने। तोहुं लोभ न तज दहै हैं॥
मरुस्थल से आये मालन दक्खन लक्खन पत कंगाल भयेहैं। ।
कोट्याधिप होवन नित्य खप ,फिरे गामडे शिरपे पोट लयेहैं॥
सूंको खावन पेरन जीरन । नीचन को आश्रय गये हैं
महाजन कर्म करे महायमसे । देखो लोभ अकृत्य किये हैं ॥
त्यागी को लागी तृष्णा की आगी।भांगी त्यागन आनउलंघे
आगे चेला चेली सुख पावेंगे । नाहिंसूधारे ते निज ढंगे ॥
वस्त्र के थान धरे पोट बांधके । पातर के गट लेइ के टंगे ॥
देख यह रीत हटे दातारही वारंवार साधू तब संगे १७॥
क्या कहूं लोभकी गति गहनहै । वडे २ मुनि कों लोभ डिगावे
करी महा कष्ट परिणाम अपूर्व । चढी गुणस्थान इग्यारमें जावे
तहां भी गुप्त रहे यह शत्रुखेंच । के पहिले लाय गिरावे ॥
ऐसे महंतों की ऐसीदशा करे । तोअन्य की गति कहा कथावे

कथा—सतरवी

लोभकेदुर्गुन वताने वाली—कोणीक राजाकी

राज महाराजा मुनि गुनि । लोभ से पावे कष्ट
वरणन् किंचहूता करुं । दिखता यह स्पष्ट ॥ १ ॥

पण जनमन समजावत्रा । कोणिक राय चरित्र
वरणु सूत्र अनुसार से । लोभ का दर्शन चित्र ।२।

चोपाइ

मगधदेश राजग्रहीजान । श्रेणिक महमांडलिक राजान ॥
राणीचेलना सद्गुन खान । महाबुद्धिवंत अभय प्रधान ॥
एकतापस रहे पुरकेबार । मास २ अंतरकरे आहार ॥
राय आमंत्रण पारणाका किया । घर आकर वो भूलीगया॥
दूसरी महीना तापसकीया । स्मरण हूवेराय दुःखलिया ॥
दूसरीवार फिर नोतादिया । राजकाज लग विसर भया॥
तीजा मांस तप तपसीकिया।राजापर आसुरत्त सोभया ॥
पापी मुझे मारना चहाय । मुझकरणीफले मारुं उसतांय॥
नियाणाकर पुत्रपनेऊपना । चेलणालिया सिंहकास्वपना
तीसरे महीने दोहला आय।पतिकालिज मांसखाना चाहाय
अभयबुद्धिसे डोहलापुरीया । नवमास गयेसपुत्रभया ॥
दुष्टजानदिया उकरडेडाल । कूर्कट अंगुली चाबीउसकाल
जानी श्रेणिक लायाउठाय । अंगुलि चूंसी जेहर गमाय ।
राणीसे कहेकीजे संभाल । कोणिक नामरायकर प्रतिपाल
दूसराकुमर चेलनाकेभया । विहल कुंवर नाम उसकाठया।
राजाराणीका उसपरप्रेम । आठ कंन्यापरणाइ देखेम ॥
बंकचूल अठार सरहार । विहल कूं दियाराणीधर प्यार
सीचानक गंधहाथी दियाराजान।विहलरहे उसमेसुखमान

दोहा—पूर्व बैरोदय भया । चिंते कोणिक कुमार
कब नृप मरे कब राज लूं । है तरुण इस वार
मारी सकुं नहीं एकला । वश किये दश भ्रात
राज हिस्सा देना किया । सोभी मानी वात १३

चोपाइ

एकदा कोणिक अवसर पाय।श्रेणिंक को काष्ट पींजरे फसाय
आंप बैठा गादीपर आय । दुवाइ मुलक में दीनी फिराय ।।
[10]दंश भाइ को दंस[10] भाग दिया । भाग इग्यरवा आप रखलिया
तीन सहश्र गज गाजी रथ आय।[3]तीन२कोटी पायक पाय ॥
पग वंदन मात के जाय । चेलना बैठी मुख फेराय ।।
कहे कोणिंक पुत्र पाया राज।माता क्यों तुम हुइ नाराज ॥
चेलणा कहे तूं मुर्ख सही । अरी पूजे सज्जनदुःख दही ॥
जन्म का विरतंत दिया सुनाय।वैर खपागया नरमांय॥१७॥
कहे मासे अभी छोडुं तात । लेकर फरसी शीघ्र सोजात ॥
श्रेणिक देख जाना मारण आय।जेहर मुद्रा खा मरण सोपाय
बाप मरा देख दुःखी अतिभये।मृत्यु कार्य नीती सम किये॥
चेलणा दिक्षा लीनी जाम । कोणिक का जग हुवा बदनाम
छोड राजग्रही चंपापुरी रहाय।विहलकुमर भाइ साथहीआय
रहते दोनों सुख के मांय।लोभ कामनी दुःख उपजाय।।२०॥

दोहा—विमल कुमर हाथी चडी।ले अंते उरी लार ॥

नित्य आइ गंगा सर। रमे सो इच्छा चार ॥२१॥
कोणिक राणी पद्मावती। निसूनी यह वीर तंत ॥
लोभ जग्यो सो लेन को।पतिसे अर्ज करंत ॥२२॥

चोपाइ

पाटवी हाथी राजा ढिग रहे। वंक चूल हार राणीही गहे॥
सो तो विलसे विहल कुमार।बदनाम जिससे होत अपार ॥
कहे कोणिक तात मात दिया।राज भाग नहीं उसका किया
वोभी है राजा का कुमार। सूणी राणी प्रजली उसवार ॥
हार हाथी तो लेवो सोइ। जो पुरुषा तन तुम में होइ ॥
कोणिक कहे अभी लेवुं मंगाय।भट भेजा विहल को बोलाय
हार हाथी मांगे उस पास। वो तब नरमी करे अरदास ॥
मात तात मुझ हाथ से दिया।राज भाग आपेन नहीं किया॥
राज का हिस्सा दे यह लहो। नहीं तो चुप चाप सुखे रहो॥
हट कर कोणिक मांगे दोय। विहल घर आवे चूप होय ॥
यहाँ रहने में नही जाना सार।गये विशालाना नाकेद्वार।
बात चेताइ सुख से रहे॥ कोणिक यह खबर जब लहे ॥
क्रोधातुर हो दूत पठाय। मेरे भाइ कों देना भेजाय ॥
दुत चेडाराज कों कहे समाचार।विचार के उत्तर दे उसवा
दोनों भाइ मुझ एक समान। परन्तु न्याय से चले राजान।
राज देकर हार हाथी लहो। विना काम भ्रात मत दहो ।३

सुण कोणिक क्रोधातुर होय। दश भाइ साथे ले सोय ॥
सज सैन्या रणांगण आय। चेडा पे समाचार पठाय ॥

दोहा—चेडा राय सुनी चिंतवे। फोज बहुत उसपास ॥
धर्मी मित्रकी सहाय से। करूं अन्याय का नाश ॥
राय अठारे बोलाइया। सो सत्य सहायक थाय ॥
दोनों फोजों सजहुइ। महा भारत मचाय ॥ ३३ ॥

चोपाइ

चेडाराय की सैन्या माय। सात वन सहश्र गज रथ हय थाय
पायक हुवे सतावन क्रोड। शकठ वाह संग्राम जमा प्रोड।३४
कोणिक राय की सैना माय। तेंतीस सहश्र गज रथ हय थाय
तेंतीस कोटी पायक सही। गरुड वाह संग्रामज भइ ॥ ३५॥
कोणिक तरफ से काली कुमार। चेडा सामे हुवा उसवार ॥
चेडा राय श्रावक व्रत धार। विन गुन्हे नहीं करे प्रहार ॥
एक से ज्यादा मारे नहीं बाण। वो तो रहे चुप की वहां ठाण
काली कुमर तब वाण चलाय। चेडा नृप काटा उस तांय॥३७
एक वाणे मारे काली कुमार। यों दश दिन में दस भाइमार॥
देखी कोणिक करे विचार। एक ही वाने मेरा संहार ॥३८ ॥

दोहा—कर अष्टम आराधिये। पूर्व मित्र दोइंद्र ॥
वचन बंधे वों उचरे। किया जुलम तें नरेंद्र ॥
चेडा धार्मिक मारे नहीं। करेंगे तेरी जीत ॥
असुरेंद्र शकरेंद्र तब। कोणिक सहाइ भये प्रीत ॥ ४० ॥

चौपाइ

कोणिक सज संग्राम में आय । सामे चेडा नृप भी थाय ॥
वज्र कवच कोणिक तनकिया।चेडाका बाण खाली गया ॥
शकरेंद्र के कर डारे वैक्रेय कर।महा सिला हो पडी नर पर
इस शीला कंटक संग्राम मझार।चोरासीलक्ष मनूष्य संहार
सुरेंद्र तृण डाले वैक्रय।महारथ मूशल होते प्रगमय ॥
छिन्नुलाख नर उससे मरे।एकक्रोडअसीलाख संहरे॥४३ ॥
दो दिन में जूलम यह भया,। अठारे नृपती निज घर गया
चेडाछिपे विशाला में आय।द्वार बंध सब दिये कराय ॥४४॥

दोहा—सामंत चेडा रायका । श्रावक नतुवा नाग ॥
निरंत्र छट के पारणे करे । वो आया इस जाग४५
अष्ठम तप उस दिन किया। लगा आ तिक्षण बाण
समाधी मरणो करी । उपने देव विमाण ॥ ४६ ॥
नाग नतुवे का मंत्रीसर । था एक सरल स्वभाव॥
उस को भी लगा बाण। आ वो आया उस ठाव॥
कहे अन्य जाणु नहीं। मिव किया सो मुझ होय ॥
यों धर्म भाव तहां से चवी। मनुष्य हुवा पुनः सोय ॥
यह दो जीव सूगति लही। बाकी नरक तिर्यंच ॥
जा उपजे सब नर मरी। देखो लोभ परपंच ४९

चोपाइ

विहल कुमर अति रोश भराय । सींचानक गज आरुढ थाय ।।
रात के कोणिक शैना में आय । अनेक गम नर मार के जाय।।
कोणिक जाण करे मारण उपाय । रस्ते में गुप्त खाइ खोदाय।।
खेर अंगार से पूर्ण सा भरी। किया सम मार्ग जाणे नहीं जरी।।
अ ाये रात को वहां विहल कुमार । गज ज्ञान से देखी अंगार
आगे पग जरा नहीं भरे । विहल कोपे गाली ऊचरे ॥
होण हार हाथी तब जाण । विहल कुमर को भूमी ठाण
आप जल मरा खाइ मांय । देख विहल अतिही पस्ताय।५३।
वंक चूल हार देव लेजाय । विहल अति वैरागी थाय ॥
लीदीक्षा आत्मा काज किया । कोणिक परिश्रम निष्फल भय
क्रोध मान में कोणिक भराय । विशाला लूटण ने चाहाय ॥
परन्तु कोट नहीं टूटे लगार । सोचे सो उसका उपचार।५८।
'आकाश वाणी इस पर भइ । भृष्ट साधू इसे तोडे सही ।
कोणिक तवही बीडा फेराय । माधव गणिका लिया उठाय
गुरू द्रोही कुल वालुक साध । वन में तप करताथा अगाध
गणिका उन्हे पारणां माय । विरोच्च औपधी दीनी खिलाय ॥
हुवा अतिसार वहे कर जोड । मैं श्राविका तुम गुरु सिर मोड ॥

भक्ति कर बस कर वहां लाय । कोणिक अपना काम बताय ।
निमिती रूप कर पुर में आय । लोक पूछे यह विघन किम ।
सो कहे पाडो थुभिका अभी यह।अभी उपसर्ग टले नहीं ।

दोहा—श्रीमुनि सुवृत श्वामीका । नाला गडा उसस्थान
उस थुभ की महिमाकरी ।कोट न डीगा को मान

चोपाइ

भोले लोक खोदी थुभ उसवार।पडा कोट सेना आइ पूरमझ
चेडा नृप करन लगे आत्म घात । भुवन वासी सूर उठा लेजा
वहां संथारा कर स्वर्ग गये । कर संतोष सो सुखीये भये ॥
कोणिक किया विशाला नाश।तो भी न फलीउसकी कुछआ
फिरा दूहाइ चंपामें आय । राज तृष्णा बृद्धिअति पाय ॥
कल्पित चउदह रत्न बनाय । आप बने चक्रवर्ती राय ॥
ले सैना साधन चले छे खंड ।वस किया मध्य खंड घमंड ॥
आये जभ बैताढ गिरिपास। तिमस गुफा खोलन कीआस
द्वार ऊपर करे दंड प्रहार । रक्षक देव तब कहे नाकार
नहीं मानी ज्वाला प्रगटाय । सैना युक्त राजा भस्मथा
कोणिक संची पाप अपार । उपने छटी नरक मझार ॥
बावीस सागर सहेगा संताप। देखो जबर कैसा लोभ पा

दोहा—ऐसा जानी भव्य जन तजो लोभ दुःखका
द्रढ संतोष धारण करो जोसदा सूख दातार ३



मंजिल नववां-"लोभ पापो॰ार"

उत्तरविभाग—"संतोष"

दोहा—सम से तोषे आत्म को। सो संतोष गुन खान ॥
तज तृष्णा द्रढ सहाही है। अहो सुखे छुप्रान । १

चोपाइ

पहिले लोभ के दुःख दर्शाये। उनसे छुटन को जो चहाये ॥
सो सन्तोष धरे मन मांय ।निश्चय विचार करे द्रढ ताय ॥ २
जो जीव पुण्य कमा के आया। अनु भाग बांध कर लाया ॥
मुदत पूरे उसही प्रमाने । मिले सामग्री नही संदेह जान ॥
नाहक जीव तूं इत उत धावे।नाहक जीव तूं पाप कमावे ॥
नाहक जीव तूं करे अनीति।नाहक जीव धरे विप्रीति ॥ ४
हिंसा किये जो कदा धन होवे।तो कपाइ क्यों टोकरे ढोवे॥
झूठ बोले जो लक्ष्मी आवे।तो लवाड क्यों जग में भटावे॥

चोरी किये जो मिलता पैसा। तो चोर देख सूखा है कैसा
पापो पाप समाप्ति कहते । तोभी भोले भेद न लेते
जो आत्म तूं हुआ है ज्ञानी। तृष्णा को जानी दुःख खा
तो ले यों संतोष चित ठानी। जो तुझ होयसदा सुखदा

संतोषीकी भावना—मनहर छंद

रेमन विचार यार।सुखी दुःखी को संसार ॥
संतोषी के तृष्णावार । तूं ही निरधार रे॥
तृष्णा वंत गोता खावे। संतोषी सो स्थिर रहावे
पाना सो तो दोनो पावे । जब पुरे करार रे ॥
बिन अंतराय टूट । लोभी कहां से धन लुंटे ।
मिलत संयोग तब । आडा को आनार रे॥
निश्चय नय योंहि धार ।ग्रह ले संतोष सार ॥
अमोल विचार मेरेआत्म । सुख कार रे ॥ ८ ॥
नखराली नारी जैसा लक्ष्मी का स्वभाव धारी
मनाये रीसाय त्यागे आय ताके लार है॥
भये तृष्णासे दीवाने। मांगे मिलतनहींदाने ॥
छोडी माया भये साधु । ताको जय कार है ॥
संग्रह न कोडी ताके । हुकमे ममत छोडी ॥
दान ज्ञान दया माहीं । खरचत अपार है ॥

खमा २ बजत नलजत । महाराजा आगे ।
लोभके त्यागी कों सुखी अमोल निहार है । ९
मांइ पेट मांही भाइ, मिल्यो तुझ खाद्य आइ ।
बाहिर पडत स्थन । छूटी दूध धार है ॥
जठर वन्ही से बचो । पोषा अंन तन मचो ॥
बोलत न जान्यो तो लो पाल्यो परि वार है ॥
अब कहा सोचे नर । भरे पेट हर तर ॥
बोलत चालत कमावत शक्ति सार है ॥
येही मन विचार । ले द्रढ संतोष धार ॥
अमोल जग मझार । कमी न लगार है ॥ १० ॥
पशु वन चारी, पक्षी खग तरु विहारी ॥
जल चारी वंध डारी । दीसे संतोष के धारी है ॥
नहीं जागारी निहारी । माल की नहीं लगारी ॥
संगृह नहीं कोइ वारी जावे नित्य करण अहारीहै
ताहे वक्त वारी, मिल पोषत है परीवारी ॥
यह प्रत्यक्ष निहारी । तजो लोभ इच्छा चारी है।
तूंतो नर है करारी । घर धन जन धारी ।
काय सोचत लाचारी । होय कर भाग भारी है॥

इन्द्र विजय

जो अधिको भयो संपति धारक । तामें कहो कैसी अधिकाइ
वो नहि चांदी की रोटी खावत । सुवर्ण शाख मोती कोमिलाइ
खावत अन्न सो माल मशालेसे । तोउ गरी बीसी नहीं पुष्टाइ
यों विचार ले धार संतोष को । ते दोनों भव है सुख दाइ १२।
संतोषकों नंदन वन भाख्यो । आनंद मांहे सदा मन रहावे ॥
संतोषं परमं सुखं कहते । चिन्ता दुःख तस पास न आवे ॥
संतोषं श्रेष्टं धन कहा वली त्रिजग राज को ते नहीं चहावे
संतोष को शास्त्र प्रशंसत । महा पुण्ये संतोषही आवे ।१३।

कथा—अठारवी

संतोष के फल बताने वाली—"सोमचंदकी"

दोहा—अनंत जीव संतोष धर । पाये सुख अनंत ॥
तो भी जन मन वोध ने । सुणी हुइ कथा कथंत
सोमचंद दरिद्री हो । धन पाइ त्याग्यो लोभ ॥
तो थोडेही काल में । हुवा श्रीमंत बधी शोभ॥

चोपाइ

भूमी भाग एक ग्राम मझार। सोमचंद वणिक रहे नार ॥
पुफा नामे गुण वन्ती नार। मोती चंद पुत्र सुखकार ॥ ३
द्रव्य हीन पूर्व भव के पाप। छोटी झोपंडी में रहे आप ॥
उस के किये हैं तीन विभाग। एक भाग में व्यापार जाग
एक विभागे भोजन निपाय। एक भाग आया आदर पाय॥
क्रियाणाका करे व्यापार। प्राप्त ऊपरर संतोष धार ॥ ५॥
एकदा लाभरुचि मुनिराय। चातुर्य मांस करन को जाय ॥
मारग बृष्टि अचिन्ती थाय। भूमी भाग सो ग्राम देखाय ॥ ६ ।
शीघ्र आया वणिक घर जोय। ले आज्ञा तहां ऊभा होय ॥
तीन दिन बृष्टि एक सी रइ। चोमासी प्राति क्रमण वक्त थइ
सोमचंद से मुनिवर कहे। कहो तो चौमासो इहां हम रहें ॥
तीजा भाग की आज्ञा दीनी। मुनि चौमासी तपस्या कीनी
तीनों मुनिराज की भक्ति करे। धर्म कथा वक्ते श्रवण धरे॥
सीख्या ज्ञान गयो हृदय भींज। जाण्यों धर्म एकतत्त्व बीज
यथा शक्ति तिहूं तपस्या करे। तप के दिन व्यापार परि हरे।
और भी वहूत किया पच्चखाण। सत् गुरु भेटेही प्रमाण ॥
यों सुखे चौमासा पूर्ण भया। विहारकरण मुनिश्वर [illegible] ज थया।
करे विनंती तीनों ते वारा। कृपा कर लीजीये शुद्ध आहार॥
चौमासी पारणा मुनि तहां कियो। तीनों हृदय हर्ष अतिभयो
पहोंचावन तीनों मुनि को जाय। अट्टम तप दिया मांगलाय॥
मात पुत्र छटम तप धारा। दोनों आये फिरकर निजद्वार ॥

सोमचंद कुछ दूर पहोंचाय । नयानाश्रुत वंदी ने फिराय१३

दोहा—मुनि वियोग दुःखीयों हुइ। बैठा अंब वन मांय
धरती खिणेते पित पत्र। लगा नख कोआय ॥
ते उखाडी देखतां।सूवर्ण चरु देखाय ॥
पुनः तस धूऌ से ढांकी यों । अति संतोष सोलाय
चिन्ते अब तुझ क्या करूं।गइ खरचन की वक्त।
उठ के आयो निज घरे।राखा संतोष सक्त ॥१६॥

चोपाइ

पौषधकर सूते तीनोघर । रहे मुनिजनके गुनउचर ।
सोमचंद को बात याद आय । नारीपुत्रको तेहसुनाय ।
तासमे धर्मको द्वेषीसोनार । रहतोथो पाडोस मझार ।
सोभीबात सुनेकानलगाय । गुरुक्यागये करामातबताय ।
सोमकहे अमराइमझार । चरुभरी दीठीमें दीनार ।
महाराजथा तबजोमिलताधन । तोकरतो मेधर्मदानपुण्य।
अबमिलातो क्याकामआय । योंचिनी आयाछिटकाय ।
नारीपुत्रकहे अच्छाकीया । तकदीरमें होवेतोआवे इया ।
सुनसोनारचिन्ते मनमाय । पोषामें झूठ नहीं बोलेवाय ।
सुवर्णचरुमें लावुंउठाय । तबही आयावहां सजथाय ।
देखावहांही दीवाकरलेय । देखचरुमन अतिहर्षेय॥
निकाल अन्दर डालाहात । विच्छू तत्क्षण डंकलगात ॥
अग्निझाल समफेलाविष । आइ अतीही मनमेंरीश ।
चौमासमे निन्दा गुरुकीकरीसोयहां गयेहैंविच्छूभरी ॥२

निश्चय मुझको मारन काज । यहउपाव रचाइनआज ॥
परन्तु मारंसें उसकोजाय।वोक्या जाने मुझे मनमांय ॥
योंचिन्ती वोचरुउठाय । घबराता निजघरपरजाय ॥
सोमचंद घरकीछत्तफाड । उंडादिया चरुसुवर्णसाड ॥
सापबिच्छू काटे जानेजाय । अभीसब रोतेबाहिरआय ॥
यहरस्ता देखताथा सोनार । परन्तु जरा नहीं सुनीपुकार॥

दोहा– छत्तफाडके लक्ष्मी । पुण्यात्मघर आय ॥
यहकहेवतऐसे मिली । संतोषी धनपाय ॥

चोपाइ

मोतीकहे क्यापडेगीछत ! फटीदिखे पडेमठीरत ॥
सोमकहे निर्भयरहोभाइ । रखेजागे कोइदुःखपाइ ॥
सुतेतीनों संतोषमनधार।दिवसप्रकाश हुवा उसवार ॥
प्रतिक्रमणकर निवृतथाय । पोपापार देखे वहांआय ॥
सोनैया ढग देखविसमाय । आइलक्ष्मी कैसेफेंकीजाय ॥
चरुपिछान सोमचंदकहे । यहवोहीदेखआयामए ॥ ३० ॥
छोडआया तोपडाघरमेंआय । सच्चपुत्रा प्रासवस्तुनहींजाय॥
यत्नकर रखीघरमझार । अचंभीचुपक रहासोनार ॥ ३१॥

दोरहा– एकपटेलने उस ग्राममें।मोटीहवेलीबंधाय॥
सीधीचनाइ देखके । सोमचंद कहेजाय ३२ ॥
यहजागा दोमुझभनी । लगालोलनधना ।

सोसमजो हांसीकरे । देखमेरातेमन॥ ३४।
स्वल्पमोल उसनेकिया । दियातबहीलाय ॥
विस्मित होयजगादीवी । बडेबचन न फिराय

चोपाइ

सोमचंद ले धन परिवार । सुख से रहे हवेली मझार
बहूत जन को धन आश्रय देय । जैन धर्मी उनको कि
सिखाया बहूतों को ज्ञान।दिलाया बहूविद्या दान॥
तोषे बहुत दुःखियों के तांय। दान पुण्य रु धर्म फैलाय
कीर्ती गइ सहु गामे पसर।सब करे सोमजी का आदर।
द्रव्य वहां सर्व सुख प्रगटाय।सबसे बडा है धर्म पसा
दोहा—केते काल के आंतरे । लाभ रूची मुनिरा
फिरते आये उस मार्ग में श्रावक यादृज आय।
पूछे आकर ग्राम में ।सोमचंद कहां रेय ॥
बताइ हवीली मुनिदेखी हर्षेय ॥ ३९ ॥

चोपाइ

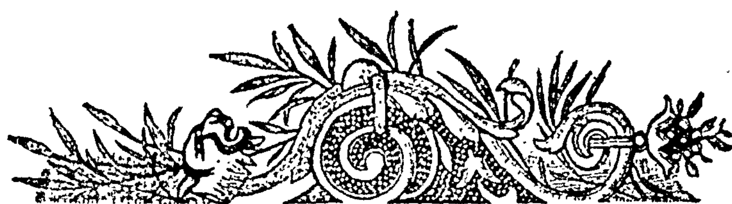
सोमचंद देखी गुरू राय । रोम २ तस गये विकसाय
तत्क्षण आया सन्मुख धाय । लुली २ नमस्कार कराय
पुष्पामोती भी दोडे आय। वंदे मुनि अति उमंगाय ।
और भी बहूत मिले नरनार ।सविधी सब करे नमस्का

देख मुनिश्वर अतिहर्षाय ।इतने जैनी कैसे हुवे इसठाय॥
सोमसाती कहे आप कृपासाम।धर्म मे समजा गामतमाम॥
सुखस्थान उतारे मुनिराय । चउदह प्रकारनें दान वहराय॥
सेवाभक्ति करे अन्यपेकराय । धर्मका प्रत्यक्षफल जनाय॥
सद्बोध सत्गुरू सुनाय ।सत्य धर्म जन मन ठसाय ॥
हुवा बहुत सा वहां उपगार । हूवा बहुत सा धर्म प्रसार
साधु सती आवे अब घने । तोषे सब को आदर पने ॥
भेद भाव किंचित नहीं धरे ।यथाशक्ति सब की सेवा करे॥
यों धर्म उन्नति बहुतही कर। स्वर्ग गये आयू पूर्णअवसर।
आगे पावेंगे मोक्षका द्वार । कथा कथी है सूने अनूसार॥

दोहा- सोमचंद तृष्णतजी । तजीभजीतसरिद्ध ॥
धर्मवृद्धिसे बृद्धहो । पायासुखसमृद्ध ॥
जानो ज्ञानी इसतरह। धारो थिर संतोष
धर्म उन्नति बृद्धी करी । होवो सूखी सब तोष ॥
निज पर आत्म सूख वरन लोभ पाप उद्धार॥
ऋषि अमोलख ने रचा। यह नववां अधिकार ॥ ९ ॥

परमपूज्य श्री कहानजी ऋषीजी महाराज के
संप्रदाय के बाल ब्रह्मचारी मुनी श्री
अमोलख ऋषी जी महाराज रचित
अघोद्धार कथागार ग्रंथका
लोभ पापोद्धार नामे
नववांमंजिल

समाप्तम्



मंजिल दसवां—"राग पापोद्धार"

पूर्वविभाग—"राग"

दोहा—बन्धनदोकहे सूत्रमें । प्रथम है राग बन्ध ॥
बन्धे जग जंतू सबी । राग वस हुवे अन्ध ॥
राग[1] स्नेह[2] मोह[3] मम[4]त्वारु । प्रेम[5] प्रीति[6] रुलोभ[7] ।
पेजा दि नाम राग के । रहे जगत् में शोभ ॥ २ ।

चोपाइ

राग बन्धन में बन्धे जीव बहुतही पाते जग में रीव ॥
मनोज्ञ वस्तु जो देखाय । वोही गृहन को इच्छा थाय ॥३।
जो पुण्य होय तो प्राप्त होय। नहीं तो पश्चाताप करे सोय ।
मिलेही अधिक वस्तु सुन पाय । उसे तज उसे लेने को धाय।
उत्तमोत्तम वस्तु अनेक है जग । नही जाती एक के हाथ लग
जिससे रागी सदा ललचाय । कहो रागी कैसे सुख पाय ॥५।

राग के भेद-भेद- मनहर छंद.

राग के हैं दो प्रकार । प्रसस्त अप्रसस्त धार ॥
पुण्य पाप बन्धन का । कारण दोनों जानीये ॥
धर्म गुरू धर्मात्म ज्ञानी गुणी तपी नरम ॥
धर्मोन्नति का जो राग प्रसस्त वखानी ये ॥
कुटंब स्वजन धन । गेह भूषण वसन ॥
इत्यादि पुद्गली राग । अप्रसस्त मानीये ॥
वीतराग दोनों तजे । धर्मी सो प्रसस्त भजे ॥
धर्म बृद्धि होवे सोही आगे सुख दानी है ॥ ३

रागके लक्षण-मनहर छंद.

राग अपानात सोही । येही वस्तु मेरे होइ ॥
रखे यह विनाश पावे । तो मैं कैसा करुंगा ॥
यथा शक्ति वंदा वस्त । कर तन देय कष्ट ॥
चोरादि से रक्षण तिजोरीदी में धरुंगा ॥
ताला पहरा आदि । कर धरते समादि नर ।
वक्त पडे काम आवे । जाने नहीं मरुंगा ॥
ऐसे रागी वस्तु काज । अपना करे अकाज ॥
देखत भूलत खल । येही मैं उन्नरंगा ॥ ७ ॥

रागसे दुःख—मनहर छंद

राग है दुःख का धाम । राग है चिन्ता का ठा
रागी तोहो ते गुलाम । निज आपा खोवे है ।
रागी करे हाय हाय । रागी चहू बाजू धाय ॥
रागी जग को मनाय । सर्व मुख जोवे हैं ॥
रागी के है काम काज । रागी के नरहे लाज
रागी ही करे अकाज । नर भव विगोवे है ॥
राग की शक्ति अगाध । बन्ध संसारीरु साधु
रागसे भोगे असमाध । भवो भव रोवे हैं ॥
केइ मरे जग मांय । ता का सोग नहीं आय
अपने का शिर दुःखे । नींद नहीं लेते हैं ॥
केइ वस्तु नाश होय । उसकी चिन्ता करे को
अपना वस्त्र जो छिदे । तोही बुरा केते हैं ॥
केइ दुःखे टल वले । ताकी तोन तास कले ॥
अपना प्यासा जो होवे । तहां खून वेते हैं ॥
अपा जहां है आपदा । येही जानो जन सदा
राग अनेक रूप धर । जगे दुःख देते हैं ॥ १

रागसे प्रत्यक्ष दृष्टान्त—इंद्राविजय छंद

त डुब की जल के अंदर तन पर नीर अथग फिर आवे॥
मी उसका बजन नहीं लागत। कारण आपा नहीं जनावे
भरी यो धरी शिर ऊपर। सोही जल भार भूत हो जावे ॥
अपना तहुवा दुःख दायक। अमोल रागयों दुःख देखावे ॥

कथा-उन्नीसवी

रागके फल बताने वाली—"पुष्प नन्दी राजा की"

दोहा—राग वसे दुःख जगत् में। पारहे जीव अनंत ॥
विपाक सूत्र आधार से। कहू पुष्प नंदी विर तंत॥

चोपाइ

हेड नगर वैश्रमण राजान। पुष्प नन्दी कुमर गुन वान ॥
ां पधारे महा वीर भगवान। गौतम गोचरी आये नगरम्यान
ो में एक आश्चर्य देख। मनुष्य एकत्र जमे विशेख ॥
ऽ नारी मध्य महा रुपवंत। कान नाकादि उस के छेदंत
तम आये महावीरजी पास। करआलोचन करे अरदास ॥
सकर्म से वो नारी दुःख पाय। दोनों भव दीजीये फरमाय

भगवंत कहे इस भरत मझार। सुप्रतिष्ट नगर सूख कार॥
महासेन नामें तदां राजान। सहस्त्र राणी रुप गुणवान ॥५।
सिंहसेन कुमर गुनवंत। युवराज पद्ट तस थापंत
पांचसो राणी उसे परणाय। पंचइंद्रि के सुख विलसाय॥
स्यामा राणी रुपवंत गुणवंत। सिंहसेण उसीसे मोह धरंत।
चार सें नवाणुव दुःख पाय। स्यामा को मारण चिंते ॥
यह बात श्यामाराणी जान। सिंहसेन आगे किया वयान
सिंहसेन सब को मारनकाम। गाम बाहिर एक बनाया धा
क्रिडा करण सब राणी बुलाय। नशायुक्त तस आहार करा
रात कोसब पडी मुरछाय। भूवन चौफेर दी आग लगाय॥९
चारसो निन्यणव सपरिवार। बलमरी उसभुवन मझार
अहोरागवशाकिया जुलम। ऐसाहै यहरागविषम ॥१०

दोहा— सिंहसेण ऐसेपापकर। छट्टीनरक उपजाजाय
बाबीस सागर महादुःख सहे। रागफल भुक्ताय॥११

चोपाइ

ईसीहीं राहीड नगरमझार। दत्तसेठ कन्हाश्रीनार॥
सिंहसेण नरकसें नीसरी। पुत्रीपने यहांआय अवतरी
देवदत्ता रखा उसका नाम। रुपकला बहूगुणकीधाम
हुइनव युवतीसज सिणगार। क्रिडाकरती गौखमझार
तहांनिकले वैश्रमण राजान। कन्यादेखी अमरीसमान

पुष्यनन्दी कुमर जोग जान । सेठपास भेजाप्रधान ॥१९ ॥
सेठ सूनीआनंद अतिशय । देवदत्ता शिवकामें बैठाय ॥
स परिवार आये राय पास । भेट करी कुमर जी की तास
शुभ मुहुर्त पाणिग्रह्हण कर । दंपति सुख भोग में रहेविचर
वै श्रमण राजा मृत्यु पाय । पुष्प नन्दी जब गादी बैठाव
श्री देवी पूष्प नंदी की मात । ताकी भक्ती करे दिन रात
बडी फजर आकरे नमस्कार । स्नान कराइ कराय सिणगार
भोजन कराइ दाबे पाय । जाय शभा में जब निद्रा आय॥
यह अहोनिशि राजा का कर्म विनीत पुत्र का यही हैधर्म
मात भक्ति में पूत्र मग्न भया ।देख दत्ता मन में दुःखलया
भोगी न सकूयहइच्छित भोग।किसीविध करुं माताकावियोग
एकदा श्री देवी निद्रित जाय।उसके पास अन्य नहीं कोय॥
शीघ्र लोह दंड उष्ण कर लाय।श्री देवी की योनी में फसाय
कर आक्रन्द मरीवो उसवार ।दासी राजा से किये समाचार
मात वियोगेअति दुःखी भया। मृत्यु कार्य कर आसुरत्तथया
भट पास देव दत्ता पकडाय । कान नाक ताकी छेदाय ॥
आजही देवेंगे शूली चडाय । पूर्व संचित फल यह पाय ॥
यहां से मर प्रथम नर के जाय।तीर्थंच वनस्पती तउवायु थाय
मृगा लोटिया परे बहू भ्रमसी । पाप फल भोगेगा रमी ॥२३॥
इस पुर शेठ घर पुत्रयह थाम ।संयम ले प्रथम स्वर्ग जाय॥
महा विदेह में नर हो जावेगामोक्ष।देखो भव्यां राग केदोष।

दोहा—राग रसिक जो जीवडा । ऐसा करे अकाज ।
विंटबणा बहू भम लहे । सिंह सेण ज्यों राजा॥२
ऐसा जान सुखार्थी यों । तजो राग महाभाग ।
सदा सुख दायक भजो । ऊक श्री वैराग ॥ २६





मंजिल दशवां—"राग पापोद्धार

उत्तर विभाग-"वैराग्य"

दोहा—जो निवृते राग से । द्वेष मन नहीं लाय ॥
सोही भाव वैराग्य है । हलु कर्मी को आय ॥१ ॥

चोपाइ

वैरागी जग रचना निहार । अनित्य असरण जाने संसार ॥
जो जो वस्तु देख मोह आय । अंतर गुन सामे लय लाय ॥२ ॥
जिस वस्तु का स्वभाव पलटाय । उसपर राग कैसे स्थिर रहाय
जो करेतो निभे नहीं राग । आपही हो वैराग्य दुःख भाग ॥३
योंजान पहिले वैरागी बनो । जिससे सुख सदा रहे मन तनो
एकही भाव सदा सुख दाय । न पलटाय न कोय दुभाय ॥ ४

वैरागी की भावना—मनहर छंद

असुची शरीर । भरा मांसरु रुधीर ॥
नशा जाल हाड पिंड । मल मूत्र का भंडार है
अच्छे भोजन खवाय । ततो विष्टा होय जाय ।
पावे शरबत नीर । सो तो वहे मूत्र धार है ॥
अच्छे वस्त्र भूषण । तन लगे होय खीन ।
जग मांहे सर्व वस्तु । करे तनही विगारहै ॥
ऐसे ओगन की खानी । ज्ञानी शरीर को जानी॥
नहीं राग भाव आनी । सो अमोल सुखि सार है॥
मात पिता भाइ बेन । काका मामा भूवा सेन ॥
मासी मासा भाभी व्यान । सुत सुता कन्त नार है
स्वजन सगे स्नेही । मित्र आदि मिले केइ ॥
मतलबे आदर देइ । जाने तूझ को आधार है ॥
खाँड गले भग आवे । गाँड गले भग जावै ॥
ऐसे प्रत्यक्ष देखावे । केसो कुटूंब को प्यार है ॥
ऐसे जग जन जाणी । निसंगी रहे त ज्ञानी ।
नहीं राग भाव आणी । सो अमोल सुखी सारहै॥
वाग बाडी गुलजार । घर हाट रंगदार ।
पइसा रुपाइ दीनार । भरा अनाज भंडार है ॥
धरे भुषण बहु मूल्य । भरे वस्त्र भी अतुल्य ।
गज गाजी रथ आदि । वसे ऋद्धी अपार है ॥
पन हीयेसे विचार । यह तो प्रत्यक्ष है भार

होवे क्षण में क्षवार । क्या करे अहंकार है ॥
सर्व अनित्य असार । जान ज्ञानी तजे प्यार ।
राग भावको निवार। सो अमोल सुखी सार है॥७॥

वैराग्य से सुख—इंद्र विजय छंद.

वैराग्य भजे, सो सुख सजे, सिंह जैसे गजे, न लजे कोइठामें
सब दुःख दहे, निश्चिंत रहे, सूखे कष्ट सहे दे अन्य आरामे
चिंतीत मिले, बहू मित्र हिलमुख चंद्र खिले जग को विश्रामे
ज्ञानरू ध्यानरूस्यानरूमानरूअवस्यानअवधान वैरागीहिपामे
वैरागी को वीतरागी बखानत, शास्त्र में ही वैरागी सराया ॥
सुरेंद्र नरेंद्र नमे वैरागी को गुन जनी वैरागी गुन गाया ॥
त्रिताप संताप के पाप को टाल के, वैरागी ही अमरापुर पाया
कहांलो परसंशा करू वैराग की, अमोल वैराग्य सदा सुखदाया

कथा—वीसवीं

वैराग्य के फल बताने वाली—"पृथ्वीचंद्र की"

दोहा—अनंत वैरागी जगत् में । पाये सुख अनंत ॥
पृथ्वी चंद्र नरेंद्र की । ग्रंथ से कथा भनंत ॥ १ ॥

चौपाई

अति सुंदर अयोध्या नगर । हरीसिंह राजा सुख कर ॥
शीलवती राणी पद्मावती । पृथ्वी चंद्र कुमर शुद्ध मति ॥
सर्व कलामें निपुन कुमार ॥ एकदा बैठा गोख मझार ॥
रस्ते जाते देखे मुनिराज । रूप सेंदा कुमर कों लगाज ॥ ३ ॥
इहापो देतां कर्म खपाय। जाति स्मरण ज्ञान जब पाय ॥
संयम पाला स्मरण भया । विषायानु राग तत्क्षण गया ।४ ।
शृंगारिक तजे उप चार विचार । संवेगी शुद्ध पाले आचार ॥
राज काज से मन फेरीया । ज्ञान पठन मनन चित दिया ॥ ५
मुनि दर्शन अवसरे अनुसरे । माता पिता की भक्ति करे ॥
यों देखी राजा करे विचार । शुन्य मति क्यों भया कुमार ॥
राज पुत्र के लक्षण नहीं । मुनि पुत्र पर यहतो रही ॥
कैसे निभावेगा राज का भार । रखे राज जावे यह हार ।७
संसारनु राग जगाने काम । पर णावुं नारी गुन धाम ॥
जाति कुल रूप कला श्रेष्ट जोय।आठ नारी जाची तब सोय
देख प्रथवी चंद्र करे विचार । धिक्क २ राग जबर संसार ॥
मुझ रागे मुझ पिता लुब्ध होय । मुझेह फांसे फसावे सोय॥
ना कहे नहीं मानेगा लगार । इस लिये लग्न करुं एक वार॥
जो हो वेगी हलु कर्मी नार तो तजेगी [illegible] संसार ॥

वैराग्य भाव आठ नारी वरी। शयन सदन बैठे ध्यान धरी॥
आठों देख अति आश्चर्य भइ। नम्रहो ललित बचन से कही
दोष हमारा प्रकाशो नाथ। क्यों नहीं कर ते हम रंग बात
न्हाख कटाक्ष हाव भाव देखावे। स्त्रीकला करी राग जगावे
त्यों त्यों कुवर का बढे वैराग्य। नारियों बोधन कहे महा भाग्य
यह तन क्यारी आफुकी जान। वर शोभे अन्दर भरा घान॥
किंपाक फल जैसे हैं भोग। परिणामे दुःख भोगवते मन्योग।
तृप्ती न होवे भोगे कोइ वार। सागरों बंध वीतेस्वर्ग मझार॥
मोक्ष मार्ग कंविघन कर तार।मैंतो कभी नहीं करूं अंगीकार
तुमभी इच्छो आत्मिक सुख। यों कही मून गृही तव मुख॥
वैरागीणी आठों करे अरदास। हम भी नहीं फसें मोह फास
चारित्र लेंगी रजा दीजीये। हर्षी कुमर कहे जरा सुस्त रीजीये
नवही दम्पती नित्य धर्म करे। राजादि देख अति आश्चर्य धरे
यों किये तो नहीं सूधरा कुमार। राज देकर रचावूं संसार।१७
राजो त्सव नृपति जब करे। कुमर सखे दाश्चर्य चित्तधरे॥
समजाया नहीं समेज राजान।अवसर देख मानी तात आन॥
जल कमल वत् राज जो करे। धर्मोन्नति प्रसारण अनुसरे॥
बंदी खाने सब खाली किये। देशमे अमारी पडहवाजा दिये।
यथा राजा तथा प्रजा थाय। धर्म फैला सर्व देश के मांय॥
धर्म धन जन्म पाया प्रमान। ऐसे संसार में रह भले मा

दोहा–द्वार पाल आ वीनवे। विदेशी व्यापरी आय

आप भेटण उमंग धरे । नृप लावो फरमाय २१।
ते आकर छुली २ नम्यो । पूछे पृथ्वी चंद ॥
कहां से आये किस कारणे । कहो तुम सर्व समंद

 चोपाइ 

शेठ कहे धामी सुनो विरतंत।गजपुर नगर से मैं आवंत।
वहां देखी एक आश्चर्य काम।सोही यहां भी देखुंगा श्वाम
रत्न संचय शेठ गजपुरे रेह । गुण सागर तस पुत्र गुण गेह॥
मूनिदर्शने जाति स्मरण पाय । दीक्षा ग्रहण तात रजामंगाय
तात कहे तेरी स्यादी जो करी।।आठों नारी लावो पहिलेवरी
फिर तुझ इच्छा सो कीजीये।इत्ना कहा मेरा मानीजीये॥
अवसर देख कुमर माना बचन।कहाया कन्या तात सेतत्क्षण
कन्या पिताने कन्यासे किया । हर्षी उनने येउत्तर दिया।
सतीयों के होवे एकही भरतार।हमने लिये गुनसायर धार॥
वो सशक्त तो हमें लेजाय । हम सशक्त तो रखें घर मांय।
सुन सब हर्षे उत्सब मंडाय । वर राय बैठे मंडप में आय।
आठों पास बैठ कला करे । गुन सागर धर्म ध्यान चितधरे
बैठे नाशाग्र दृष्टि लगाय।लय लीन बने अध्यात्म मांय॥
चिंते जो मे लेता संयम भार । तो करता तप जप इसवार।
कर्म खपाता ब्रह्मानन्द चीन।लेखे लगते मुझ निशीदिन॥
पूर्व भव में जो पढा थाज्ञान। उसका प्रगट आत्मभान॥

अपूर्व उपयोग शुक्लहुवा ध्यान। घातिक कर्मका करेघमशान
आठों नारी पति ध्यानस्त जोय। सानन्दाश्चर्य वैरागीणि होय॥
अहो अप ने तो हैं अहो भाग्य। पति मिले भव तारण की लाग
साथही लेवेंगी संयम धार। साथही जावेंगी मोक्ष मझार॥
ऐसी उत्कृष्ट लगी एकही लगन। घन घाती कर्मलागे भगन।
नवही पाये जब केवल ज्ञान। देव दुंदभी वाजी नभ म्यान॥
देव वृंद वहां प्रगट थाय। नवही साधु सति भेष सजाय॥
सुर रचित सिंहासन बैठे भगवन्। सतीयों सन्मुख बैठीहर्षधन
दिग् मुढ विस्मितबने सब लोग। एकाग्र रहे रचना छोग॥
रत्न संचय सुमंगल दौड आय। देख रचंना सो संवेग पाय॥
पूरपाति श्री शेखर सपरिवार। आकर वंदे संत सती चरणार।
मैभी जान गया वहां चाल। आश्चर्य कारक देखा सब हाल॥

दोहा—केवली मुझ उद्देशी वदे। सुधन तुं अयोध्या जाय॥
यहां से आश्चर्य अधिक तूं। वहां देखेगा शभामांय॥
शीघ्र आयाहूं इहशभा। देखें क्या आश्चर्य होय॥
इम कही सो चूप रहा। उत्सुकता धर सोय॥

चोपाइ

यों सुनी पृथ्वी चंद्र नराधीश। मन माहे जागी अधिक जगीश
धन्य२ गूण सागर सह कुटुंब। क्षणमात्र में टाला सर्व विटंब॥
धिक्कार २ होना मुझतांय। जान कर फसा राग फास मांय॥



मंजिल इग्यारवा—"द्वेष पापोद्धार"

पूर्वविभाग—"द्वेष"



दोहा—दूसरा बंधन द्वेषका। कहा श्री जिनराय ॥
राग में नीमा द्वेष की। द्वेषे राग भजनाय ॥
रागी से द्वेषी अधिक। संचय अशुभ कर्म ॥
रागी धर्म समा चरे। द्वेषी न जाने मर्म ॥ २
इस लिये अहो भव्य जनो ; द्वेष महा दुःख दा
द्वेष तजे नहीं जहां लगे। तहां लगे सुख नहींपा
द्वेष विरोध कलुषता। मत्सर घृणा आद ॥
अनेक नाम कहे द्वेषके। उप जावे असमाद ॥

चोपाइ

ष बंधन सें बंधे जोजीवाबहूतही पाते जगत् में रीव ॥
कल्प विकल्प मन सदा रहोद्वेषाग्नि गुण गण को दहे ॥
र्षा को जो जो वस्तु देखायागुण को तजदुर्गुणसोसहाय
र्वस्थान अनिष्ट सो जोयाता चित्त शांति कैसे होय ॥
कसी स्थान न रहे तासु मिलापागुण करते मिले अपयशछाप
ींहोवे द्वेष सें दूःख अनेक। सुखार्थीद्वेष तजो धरिविवेक॥

द्वेष के प्रकार—मनहरछन्द.

द्वेषकेहैं दोयप्रकार । देखाते जगत्मझार ॥
प्रशस्त अप्रशस्त । परिणामोंसे जाणाहै ॥
पुत्रशिष्य आदिसणी । हितशिक्षादेवेघणी ॥
न माने कटुबचन। प्रहारसीठाणाहै॥
सोकहा प्रशस्तद्वेष । परिणामे हितरेष ॥
शत्रुअन्याइपर अप्रशस्त द्वेष मानाहै ॥
दोनोंदोनों भवअयोग्य ।इसलिये तजनजोग ।
नहीं सुख द्वेषसेहे । हृदयपेछाणाहै ॥ ८ ॥
सोलसोरे पुत्रनार । जानेसें देतासुधार ।
परन्तु अधिक विगार । करत अनार्णाहै ॥
जो लो समझे निधामांही।तोलो सुधारनहीथाइ ॥
रखे मारे मुखतांइ । भवभ्रमा आणांहै ॥
मारसे इतरजाय । मानलेसी मुखतांय ।

औरज्यादा करेकाय । योंहदूसो ठाणीहै ॥
पीछैवोनहीं शरमाय । एसाजाण मनमांय ।
मारताड तजके समजावेमधु वाणीहै ॥ ९ ॥
नारीपे उठानाहात । योग्यनहींनरजात ।
सतयुगरीती भ्रात । पेखोपोथी मांहीजी ॥
जोहाते शत्रुअन्याइ । नारीवेश सजआइ ।
तोतस राजादी सत्यवन्त मारे नाहींजी ॥
नकलीमारतनाहीं । असलीकैसेमराइ ।
औगुन अनेकवधे । मारेसे लुगाइजी ॥
आप घातकरे । व्याभिचारभी आचरे ।
ऐसाजान परिहरे । मारनालुगाइताइजी ॥ १० ॥

द्वेषसेदुःख–इन्द्रविजयछंद

द्वेषवशे उनमत्त भयेजन । काजाकाज जरानहींजोइ ॥
नाशकरे तनकोधनको । नरहे उनकाकोइ सगारुसोइ ॥
मारमरे पनटारे टरेनहीं । खोटसुरत्वमेंरक्तएहोइ ॥
मतिगति रतिदी भृष्टहोवत । द्वेषसमानहींदुष्टहैकोइ ॥
द्वेषीकोशब्द होवेदुःखदायक । द्वेषीकोरुपदेखी दुःखपावे ॥
वाससेनाशकरे जानेप्राणके । रससे सो स्व वशभुलावे ॥
स्पर्शद्वेषीको तनजलावत । मनग्लानी सदाद्वेषीलावे ॥
दुःखहीदुखमेंजन्म गमावत । जहांलग द्वेषकोनहींतजावे ॥

कथा- इक्कीसवीं

द्वेषके फल बतानेवाली-"दुर्योधनकी"

दोहा- द्वेषप्रभावे जगत्में । पाते दुखअपार॥
दुर्योधन कोटवालज्यों । विपाकसूत्र अनुसार॥१॥

चोपाइ

मथुरा नगरी श्रीदामर।जान । राणी बंधुमतीरूप गुण खान॥
नंदी वर्द्धन कुमर गुणवंत।यौवनमद छकीसो चिंतवंत ॥२॥
पिता तरुण मुझ कब मिले राज।कोइ उपाय सेंढूंहमणाज
राजा का विस्वासु नाविक । चित्र नाम भरोसे बंध टीक॥
अंत उरादि फिरे सर्वस्थान।आजीविका बहुत दी राजान॥
उसे कुमर निजमंत्री बनाय।विस्वासी मनकी बात जनाय
राजा मार दिला राज मुझ । आधा राज में देवुंगा तुझ ॥
नाविक मानी बात उसवार।फिर उस के मन हूवा विचार
राजेश्वर कभी जाने यहबात।तोसह कुटुंब करे मेरा घात॥
इसलिये राजा को पहिले कहूं।तो अखंडित प्रसीराजाकारहूं॥
एकांत में नृप को कहीसचबात।सुनी नृपती आसुरक्त थात॥
तत्काल कुमर कों केद कराय।कहे यमरान देवुं तुझनांय ॥
लोहसिंहासन लोहका भूषण । अग्नि में कराये अनि उष्ण ॥

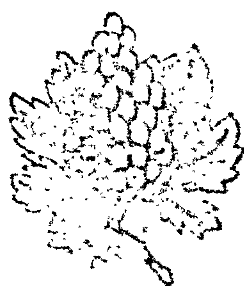
सिंहासन नंदी वर्धन बेठाय।भूषण सब तस अंग सजाय
सीसा तरुवा रस रूप उकाल।अभिषेक उससे करा उसका
और विटंबना बहुतही करी।देखने लोक बहुत गया भरी
दोहा—ते काल तहां पधारीये । श्रीमहावीर जिनराय
गौतम लेप्रभू आज्ञा । गौचरी ग्राम में जाय
देख अभिषेक कुमरका । आश्चर्य अतिपाय ॥
वंदी पूछे भगवंत कों।किसकर्मे दुःख सहाय ॥११

चोपाइ

श्रीवीरजी कहे गौतमजी सुणीये।द्वेषके फल रहाहै लुणी
इसी जंबुद्वीप भरत मझार।सिंहपुरके सिंहरथ सिरदार॥१
दुर्योधन नामें कोटवाल । महाद्वेषी पापी निर्दयीकाल
कु-कर्म कर हर्षित होवेकूर । अल्प गुन्हे दंड करे भरपूर
दंड के साहित्य रखते सजाय।निरंत जीवोंको संताप उपज
अनेक लोहेकी कुंडीमांय।उकलता धातू का रस भराय
कितनेक कुंडी में भराहै क्षार।अश्व गज उंठका मूत्र उक
खोडा बेडी श्रृंखल रु डोर । वांश बेंत छडी लता कठो
पाषाण-गोला शिला मुद्गल।अनेक संग्रही है यंत्र कल
तोफ बंदूक नली खड्ग तरवार।छुरी भाला बरछीरु कटा
गुप्ती फरसी कुहाडी खुरपले।अनेक शस्त्र के किये ढगले
सदाही सोचे अन्य दुःख उपाव।निरंत्र प्रवर्ते मन द्वेषभ

सारुं परिताप दूं लूंटूं हरूं धन।यों रौद्र ध्यान करे सदा चिंतन
चोर जार घातिक धूर्त ठगार।अन्याइ अल्प वहुत गुन्हेगार
देखे सुने जान ने में आय । आप धरे सुभट से पकडाय ॥
धातु का रस उकलता पाय।सारी फाडी वर क्षार छंटाय ॥
वहुतों के छेदावे अंगोपांग । खोडावेडी में दे ऊंदे टांग ॥
बहूतों के पा न बहु न जन उठाय।नीच कर्म कंइ पासकराय ॥
कितनेके अंग में खीले ठोकाय।कित्नेको मुद्गल से चगदाय ॥
कित्ने को भूमी में गडाय।कित्ने का तन शस्त्र से उडाय॥
द्वेषातुर यों अकार्य करी। एकतीस सो वर्ष आयुपुर्णे मरी ॥
छट्टीनरक आयु वावीस सागर।भोगी विती वहुत दुःखभर
वहांसे मर यह हुवा राजकूमार।पापोदय हूवा खोटा विचार
साठ वर्षआयू आज पूर्ण करी।रत्नप्रभा नरकमें अवतरी ॥
मृगा लोढा परभमेगा संसार।मच्छ हो हस्तनापुरमझार ॥
मच्छीमार के हाथ से मरी।तहांही सेठ घर कूमर होकरी॥
धर्म सुन दीक्षा कर अंगीकार।सूधर्म स्वर्ग में ले अवतार ॥
महा विदेह में नर हो संयम लेय।मुक्ति पावेगा कर्म करक्षय

दोहा—दुर्योधन द्वेष करी।पाया दुःख अपार॥
ऐसा जानी सूज्ञ हो।द्वेष न करो लगार ॥ २६ ॥





मंजिल बारवां—"द्वेष पापो द्धार"

उत्तर विभाग—"सम भाव"

दोहा—द्वेष तजी सम भाव धर। सम से सुख अपार ॥
जीव अनंत समता धरी । तरे अनंत संसार ॥
सुख मूल एक समही है। धर्म मूल है सम ॥
तज द्रोह सब वस्तु सें। सम में आत्मा रम ॥२ ॥

चोपाइ

सम परिणामी करे विचार। पुद्गलिक वस्तू ये संसार ॥
पूर्ण गलन जिसका है स्वभाव । क्षण २ में सो पावे विभाव
शुभ की अशुभ, अशुभ शुभ होय। एकसी कदा रहे नहीं कोय
जिसका स्वभाव एकसा नहीं रहे। तासुं कैसा वैर रू स्नेह ॥ ४
वैर भाव धरे सें क्या होय । होण हार चुका सके न कोय

द्वेष करने से कर्म बंधाय । उस का फल आत्मा भुक्ताय ॥
यों समजी सम धारो रेजीव । जिस से नहीं पावे कदा रीव।
एकही सम सर्व सुख दातार । विन महेनत इच्छित करनार

समभावी की भावना—इन्द्र विजयछंद.

वस्तु स्वभाव सो परिणमें चैतन्य।उस से बुरा तेरा क्याथावे
जो तुझ को सो खराब लगतो ।क्यो प्रणती तूं उसमें रमावे
जानी फसे विलसे तूं विभावको।स्वभाव में दुःख कोंप्रगमावे
यह अज्ञान तजी भजी ज्ञान । तोही अमोल तूंहीं सुख पावे॥
वस्तु बिगडे बिगडे कहा तेरारे । वस्तु सुधरे सुधरे तुझ कांइ॥
ते तो परा धीन से पलटे पन । तूंतो स्वा धीन करे सो पाइ ॥
तूं बीगडे बिगडे सव बात हीं । तूं सुधरे सव होत भलाइ ॥
तेरेही हातमें बात चिदानन्द । वस्तु स्वभाव न तेरे बुराइ॥८
तूं चैतन्य ते जड रे चेतन्य । ता सरीखो तूंतो मत होवे ॥
तेरो स्वभाव नहीं पलटन को । आपणे हाथ आपो मत खोव
जो तूं अनादी जुदो है ताही सो फक्त परिणती ताय बिगोवे
ताय फिरा रे गिरा निज भान में।अमोल सुख ता क्षण में जोवे

समभाव करने का विचार—मनहर छंद.

जो जो जग नर नारी । पशु आदि कार्य कारी ॥
बुद्धि अनुसारी सो सुधारो कियां चाये है ॥

ता में जो बीगाड होय । ताको बश नहीं सोय ॥
कहो होण हार भाइ को सके चुकावे है ॥
जरा बुद्धिवान ताको पेखी के करे गुमान ॥
अनेके उपलंभ देइ ताही को सतावे है ॥
काम को बिगाड कियो । तेतो भेद नहीं लियो ॥
द्वेष यों अज्ञानी बना जग को फसावे है ॥ १० ॥
अरे अकल वान तेरे काम में तूं लगा भान ॥
तेरे हाथ नुकशान कोइ वक्त थाय है ॥
कोइ तुझ को दबावे । तब तेरे मन कैसी आवे ॥
ताहे समजावे तेही । अब भूल जावे है ॥
होके ऐसा बुद्धि वंत । वक्त पे तूंही भूलंत ॥
कम बुद्धि भूले ताम । आश्चर्य कहा लावे है ॥
अपना न गुन्हा जोइ । अवगुण अन्य के अवलोइ
द्वेष यों अज्ञानी बना । जग कों फसावे है ॥११॥
जो तूं भया शेठ । दूजे करे तेरी वेठ ॥
यही पुण्य का संचीया । फल इहां तूं पावे है ॥
नोकर जो पुण्य लात । तो तो शेठ तेइ थात ॥
पुण्य हारने से भाइ । गुलाम के लावे है ॥
पुण्य प्रमाणे बुद्धि । पाइ जग जीव शुद्धि ॥
ताही को सताइ तूं क्यो कर्म को बंधावे है ॥
जो किया गुमान, तूं तो होवेगा तेही समान ॥

द्वेष यों अज्ञानी बना जग कों फसावे है ॥ १२ ॥
गुरु गुराणी जो होइ, शिष्य शिष्यणी अवनीत जोइ
द्वेष भाव लाइ, निन्दे दुःख उप जावे है ॥
तैसे शिष्य शिष्यणी ही । हित शिक्षा जेष्ट तणी ।
सुणी अपमानी कटु बचन सुणावे है ॥
होइ दुःख दाइ दोनों भणी दोनों भव मांइ ॥
यश को गमाइ धर्म लोपाइ सिदावे है ॥
धर्मी को ठगे खाली नहीं रखी जगे ॥
द्वेष यों अज्ञानी बना जगत् कों फसावे है ॥ ३ ॥
द्वेष दुःख दाइ जानी । सम भाव धरे ज्ञानी ॥
मैत्री सब साथ । रखत सदाइ है ॥
अवगुण न अवलोय । गुण गृाही नित्य होय ॥
गुण का खजाना भर जगत् मे पूजाइ है ॥
कोइ नहीं तास वेरी । सर्व स्थान यशः लेरी ॥
सहायक अनेक तस सहज हीं में पाइ है ॥
सम सदा सुख कर । अमोल ताहे आचर ॥
दोनों भव सुख भोग । मुक्ति में सिधाइ है ॥१४॥

कथा-बावीसवी

समभाव के फल बता ने वाली "दम दंतमुनि" की

दोहा—सम भाव धारन करन। कठिन घना है सुजान।
वीर नर धारन करे। पावे पद निर वान ॥ १ ॥
समधार संमसारसे। तिरियंजीव अनंत ॥
दमदंतमुनिराजकी। ग्रन्थसे कथाकहंत ॥ २ ॥

चोपाइ

हस्तीशीर्षसुनगर मझार। दमदंत राजा गुणधार ॥
जारासिंधका वोसामंत। सेवाकाजतहां जावंत ॥ ३
कौरव पांडव तव धरीगुमान। लेदलआये तसदेशस्यान ॥
देशलूंटीजन दुःखीयेकरी। हस्तीनागपुर गयेसोफिरी ॥
यहचरी दमदंत नृपजान। हुवेआसुरत्त तसफलवतान ॥
जरासिंधका सहायसोलेय। बहूतसैनासंग आयेतय ॥
हस्तीनागपुरे घेरोदियो। दूतसंग पांडवसेकियो ॥
अहोधाडेतीमेरेपीछेआय। दुःखीकरी मेरीप्रजातांय ॥ ६ ॥
जोतुम सच्चेहो बलवंत। आवोरणांगण सैनासहंत ॥
मुझसंगअब करोसंग्राम। तोबतावुंअन्याय परिणाम ॥
प्रतिवासुदेव सहायकयस। कोनहरासके कहोतस ॥
योंविचार पांडवसुस्तरहे। फिरदमदंत बचनयोंकहे ॥ ८ ॥
नहींतुमसिंहशिथाल प्रत्यक्ष। धाडान्हाखन थारोलक्ष ॥

शियालसन्मुख सिंहनहोवेकदा । इसविचारसे जावुंमेंयदा ॥
जीतीदमदंत आयेनिजठाम । चरिसुनराजा डरेतमाम ॥
अखंडआण दमदंतकी फिरे । अन्यकीक्याकथा पांडवडरे ॥

दोहा– उसअवसार पधारीये । धर्मघोषमुनिराय ॥
दमदंत नृपआदिसब । सजहोवंदनजाय ॥ ११ ॥
परिषद बैठीउमंगधर । भव्यतारण ऋषिराय ॥
फरमावेधर्मदेशना । सुणेसबमनलगाय ॥ १२ ॥

चोपाइ

अहोभव्यो आयेभवसिन्धूकंठ । अवमत होवोतुमउपरंट ॥
शिवगति साधननरभवलही । पारहोवोउद्यम करसही ॥
ऋद्धिसुख पायेवार अनन्त । गरजनसरी नहीं निकलातंत ॥
बोधबीजसंयम दुर्लभ । सोअवमिला गमावोनअब ॥
जगजीतकी वारअनंत । तासुभवदुःख नाहींटलंत ।
परजीतन सुलभ कहाजिन । मुष्कल आत्मा जीतेविन ॥
आत्मजीतासो सबजीतीया । सच्चेशूरातो करोरीतिया ॥
आत्मजीतेकर्म हारजपाय । अजरामर अक्षयसुखीथाय ॥
इत्यादिमुनिबोध श्रवणकरी । नृपमगया संवेगसंभरी ॥
तजाराज लीनीदीक्षाधार । गीतार्थ बनेपढ अंगचार ॥
गुरुआज्ञासे कियाएकलविहार।फिरतेआये हस्तनापुर बार ॥
ऊभेरहेकर अटलधराध्यान।पांडवफिरतआये उसस्थान ।

समभाव के फल बता ने वाली "दम दंतमुनि" की

दोहा—सम भाव धारन करन । कठिन घना है सुजान
वीर नर धारन करे । पावे पद निर वान ॥ १ ॥
समधार संमसारसे । तिरियेजीव अनंत ॥
दमदंतमुनिराजकी । ग्रन्थसे कथाकहंत ॥ २ ॥

चोपाइ

हस्तीशीर्षसुनगर मझार । दमदंत राजा गुणधार ॥
जारासिंधका वोसामंत । सेवाकाजतहां जावंत ॥ ३
कौरव पांडव तब धरीगुमान । लेदलआये तसदेशम्यान ।
देशलूंटीजन दुःखीयेकरी । हस्तीनागपुर गयेसोफिरी ॥
यहचरी दमदंत नृपजान । हुवेआसुरत्त तसफलबतान ॥
जरासिंधका सहायसोलेय । बहूतसैनासंग आयेतय ॥
हस्तीनागपुरे घेरोदियो । दूतसंग पांडवसेकियो ॥
अहोधाडेतीमेरेपीछेआय । दुःखीकरी मेरीप्रजातांय ॥ ६ ॥
जोतुम सच्चेहो बलवंत । आवोरणांगण सैनासहंत ॥
मुझसंगअब करोसंग्राम । तोबतावुंअन्याय परिणाम ॥
प्रतिवासुदेव सहायकयस । कोनहरासके कहोतस ॥
योंविचार पांडवसुस्तरहे । फिरदमदंत बचनयोंकहे ॥ ८ ॥
नहींतुमसिंहशियाल प्रत्यक्ष । धाडान्हाखन थारोंलक्ष ॥

शियालसन्मुख सिंहनहोवेकदा । इसविचारसे जावुंमैंयदा ॥
जीतीदमदंत आयेनिजठाम । चरिसुनराजा डरेतमाम ॥
अखंडआण दमदंतकीफिरे । अन्यकीक्याकथा पांडवडरे ॥

दोहा– उसअवसार पधारीये । धर्मघोषमुनिराय ॥
दमदंत नृपआदिसब । सजहोवंदनजाय ॥ ११ ॥
परिषद बैठीउमंगधर । भव्यतारण ऋषिराय ॥
फरमावेधर्मदेशना । सुणेसबमनलगाय ॥ १२ ॥

चोपाइ

अहोभव्यो आयेभवसिन्धूकंठ । अवमत होवोतुमउपरंट ॥
शिवगति साधननरभवलही । पारहोवोउद्यम करसही ॥
ऋद्धिसुख पायेवार अनन्त । गरजनसरी नहीं निकलातंत ॥
बोधवीजसंयम दुर्लभ । सोअबमिला गमावोनअब ॥
जगजीतकी वारअनंत । तासुभवदुःख नाहींटलंत ।
परजीतन सुलभ कहाजिन । मुष्कल आत्मा जीतेबिन ॥
आत्मजीतासो सबजीतीया । सच्चेशूरातो करोरीतिया ॥
आत्मजीतेकर्म हारजपाय । अजरामर अक्षयसुखीथाय ॥
इत्यादिमुनिबोध श्रवणकरी । नृपमगया संवेगसेभरी ॥
तजाराज लीनीदीक्षाधार । गीतार्थ बनेपढे अंगचार ॥
गुरुआज्ञासे कियाएकलविहार।फिरतेआये हस्तनापुर बार ॥
ऊभेरहेकर अटलधराध्यान।पांडवफिरतआये उसस्थान ॥

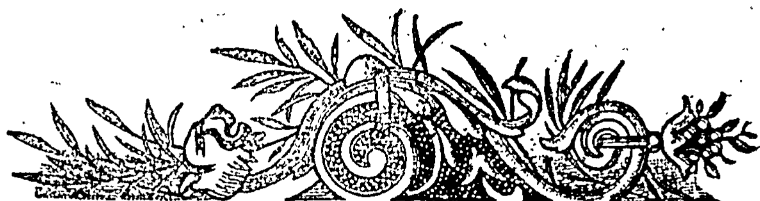
दमदंत मुनि देख आश्चर्य पाय। स्तुती वंदन कर आगे जाय।
पीछे दुर्योधन दुर्मति आय। देख मुनि को कोपे भराय ॥
अरे दुष्ट किया हमरा अपमान। ते कर्म भिक्षुक हो मांगे धान।
निन्दा कर पत्थर मारीया। ठट्ठा करत आगे सो गया ॥ २०।
यथा राजा तथा परजा होय। पीछे नर आये सब सोय ॥
एकेक पत्थर मुनि पर न्हाखीया। ऊभे मुनि को सब ढांकीय
मुनिवर नहीं किया किंचितद्वेष। समभाव रखे अति विशेष
आत्मा युद्ध महा निर्जरा स्थान। जाननहीं चला जराहीध्यान
फिर पंडव पीछे तहां आय। मुनि स्थान पत्थर ढग देखाय।
पूछे सें जाना सब हाल। पत्थर दूर किये तत्काल ॥ २३ ॥
करी वंदना खमापराध। आश्चर्य लाये देख मुनि समाध॥
क्षपक श्रेणि चढे ऋषि वरा। सकल कर्म का नाशज करा ॥
केवल ज्ञानहो गये निर्वाण। सुर महोत्सव किया उसस्थान
पांडव हर्षि निज घर आय। मुनि गुन गाया अति हर्षाय॥
दूसरे दिन राय शभा मझार। दुर्यो धन आये धर अहंकार।
पांडवा दिक सब दे धिक्कार। महा मुनिन्हाखे विन गुन्हेमार
नगर घेराथा तब कहां गया बल। अब करे गरूरी होवे अकल
क्षमासा गर मुनि राजसें ताप। कहा भोगोगे यह प्रबलपाप
यों निभृच्छा करी शभा सहू। वोभी शरमाया मन में बहू॥
द्वेष प्रभावे नरक में गया। द्वेष और समभाव फल कया ॥
दोहा—दमदंत मुन्विर परे। समधरो दो द्वेष त्याग ॥

बंरो सुख तैसे सबी । इस अवसर से लाग ॥
निज पर आत्म सुख वरन । द्वेष पाप उद्धार ॥
ऋषि अमोलख ने रचा । यहग्यारवा अधीकार

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज के
सम्प्रदाय के बाल ब्रह्मचारी मुनिश्री
अमोलख ऋषिजी महाराज रचित
अघोद्धार कथागार ग्रंथका
द्वेष पापोद्धार नामक
इग्यारवी मंजिल

समाप्तम्





मंजिल बारवा—"कलह पापोद्धार



पूर्वविभाग—"क्लेश"

चोपाइ

हा—जगत् दहन यह क्लेशहे । दे दुःख सागर झोंक ॥
फसी भारत इस जाल में।बन बैठे हैं फोक ॥ १ ॥
क्लेशकहे कु संप को । जंप न लेने देय ॥
लंप लगे घट घट में ।वरणी बतावूं तेय ॥ २ ॥

चोपाइ

नेजमति विरुद्ध सुने जाने बात।उस से होवे प्रकृति उत्पात
जस वश अन्य को बचन सूनाय।सोविरुद्ध अन्य को प्रगमांय
उभय विरूद्ध ता कारण लही। द्वेष भाव मनमें परगमही ॥
सोही अन्य को प्रगमाने काज । प्रसरे क्लेश प्रबल साम्राज़ ॥
राज के अन्दर क्लेश भराय । तो समूल राज नाश कराय ॥
तत् संग अश्वदंती पायदल।सहश्रों गमे की होवे कतल॥५॥

ाठ के हाट जो पेशे क्लेश ।तो द्रव्य का नाश होय हमेश ॥
ोडे दिन में कंगाल बनाय।शठजी भिक्षुक बन जाय ॥
गृहस्थ के घरमे क्लेश जो होय ।कुटुंब कदाग्रहीबन के रोय।
फूटे घर टुकडे होय अनेक । दुशमन रगड अवसर देख ॥
कुसम्प कर भ इ भाइ लडे । लुटावे धन कचेरी चडे ॥
लडावे आपसमें मां और बाप।भोगवे केइ महा संताप॥ ८॥
धर्मस्थान क्लेश पेशियो । धर्म विगाड भरमज कियो ॥
नास्तिक बहुत धर्मी जन बने ।कदाग्रह कर बहुत ही हने ॥
यों क्लेश पसरा है सब संसार । जहां तहां किया सत्य संहार
सालिये पाप में मुखीया यहे ।प्रत्य देखें ज्ञानी जन कहे ॥

क्लेशका स्वरूप—मनहर छंद.

वीतराग के अनुयायी । फसे क्लेश फास मांही ॥
निज शुद्धि को भुलाइ । धर्मनाम को डुबाइ है ॥
गच्छ संप्रदा बन्धाइ । एक का अनेक थाइ ॥
कुच्छ तत्व न जनाइ । व्यर्थ रूढीही थपाइ है ॥
जरा जरा भेद सहाइ।मचावत जो लडाइ ।
शास्त्राअर्थ जो फिराइ । निज हट्ट ही थपाइ है ॥
सत्सूत्र को छिपाइ । उत्सूत्र को जमाइ ।
डूबे जग सिन्धू मांही । ऐसा क्लेश दुःख दाइ है ॥
कहे दया धर्म मूल । गये सत्य अर्थ भूल ॥
चले इस से प्रति कूल । फूले अर्हपद मांही है ॥

निज भक्तों को बेहकावे । प्रति पक्षी से लडावे
शिर केइ के फोड वे । रक्त ना लीयों वही है
धर्म कही धन संचावे । मांस आहारी को खि
स्व धर्मी यों हरावे । ताते अति हर्षाइ है ॥
दया धर्मी के लक्षण।देख मन हुवे क्षीण ॥
हंसे अन्य मति जन । क्लेश ऐसा दुःख दाइ है
फसी क्लेश फंद मांही । मूल सम्यक्त्व गमाइ
तो श्रावक साधु पन भाइ किस विध रहाइ है
प्रथम लक्षणहै सम । सम्यक्त्वी खावे गम॥
रहे सब से हो नरम । सो तो क्वचित देखाइहै
हरामी से नरमाइ । स्व धर्मी से करडाइ ॥
साधु सती सें धीठाइ । कर सम्यक्त्वी कहाइ
जरा २ बात मांही । जुदा स्थान क बंधाइ ॥
एसी क्लेश भ्रमणाइ । भाइ बडी दुःख दाइ है
दोहा—क्लेश है ऐसा धर्म में । तो संसार की क्या वा
जलेंम जा अग्नि लगी । तो भट्टी में क्या रहात

फूट से फजीती—इन्द्राविजय छंद

न्याया लय में फूट धसी । कामेती एक एक को नहीं च
ग्राम रक्षक पण फूट फासे फस को भक्षक ठेरावे

ाज घराणे में फूट पडी तब । राज गमाइ गुलाम कहावे ॥
ालजुगी हिन्द मे फूट की लूंट।अ खूटलो चूंट सबीकेंपावे ॥
ागीरदारों फूटमें फस के । पीडीयों की जागीर गमावे ॥
ाहूकारों में फूट भरी । परतीत गमाइ व्यापार डुबावे ॥
ाठकी पेठ गमाइ है फूटने।एक की एक आसामी फटावे॥
ालजूगी हिंद में फूट की लूंट अखुट लो चूट सबीके पावे॥
ूटसे बाप देवे धन और को । फूट से बेटा बाप मरावे ॥
ूट से सासु बहु धमकावत् । फूट से बहू सासु कों दबावे ॥
ूट से भाइ यों जात लजावत।बाप कोधनदरबारे पहोंचावे
ालजुगी हिंद में फूटकी लूंट। अखुट लो चुंट सबीकेपावे॥
ती पत्नी में फूट पडीतब अन्य नारी अन्य नर संग जावे।
ुरू शिष्य में फूट पडी तब । अन्य गुरू को नाम बतावे ॥
ुत घनता घनी बधगइ फूट से गावन वालो कहां लगगावे।
ल जुग में फूट की लूंट अखूट । लो चूंट सबीके पावे ॥
विधा महा बली रावण राज में।फूट पडी तब राज गमावे॥
महाबली पांडव कौरव फूटसे।नाम डूबाइ महा दुःख पावे॥
ऐसे ऐसे की खुवारी करी तो।अन्य की कहानी कहा कथावे
कलजुगी हिंद में फूटकी लूंट अखुट लो चुंट सबी के पावे॥

कथा—तेवीसवीं

क्लेश का फल बताने वाली–"चार मित्रोंकी"

दोहा–फूट पडाइ पिशून्य जन । साधे अपना काम
फूट पडी जहां जाय के । गये सुख संप तमाम॥
यह स्वरूप दर्शाववा । चउ मित्र दृष्टांत ॥
सुनिया जैसा यहां कथुं । सुन समजो धर खांत

चोपाइ

जनपद नामें पुर शोभाय । पिशुन जय राजा सूख दाय
सो भागी राणी गुणवंत । शूर सिंह नामें पुत्र सोहंत ॥
सुबुद्धि मंत्री को पुत्र सोहन । शंकर पूरोहित पुत्र मोह
धना शेठ को पुत्र धनंत । यह चौ मित्र सदा संपे रहंत ।
विद्याऽभ्यास विन भूले भान । सेवे सात व्यश्न तज कान
हट काण कोइ की नमनाय । स्वइच्छा चारी करे अन्या
एकदा क्रीडा करन सो जाय।चारों ग्राम के बाहिर आय
खेत मक्का का पकाहुवा देख । चला मन खावे अब सेख
चारोंही पेठे तबखेत मझार।रखवाला देखकरकरे विचा
मोटे घरके ये चउ बलवंत । हटकन से नहीं कहा मानंत
में एकला यहतो हैं चार । लडनेसे होवे मुझ हार ॥
मालक का कैसे करूं नुकशान । जिसका पेट में पडाहैधा
किसी उपाव से बचावूं माल।सोची आयो तत्काल

लुली लुली आति किया प्रणाम। भले पधारे कृपाकरी श्याम
पुर पति पुत्र प्रधान जी साथ। पुरोहित पुत्र है ब्राम्हणजात
परंतु बनीया क्यों आया यहां। इसमें हक इसका है कहां ॥१
देढे दूणे पहिले ले दाम । घर में इसने रखे हैं श्याम ॥
तीनों हर्षे कृषी भक्ति जोय। कहे सच हे पटेलके सोय ॥
बनीया कैसे खावे यह माल। कृषी पकडा उसको तत्काल॥
माले के एक स्थंभ सेबांध। तीनोंसे कहे फिर तक सांध॥
धन्य भाग्य पधारे राज कुमार। प्रधानजीके बेटे तुमलार ॥
ब्राह्मण भिकारी हें ऐय। मांग के धान बहुत गया लेय ॥
फिर आया खेत लूटने काज। यह तों अच्छा न लगेमहाराज
दोनों कहेसच पटेलकीबात। दूजे स्थंभ पूरोहित बंधात ॥
हर्षाकूमर से कह कृषान। खेत मालिक आप कृपानिधान॥
प्रधान जी पहिले हम पास। तैसी ली चुका लिया धन रास
किस न्यायसे भुट्टेये खाय। नृपति आप न करो अन्याय ॥
राज पुत्र तब नीचा जोय। सचीव पुत्र स्थंभ बंध्यासोय।
अब एकही रहे राज कुमार। कृपी क्रोधातुर हो उसवार ॥
कहे राजपुत्र हो चोरीकरो। जरा शरम घर की नही धरो ॥
चोथे स्थंभ बांधयों कही। चोर पकडे पुकारा तब सही ॥
सुनकर लोक बहुत दोड आय चारो बंधे देख आश्चर्यपाय
फिट २ निंदेसहू जन तास। शरमी चारों रहे पेयानप्रकाश ॥
चारों के पिता खबर दे पाय अपमानी देश पार कराय॥

कुसंप से घउ आगे दुःख लिया।कुकर्म करदुर्गति गिया
एसा क्लेश जानो दूःख कार।दृष्टांत का ग्रहनासब सार
दोहा—क्लेश फल यह जान कर।संप करो सब लोक
तो सब दुःख को दूरकरवांछित पावां थोक॥ २१





मंजिल बारवा—“कलह पापोद्धार.”

उत्तर विभाग-“सम्प”

दोहा—शांति सुख यश दायका। सम्पही जग मझार ॥
तन जन जग गच्छ उन्नति। करण सम्प को धार।

चोपाइ

तजे क्लेश जो धारे हैं सम्प। वो रहते हैं जगमें जम्प ॥
आत्म शांति उनके प्रगटाय। अन्य वहूतों की लाय बुजाय ॥
सुखी सदाही कुटम्ब है सोय। जिस घर क्लेश कदू नहीं होय ॥
एक को एक देख हर्षाय। एक एक के गुण सरसाय ॥ ३ ॥
गुण सुण गुण वृद्धि होय। यों सुधारा सह जहीं लो जाय ॥
गुण ग्राही का सब करे गुण गान। गुण ग्राही पावे सन्मान॥
जहां क्लेश नही तहां मन हुल्लास। जिससे वधे नव मैंगल्याण

बहूत जन हिल मिल कर रहे। दुशमण दाव वहां नही लहे
सम्पहे जिस सम्प्र दाय के मांय। यथा नाम तथा गुण थार
ऐसा सुखदाइ सम्प्र सुजान। धारो उन्नति इच्छक प्राण ॥

सम्प के लिये दाखले—मनहर छंद

"मित्ति म सव्व भुयेषु"। जैन के शास्त्र कहे।
सर्व जीव मित्र सम। धर्मात्मा जानीये ॥
"वसुधैव कुटंबिक," महा भारत कथे ऐसे।
सर्व पृथवी के जीव। निज कुटुंब पैछानीये ॥
दरद दिल के वास्ते। पैदा किया इनसान को।
मोमीनो की वाणी मोंम। कीजीये परमाणीये ॥
ऐसे सब सम्प काज। पूकारे शास्त्र समाज।
सर्व सुखदाइ भाइ सम्प एक मानी ये ॥ ७ ॥
दशा श्रुतखंध अरु सम बायंग सूत्र मांही।
महामोहनी कर्म बंध तीस बोल बखाणीया ॥
बोल छव्वी समें कहा चार तीर्थ में पाडे फूट।
महामोहणी बांधे सो तो आगे दुःख दाणीया ॥
सागर सीत्तर कोडाकोडा सम्यक्त्व न पावे सोय॥
नरक निगोद दुःख भोगत अनाणीया ॥
ऐसा जान क्लेश [illegible] सज ॥

दोनों भव माहें सोतो होवे सुख दानीया ॥ ८ ॥

समकित मूल सम्प । धर्म हीका मूल सम्प ।
सुख का कारण सम्प । सम्प जग सारहै ॥
सम्प विन धर्म समकित और करणी सब ।
कष्ठ किया जानो यह तो कर्मों की वेगार है"
समदृष्टी ऐसा जानी । सब से मित्र ता ठानी ।
करे धर्म करणी नहीं गमावे लगारहै ॥
परिणामे फल दय । जाणो यह सूल नय ।
सर्व सुखदाइ भाइ । सम्प जग सारहै ॥ ९

सम्प के लिये दाखले—इन्द्राविजय छंद.

एक तण कों हरकोइ तोडत। बहुत त्रण रस्सी हांथी बांधडार
एक चींटी को हरकोइ मारत । बहूत चींटी मिल नाग घिदार
इत्यादि द्रष्टान्ता सम्प से रह सहू दुशमन का वहां जोर नचाले
अहो सुख इच्छक सम्प रखो सदा देखो मजा दोउ लोकमझार
राम कहे घन जीता लक्ष्मण । अधिक मत सिर कारही धार ॥
बहूत मिल का मान महात्म एक की टेक कहां लग चाले ॥
एक मात्रा के दो मात्रा के । एका धारी से बादशा हार ॥
अहो सुख इच्छक सम्प रखो सदा देखोमजादोउलोक मझार

कथा- चौवीसवी

सम्प कफ़लबताने वाली—"धनदत्तशेठ की"

दोहा—सम्प रखे संसार में । पाये पावे सुख ॥
तेस्वरूप दर्शन को । कहू कथा जे मुख ॥ १ ॥
धनदत्त बहू कुटुम्ब वंत । निर्धन सम्प प्रशाद ॥
रुठी लक्ष्मी यक्ष वसहुवा । सो यहां कथूंसवाद॥

चोपाइ

चिलशाल पुर जितशत्रु राय । धनदत्त शेठ रहे उसठाय ॥
पुष्फोतरा नारी गुणवन्त । पंदरह पुत्र तस अति सोहंत॥२॥
सब परणाये उत्तम स्थान । बडा परिवार हुवे संतान ॥
कुटुम्ब पोषण रखने व्यवहार । खरच बधा तस घर अपार॥४
उत्पन्न कम अंत्तराय के जोग । सबको पोषणे चाही ये भोग।
बहूत तंगाइ चलावे काम । तोभी जगमें रखते माम ॥ ५॥
अत्यन्त प्रेम तस आपस माय । एक एक से जुदा नरहाय ।
तात हुकम सब करे प्रमाण । यथा शक्ति व्यापार दुकान ॥
इर्षा कदा किसकी नहीं करे । मदत हरेक करण अनुसरे ॥
एक एक के करे गुणग्राम । पर सुखी देखरहे सुखपाम ॥

मिले उसपर धरते संतोष । समजे नहीं कैसे होवे रोष ॥
सन्ध्या समय सब मिल वेठंत।शेठजी हित शिक्षा देवंत ॥
निर्मळ मन सरदे सब सच।करे अंगीकार न करे कच पच।
बहु पुण्य जोग बहु संगम थाय।बहुत मिले बहुतही शोभाय
बहुत मिले होवे बहुतही काम । एक राजासे नवसेगाम ॥
एसा जान सब संपसे रहे । जिससे विपती क्षण में दहो ॥
इत्यादि उपदेश शेठ सुणाय ।सुने सबी उसी तरेहवरताय
दारिद्रता तस अतिसताय।तोभी ते दुःख वेदे न जराय ॥

दोहा- उसवक्त उनकेधामकी । पडीअचानकभींत ।
बांधनको दमडानहीं । खुलीरहेफजीत ॥ १२ ॥
सबमिल हातोहाततब । करनेलागेकाम ॥
सम्पसे अशुभकर्महटे ।शुभपुण्यप्रकटेताम ॥ १३ ॥

चोपाइ

मृतिकाकाजे धरतीखोदाय।मारतकुदाल अवाज वहांथाय॥
धन भरीयो चरवो वहांदेख । आश्चर्यपाये हर्षविशेख ॥
शेठहुकमे तसलिया निकाल । दूसराउसके नीचेमाल ।
उसे नीकाला तीसरादेखाय । उसेनिकाल शेठनाचेताय ॥
अतिलोभ भाइ दुःखदाय । इतनेसेसब सुखहीपाय ॥
खाडापूरकर बंधाइभींत । द्रव्यसेबधी सुखजनप्रीत ॥
खानपान वस्त्रभूषण किया । द्रव्यपसाय सुखसबलिया ॥
वहांहीएक स्वर्गशाहरहे । धनपरिवार बहुततसगहे ॥ १४ ॥

बधाइ जगह एक मध्य बजार।बहूत मजलकी सुंदराकार
उसे धनदत लेनेकरी चहाय । निरारंभी योगहीदेखाय।
स्वर्गशाहसे आकहे नरमांय । येहजागामुझदोलो धनलगा
स्वर्गशाह हंसीचिंतेमनमांय । दरिद्रीस कैसेजागालेवाय
मनदेखन पूछेमुझभणी । कींमतकही थोडीजगातणी॥
धनदत्त पांचरखा साक्षीदार । लादीनीकहीमुजब दीना
तबकहे हांसीमेंहांमेंभरी । साक्षीदारकहे नबदलोजरी।
परवस्यस्वर्गशाह तसदइ । धनदत्तसवकुटुंब तहांजारही
धनेसधन वृद्धिबहूभयो । एकखुने मेंढगलोकियो ॥
खरचन हुकम सबीकोदियो।कोइनलायो नकोइलेगियो
हिंशक व्यापार तजन्यायसेचले । दानज्ञान दयःमेंवाव
सबकेवस्त्र भूषणएकसाकरे । एकहीस्थान भोजनआचरे
शेठहुकम नउल्लंघे लगार । सम्पसूशील उत्तमआचार
योंसबकरे सुखसेतीगुजार । आगेसुनो परिक्षाअधिकार

दोहा—उसही नगरीमेंरहे । महालोभीश्रीपाल ॥
अतीकष्टकर संचीयो ।बारकोटीमाल ॥ २६ ॥
वनमेंएक वटवृक्षतल । गडासोसवजाय ॥
अकाम कष्टप्रभावसे । मरकरव्यन्तरथाय ॥ २७
परिगृह ममता स्वर्गतज । वटपे वसासोआय ॥
धनदेखेहर्षेघनो । देखोमोह दुःखदाय ॥ २८ ॥

चोपाइ

एकदालक्ष्मी उससुरसंग । गगनजातेदेखा धनदत्तढग ॥
सुरकहे लक्ष्मी तूंनिशरम । अनइछितजगरहे तूंरम ॥ १९
वाहेतहां तोतूंनहींजाय । तबहीपगमे रहीठेलाय ॥
लक्ष्मी कहे संप जहां मुझ वास।ते अब तुझे देखावु खास
कमलाअर्धनिशीसें वहां आय।धनदत्त से कहे क्य करो सहाय
शेठ कहे सुता हुं तू नारी कुण।सा कहे में लक्ष्मी सुणो निपूण
विन बोलाइ बसी तुझ घर । तुम राखो मूझ कचरा पर ॥
नरेंद्र सुरेंद्र मुझ आदर करे।न रहे तुझपास रखे इस तरे३२।
शेठ कहे कल खडा खोदाय।गाडी देवू तुझे उस मांय ॥
खेशाणी हो बोली सासूरी।खड्डेमें दाटो ऐसी में नावुरी।३३।
में तो नहीं रहुं कोड उपाय।शेठ कहे करो ज्यों सुख थाय॥
दोलत आन जाने की में जान । पहिले इस्तरे रखी इस ठाण
सुर संग सुरी फिरी शेहेर मझार । मुझरहने उत्तमठोर देखाइ
दगा कुसम्प सव जगह देखाय । धन दत्तसम घर एक नपाय ॥
फिर आइ लक्षमी धनदत्त घर । वडे पुत्र से कहे इस पर ॥
में लक्षमी शेठजी कहाडे मुझ । मुज गये जावेगा सब सुखतुझ
तुम राखो तो रहू तुम आवास । वडा पुत्र कोपी कहे तास ॥
शेठ हुकम विन क्यो आइ पास। जा शीघ्र नहीं तो पावेगा त्रास
दूसरे पास जा ।विनंती करी । मुझे तुम राखो कृपा करी ॥

दीनी गाली कहाडी ललकार। यों सब कने पाइ तिरस्कार ॥
पस्ताइ सुरी सुर से कहे ताम। सुख रहने को गमायो में ठाम
औरभी देख इनसबका सम्र। फिर धन दत्तपास श्रीआइ जम्प
कहो शेठ जी घर थांरा म्हारा । शेठ विचार सत्य कारउ वा।
घर धन सब लक्ष्मीका बाइ। लक्ष्मी कहे तुम तजो इस तांइ ॥
तत्क्षण शेठ उठ घर वाहिर आय। हाक मार सबी को बोलाय
शेठ बचन सुन सबी उठ भागा। मोटा छोटा ढेकेरु नागा ॥
कर जोडी कहे हुकम फरमावो। शेठकहे श्रीकियो रीसावो ॥
वस्त्र भूषण उसका उसे देना। फक्त तीन २ वस्त्रसबी रखलेना
सुनतेही सब फेंक दिये तत्क्षन। जरा नहीं दुःखीया किसका मन
आगे शेठ पीछे सब चला परिवार। बनमें आये वट बृक्षनिहार।
विसामा लिया शेठे चिंता भराइ। खाने मांगे गे देवूंगा में कांइ
बुद्धि उपाइ कहे घांसतोड लावो। चार जने मिलरस्सीबनावो
बेंच के भोजन करेंगे भाइ। सुन सब लगे उसी काम मांइ।
दुःख विषवाद किसके मन नहीं। उलट हर्ष रहे सब मनाइ

दोहा—कमला बैठीतिहांसोचकर। यक्ष आया वहां चाल।
डर पायो मनमें अति। रस्सी वटतले निहाल ॥
पूछे मानव रूपकर। रस्सी बटो किसकाज ॥
शेठ कहे हम भूतका। करेंगे इससे इलाज ॥४९॥
भूक का भूत निकल गया। पूण्य पसाय वचन ॥
मेरा किया मेने लिया। चमका भूत तब मन॥५० ॥

चोपाइ

करजोडी कहे करोगुन्हामाफ । अबनहीं संतावूंगा कदाफ ॥
अगमबुद्धि बनीया भूतजान । कहेलछी रुशीतुझहान ॥
भूतकहे मेराबारह क्रोडधन । सोआप लेकरकरोगमन ॥
लक्ष्मीको मेंलावूंमनाय । तत्क्षण सो लक्ष्मीपासआन ॥
कहे तूछ बचेनपुण्यात्म सताये । मेरेपीछे क्योंतेनेलगाये ॥
चलोशीघ्र तसमनाइ लावें।जिससे अपनदोनों सुखपावें ॥
लक्ष्मीकहे पहिले थेंमुझछेडी।।परकाजघडेपडे उसपगवेडी ॥
दोनोंमीलआये धनदत्तपास । घरेपधारोयों करेअरदास ॥
धनलेभूत शेठसंगभया । सपरिवार शेठ निजघरगया ॥
चमत्कार पुरजनसबदेख । आश्चर्यानन्द मनहुवे विशेख ॥
बीतीबात शेठसबसुनाइ । सम्पसत्य प्रत्यक्षसुखदाइ ॥
रुठीलक्ष्मी मुझमनाइलाइ । बारेकोटी धनभूत वसथाइ ॥
सुनसबजन तसमाहिमाकरी । सत्यसम्पलिये वहूतेवरी ॥
धनदत्त सपरीवार दीक्षालइ । स्वर्गगये मोक्षपावेंगेसही ॥

दोहा– श्रोताइसदृन्तसे । पेखोसम्प सुखदान ॥
धनदत्त परेसवरहो । द्रढसम्पको सदाय ॥
क्लेशतजो सम्पकोंभजो । गजोधर्मभूमंड ॥
सजोप्राचीन साजको । वरतोजैन अखंड ॥
निजपर आत्मसुखवरन । द्वेषपापउद्धार ॥

ऋषि अमोलखनेरचा । द्वादशमां अधीकार ॥ ६८ ॥

परमपूज्य श्रीकहानजी ऋषिजीमहाराज
के सम्प्रदायक बालब्रह्मचारी मुनि
श्रीअमोलख ऋषिजी महाराज
रचित- अघोद्धार कथागार
ग्रंथका द्वेषपापउद्धार
नामद्वादशवा अधीकार

समाप्तम्





मंजिल तेरवा–"अभ्याख्यान पापोद्धार"

पूर्वविभाग–"कुआल"

दोहा–इर्षा धर अन्य ऊपरे । जो दे कूडा आल ॥
अभ्या ख्यान सो पापहे । सद्गुण भक्षण काल ॥

चोपाइ

इसजग मे पुण्यात्म प्राण । पुण्य पसाय कीर्ती मंडाण ॥
सो पापात्मा को न सुहाय । उसे दाटण करे उपाय ॥ २ ॥
दुष्टात्मा चिन्ते मन मांय । सवही मानते उनके तांय ॥
सवही सद्गुण वाकोही कहे । सबही पंथ ताही को गहे ॥ ३ ।
मुझ न पूछे टुकडा साट । वोलाये न करे को वात ॥
मेरे मत में कोइ नहीं आय । जब लग कायम यह रहाय ॥
इसलिये ऐसा करूं को उपाय । जिससे कीर्ती जिनकी दव जाय
यों विचार छिद्र ग्राही होय । सद्गुण को दुर्गुण कर जोय ॥ ४

जो कभी किंचित दुर्गुण पाय । तो राइका पहाड बनाय ।
ठोर २ बकतो सो फिरे । ज्यों परिणाम जगत् कागिरे ॥
जो कभी दुर्गुण लगे नहात । तो सद्गुण को दुर्गुण बनात
भोले लोक को सो भरमांय । दुर्मति ता मे प्रागमाय ॥ ७
खोटा कलंक तस सीस चडाय । उभय भवका डरनहीं ल
ब्रह्मचारी को व्यभिचारी कहे।तपस्वी को भक्षसी कहद
ज्ञानी को अभिमानी भनंत । वक्ता को कु-कथक कथंत
बिप्रीत यों सबही प्रगमाय । अछत्ते कु-कलंक चडाय ।
ऐसे जो हैं अधर्मी जीव । भोगवत दोनों भव रीव ॥
आखिर तो सत्यही प्रगटाय । तब अभ्याख्यानी मुहछिप
फिट २ बजता लोकों के मांय।बयण परतीत कोइ नहींल
ताको पाप ताकें सिर पडे । सच्चे कलंक तास सिर चडे

अभ्याख्यान दुर्गण–मनहर छंद.

जे नर अभ्या ख्यानी । ताकी मति सदा भृष्ट मा
गुण आच्छादन भनी । दुर्गुण सो जोवे है ॥
आप की जमावे पेठ । अन्य की बतावे हेट ॥
इरर्षा को भर्यो ठर्यो पर माम खोवे है ॥
अच्छत्ता चडावेआल । बोले जैसो काटे व्याल
नाहक सतावे गुणी । सती संत होवे है ॥
लही महात्मा का श्राप । उपार्जे महा पाप ॥

अभ्याख्यान पाप ऐसे जग को विगांवे है ॥ १२ ॥
ईर्षा भराये जन गुन को करे औगुन ॥
त्यागी ब्रह्मचारी मुनि । अस्नानी जो रहावे है ॥
जा को मेला कही निंदे । जाने कोइ नहीं बंदे ॥
शुचाशुची भेदकों । अज्ञानी कहांसे पावेहैं ॥
देखलो पुरान अशुची चारतरह पहचान ।
दयाहीन निंदक[2] मैथुनी[3] चोर[4]थावेहैं ॥
यहचारोंकु कर्मकरे । ताकोतो शुचीउचरे ।
अन्ध अभ्याखीनीको उलटही देखावेहै ॥ १३॥
केइधर्मधारी कर्मवशहैं संसारी ।
पालपरवारी करेनिर्वद्य व्यापारीहे ॥
अभ्याख्यानी छिद्रजोय । धर्मीगुण ढंकसोय ।
कुडाकलंक लगाकहे । यहतोढोंगी भारीहे ॥
हाथमांहे माला राखे पेटमेंकोदाला ।
गुप्तकरे कर्मकाला भाला लखणाका मारीहे ॥
थापण दबाय ऐसेकलंक लगाय ॥
ऐसे अभ्याख्यानीकी तोदोनां भवख्वारि ॥ १४ ॥

इन्द्र विजयछंद.

तरतम्य जोगेकेइ योगीवने । अन्यकीकीर्ती नाहिंनुहावे ॥
अन्यमतकेकेइ तपीजपीगुनी । नाहिंकिसीन [illegible] ॥

हीनाचारी अज्ञानी बताकर।उनके भक्तोंके भावफिरावे ॥
बडोअभ्याख्यान घुस्यो धर्मीघर।देखअमोल अचंभोइलावे॥
श्वेताम्बरदीगाम्बरकोमिथ्यातीके।दीगाम्बरश्वेताम्बर ठेरावे
साधूमार्गी मंदीर मार्गी । यह विध एकेक पे आल ठावे॥
सत्य को असत्यु असत्य सत्य कर।अपनी टेकको पक्की जमावे।
बडो अभ्याख्यान घुस्यो धर्मीघर।देख अमोल अचंभहीलावे
कलंक है वंक अचंक लगे सो जगे दुःख शंक निरंक उपावे॥
देवकीके गये पुत्र छहो हरी।हरिण गमेषी सुलसाके पहोंचावे॥
कलंक से सीता वसी वन वासही।योंही कलंक अनेक सतावे।
यो दुःख कार अपार कु आल है।दोनों भव दुःख कौ ये उपावे

कथा—पच्चीसवीं

अभ्याख्यान के फल बतानेवाली—भव भूत क्षत्रीकी

दोहा—बहुते जीवन कलंक दे।दुःख पाये संसार॥
भव भूत नामें क्षत्री की ।कथूं कथा सुनो सार ॥

चोपाइ

मेदनी मंडण ग्राम मझार।भय भूति क्षत्री रहे धन धार ॥
विषय लंपटी सदा दुर्मति । परदारा भोगन लुब्ध अति॥२॥

दुष्ठ इच्छा पूरने के काज । काजा काज की न धरे लाज ॥
परपंच रच करे इच्छापूर।सत्पूरूष उससे रहे सदा दूर ॥
तहां रहे एक मंगल शाह शेठ।मंगला नारी गुण की पेठ ॥
महा रूप वती तैसी महासती।जैनधर्म प्रीति विद्यावती ॥
एकदा भवभूती मंगलाको देख।रूपे मोहा काम पीडाविशेख
वस करने किये अनेक उपाय । परंतु न चला एकही दाव॥
पापी तब खोटे परपंच रचे । काज साधन जो मन जचे ॥
मोतिजूगल अतिसूंदर लाय।बाण में सांध तस घरमें फेकाय
सोमि लिये मंगला सती तांय । भूषण से पडे जाने मनमांय
नथनी में सो लिये डलाय। दासी हाथ भव भूती भेदपाय॥
पोशाक क्षत्री याणीकी बनाय।तस धोवन को दी सो जाय॥
लांच दे मंगला गेह में मुकाय।मंगला भेद जानन नहीं पाय॥
मंगला शब्द सम एक वैश्या तांय।आधिराते रथ में बैठाय॥
मंगल शेठ घर सन्मुख रही । सब सुने ऐसा शब्द कही ॥
मंगलशा दुःख दे अतिमोय। इस लियेयहां रेना नहीं हायप
जावूं में भवभुतीजी घर । यों पुकार रथ भग गया तर ॥
मंगला मंगल शेठ सुणी नहीं येह।अन्य सुनी अचंभो लह ॥
प्राते मंगला नदी न्हाने जाय।भव भृति तस लारही आय॥
धो सुका रख वस्त्र घडी कर।उस में गुप्त मांन दिया धर ॥
वस्त्र उठा सती घर जब आय।मध्य बजारे डली [illegible]
अहो शीघ्र चालो अपने घर । सती अली [illegible]॥

सती कर छोडावन करे जोर।पापी न छोडे धरा कठोर॥१३॥
लोक बहुत भेले वहां होय। भव भूती को दबावे सोय ॥
भव भूती वस्त्र में मांस देखाय।सती वस्त्र डाल दिये उसठाय॥
निडर भव भुति सबी से कहे । आज रात मुज घर रह ।है
पुछे पाडोसीसे कही आइ भाग।कहे पाडोसी सुनाथा राग॥
पुनः भवभूति नथ मोती बताय।खरीदे उस जौहरीकोंजताय
इत्यादि प्रत्यक्ष भेद पाय । लोक चुप रहे अचंभा लाय १६
सती को अती उपजा संताप । चिंते प्रगटे पूरा कृत पाप ॥
खसावे नहीं सा तहां से पाय।मंगलशा अतिगये मुरझाय ॥
राज भट दोनों राज में लेजाय । नृप सन्मुख ऊभा कराय।
सती गुंम हुइ बोलानहींजाय।भव भूती औरभी बात बताय
क्षत्रीयाणी की पोशाक इस घरधरी।वो पहरी के आतीहरघरी
भेज सीपाइ पोशाक मंगाय।देख सच्च हूइ भव भूती की वाय
घबराइ सती तबकहे पूकार।अहो प्रजा पितानिराधारआधार
जितने कृतघ्न भव भूतिने किये।एकही भेद स्वपने नहीं लिये
निर्दोष अबला में कहू प्रभूशाख।डुबी लाज पिता तूं ही राख
सब जन कहे स्वप्न में महाराय।मंगला खोटी हम जानी नाय
भ। भूती खोटा जन्म से सही। परंतु यह परपंच समझे नहीं
सब की बुद्धी गइ चक्राय।किस विध करें अब ये न्याय॥२६॥

दोहा—विमल बुद्धि रायपुत्रिने । सुने सबी येह हाल ॥
राजसभा में आ कहे । में करुं न्याय एक ताल ॥

चोपाइ

सती कों अपने पास बैठाय । भव भूतसे कहे सत्य कहे वाय
इसने क्या किया तेरेघर आहार । कब खाया सत्य कर उचार ।
भव भूति कहे आज कीरात । खा आइ ये मांस दाल भात ॥
फिर पूछे तूं सच कहे बाइ क्या।वस्तु कब तेने खाइ ॥ ३० ॥
सती कहे कल सन्ध्या समय । दारु शाक रोटी खाइ मय ॥
औषधी देतस वमन कराय । दाल रोटी पडीसूं आगे आय ॥
राय पूली कहे देखो सब लोक।भव भूति की बात सब फोक ॥
पुनः बाइ पूछे सती के ताय । तुझ वस्त्र सें मांस कैसे आय ॥
सती कहे न्हाने नदी सें गइ । धोसुका वस्त्र बांधे शुद्ध सही ॥
फेरन्हाइ चलीये गांठी उठाय । न जानूं मांस कैसे भराय ॥
कन्य कहे सती निधा चुकाय । पापी दोना मांस इसमें ठाय॥
पलां बाइ मोती कैसे आये हात। सती कहे मुज आंगणमें पता
कन्या कहे पापी दिये तहां न्हाख । घर के जान लिये इन राख
अच्छापोशाककैसे धरीघरसांय।सती कहे गठडीदी धोबन लाय
वैसीही मे संदूक में धरी । और बात में जानूं नहीं जरी ॥
तहीं तब उस धोबन को बोलाय । दीधसको सच दीन बनाय

दोहा—अदल इनसाफ बाइ किया । टाला सति कलंक ॥
सुन सब जन आनंदीया । बहा बाइ बुद्धिवंत ॥ ३१
मंगलशा मंगलावती । माना अति उपकार ॥

डूबे जन कों तारीये । विद्या बडी संसार ॥ ३८

चोपाई

बाइ सती कों धर्म बेन बनाय । नृपति पुत्रीजानी ताय
उत्तम वस्त्र भूषण सजाय।आडंबरे तस घर पहोंचाय ॥
सती कहे घर अब जावूं नहीं । देखी जग रचना में यह
कर्मोदय कोइ किसका नाय।संयम लेवूं गुरुजी ढिगजाय
अति उत्सव तस दीक्षा दी राय।ज्ञान ध्यान में आत्मरम
करी करणी स्वर्ग सोपाय।थोडे ही भव से मोक्ष सिधाय

दोहा—भव भूत शरमाइया । सब करे अति धिक्कार
महा जूलमी यह पापीयों । थूं थू करे नर नार

चोपाई

भव भूति का अति जाण अन्याय।नृपती अति कोपातुर
घर धन उसका दिया लूंटाय।मूढ मुंडा शाम मुख करा
रक्त वस्त्र तस अंगपहराय । लंबा करण पर तस बैठाय
फेराया सब चौहटे मांय । प्रकाश करे जो किया अन्या
सब जन देते उसे धिक्कार । निकालदिया पुर के बाहर
पापोदय प्रकटा तन रोग।अनेक विपत्ती से हुवा तन वि

दोहा—नरकादि दुर्गति विषे पायादुःख अपार ॥
अभ्याख्यान महापाप कों।तजो सुख इच्छनार



मंजिल तेरवा "अभ्याख्यान पापोद्धार"

उत्तर विभाग-"मौन"

दोहा—ईर्षा न करे कोइ की।वाणी न वदे दुःख दाय॥
सद्बोध वक्त उच्चरे। सो मौनी मुनिराय। १॥

चोपाइ

अवगुण पर दृष्टी न दये।निज अवगुण अंतर द्रग गये॥
ार अवगुणी निजात्मजान।सदा करे गुणी गुणका ध्यान
में अंग में कहा जिनराय।जो अभ्याख्यान अन्य सिरठाय
ाही तस आवे कलंक। यह बात श्रद्धी होकर निशंक॥
ंक किसी सिर जरानधरो।निज हित चिंत पाप परिहारो
प गुणी हो पाडो अन्य पे छाप।ज्यों देखी गुणी सुधरे आप
ोधकर सद्गुण प्रसारे। जिसतरह गुण इच्छक धारे॥
सरे योग्य गुणी गुण उच्चारे।सोही मुनी नहीं ऊंचे दूसरा

अभ्याख्यान से बचने कीरीत—मनहर छंद

पूर्व कर्म के संयोग । मिले शुभा शुभ जोग ॥
अमन्योग व मन्योग्य । ज्ञानी जन यों विचारी ये।
कभी कलंक जो आय । संचित कर्म के पसाय ॥
निज बन्धे प्रकटाय । ऐसा निश्च निरधारी ये ॥
पहिले दीना जो कलंक । उससे लगा यह डंक।
ऐसी कर्म गति वंक । भोगूं धरी में लाचारी ये ॥
भोगवतो दुःख पावू । तो क्यों नवा में संचावूं ॥
जिससे आगे न पस्तावूं । यों अमोल मन वारीये।
सच्चालगे कलंक खोटा । हीये दुःख का जो चोट।
तो न बांधे नवी पोटा । तुज आगे न सतावेगा ॥
न धर दाता पेंद्वेष । जाणी धर्म की रेष ।
लाय दया तूं विशेष । येह किया आगपावेगा ॥
जैसा गमाया है सुख । तैसा पावेगा ये दुःख ॥
तब कूटेगा ये मुख । किये उदय जब आवेगा ॥
यह तो हुवा देनदार । तूं तो कर्जी मत हो यार।
धार अमोल विचार । तोही सुखी सदा रहावेगा।
जो तुझ हरे मन निशंक । नहीं कलं कित अंक ॥
कूडा दीया कोइ रंक । तो तेरा क्या जावे है ॥
खरा खोटा जाने लोक । आखीर होवेगा यहफोक

वैठ तूंतो क्रोध रोक । जोक तुझ नहीं आवे है ॥
कभी खोटा कहे सहू । तो न करना मन लहू ॥
यह तो निर्जरा है बहू । लहू थोडे काल थावे है ॥
आखीर ते सत्य तरे । ऐसा जेष्ट जो उचरे ॥
तेही नीवडे आखीरे । यों अमोल दरशावें है ॥
कभी न होवे कलंक दूर। तोभी मन मती झूर ॥
धैर्ये कर्म बंध चूर । शूर हांके भव विचार ने ॥
चोरी जारी व्याभिचारी । कीये कर्म अनंती वारी॥
हुवा नीच रुगीं वारी । सब दिया तुझ धिक्कारने॥
तहां परवश्य सहे दुःख । नहीं रख कर्म लुक ॥
यहां स्व वश्य सन्मुख । कर निर्जरा ये अपारने ॥
एक भव निकल जाय । आगे नहीं दुःखपाय ॥ ।
यों अमोल मन समजाय । शुद्ध ज्ञानसे विचारने

हितशिक्षा—इंद्राविजय छन्द

मतदे मत दे कलंक कोइ को । लगा कलंक सहो सम भावे
कलंक अंक अति दुःख दायक।जाण दूसरे का कलंक गमावे
कलंक दिये से कलंक लगे। अरु कलंक सहसे कलंक न आवे
गुणकी स्थाप करे यथा योग्य । सोही अमोल सदा सुखपावे

मुनिका उपकार—मनहर छंद.

जग कलंक निवारे । एसा महात्मा विचारे ॥
करे खवट अपार । निज सुख को विसारे है ॥

फिरे सदा ग्रामो ग्राम । रहे मिले जैसे धाम ॥
खावे निर्वद्य जोपाम । दृष्ठी पराहृते धारी है ॥
बांचे सरस व्याख्यन । मधुर रागश्वर तान ॥
कटू मधु अवसर पाम । पन सब हित कारी है ॥
सुणी चेतो भव्य प्राणी । त्यागो कलंकी जे जाणी
पावे सुख आगे वानी । ऐसे गुरूकी बली हारी है।
जो हैं गुरू ज्ञानवंत । सब का भला जो चावंत।
कर कृपा फरमा वंत । सत् तत्व निरधारी है ॥
पाप पूण समजावंत । धर्माधर्म दरशावंत ।
हिता हित ठसावंत । निज बुद्ध विस्तारी है ॥
सूत्र अर्थ कथा न्याय । ढाल सवैया सज्झाय ॥
यों नाना कर उपाय । बात गले दे उतारी है ॥
ज्ञानी रस्ते शीघ्र आय । अज्ञानी मन मुरझाय ॥
जैसा होत तैसा थाय । गुरू दूषण नलगारी है
मत दोवो कुडा आल । बोलो मत आल पाल ।
चालो मत खोटी चाल म दुःखावो परातमा ॥
मत उचारो अलिक । धरो अपयश बिक ॥
रहो नम्र हो वनीत । जो आवो थे विख्यातमा।
तजो सर्वही दुर्गूण । ग्रहो सर्वही के गुण ॥
तजो अनीती विकर्म । भजो परम परमात्मा ॥
ऐसी शिक्षा बहूप्रकार । देके करें जग सुधार ॥

धार सुधरे नर नार सो तो मिले सुख शांतमा १३॥

गुरू उपकार-इंद्रविजय छंद.

र्मक्षर दातार गुरू के उपकार से पार वो किमपी न होवे ॥
तो दातार सम्यक्त्व सुमत के,तासु प्रशाद मुक्ति मग जोवे
ता उपकार को पारनवार है।यों भव्यात्म मन में चोवे ॥
बहू जन्म भक्तिकर पर पहोंचावे।सोही शुशिष्य उभयभवसोवे
जे जग में सजीव निर्जिव के पदार्थ सब हैं उपकारी ॥
कइक इह भव कइक पराभव । आयेहैकाम रू विसि टारी॥
जो किंमपि को अजोग बने तो । ताउपकारन टार विकारी
टाल कलंक न लगा तूं अंक को।सो अभ्याख्यान दोषनिवारी

कथा—छब्बासिवीं

मौन वृतके फलबताने वाली—"सर्वांग सुंदरीकी"

दोहा—समभाव कलंक सहन करान दे किस को दोष।
सर्वांग सुंदरी सतीपरे । सो आखीर पाय संतोष॥

चोपाई

गजपुर नगर बडो मनोहार । शंख श्रावक वसे धर्म धार ॥
भद्रास्त्री सती तस जान । सर्वांग सुंदरी तस पुत्री बखान॥

साकेत पुर एक दूसरागाम। अशोक दत्त शेठ का वहां धाम
उभय पूत्र तस रूप निधान। समुद्र दत्त, बरदत्त, गुनखान।
एकदा अशोक दत्त किसकाम। गजपूर आये शंख शेठ धाम।
सर्वांग सुंदरी का रूप निहार। जानी पूत्र समुद्र दत्तसार।
सगाइ कर आया निज घर। समूद्रदत्त कों दीनी खबर॥
लग्नोत्सव कर व्याईतास। आये शयन भूवन में खास॥
कर्म जोग जहां अन्यनरछांय। देख समुद्र दत्त संशय लाय
चुप उठ आया साकेतपूर। वैसकी बात प्रकट करी भुर॥
मांनी सबही सच्ची बात। अन्यस्थान तस लग्न करात॥
साथही वरदत्त को परणाय। श्रीमती कांतिमती ले आय

दोहा—पाछे सयन भवन में। सर्वांग सुंदरी आय॥
पति जोये मिलीये नहीं। तब ते अति घबराय॥८
तात मात से जा कही। साकेतपूर खबर कराय॥
अन्य परणे सो जान के। दुःख अति मन पाय॥९

चोपाइ

सर्वांग सुंदरी धैर्य मन लाय। जाने कर्म प्रकटेरे अंतराय॥
धर्म ध्यान दान सुकृत्य करे। दुःखीयेके दुःख स शक्ति हरे
भाग्योदय सुव्रता सती आय। धर्म कथा सुन वैराग्य लाय
ली दीक्षा शिक्षा दो ग्रही। दुष्कर तपश्चर्या ध्याने अनुसरी
विचरत फिरत सांकेतपुर आय। अशोकदत्त घर गौचरी जाय

दोनों भ्रात नारी बंदन करी। भोजन देवन रसोडे संचरी
तासमे कर्म उदय वली आय। मयुर खूंटी मोतीका हार खाय
देव आर्जका आश्चर्य पाय। गुरुणी को सब दिया सुनाय ॥१३॥
रसोडे से दोनों आइ वाहिर। हार देखा नहीं खूंटी पर ॥
आर्जिका का वैम लाइ सोय। अयुक्त बात ये कैसे होय ॥
निन्दासती की करी गाम मांय। सती सुन द्रढ मौनरही सहाय
ज्यों निन्दा सुनेते कान। त्योंत्यों ध्यावे उत्तम ध्यान ॥ १५ ॥
धर्म ध्यान से शुक्ल चडी। कर्म दग्ध कर दिये उसी घडी ॥
क्षपक श्रेणि चड केवल पाय। जय २ देव करे व्योम मांय ॥
ते अवसर सागर दत्त सन्मुख। खूंटी मयुर हार उगले मुख ॥
सागर दत्त आश्चर्य पायो आपर। निजातम को दे धिक्कार ॥
ऐसेही छांय सयन घर पडी। विन गुने में सती पर हरी ॥
यहां भीतस दिया कूडा आल। हाहा में हूं कर्म चंडाल॥१७॥
धन्य २ सती की गंभीर ता खरी। आज लग कंही वाणीनउच्चरी
चारों मिल आया साध्वी पास। केवल माहिमा जो पायेहुलास
वंदन कर वैठे सन्मुख आय। कृत कर्म चिन्ती शरमाय ॥
सुरनर की वहां परिषद भरी। केवल ज्ञानी धर्म कथा उच्चरी ॥

दोहा–सुणो भव्यों एकाग्रचित्त। अभ्या ख्यना दुःखदाय
जिसविध बंधे जीव ये। उसी विध भुक्ताय ॥ २१ ॥

चोपाइ

वसंत पुर नगरी के म्यान। उभय शेठ वसते गुनवान ॥
गुणवंत पत्नी धन बहू घर। विश्वास भयो धनश्री कर॥२
धर्म घोषऋषि सद्बोध पसाय। जप तप धर्म करे उमंगाय ॥
भ्रात आज्ञा से सुकृत्य मांय। यथा शक्ति सो द्रव्य लगाय
बंधू प्रेम की परिक्षा करण। एकदा खोटा करे आचरण ॥
रात को भाइ सूने घरमें आय। भो जाइ कोसा पास बैठा
जोरसे हित शिक्षा यों दये। शील कुल रखे लज्जा रये ॥
दुशीलका कर्भ न वरो पंथ। भ्रात मेरा प्रेम अखंड धरंत॥
भोली भोजाइ कहे सत्यबात। धनपति के तब वैम भरात।
मुझ नारी ये व्यभि चारीणी।तब भग्नि हित शिक्षा देतेभणं
वनीता जब आइ पतिकेपास। ललकारी कहाडी दी तास।
ते विचारी गइ मन मुरझाय। विन गुन्हे किम अपमानकरा
आसूती सो घर के बार। धन श्रीदेख हर्षी अपार ॥
वृद्ध भाइ का सच्चा है प्रेम। अब लघु भाइ का देखें खेम
एकदा लघु भाइ सूता घर मांय। लघु भोजाइ कोबात चेताय
पतिवृत धर्म नारी का शिणगार। अन्यन देखणा द्रष्टी पसार
सुणी लघु भाइ वैम मन लाय। पति पास जब नारी जाय।
धिक्कारी तस कहाडी बार। ते मुरजाणी बैन हर्षी धार ॥
दोनों विरहणी दुःख दिलधरे। नणंदसे एकदा अर्जसो करे।
विन गुन्हे हम को तजीतुम भ्रात।निर्णय इसका निकालोमात

तव धन्य श्री दया लाय ।दोनोंसे पुछे अज्ञान जो थाय ॥
विना गुन्हे किम तज दी भोजाइ।सो कहे तुझ शिक्षासुनवाइ
धन श्री कहे भोले तुम सही । मैं तो सहज धर्म शिक्षा दइ
कुलवंती नहीं करे अकाज।ऐसे कभी लेनी नहीं लाज ॥
दोनों शरमा किया नारी सत्कार।दोनों नारी डरीमन मझार
दोनों ही रहे नणंद हुकममांही ।अभ्याख्यान तहां कर्मबन्धइ
अवसरे पांचोंही लीनी दीक्षा।करी करणी पढकर धर्म शीक्षा
आलोचन ते कर्मकी न करी। पांचों मर स्वर्ग में अवतरी ॥

दोहा—स्वर्ग से आयु पूर्ण कर।यहां लियो अवतार ॥
दोनों भाइ भाइहूवे । यह दोनों नार तुम नार ॥
धन श्री कुल कलंक दे । सर्वांग सुंदरी हुइ मेय ॥
कलंक दीयो कलंक लीयो।देख्यो प्रत्यक्ष तेय ॥
छांया पूरूष लख धण तजी।मयूर खुंटी गिलयोहार
पाप खुटे पाछा वम्या।मौन से निपजा सार ॥

चोपाइ

यों प्रत्यक्ष अभ्याख्यान। फल । मौन के फल भी देखसफल
अभ्याख्यान के किये पत्तखान।हलू कर्मी वैराग्य मन आन
सर्वांग सुंदरी का सब कुटंब।जग जंजाल को जान विटंब॥
सती पास लीनो संयम भार । ज्ञान आचार की शिक्षा धार
केवली आयु अंते मोक्ष पाय । और सबी तो स्वर्ग सिधाय॥

प्रकाण रत्न से कथा ये लही। यथा बुद्धि यहां कथ दइ ॥४१

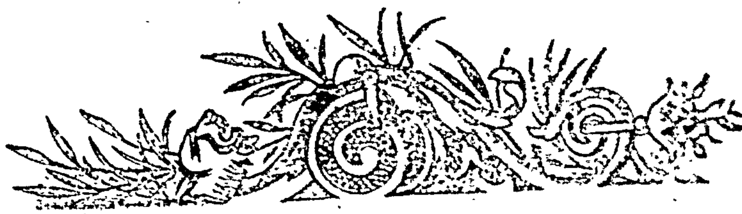
शोरठा—यों जान अभ्ख्यान। छोडो सुगुण सब तुम।
ज्यों रहे अविछलमान। दोनों भव सुख पावोगे।

दोहा—धन्य सती सर्वांग सुंदरी। बिकट प्रसंग मौनधार।
कर्म कलंक दोनों हरे। येही सुने का सार ॥ ४३
कलंक न देना कोइ को। सहना अपना समभाव
तोसर्वांग सुदरीपरे। पावोगें सबउत्साव ॥ ४४ ।
निजपर आत्म सूख वरन। अभ्याख्यान पापोद्धार ॥
ऋषि अमोलख ने रचा। येह तेरवां अधिकार ॥ ४५ ॥

परमपूज्य श्री कहानजी ऋषीजी महाराज के
सम्प्रदाय के बाल ब्रह्मचारी मुनी श्री
अमोलख ऋषी जी महाराज रचित
अघोद्धार कथागार ग्रन्थ का
अभ्याख्यान पापोद्धार नामे
चउदशवां मंजल

समाप्तम्





मंजिल चउदवा–"पैसुन्य पापोद्धार"

पूर्वविभाग–"चुगली"

दोहा–इतउत चुगली जो करे । सो है पैशुन्य पाप ॥
अनर्थ दंड जबर यह । उपजावे संताप ॥ १ ॥

चोपाई

भारी कर्मी औछा उदरी जीव । खुशी होय देखी पर रीव ॥
नारद विद्या जो फेलाय । शांति स्थान संताप उपाय ॥ २ ॥
पहिले मिले होमिल सामन । जाने के गुत रखे वखान ॥
पीछे देये अग्नि लगाय । तास अरी को देवे भर माय ॥ ३ ॥
अन्य सम्प देखतस मन जले । करन विरोध [illegible]
करा झगडे आप देखे ख्याल । हंसे हंसावे बजावे ताल ॥ ४

देखी सुनी जानी नइ बात । सुनाने दूसरे को मन उभरात
जहां लग नही निकसेमुख बार । तहां लग चेन पडेनलगार
यों प्रत्यक्ष दुःख प्रदयेह पाप । अपयश दुःख दायक अमाप
यों जान जीव जो करे परिहार । सोही सुख पावए संसार ।

चुगली के दुर्गुण—मनहर छंद

जो नर चुगली खोर । ताको चित्त है निठोर ॥
विगोइ उभय ठोर । आपाही विगोवे है ॥
शांति में लगावे आग । सम्प में करे विभाग ॥
तोडे साचा अनुराग । द्वेषही जगावे है ॥
आगे सो विरोध बडे । जुलम सो अति करे ॥
केइ यों केप्राण हरे । अनर्थ निपावे है ॥
यहां अपयश पावे । आगे नर कादि में जावे ॥
पैशुन्य यह पाप बहूत जीवों को सतावे है ॥ ७
निज हितको विसारी । होइ पर दुःख कारी ॥
करे चुगली नर नारी । सुसज्जन फोडावे है ॥
बाप बेट को लडाय । भाइ भाइ को भिडाय ॥
सासू बहू को चिडाय । क्लेश फागही मचावे है ॥
शेठ गुमास्ते लडे । सगे न्यायालस चडे ॥
धन इज्जत को हरे । पीछे बहूत पस्तावे हैं ॥

चुगल देख ठर्ष धरे । महा पाप संचय करे ॥
पैशुन्यता पाप बहूत जीवो को सतावे है ॥ ८ ॥
चुगल खोर ठोर ठोर । करत है खोटा शोर ॥
जोर से भिडावे ओर । मोंर को ठोकावे है ॥
होवे राजें की लडाइ । देते बहूतों कों कटाइ ॥
रक्त नाले को वहाइ । महा पातक उपावे है ॥
वो विरोध आगे भाइ । चले जेता काल तांइ ॥
जे अनर्थ निपाइ । तस फल चुगल पावे हैं ॥
कछु नहीं आवे हाथ । पाप लेके जावे साथ ॥
पैशुन्य यों पाप बहुत जीवों को सतावे है ॥ ९ ॥

चुगली से दोनों भवमे दुःख–इन्द्राविजयछंद

इहभव वैरी हुइ वहूतों का । अविश्वासी हुइ निजपेट नमावे
काइन संग करे जन वाकोकदी गुप्त स्थानमें पेसन नहीं पावे
चित दुर्ध्यान अहो निशीध्यावत । विन बोले चितचेननपावे
चुगल खोर इह लोकफजीत हो । आगेहीगति नरक सिधावे
चुगल के मुहमें यम नरक में । तीक्षण लोहकी शूलभर है॥
छेदित जिहवा ताडित तर्जित । एसे फजीती बहुत करे हैं ॥
आगे भवो में सबका विरोधीहो । दुःख से आयुष [illegible]
पैशुन्य पाप संताप देता यों । जान सुज्ञान [illegible] है ॥

कथा—सत्तावीसवी

पैशुन्य पापके फल बताने वाली—"यज्ञदेवकी"

दोहा—चुगली फल दर्शानको । यज्ञदव चरीत्र ॥
ग्रन्थ अनुसारे यहां कहूं । जाणी चेतो मित्र ॥ १

चोपाइ

महाविदेह महा क्षेत्र मझार । चक्रवाल नगर श्रेय कार ॥
अप्रीतिहतचक्र तहां शेठ । सुमंगला शेठाणी विशेष्ठ ॥ २ ॥
तास पुत्र चक्र देव सोहंत । कृतज्ञादि गुण गण वंत ॥
विनय विद्या परिणण करी । तस कीर्ती पुर में विस्तरी ॥ ३
सोम श्रम पुरोहित यहां रहे । नन्दी वर्धन नारी गुण गहे ॥
यज्ञदेव तस पुत्र मलीन । कृतघ्न द्रोही इर्षालु दीन ॥ ४ ॥
दैवयोग्य चक्रदेव के संग । प्रीति हुइ वरते एक रंग ॥
चक्रदेव सदा रहे सरल भाव । यज्ञदेव खेलत रहे दाव ॥ ५
चक्रदेव घर ऋद्धि अपार । यज्ञदेव देख धरे मन खार ॥
कैसे करुं इसका धननाश । जिससे यह बनरहे मुझदास ।
छिद्र पेखतनहीं अवगुण पाय । तव कूआल चडाना चहाय
चंदन सार्थ वहा तहां रहे । राज्यमान्य धन वहु तस गेह

यज्ञ देव तहां चोरी करी । बहुत मोलके भूषण हरी ॥
चुपछिपी चक्रदेव पास आय । धन उसकों सो सब बाताय
मित्रमेरा तूं जीवन प्राण । तुझ से छिपी कोइ वातम जान
यह गुप्तधन मैंने भेला कि ा । मुज वक्तपे काम आवेगा।जय
रखेने लाया में तेरे पास । अबीरख लेवूंगा जब होवेगा।खास
चक्रदेव बहू मूल्य भूषण देख । संशय मनमें आया विशेख
कहे भाइ में यह धन रखुं नाय । अन्यस्थान रखइस तूंजाय
तेरे घर जैसा यह नहीं देखाय । बुरो मतमान यहांसेलजाय
कोप करी यज्ञदेव तब कहे । क्या तुमुझे चोर जार सदहे ।
स्नेहाकियेका यहहुवासार । क्याआगे प्रेम पाडेगापार ॥
सुणचक्रदेव मनमुरझाय । भूषणउठारख दियेघरमांप ॥
यज्ञदेव घरगया खुशथाय । होणहार तेतोटलेनाय ॥

दोहा— चंदनशाह तबजानीयो । चोरीहुइमुझघर ॥
बहुतहीदेखे नबमिले । भूषणऔर तस्कार ॥
अर्जीदीतब राजमें । नृपढंढेरापिटाय ॥
पांचदिनमें प्रगटो । आगे पकड्डूंसजाय ॥

चोपाइ

छट्टेदिन यज्ञदेव नृपपास । गुप्तआकर नरमीअरदास ॥
मित्रभेद नहींकहेनोनाथ । आपआज्ञा नटलंयोजात ॥

पतुंर दुर्गुणी मित्र जान । देखो जैसा मे करुं बयान ॥
चक्रदेव शठ पुत्र घरमांय । चोरीकी धनसब है महाराय
सुनीधरणीधव आश्चर्यपाय।कहे यहबात कैसेसत्यमनाय
यज्ञदेवकहे लोभवश महाराज । बडे २ करतेहैं अकाज ।
देखोचक्रदेवका भंडार । जरुरनिकलेगा मालउसीमझार
नहींनिकलेतो सजामुझकरो । येहीविनंती ध्यानमेंधरो ॥
नरेश्वरतब पंचोंको बोलाय । कहेचक्रदेव घरतपासोजाय
पंचसुनि अतिअश्चर्यपाय । किसकावैम राजादिललाय ॥
चंदनशाहाका भंडारीलेय । चक्रदेव घरआयंतेय ॥
शरल चक्रदेव कियासत्कार । मुझलायक सेवाकरो उचार
पंचकहे देखावो भन्डार । क्याक्यामालहे तुमआगार ॥
सर्वमाल सन्मुख रखदिया।चोरीकामाल उसमेमिलगया
पंचपूछे चक्रदेव सत्यकहो । यहमाल तुम कहासेलहो ॥
येहीहै चंदनशहाका माल । हुवासो सबप्रकाशोहाल ॥
चक्रदेवसुन मनमुरझाय । मित्रकाभेद दियानहींजाय ॥
चक्रदेव कहे मुझे नहींभान।कैसेमालआया मुझघरस्थान
अश्चर्यधरी आग्रहसे पूछेसब । सच्चकहोतो बचोतुमअब
नहींतो फजीती होवेगाअपार।इसका करोजरा उंडाविचार।
चक्रदेवतो कहेएकबात । मालसाहित नृपपासलेजात ॥
अकृतीये गुणलख नृपविस्माय । पूछहुइसोदेवो दरशाय ।
चक्रदेवकहे एकहीजबान । जबकोपातुरहुवा राजान ॥

हेइसेकहाडो पुरदद्दबार । राजभटकीया उसीरप्रकार ॥
चक्रदेव अतिमनमुरझाय । जातकुलमुझधर्म लजाय ॥
अवजीतवमें नहींकुछसार । फांसीबांधी मरणोमनधार ॥
सत्यरक्षक देवसहायताकरी।तसस्थंभनतहांकिय उसघरी ॥
राजमातकेशरीरमेंआय । किंकालीकर योंचेताय ॥
अमादीभूपकरे अन्याय । नाहकसत्य वन्तोकोसताय ॥
यज्ञदेव धूताराकेकहे । सत्यवन्त चक्रदेवकोदहे
यज्ञदेव चोरीकरले माल । चक्रदेवके घरदियाडाल ॥
चुगलीकरी तेरेपासआय । जाणके चक्रदेव नहींजणाय ॥
मित्रद्रोहो चक्रदेव नाकियो । जिससे उसेदेश वटोदियो ॥
सोशरमाइ मरेफासीलेय । ग्रामबाहिर वटतलेछेय ॥
शीघ्रजाला तसकरसत्कार । जोतूंसर्व इच्छेचेनचार ॥
नहींतो समूल करुंसंहार । देववचन मिथ्यान लगार ॥
योंकह देवअदृश्यथाय । राजाअतिही डरामनमाय ॥
तैसेही नृपग्राम वाहिरगहो । चक्रदेवफासो दूरकियो ॥
वहुतजनदोड आयेनृपातिलार।नृपति नमीतसकियासत्कार ॥
गुसलाये तसमेहलमझार । पंचकमेटी भरीउसवार ॥
यज्ञदेवको नफरहाथ वोलाय । तेजाने इनाम देवमुझराय ॥
तेशीघ्रआयो नृपतिपास । नृपवंधनमें डाल्योतास ॥
पूछेधमकाइ कहेसत्यवात । किसनेकरी चोरीगाहपरात ॥
पापी फिरवोला मिथ्यावोल।मालकिला अयक्यानुसनोल ॥
ताडनतर्जन अतिहीकरी । तवतेभजत सत्यउच्चरी ॥

मचीरकिधा महाराज । मित्रनाममें झूठालियाज ॥
राजादेव कोपकिया प्रकाश । आजहोतामुझ सबकानाश।
यज्ञदेव महादुष्ट चंडाल । लेजावो इसेमारो इसकाल ॥
दोहा-सुनी बचन चक्रदेव तब । तुर्तही बोलनम्र होय।
मेरे प्यारे मित्रका । गुन्हा माफ करे दोय ॥ ३९
सर्व चकित भये देखके।धन्य कृतज्ञ कुमार ॥
आपकारि पे उपकारतो ।विरला जग करतार॥ ४

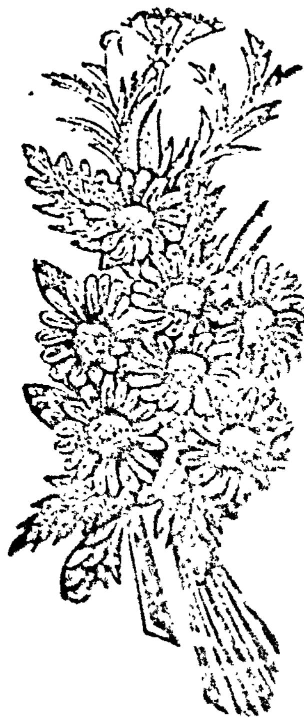
चोपाई

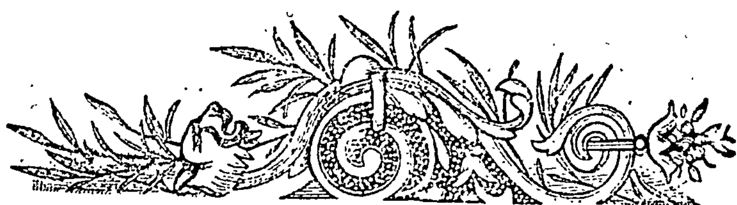
नृपति कर जोडी कहेतास । अहो पुण्यात्मा मत कर पक्षया
यह कृत्घनी पृथवी भार । शीघ्रहोने देइसका संहार ॥ ४१
कटाबुं जिह्वा फोडावूं तन । तब शीतल होवे मुझ मन ॥
फिर न करे कोइ ऐसा काम । राज धर्म यह चुपरहो धाम ॥
चक्रदेव कहे मारा नहींजाय ।नृप कहे ठीक करुं तैसाउपाय
कृष्ण मुख हरित पग करी । लंबो करणे बैठा बजार में फिरी
ग्राम हदवाहिर दिया निकाल । तबसब लोकजाने सचेहाल
फिट २ हुवा विन माराही मरा । चुगली का फल वरणन् का
दोहा-चक्रदे यह चित्त लख । वैरग्य आतेमन लाय ॥
गणधर अग्नि भूतजी । तस भाग्य तहां आय ॥
लीदीक्षा शिक्षा वरी । करी करणी अपार ॥
पंचम स्वर्गमें उपने । आगेखेत्र पार ॥ ४६ ॥

चोपाई

ज्ञदेव अपमा नीया गया। किसीभी स्थान सुख नही लिया।
भटकी महादुःख से मरत्यू पाय। नरक दूसरी में उपना जाय।
आगे बहू भवान्तर विस्तार। समरादित्य चरीत मझार॥
चुगली फल जाणन कथा येकही। सुखेच्छु चुगली तजदही॥

दोहा—यों चुगली दुःख दायनी। जान तजो सुसंत॥
होवेगंभीर समता धरो। दो भव सुख मिलंत॥





मंजिल चउदहवा—"पैशुन्य पपोद्ध।

उत्ताराविभाग–"गंभीर्यता"

दोहा–उत्तम नर वो जगत् मे । सागर बर गंभीर
झलके नहीं झलकही लग । संकट में रहे धीर

चोपाइ

विचित्र इत्स संसार मझार । मनुष्य वस्ती विचित्र प्रकार
एकक केहैं विचित्र स्वभाव । क्षण क्षण में सो पावे विभाव
सोदेखो नहीं निजमें प्रगमाय । अन्य फिरतेनहीं निज फि
उसको कहे सागर वर गंभीर । देखो समुद्र की लेहर ले तं
क्रोडो नदी नीर समुद्र में आय । हद उलंघी कदा नहीं जा
जेसे मणी मुक्ताफल भाव । शंख सीपभी ताहे समाव ॥ ४
त्यों गंभीर जेह नर धीर । राखे घट में सब की पीर ॥

ानी सुनी देखी विपरीत । कदापि नहीं बिगाडे चित ॥ ५
ान जग का अनादी स्वभाव । फिरत सदा नरहे एक साव ॥
पों चिन्ती ६ भी मन बच काय । वर्ते नहीं ज्यों अन्य दुःख पाय

गंभीरताकेगुण — मनहरचंद
छांडी चुगल ताइ भाइ । धारानर गंभीराइ ॥
आप पर सुख दाइ यह होवत सदाइ है ॥
पर हीनता दर्शाइ । देते सज्जन लडाइ ॥
ताके हाथ कहा आइ । व्यर्थ पातक लगाइ है ॥
ऐसा डरी मन मांही । नहीं झलके कदाइ ॥
शन वेन न जनाइ । दूसरकी हीनताइ है ॥
सोही सागर सेकहाइ । अमोल तेही जगमाही ॥
इह लोक सुख पाइ । आगे स्वर्ग सिधाइ है ॥ ८॥
बधे गंभीर का यश । होत जग तस वश ॥
आदर पावत सब लोक के मझारी है ॥
पंचों सभा में बोलाय । लेते सला तस चहाय ॥
गुप्त रखे नहीं काय । जानी तस भारी है ॥
वोतो जाने सब कथन । नहीं जाने कोइ नर मन
चाहाते है बोलाना क्यों तेहितही उच्चारी है ॥
यों इस भय मांय । गंभीरता सुखदाय ॥
सुख संपत सौभाग्य । बना रहे तस ह्यारी है ॥

अरे नर खाइने पचाइ जाय मणों बंध ॥
निर्जीवी बात एक केसे नपचायरे ॥
अपचा से रोग बहूत । पेदा होते तन मांहीं ॥
तैसेही चुगली भाइ । क्लेश को बढायरे ॥
पचा अहार गुणकरे । पुष्टकर होवतहै ॥
तैसेही पचाइ बात । गुणकर थायरे ॥
योगायोग विचारी उचारि म उचारीयरे ॥
अमोल प्रत्यक्ष यह । दृष्टान्त लगायरे ॥९॥
गंभीरों का धोखा टेल । इछित सो आय मिले
वैरीयों का मान गले । गंभीरता धारते ॥
तनमें आवे पुष्टाइ । रुप वल अधिकाइ ॥
बुद्धि निर्मळरहे । मन अबीकारते ॥
लोक सब अच्छे कहे । जावे तहां आदरलहे ॥
बहूत जन सेवे तस रहे जोविचारते ॥
इत्यादिक बहूत गुण । गंभीर ता मे निपुन ॥
जाणी अमोल क इसे करोने स्वीकारते ॥ १०

कथा—अठावीसवीं

गंभीर्यताकेफल वतानेवाली — "परदेशी राजाकी

दोहा—केइहैगुणी जन विश्वमे । गंभीर गुण अलंकर

पण वक्के जो गंभीर रहे । ताके गुण गवावंत ॥ १
राय प्रदेशी मरणांत तक ; गंभीर्यता रखी धार ॥
रायप्रसणी सूत्र से । कथा कथूं यहां सार ॥ २ ॥

चोपाई

केकैदश सेतांबिका पुरी । परदेसीराय नास्तिकमत धरी ॥
जीव देखन हने बहूजी काय । परन्तु जीव उसे नहीं पाय ॥
चित्तप्रधान से एकदा केह । सावथी पुरी जावो भेट लेह ॥
जीतशत्रु नृप को भेट ये करी । सुख समाचार ले आना फिरी ॥
बहूत ठाठ से चित्त सवाथी आय । जीतशत्रु को भेट कराय
सावथी पति अति सत्कार । सुखस्थाने रहे भोगे चन चार

दोहा—उस अवसर वहां पधारीये । केशी श्रमण कुमार ।
चले जन वंदन बहूत । देखे चित्त उस वार ॥ ६
पूछे मुनि आगम सुणी ।आपभी वंदन जाय ॥
परिषद बैठी भरय के । गुरु सद्बोध फरमाय ॥७

चोपाइ

बूझो अहो भव्यों इस वार । आये किनारे होवो पार ॥
दोविधी धर्म जग तारण नाव।अणगारी आगारी नाव॥८
भिन्न भिन्न भेदकर दरसावीये । भव्यों रहने को हुलसावीये

यथा शक्ति करी व्रत अंगीकार । परिषद गइ निज २ आगा
पीछेसेउठे चित्तप्रधान । लुळीवंदे कहेवचनप्रमान ॥
नहींसमर्थ होवनअनगार । श्रावकव्रताकिये अंगीकार ॥
नवतत्वादिके हुवेजान । अपूर्वधर्म पायेहर्षआन ॥
सेताम्बिका जावनसजथाय । नमनकियाकेशी गुरुकोंआय
करजोडी नमीकरे अरदास । मुझपुरी पावनकरो गुणरास
मुनिकहे पारधी रहे उसजाग । पक्षी कैसे आवे दुःख लाग
चित्त कहे नृपसें क्या आपके काम । श्रावक बहूत पावेगेआरा
कहे मुनि अवसरे देखा जाय । हर्षी प्रधान विदा तव थाय ॥
मार्ग ग्रामे सब कों चेताय । सेवा करना जो केशी गुरु आय ॥
पुरी बाहिर बाग माली से कहे । केशीगुरु कों जगाये दये ॥
बधाइ देना मुझे तूं आय । दरिद्र तेरा दउंगा गमाय ॥
फिर भेट प्रदेशी बात सब कही । निज घर धर्म करे सुखे रही ।

दोहा–पांचसो साधुसे परिवरे । कर केशी श्रमण विहार
सुखे आये सेताम्बिका । उतरे बाग मझार ॥ १५॥
माली बधाइ दी चित्त को । दिया द्रव्य तस अपार ।
श्रावक वहू साथे लही । वंदे आमुनि चरणार ॥ १६

चोपाई

सुण व्याख्यान कहेअहो मह[illegible] २ राज[illegible] समजाय

गुरुकहे साधु दर्शने आय । सन्मुख मिले वंद अहार वोहराय॥
तो साधु तस करे उपदेश। चित कहे ठाक यहां लावुं नरेश॥
नवीन अश्व रथ को जोताय । फेरत नृपसंग चित तहां आय
वाग में मुनि देखराजा कहा कोन जड मुढ वाग घरी रहे ॥
कहे प्रधान यह हैं विद्वान । जीव काया रहे जुदी २ मान ॥
सुनी भुप तब मुनिढिग आय । पुछे बतावो जूदी जीव काय
मुनिकहे तूं मेराचोर राजान ।नृप कहे क्या चोरी करीमेंजान
मुनि कहे तेरा दाण चोराय। क्या शिक्षा उसकी करे राय ॥
समजो राय कियो नमस्कार । जाने वेप्रभा तारन हार ॥
पूछे नृप यहां में बैठू महाराज।मुनिकहे यह है तेरी जागाज
सच्चे साधु ताही को जान।मुनि पिगला मन नृपका पेछान।
कहे देखत जड मूड हमे कहे।नृप कहे गुप्त भेद कैसे लहे ॥
मूनि कहे अवधी ज्ञान करी।चमक्यो नृप वात लखी खरी ॥
फिर पूछे राय है जुदी जीवकाय।मुनि कहे इसमें संशय नाय।
१राज कहे मुझ दादोमहा पापीयो।आपकीकहेणनरकसीगयो
वो जो आकर मुझको चेताय । तो मानू मेंजुदा जीवकाय ॥
मुनि कहे राणी सुरीकांतासंग । को पुरुष जो सेवे अनंग ॥
ता को शीक्षा कैसी करे तूं राय।राय कहे देवुं सीस उडाय॥
वो कहे चेंताआवूं घर मांय । तूं तस जाने देवा राय ?
राय कहे क्षिण छोडूंहीनाय।मुनि कहे एम समझ तूं राय ॥
एक पाप करता को छोडे नहीं।तुझ दादो आठारसेवनहीं ॥

२ राव कहे दादी मेरी धर्मात्मा।देवलोक में गइ तस आत्मा
वो आकर जो मूझ चेताय।तो जुदा मानूं जीव और काय ॥
मूनिकहे नृप तेंनें सजे शिणगार।कोइ बोलाय पायखानेमझार
तूं उसजगे जाय के नहींजाय।नृप कहे अशुचि में कैसे जवाय
तैसे ही राय यहांकी दुर्गंध । जोयण पाँचसो जाय उतंग ॥
इसलिये देव सके नहीं आय।जुदी मान राय जीवरु काय ॥
३ जीवता भरा कोठी में चोर।सीसे सुर बंधकिये चउ ओर
फिर खोली कोठीचोर मरापाय।कहोस्वामी जीवकिदरसेजाय
मूनिकहे गुफा के जडे कमाड।अंदर रहे कोइ ढोल बजाड॥
तस शब्द बाहिर जैसे आय।तैसेही जीव गया जानोराय ॥
श्वामीतैसेहीचोरकोठीमेंबंधकिया।।निकालेअसंख्यकीडेदेखिया
कैसे गयेजीवअंदर भराय । मूनिकहे लोह पिंड कोइ तपाय॥
जैसे अग्नि उस में पेसंत । ऐसे ही जीवकोठी में घसंत ॥
५ राय कहे जीवजो एकसा रहे।तोजुवान बृद्ध सरफेंके जेहे॥
एकसा दुरा क्यों नहीं जाय । मुनि कहे सुन द्रष्टांत तूं राय ॥
जुने धनुष्य बान ढिग पडे । नवे धनुष्य से जावे परे ॥
६ नृप कहे जवान बृद्ध नर दोय। बरोबर बजन उठावे न सोय
मुनि कहे छींके नवे ज्युने परे।उपकरण सम भार दोनों धरे ॥
७ नृप कहे जीवता मरा तोलानर।वजन दोनों का हुवा बरोबर
जीव गये हलका नहीं पडा।जीव का वजन अधिक न चडा
मुनि कहे मशक में हवाभर । तोले तराजु में कोइ नर ॥

हवा निकाल तोल बलीकरे । दोनों का वजन एकसा उतरे
८ राय कहे तनकू खंडो खंड करा देखा जीव नहीं आया नजर
मुनि कहै अरणी के टुकडे करे । देखे अग्नि कया दृष्टि पडे ॥
९ राय कहे हाथमें दे ओ जीव बताय । तबसेंसानूं जूदी जीवकाय
किनसे उडे राय झाड के पान ? । कहे प्रदेशी हवासे जान ॥
हवा कया रंग कितनी बडी ? । नृप कहे कभी द्रष्टी नहीं पडी ॥
फिर हवा कहे किनके अनुसार ? । नृपकहे पत्रउडता निहार ॥
तैसे जान जीव चेतन लक्षण । विन देखे यों माने विचक्षण ॥
१० रायकहे जीवजो सब एकसा रा तो कुंथु छोटा गजवडा निहार
मुनिकहे दीपाशिखा कीपर । स्थालजितना रहा प्रसरकर ॥
११ नृ कहे आपकहा सो सबसही । पुरानी मरीटक छूटे नहीं
मुनिकहे लोहवाणिककीपरे ❀ । पस्ताना पडेगा तुझे आखरे ॥
सुनि बोधराय नास्तिकतताजा । सत्याजिनेंद्रकाभर्गभजा ॥
राज के किये भाग तबचार । एकभाग दिया दानसत्कार ॥
श्रावकधर्म किया अंगीकार । छट २ पारणा जावजीव धार ॥
दोहा— मुनिविचरे अन्यदेशमें । मोटा करे उपकार ॥
दत्तचित्र राजाकरे । धर्मतप आतम उद्धार ॥

❀ लोह वनीये का दृष्टांत—मनहर छंद.

चले व्योपारी चार । रस्ते लोह खान निहार । वर्भा गांठ उसवार । आर आगे फिर जावें हैं ॥ तांबा रूपा सोना मणी । आई खान ताकी घणी । तीनों [illegible] [illegible] मिला ऊंचसो बंधावे हैं ॥ चोथ को [illegible] । नहीं [illegible] सो छिटकाय । मैं तो लिया लोहूं नाय । फिर चारों घर आवे हैं ॥ तीनो धन ले हुवे [illegible] । लोह वाणिक [illegible] दुखी । अमोल यों हटाले जन पीछे पस्तावें हैं ॥ १ ॥

चोपाइ

जाना राजा को धर्म में लीन । राणी का मन हुवा मलीन ॥
यह पति मेरे काम क्या आए । इस बैठे अन्य कर सकूं नाए
अबके पारणा मेरे घर कराय । जेहर देकर मारुं इस तांय ।
आइ नृपकने करी परिणाम । अबके पारणा मुझघर करो श्व
राय मानी हर्षीसाघर आया। खान पान आसने में विषमिल
भूपति बैठे आ आसन परे । तत्क्षण जेहर तस अंग संचरे ॥
जाब्बा भूपति पौषध शाले आये । सलेषणा कर धर्म ध्यान ध्य
धारी गंभीरता नकरी बात । रखे सम भाव सबजीव खम
पुत्र प्रधान आदि आपूंछत । नृप ध्यान लीन नजरा बो
राणी डरी रखे कहे नृप भेद । मुझको फिर उपजे महा खे
रुदन करंती पौषधशाल आय । सुख पूछती गले नख द
तोभी राय जरा शब्द नकियो । सागर बर गंभीर हो रिय
अयूपूर्ण कर सुधर्मे स्वर्ग जाय । सूर्याभदेव चारपल्य आय
तेरेही वेलासें किया कल्यान । महा विदेह से जावेंगे निर्व

दोहा—तुर्त धर्म प्राप्त करी । धरी गंभीरता अपार ॥
परदेशी राजा भणी । बारम्बार धन्य कार ॥ ५
अहो ज्यूंने धर्म धारीयों । लेदृष्टान्त ये ध्यान ॥
बनो गंभीर सर्व सुखलहो। वरो पद शिव स्थान

निज पर आत्म सुख वरन । पैशुन्य पाप उद्धार ॥
ऋषि अमोलख ने रचा । चतुर्दशवां अधिकार ॥

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषजी महाराज
के सम्प्रदाय के बाल ब्रह्मचारी
मुनि श्री अमोलक ऋषिजी
रचित अघोद्धार
काथागारग्रन्थका
पैशुन्यपापोद्धार
नामकचउदवा
मंजल

समाप्तम



चोपाइ

जाना राजा को धर्म में लीन। राणी का मन हुवा मलीन ॥
यह पति मेरे काम क्या आए। इस बैठे अन्य कर सकूं नाए।
अबके पारणा मेरे घर कराय। जेहर देकर मारुं इस तांय ॥
आइ नृपकने करी परिणाम। अबके पारणा मुझघर करो श्या
राय मानी हर्षी सा घर आया। खान पान आसने में विषमिला
भूपति बैठे आ आसन परे। तत्क्षण जेहर तस अंग संचरे ॥
जाबा भूपति पौषध शाले आये। सलेषणा कर धर्म ध्यान ध्या
धारी गंभीरता नकरी बात। रखे सम भाव सवजीव खमा
पुत्र प्रधान आदि आपूछंत। नृप ध्यान लीन नजरा बोलं
राणी डरी रखे कहे नृप भेद। मुझको फिर उपजे महा खेद
रुदन करंती पोषधशाल आय। सुख पूछती गले नख दबा
तो भी राय जरा शब्द नकियो। सागर वर गंभीर हो रियो
आयुपूर्ण कर सुधर्म स्वर्ग जाय। सूर्याभदेव चारपल्य आय।
तेरेही बेला में किया कल्यान। महा विदेह से जावेंगे निर्वा

दोहा—तुर्त धर्म प्राप्त करी। धरी गंभीरत्ता अपार ॥
परदेशी राजा भणी। वारम्वार धन्य कार ॥ ५५
अहो ज्यूंने धर्म धारीयों। ले दृष्टान्त ये ध्यान ॥
बनो गंभीर सर्व सुखलहो। वरो पद शिव स्थान ।

न्दक निन्दामें धर्म स्थपाय । कटनी के केइ ग्रंथ बनाय ॥
ढ सुने सोही निन्दाही करे । कहा अंत कहू इसपापका अरे
अनेकों कोंअनेक भवमांय । निन्दा होय अनंत दुःखदाय।
॥निन्दा की जान खोटी रीत । धर्मात्मान करे कभी प्रीत ।

निन्दा के दुर्गुण—मनहर छंद

अति पाप कारी प्रभू निन्दा को निहारी ॥
सूत्र पाठ के मझारी । मांस भखी जोउचारी है ॥
आचार का आजीरण । ठाणांग में जिन भणे ॥
करी हुइ करणी का नाश करन हारी है ॥
असमाधी दोष मांही । अविनीत गुण गवाइ ॥
ऐसे बहुत स्थान इस निन्दा को धिकारी है ॥
निन्दा ही निन्दक करे । निन्दकही कान धरे ॥
निन्दक है निन्दा । ऐसा अमोल वीचारी है ॥
निन्दक समान नीच । नहीं कोइ जग बीच ॥
उपमा देवाय लक्ष । भंगी से नीचाइ है ॥
भंगीतोविष्टा के तांइ । गृहे कष्टा दिक सहाइ ॥
एकन्ता में जाइ तास देत सोपटाइ है ॥
निन्दक दुर्गुण विष्टा । हृदय में करे प्रतिष्टा ।
जिव्हा से गृहीने अन्य करण में न्हखाइ है ॥
आप तन मेला भरे । अन्य को मलीन करे ॥



मंजिल पन्दरवां-"परपरीवाद पापोद्धार'

पूर्वविभाग-"निन्दा"

दोहा-निन्दा निन्द्य सदा कही । संचे पातक घोर ॥
सूत्र ग्रंथ कविता विषे । निन्दा निन्दी ठोर ठोर॥

चोपाइ

देखो दशवै कालिक उत्तराध्येन । ठाणांग समवायांग वेन ।
भगवति और अनेकही ठाम । पीठमांस भखी निन्दाकानाम
मांस भक्षीसो नरक में जाय । निन्दक उपजे निगोद केमांय
नरक से निगोद में दुःख अनंत । भोगवे जेपर निन्द करंत ।
जिसकीनिन्दा करेसोदुःखपाय।निन्दक निजात्मदुर्गुणेदुभाय
जिस आगेनिन्दे साह वमलीन। योंअनेक निन्दासेदुःखलीन
परंपरा सेवडावे पाप पूर । सुमती उससे रहो सदा दूर ॥
सद्गुण तजे दुर्गुण सो गहे । गुण गुणी से दुशमणते रहे ॥

न्दक निन्दामें धर्म स्थपाय । कटनी के केइ ग्रंथ बनाय ॥
हे सुने सोही निन्दाही करे । कहा अंत कहू इसपापका अरे
अनेकों कोंअनेक भवमांय । निन्दा होय अनंत दुःखदाय।
॥निन्दा की जान खोटी रीत । धर्मात्मान करे कभी प्रीत ।

निन्दा के दुर्गुण—मनहर छंद

अति पाप कारी प्रभू निन्दा को निहारी ॥
सूत्र पाठ के मझारि । मांस भखी जोउचारी है ॥
आचार का आउतरण । ठाणांग में जिन भणे ॥
करी हुइ करणी का नाश करन हारी है ॥
असमाधी दोष मांही । अविनीत गुण गवाइ ॥
ऐसे बहुत स्थान इस निन्दा को धिक्कारी है ॥
निन्दा ही निन्दक करे । निन्दकही कान धरे ॥
निन्दक है निन्दा । ऐसा अमोल विचारी है ॥
निन्दक समान नीच । नहीं कोइ जग बीच ॥
उपमा देवाय लक्ष । भंगी से नीचाइ है ॥
भंगीतोविष्टा के तांइ । गृहे कष्टा दिक सहाइ ॥
एकन्ता में जाइ तास देत सोपटाइ है ॥
निन्दक दुर्गुण विष्टा । हृदय में करे प्रनिष्टा ।
जिव्हा से गृहीने अन्य करण में न्हखाइ है ॥
आप तन मेला भरे । अन्य को मलीन करे ॥

साथी साथ लेकर नरक निगोदे सिधाइ है ॥ ९॥
सद्गुण अनेक तजी । एकही दुर्गुण भजी ॥
राइ सा विस्तारी ताको मेरु सा बनावे है ॥
करे आपकी बडाइ । दाखे अन्य की नीचाइ ॥
जाने मुझसम गुणी । जगमें नकोइ पावे है ॥
जबझूठी पडे बात । तब मनमें मुरझात ॥
निन्दक निन्दाइ जग बहूत पस्तावे है ॥
स्थान २ झूठो पडी । आपणी विगोइ घडी ॥
निन्दकजी मर आगे दुर्गति सिधावे है ॥ १० ॥

इन्द्र विजय छंद

निन्दा करीजन निन्दालहे जग।निन्दक कोमन मेलोसदाहोइ
द्रोही बने जपी तपीसंजमीको । महागुणी कोपणन्हाखेविगोइ
आप लहे संतापसहे परितापदये सो सुखी कैसे होइ ॥
दुःखकी खान दुर्गुण का स्थान निन्दाके समान नदूसार कोइ
सूत्र कृतांग के सुतखंध दूसरे । अध्येन सात में गौतम केवे ॥
जोजपी तपी ज्ञानी गुणी संयमी । आचार्य आदिके अवगुणलेवे
निन्दा करे सो हारी करणीफल । किलविष सुरमें जादुखसेवे
आगे अनन्त संसार भमेंथों जान सुजान निन्दा तज देवे ॥

कथा—एकुनतीसवीं

निन्दा केफल बताने वाली—"वेगवती की"

दोहा—निन्दा से इस विश्वमें । पाये दुःख अपार ॥
पन इहां सीता सती तणो । कथुं पूर्व भव सार ।
निन्दाकरी निन्दा लही । सज्जन विरह वनवास
वेगवती सीता भइ । कही कथा रामरास ॥२॥

चोपाइ

भरत क्षेत्रे सर्णाकुंडल गाम । श्रीभृति विप्र सर स्वातिवास
वेगवति तस पुत्री बुद्धि वंत । मिथ्याशास्त्र पढी निपुणवर्णन
एकदा कोइ महामुनिराय । वनमें रहे कायो त्सर्ग ठाय ॥
तपोधनी महाध्यानी देख । दर्शन नरवृन्द आय विशेष ॥
तहा वेगवति क्रिडा कों जाय । देखी मुनि को रूप मनाय ॥
इर्षा लाकर मिथ्या कहे । अहो लाकों यह ढोंगी अहे ॥
व्यभिचार सेवत मेंने देखीयो । यहां ये मन बैठ [illegible] ॥
धूतारो ठग इने ठगे लोक बहु । [illegible] ॥
ऐसी निन्दा बहुतही करी । मिथ्या [illegible]
सम्यक्त्वी नहीं चले लगार । वेगवति बान्धे कर्म अपार ॥
मुनिश्वर चिन्ते मन मझार । अवर [illegible] कोइ विचार ॥
जिन सासन की हीलना होय । यह दुःख [illegible]
अभिग्रह धारा उसही वार । जहां लग [illegible]
जहां लग नहीं लोगंगे [illegible] अहार । [illegible]

सासन देवी यह बात को जान । वेगवति पर हुइ रुष्ट मान ॥
वेदन प्रक्षेपी तास शरीर । वेगवती मुरछा पडी पीर ॥ १० ॥
जल विन मीन परे जड फडे। आक्रन्द रूदन अति ही करे ॥
धर्मी कहे देखो निंदा के फल। कर्म उदय यह हुवे अटल ॥
धिक्कारे बहु लोक तस तांय। महांमुनी को और सताय ॥
तस सज्जन वेगवती उठाय । मूनि चरण ढिग मेली लाय ॥
वेगवती तब कहे नरमांय। मिथ्या में बोलीमहा राय ॥
कुड कलंक आप शिरदिया । क्षमो २ करी मुझपर मयां ॥
यों कही वारम्वार नमन करे। साशन देव तब क्षमाज धरे ॥
देखा मन में पश्चात्ताप पूरा। वेदना उसकी कीनी दूर ॥
सुखी हुइ देखी चमत्कार । सच्चा जैन धर्म जानाउसवार
साध्वी पास ले संयमभार। करी करणी ज्ञानादिक धार ॥
आलोयणा विन सा मरकरी। प्रथम स्वर्ग में देवी अवतरी
तहांसिच्चव मनुष्य लोक मझार। जनकराय घरकुमरी हुइसार
सीता सती हुइ जगत विख्यात। राम अंगना गुण गणगात
राम लछमन संग रही वनवास। रावण दगाकर लेगयातास
राम रावण मार लाये छूडाय। शोकोतस इरषों में भराय ॥
पूछे सीता से देखा रावण रूप। सीता कहेफक्तपगदेखचुप।
कुंकम पटीये पर डाल लाय। भोली सीता पास पग मंढ़ाय
शोको पुष्पादि तापर चढाय । रख दिये एक आलेकमांय

दोहा– रातको फिरतेरामजी । धोबीघरटींगआय ॥
होनहारकेजोगसे । बचनवोंकाने सुनाय ॥ २० ॥

चोपाइ

धोवणकहे झटखोलकीमाड । धोबीकहे कहांगइथीरांड ॥
क्याघरोघर रामहीदेखीये । दुशीलसीता घरमेंलिये ॥
सुनीराम मुरझाये आतेमन । अपकीर्तिकालगालांछन ॥
चिंताकरते मेहलमेंआय । चित्रपग रावणके देखाय ॥
पूछेसेंसोकोंयोंकीये । सीतानीत पूजेफिरअन्नलिये ॥
सुनीराम अतिआश्चर्यपाय । लक्षमणसे वीतकचेताय ॥
लक्ष्मणकहे स्वपनेनहींहोय । सीतामाइइच्छे नहींकोय ॥
तोपणराम नहींमानेबात । सीताकेकर्मउदय जवआत ॥
रथसारथीकों रामबोलाय । कहेसीताछोडो वनमेंजाय ॥
रामहुकमें कपटसोकरी । गर्भवंती सीतावनमेंधरी ॥
वियोगविपति सहेअनेकप्रकार।कलंकशल्यमनसाले आधार ॥
वज्रजंघ राजातहांआय । सीतारूपदेख आश्चर्यपाय ॥
पूछेबाइतुम कैसेइसस्थान । सीताडरी तसतस्कारजान ॥
अंगके भूषण देवेउतार । तवनृपकहे नहींमेंचोरजार ॥
मेंहूंअर्हंतकाधर्मकाधारक । यथाशक्तिपर दुःखवारक ॥
सीताहर्षी निजवीतकसुनाय । जानवर्ती निजघरलेजाय ॥
तहांसीता प्रसवे जुगलकुमार । लवणअंकुश नामअवतार ॥

सुखे बडे पढे हुवे होंश्यार । नारद मुनि आये उसवार ॥
दोनों कुमर से कही सब बात । क्रोध भरा कर सेनासजात
अनेक नरेन्द्र परां जय करी । अयोध्या ढिग आये हर्ष भरी ॥
सुना परचक्री राम आय । सैना सजी सोभी सन्मुख थाय ॥
मचा संग्राम जीते सीता नन्द । नारद राम से कहा सम्बन्ध ।
पिता पुत्र योग्य मिले हर्षाय । सीता जीको राम बोलाय ॥
अपवाद निवारण धीज तब करी । ऊंडीखाइ अग्निसे भरी ॥
सीताजी कूद पडे उसमांय । अग्नि फिटी तब जल निधीथाय
नर सुर सब करे जय २ कार । मिटी निन्दा हुवा यश विस्तार।
सीताजी तब दिक्षा वरी । ज्ञान ध्यान तप करणी करी ॥
अचुत स्वर्ग में इन्द्र थाय । एकही भव से मोक्ष सो पाय ॥

दोहा—बेगवति निन्दाकरी । दोनो भव पाइ दुःख ॥
कथा सार ये गृही करी । तजी निन्दा वरो सुख ॥





मंजिल पन्दरवा-"परपरीवाद पापोद्धार"

उत्तरविभाग-"गुणानुवाद"

दोहा-सर्व गुणों में प्रथम गुण। गुणानुवाद पहिचान।
गुन वन्त वनने के लिये। प्रथम उपाय यह जान॥

चोपाई

ज्ञाता सूत्र अष्टमें अध्याय। तीर्थंकर गोत्र उपार्जन उपाय॥
बीस बोल कहे श्रीभगवान। सात पहिले का गृहो ज्ञान॥ १॥
अरिहंत सिद्ध सूत्र और गुरु। स्थविर बहुसूत्री तप [illegible]॥
इन सातों का करे गुणानुवाद। सो तीर्थंकर हो [illegible]॥
यों गुनीयों के करतें गुण उच्चार। होय गुनवन्त गुनका [illegible]।
गुण इच्छक गुणानुवाद करो। निज परात्म सुख [illegible]।

गुणानुरागसेगुन—"मनहरछंद"

गुणवन्त होना जो चहाइ । गुण रागीबनो भाइ ॥
तासु गुण आकर्षाइ । तेरे पास आवेगा ॥
गुणवन्तो से गुणी मिले । गुणही गुण अटकले ॥
लेन देन गुणकाहो । दुणा बढ जावेगा ॥
बहू रत्नी वसुं धरा ॥ गुणी जन से रही भरा ॥
गुणीही गुणों को जाणे । तबही सर सावेगा ॥
जो गुणी गुणको सर साइ । गुणीहो जगमें पूजाइ
अमोल गुणानु वादी । सदा सुख पावेगा ॥ ५ ॥
धन्य सम्यक्त्व धारी । धन्य श्रावक शुद्धा चारी
धन्य साधु महावृती । धन्य अप्रमादी है ॥
धन्य ज्ञानी धन्य घ्यानी धन विनीत धन्य दानी
धन्य तपी जपी खपी । धन्य जो मर्यादी है ॥
धन्य पर उपकारी । धन्य सती ब्रह्मचारी ॥
क्षमावन्त दयावन्त । धन्य सत्य वादी है
यों सदा गुणानुवाद । करे जोहे गुणी जन ॥
अमोल गुणानुवाद । सदा सुख सादी है ॥ ६ ॥

गुणानुवादी की भावना—इन्द्र विजय छंद

आपही आपमें सोचलेरे नर तेरो तुझ क्या प्यारो लागे ॥
गुणानुवाद करे कोइ तेरातो तापर प्रेम तेरा कैसो जागे ॥
ताही को तूंतो अहो निश चहावेरुइ गुण प्रकाश करे तूं आगे ॥
तैसेही तूं करे अन्य के गुनतो अमोल महिमा होवे विन मांगे॥
जो कोइ तेरी निन्दा करे तो तेरे मन ऐसा विचार करीजे ॥
धोबी धोवे वस्त्र दामहू लेतेहै यह विन दामहू मेल हरीजे ॥
मेरे मल ले लगावत पोतेये । और बुरा ताको वहा कीजे ॥
योंअंतरमें निहाल अमोलक निन्दक ऊपर प्रेम धरीजे ॥ ८
तप जप कोटी किये कटे पातक ते पातक कटे क्षणके मांही
जो निन्दक मुखसे सुन अवगुण द्वेषकी बुद्धि जरा नहींलाइ
पाप पखालन घरबैठे गंग जान अमोल ये सन्मुख आइ ॥
मन धैर्य मुख मौन रही कर पूरा कृत अवसे ले न्हाइ ॥ ९
जो मन होवे निन्दा करनको तो कर आत्म निन्दा सदाइ ॥
जासुं आत्म पवित्र बने अरु आगे अजोग न बने कदाइ ।
पन मतकर कभी पारकी निंदा जो दोनोंमत्र है दुःख दाइ।
पाप को निंदे मत पापी कोनिंदोरे अमोल महिमा सुखदाइ
जो जाकोग्राहक सोसोइपावतगुण ग्राही गुण अवगुणी औगुण
दोनों वस्तु से विश्वभरा यह न पसंद को सुखने मन धुण ॥
तो तूं बने गुन सागर जावेरे लते जगत् में सद्गुण को तूण।
यह शिक्षा सद्गुरुकी अमोलख धारके होले सदाही निपुण

कथा—तीसवीं

गुणानुवाद के फलबताने वाली—श्रीकृष्ण वासुदेवकी

दोहा—देखो कृष्ण नरेश्वरू।गुण ग्राही गुण वंत ॥
सडी स्वानी अंगके । आप बखाणे दंत ॥ १ ॥

चोपाई

प्रथम स्वर्ग सौधर्मा मझार । शक्र सिंहासनें स परिवार ॥
बैठे शक्रेंद्र अवधी निहार । सब सुरों से यों करे उचार॥
शोरठ देशे द्वारका पुरी । कृष्ण वासूदेव नृपेश्वरी ॥
द्रढसम्यक्त्वी गुणानुरागी । नहीं अन्य दिखता ताकेलागी
क्रोडों दुर्गुण मेंगुण चुन लेय।निसार दुर्गुण सब तज देय ॥
सर्वदेवता कहे सत्य बचन।एक सुरके नहीं मानी मन ॥ ४ ॥
करण परिक्षा मृत्यु लोकआय।सडीश्वानी का रूप बनाय ॥
कृमि पडे हैं सब तन मांय।अतीही दुर्गंधरही गंधाय ॥५ ॥
रक्त पीरू वहे तांके अंग।देखतेही मन होजाय भंग ॥
द्वारानगर राजपंथ मांय । तहां पडी सो कूत्ती आय ॥ ६ ॥
दोहा—तासमें कृष्ण स्वारीसजी।वन क्रीडा कों जाय॥
मार्ग में ‘टेगडी पडी । लोक कहाडे वहूताय ॥

ताडी तरजी अती घणी । चिल्लाय ते नहीं जाय॥
सकल लोक थू थू करे । विद्रूप रही गंधाय ॥ ८॥

चोपाइ

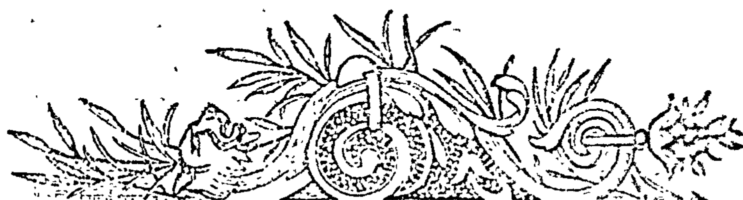
कृष्ण शब्द सुन दया तस लाय।कहे सबसे ताडो मारो नाय
लोक कहे देखने नहीं योग्य।सडी दुर्गंध अति अमन्योग ॥
कृष्ण कहे यों निंदो नाय। पुद्गलोंका यों स्वभाव पलटाय॥
कृष्ण चली तस नजीक जाय।सर्व लोक दुर रहे नाकदबाय
कृष्ण नहीं दूभायो जरामन।पास खडे तस करे अवलोकन
दाडिम कलीसम तस मुख दाँत।वरोवर जमेसोहे भली भाँत
कृष्ण कहे देखो सब लोक।क्यों तुम निंदा करो हो फोक॥
दाँत पंक्ति यस कैसा सोभाए।एसा और कहो कहां दिखाय
सुण वयण सुरआते आश्चर्यपाय।तत्क्षण श्वानी रूपविरलाय
आकाश से देव प्रगट भये।कुंडलमुकुट वस्त्र दीप रहे॥१३॥
धन्य गुणग्राही यादव सिरदार।वार २ सुर करे नमस्कार ॥
नम्रहोय विनवे इस तरे । शक्रेंद्र तुम पर संस्या करे ॥१४ ॥
परीक्षा करी कूवी रूपवनाय।गुणग्राही तुम सा और नाय॥
सम्यक्त्वा के शूद्ध लक्षणधार।सफल प्राप्त थारो अवतार ॥
मेरे योग्य कुछ आज्ञा दीजो । कुछेक चाकरी मुझसे लीजो॥
कृष्णजी कहे तज दो मिथ्यात।धारो जैन धर्म सत्य दर्शात।
सम्यक्त्वी वन देव गुरु तत्त्व मान।मेरा ये मेटणा जान।

एक वक्त यह भेरी बजाय । जहां लग इसका शब्द सुनाय
तहां लग छे मांस लग तांय । मरी मारी रोग नहीं प्रकटाय
पर उपकारी तस जान । लानी कृष्ण हर्षा मन आन ॥ १
देव प्रणमी देवलोके जाय । महिमा अबी लग रहो फेलाय
कृष्ण आगे तीर्थंकर पद पाय । जग उद्धारी मोक्ष सो जाय

दोहा—गुण ग्राहक श्रीकृष्णजी । भेरीली यश प्रसार ॥
आगे तीर्थंकर पदबरी । करेंगे खेवोपार ॥ २० ॥
ऐसे सब निन्दालजी । गुणानुवादी लोक ॥
तोइहभव परभव विषे । मिलेंगे वांछित थोक ॥
निज परआत्म सुख वरन । पर परिवाद पाप उद्धा
ऋषि अमोलकने रचा । यह पन्दरवा अधीकार ॥

परमपूज्य श्रीकहानजी ऋषिजी महाराज
केसम्प्रदायके बाल ब्रह्मचारी
मुनिश्रीअमोलकऋषिजी
महाराज रचित
अघोद्धारकथागार
ग्रंथकापरपरी
वादपापउद्धार
नामेपन्दरवा
मंजल

समाप्तम्



मंजिल शोलवां–"रतिअरति पापोद्धार"

पूर्वविभाग–"प्रवृत्ति"

दोहा–पुद्गल परिचय अनादिसे । स्वभावे वृत्तिप्रवृताय ।
अशुभ शोक शुभमें हर्ष । सोरति अरति कहाय ।

चोपाइ

सब सकर्मी जगत् के जीव । कर्म स्वभाव पलटे हैं सदीव ॥
शुभका अशुभ अशुभ शुभहोय । प्रणति तासे परिणमावे लोय
शुभ माने जिन पद्गलों ताय । तासंयोग रति सुखपाय ॥
जिन पुद्गल को अशुभ ले मान । अरति उपजे होय दुःखखान
इन दोनों में से एकसदाही रहे । संकल्प विकल्प [illegible]
यह हीज है अज्ञानता स्वभाव । आत्मा [illegible] परम [illegible]
इष्ट वियोग अनिष्ट संयोग । रोगोदय और [illegible] भोग ॥

यह चउआरति उपजाय।सुलटे रति आर्त ध्यान ध्याय ॥
क्षण में हंसेत क्षणमें रोय। इस विचित्र तासे जन्म विगो
यहां दुःख आगे गतिकुपाय। रतिअरति पाप दुःख खदाय

प्रवृत्तिस्वरुप—मनहर छंद

स्वजन स्नेही धन धान और निज देही ॥
निज करी माने येही। वियोग नचावे हैं ॥
इनके नशाने जोग। मिले जोकदा संयोग।
चोर सिंह विष आदि। दृष्टी गत थावे हैं ॥
उनके संयोग अर्थ इनका वियोग चहाय ॥
संकल्प विकल्प यों चित्त उपजावे हैं ॥
यथा स्थिती रहे जाय। किया किसी का न थाय।
योंरती अरति पाप। जीव को सतावे है ॥ ७ ॥
सब जीव सुख चहावे। रोगादि से दूर रहावे ॥
तोभी कर्म तस सतावे। उदय जब आवे है ॥
३५०००००० उठकोटीरोम तन। एक एक रोग गिन ॥
पोने दोदो रोग लगे सर्व किते थावे हैं ॥
रुधीर ऊदर वीकार। होते रोग होवे जहार ॥
शीत उष्णर दी कफ। आदि केइ आवे है ॥

सातवेदनी में राति । असाता से ले अराति ॥
योंरति अरति पाप । जीवको सतावे है ॥ ८ ॥
रति उपजाने काज । मुढमति करे अकाज ॥
स्थावर त्रस जीवोंके जो घमशाण करावे है ॥
श्रवण नयन घ्राणा । फरस रसन पोषाण ॥
वाजित्र नाटिक गंध । रसादि निपावे है ॥
तान टूटे घर फूटे । विरस दुर्गंध छूटे ॥
वस्तुका स्वभाव नाशे । क्लेश मन पावे है ॥
जगत् के स्वभाव लारे । आत्मा विभाव धारे ॥
यों रतिअरति पाप । जीवों को सातावे है ॥ ९ ॥
संपति अन्य की देख । मन में झुरे विशेष ॥
याकी कैसी ऋद्धि । ऐसी मेरे क्योंनी थावे है ॥
यह अरति मिटायवा । केइ करे हावा धावा ॥
अपने भले को दूसरे का बुरा चावे है ॥
निज कृत्य अनुसार । पावे जग सुख सार ॥
यह बुद्धि विसार रतारति चित्त लावे है ॥
यों कुकर्म को उपाइ । जावे दुर्गति मांइ ॥
योंरतिअरति पाप । जीवों को सतावे है ॥ १०
रतिपाप वश्य रत । होकर करे अनर्थ ॥
भक्ष अभक्षण सेवे वेश्या पर नार के ॥

जुवा चोरी मदिरापान । मृगया सेहरे प्रान ॥
यह सातों खोटे व्यशन । सेवे दुष्टा चार के ॥
इनों से प्रगट आय । दुःख शोग रुप लाय ॥
रोग भोग से पीडाय । बुद्धि बल हार के ॥
घातकी यह सातों पाप । जान के तज देवो साप
कहत अमोल दीर्घ दृष्टी से विचार के ॥ ११ ॥

रतिअरति से दुःख–इन्द्र विजय छंद

रतिअरतिरुप रोगलगो जहां । तहां चित्त कोविश्रान्तीनाहीं
जोदेखे सुने वस्तु मनोगम । ताहीकों गृहण करन चित्तचाही॥
जेता पुण्य तेती वस्तुपावत । अधिक मिलेनहीं तबपस्ताही
प्राप्तहीजावेतोहीदुःखपावे ।अमोलक चित्तकीहै विकलताही
छत्तीवस्तु अतृप्ती से भोगत । उससे अधिकी जोसुनपाइ ॥
मनोग्य वस्तु अमन्योग लागत । अधिक गृहण करनसोधाइ
कूड कपट झपट केर केइ । पुण्य विना सोहाथान आइ ॥
अतिलालसा सो कर्मको संचतहोय अमोलचित्तकीविकलाइ
एकसे एक अधिक सुखदायक । नाना वस्तु हैजग के मांही ॥
सबही नमिले एकही जीवको । ताते कभी संतोप नआइ ॥
चिन्ताही चिन्तामें आयु करे छिन्नवय जीरण तृष्णनजिरणाइ
रतिअरति पाप के वशमें जन्म चिन्तामणी देत गमाइ ॥

कथा—इकतीसवी

रतिअरति के फल बतानेवाली—"ब्रह्मदत्तचक्रवर्तिकी"

दोहा—रति अरति पाप वश्ये । दुःख पावे संसार ॥
ब्रह्मदत्त चक्रीपरे । दोनों भव मझार ॥ ११ ॥

चोपाइ

कम्पिल पुर ब्रह्मनामें राय । चुलणी राणी अति सुखदाय॥
चउदे स्वप्ना ले जन्मापूत । ब्रह्मदत्त नाम रखा सुख सूत ॥
ब्रह्मराय असाध्य रोगी भयै।दीर्घराय मित्र बुलाकर कहे ॥
राणी पुत्र की तुमे संभाल।ब्रह्मदत्त संभाले वहां लग पाल ॥
दीर्घ दीयो संतोषब्रह्म कियो काल।मर्णक्रिया कर करे प्रतिपाल
चुलणी दीर्घ राय वश्य भइ।व्यभिचार सेवे ब्रह्मदत्त देखलइ
दीर्घ कहे पुत्र होगा दुःखकार।चुलणी कहे में न्हाखुं मार ॥
लाख को मेहल बना परणाय।दम्पती कों उस में सोवाय ॥
आधीराते दी आग लगाय । मन्त्रीय ख्वांथी सुरंग खोदाय।
उसमें से ब्रह्मदत्त गया निकल।प्रदेश फिर पाया राज सकल॥
चक्र वर्ती हो कंपिल पूर आया।मारी दीर्घ नृप सुखनिमगनाय
संचित पुण्य से जमा सब साज।भोगवे भोग पाम्ये सुखराज

दोहा—पुरमिताल नगरविषेशेट तनुज नाम चित्त ॥

सो पहिल भव पांच का। ब्रह्मदत्त का मित्र ॥ ८ ॥
दीक्षा ले ज्ञानी भये। भाइ समजाने काम ॥
आये काम्पिल पुर बाग में। ब्रह्मदत्त वंदे ताम ॥ ९ ॥

चोपाइ

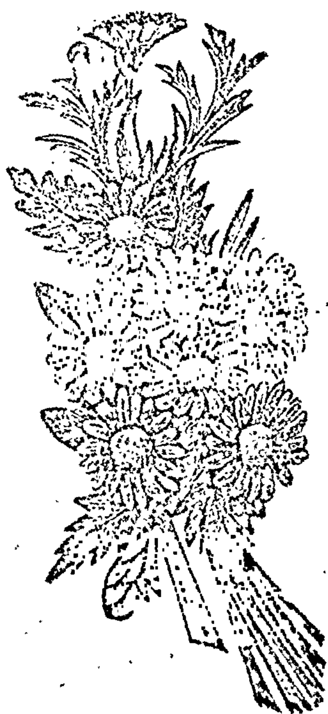
मुनिवर तस सद्बोध सुनाय। पूर्व भव का सम्बन्ध बताय ॥
दशारण देशमें दोनों थ दास। मृग[1] हुवे कालंजर पर्वत पास
दोनों हंस[3] हूवे गंगानदी तीर। काशी नगरमें मातंग[4] शरीर॥
वहां सचीवने किया अन्याय। राय मारण दिया पिताकेतांय
उसे छिपा रखा अपने घर। उस ने अपन कों पढाये नेहधर
अपने ही घरकियाउसनेअन्याय। आप ननिकालदियाउसतांय
वो हथनापुर में हूवा प्रधान। अपन करने लगे पुर में गान॥
मोहित हो लोक कीये अभडाय। आपन को पुर बाहिर कढाय
अपमानित हो मरने काज। पहाड से पडते देखे मुनिराज॥
आपन वंदे उन दिया उपदेश। आपन संयम ले पेरा मुनिवेश
फिरते आये हथिना पुर बार। प्रधान देख किया उलट विचार
पुरमें जाते थे दिये अटकाय। आपन दिया संथारा ठाय ॥
तुम कोपी तेजूलेशा प्रकट करी। मैंतुम मुख हाथदिया तबधरी
धूम्र गोटा गया पुरके मांय। डरा चक्री राणी साथ ले आय
वंदत तुम देखा श्रीदेवी रूप। यह नियाणा तुमने किया भूप
देवलोक हो यहां ऊपने आय। नियाने जोग अलग जन्म पाय ॥
तव चक्री कहे करणीके के फल। मैं तो यह भोगुं हुं विमल ॥

तुमभी आवोराजक मांय।भोगवो सुख इच्छित सदाय ॥
मुनि कहे जिस से पाये सूख।उसे पूनः वरो मिटे सव दुःख
राज भोग रति नरक लेजाय।निश्चय एक दिनसव छिटकाय
मे भी पाया था वहुतही रिद्ध।छोडके करू आत्म कार्य सिद्ध
राय कहे यहतो अब छूटे।नाय।भारी कर्मी तस जानामुनिराय
दोहा—मुनिवर कियो विहारतव।ब्रह्मदत्त भोगे लुब्धाय
अति रति जिस जागा रहे।तहां अरति प्रगटाय ॥

चोपाइ

एक ब्राह्मण ब्रह्मदत्त ढिग आया।नामी कहे याद हैमहाराय॥
वनमें मार्ग बतावन हार । दियो वचन अव पाडो पार ॥
राय कहे मांगो जोतुमे चहाय।विप्र कहे आपभोजन मुझकराय
समजायो समजो न लगार।जिमाइ खीरउपजो महाविकार
घर आ कियो मात पुत्रीसे भोग।तन फटीयो उपज्योकुष्टरोग
कुवुद्धि चक्री पर क्रोधभराय।मारनचिंतन लगा उपाय ॥
एक वन में एक भील देखीया।एक वान वड पल वहुदीया
उसे वश्यकर कही मनकीवात।गो कहे में करूं राजाकीघात
वन क्रीडा को आया राजान । भील गलोल मारी तवतान।
फोडी दोनों आँख तत्काल । चक्री कोप्या जेसा काल ॥
भट भील को लियो पकड । उस ने विप्रकी वात दीकर ॥
कुबुद्धी जानी ब्राम्हण की जात।मरा कर उसकी ओगसंतान

मसली पगतले क्रोध आतिलाय। नित प्रतें यों ब्राह्मण मराय
सचीव योजी जोग उपाय। गुंदा फल बीज दे नित लाय॥
पग तले मसले विप्र नेत्र मान। रति अरति ध्यावे आर्तध्यान।
सातसो बर्ष आयू पूर्ण करी। सातमी नरक गया सो मरी॥
एक श्वास कें भोगवे सुख। त्रेपन पल्य लिये झाजेरे दुःख॥
सात सो बर्ष सूख का परिमाण। तें तीस सागर दुःख लियेजाण।
दोहा—रति अरति के पाप वश्य। ब्रह्मदत्तपायादुःख॥
यों जाणी निवृत्ति वरो। ज्यों मिले पूर्ण सुख॥





मजिल सोलवा-"रतिअरति पापोद्धार

उत्तरविभाग-"निवृत्ति

दोहा—पुद्गल परिणति मनकी । निवार निवृत्तिधार ॥
रतिअरति चितना धेरे । तेही सुखी संसार ॥

चोपाइ

रातिअराति पाप मझार । स्वभाविक मन करे परिचार ॥
उस स्वभाव को ज्ञान सेमोड । टाले यह अनादि खोड ॥
अनंत वक्तजो हुवा समवन्ध । उस ममतामें रहा मनबन्ध ।
उससे उसमे उपजनाहोय । भव भ्रमण मिटाना चहावेसोय
योजाने पुद्गलका स्वभाव । शुभाशुभ हाविक्षण मेंविभाव ॥
ता स्वभाव मे परिणमें नहीं । सोही निवृत्ति से निवृत्तिलही
यहीसरल है सुख उपाव । येह साधनता मोक्ष का दाव ॥

तत्त्वज्ञ योगी महानुभाव । करे खप होवे विश्वके राव ॥ ५

निवृत्तिस्वरूप—मनहरछंद

रतिअराति निवार । निवृत्ति भावकों धार ॥
पुद्गल परिणति विचार । चैतन्य स्वभावरे ॥
एक रुप जोनरहे । तासुं कैसे निभेनेह ॥
देखले तूं तेरी देह । खेले कैसा दावरे ॥
मेरी तूंतो ताको करे । तेनेह न तुझसे धरे ॥
पुद्गल की बनी अंतः पुद्गल मिलावरे ॥
कभीरोगी बृद्ध थाय । पोषत्तही गिरजाय ॥
दगादार फंद मांय । अमोल मत आवरे ॥ ६ ॥
मनुष्य समान बली । और कौन त्रणस्थली ॥
छोडदे कायरता तो । सिद्ध बने उपावरे ॥
जेहर को अमृत करे । अग्निकी उष्णता हरे ॥
गज सिंह जैसे क्रूर । कामोडे स्वभावरे ॥
स्थावर जंगम तीर्यंच का स्वभाव फेरे ॥
तोक्या ज्ञानी चैतन्यका नहोवे पलटावरे ॥
अडग होसाध काम । सब पूरे तेरी हाम ॥
रतिअराति मन भाव । कदापि मलावरे ॥ ७ ॥

निवृत्तिका उपाव—इन्द्रविजय छंद

रतिअरति जेहर निवारण। मंत्र ज्ञानी गून्थों में बतावे ॥
नित्य रखे अभ्यास वैराग्यका। पुद्गल परणति कदा नहीं ध्यावे
तासे भिन्नपना लखी आपना। निज स्वभाव तामे नरमावे ॥
निज आपो भज पर आपो तज। तोही अमोल सदा नन्द पावे
रेमन ज्ञानी! होजराध्यानी। बात ले मानी अभिन्न नहोइ ॥
जोकभी जोग बनाशुभ वस्तुका। तुझको शुद्धन करसके सोइ
अशुद्ध मिले तूं अशुद्ध नहोवता जो निज भाव को न पलटोइ॥
यह द्रढ ठान न आनरतारति। तोही अमोल परमानन्द जोइ
यम[1] नियम[2]आसन[3] प्राणायाम[4]। प्रत्याहार[5]धारणा[6] ध्यान[7] समाधी[8]
यह अष्टउपाव मनप्रसन्न करने। धारले पालेसोविधी आराधी
रोक केयोग कोयोगी वनामन। बाह्य आभ्यन्तर त्याग उपाधी
वुद्धहो शुद्धहो नहो विरुद्धतूं। योंही अमोल मेट सबव्याधी ॥
जिनेश्वर चक्री हलधर नरवर। खेचर भूचर विज्ञ बहूताइ ॥
रति उपजाने केसाज मिलेसव। अरति कारक तास लखाइ ॥
तज प्रवृति निवृति वरी वर। अमोल आत्म संपतिना पाइ ॥
संत अनंत वने शिवकंत। यही बात तंत महंत बताइ ॥ ११

कथा—बत्तीसवीं

रतिअरति से निवृत्तिके फल बताने वाली—"मेघकुमार"

दोहा—रति अरति कुं पर हरी । वरी निवृत्ति सन्ध ॥
जंबू कुमार के पड़ने से । कथु संक्षेप सम्बन्ध ॥१॥

चोपाइ

राज ग्रही ऋषभदत साहुकार । प्रभूत धनी धारणी नार॥
महा गुणी उनके जंबुकुमार।सुरूपसर्व कलामेंहोंश्यार ॥२।
आठ कुमारी संग सगपनकिया।ठ्यावन दिन बाकी कुछरय
तहां पधारे सूधर्मा अणगार।विद्या चरण करण गुण धार।
पांच सो साधु के परिवार । उतरे गुणशील वाग मझार।
वंदन आये लोक अपार । साथही आये जंबु कुमार ॥४।
श्री गणधर सद्बोध सूणाय । परिषदा सूणे चित्त लगाय।
अनंत पुद्गल परावर्तन किया । अनंत दुःख जीवे भुक्तिय।
अनंत पुण्ये पायो नर अवतार । अनंत सूखका आपनहा
इस से अधिक अनंती वार । ऋद्धी सूख पाये संसार ॥६
गरज सरी नही एकलगार।जहांलग नहीं मिलीसम्यक्त्वस।
यह अवसर मिलाहै अव। तारो आतमा भवी जन सव।
जो चूके तो गये सवहार । फिर पस्ताये न सार लगार
चे तो चे तो ! चतुर सुजान।इत्यादि वोध दिया भगवान
भव्यों वहुत किये त्याग पच्चखान।जंबु कुमर वैराग्य मनआन

घर आते पुर द्वार के मांय।तोप गोळा पडा पग विच आय
चम के।चिंते अबी पातामरण।धर्म विना जाता विन शरण
पुनः आये सुधर्मा गुरू पास।श्रावक के वृत धारे ऊलास ॥
सर्वथा करे अब्रह्म पचखान।आमातपिता ढिग कहे नर मान
आज्ञा देवो लेवूं संयम भार।सुन मावित्र दुःख पाये अपार॥
कहे अबल तुम करो अवीव्याव।हमारे मनका पूरो उत्साव
जंबु कहे आठों कों दो चेताय।परण के दिक्षा लेवूंगा मैं जाय
आठों सुन कहे फिकर न लगार।हम समर्थ तो रखेंगी भरतार
ओत्सव कर परणे आठों नार। सयन घर में वैराग्य सोधार
मुनि परे बैठे ध्यान लगाय।रतारती तजी निवृत्ती ध्याय ॥
आठों अचंभीकहेकरीप्रणाम।क्यागुन्हा कियानबोलावो श्याम
लायो जैसा करो निर्वाह।धन यौवन लाभ लो उत्साह॥१४॥
जंबु कहे येही मेरा परिणाम।जन्म विषय में न करूं निकाम
आठ कथा जुदी २ नारी कही।कथा युक्त उत्तर जंबु नसही।

दोहा—चोर प्रभवा ने सुणा। जंबु नाम कुमार ॥
कोड निन्याणव डायजा। लाये घर मझार॥ १६ ॥
पाच सो चोर ले आवीयो। विद्यासे सब को सोवाय
पेटा जंबु सदन में। धनकी गांठडी बंधाय ॥१७ ॥

शक्रेन्द्र आसन चला।देखी चिंते मन ॥
कल दीक्षा जंबु लिये। लोक करेंगे चिंतन ॥
धन गये से उदास हो।साधु हुवे कुमार
यह अपवाद निवार ने। स्थंभे चोर उसवार ॥१९॥

चोपाइ

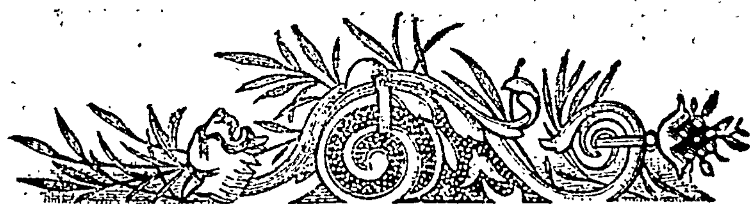
जंबु त्रिया युत जागते जोय।चिंते मुझ विद्या चाली न कोय।
पांचसे चोर स्थंभे निहार।जाने जंबु विद्या बली अपार ॥
विद्या लेने आया जंबु पास।अति नरमी यों करे अरदास ॥
निद्रित करण ताला तोडन।दोनों विद्या आप लो मुझ कन ॥
स्थंभन विद्या कृपाकर दीजीये।जंबु कहै इने क्या कीजीये ॥
में फजर लेवूंगा संयम भार।सून तस्कर अचंभा अपार ॥
कहे समजा ऐसा करना नाथ।विलसो तरुणी संपदा पाथ ॥
एक कथा प्रभवे कही। कथा युत उतर जंबू तस दही ॥
सूनी प्रभवा पाया वैराग्य।कहे में दीक्षा लेवुंगा महा भाग्य
पांचसों चोरों से कहे जावों घर।हम तो साधु होवेंगे फजर॥
पांचसो ही कहे हम भी तुमलार।हुवा सब का एकही विचार
प्राते जंबू के मात पिता आया।सब को वैरागी देख अचंभाय

कन्याके तात मात कों बुलाय।सोलही मिल सोभी आय ॥
जंबू कहे बाल बैरागी भये।वृद्ध हो लोभाइ तुम क्यों रये ॥
इत्यादि सून समजे सबजन।पांचसोसतांवीस का हुवाएकमन
सुण कोणिक आश्चर्य नन्द पाय।सब ऋद्धी से महोत्सवकराय
लिया संयम सूधर्मोजी पास ।ज्ञान ध्यान तप किया अभ्यास
जंबूजी पाया केवल ज्ञान। महा उपकार कर पाये निर्वाण ॥
और गये सब स्वर्ग मझार । लागे मोक्ष पावेंगे सार ॥
रति अरति त्यागन के फल । जान के भव्यो बनो विमल ॥

दोहा–योंजाणी सुखार्थियों । रतिअरति त्याग ॥
जंबुजी परे सुखवरो । धरो चित्त वैराग ॥ ३० ॥
निज पर आतम सुवखरन । रतिअरति पाप उद्धार
ऋषि अमोलख ने रचा । यह सोलवा अधिकार ॥

परमपूज्य श्री कहनजी ऋषिजी महाराज
केसम्प्रदाय के बाल ब्रह्मचारी मुनि श्री
अमोलख ऋषिजी महाराज रचित
अघोद्धार कथागार ग्रंथका
रतिअरति पापोद्धार नामे
सोलवा—मंजल

समाप्तम्



मंजिल सतरवां-माया मोसोपापोद्धार

पूर्वविभाग—"गुढ-असत्य"

दोहा—दूसरा नवमां पाप मिल।पाप सतरवां होय ॥
एकही अति दुःख दाइ है।तो दो की गति लो जोय

चोपाइ

माया मोसा मेटा है पाप। इस के अंदर मिथ्यात्व की छाप
कहलाते उतम स्थान मांय। यह पाप वहां रहां छिपाय॥
ऊपर से वनते भक्त राज। मन में मेले करें अकाज॥
भक्त महात्मा नाम धराय। लोक ठगन केइ भेष वनाय॥
पोथा थोथा संग्रह करे घना।लोभावे मन कामी लोभी जना
मार गपोडे शभा को हंसावे।मिथ्या लाभ वता ललचावे॥
सत्य के आगे पडदा डालीया।कलयुग में पाखंड मालीया

एक धर्म के हूवे अनेक भेद।धर्म भरम बना उपजे खेद ॥
हरामखोर बने महात्मा भक्त।दुर्गति में सजा वो भुक्तेगे शक्त
अनंत काल रूले जग मांय।इस माया मोसा केही पसाय॥

माया मोस के लक्षण—मनहर छंद.

कपट कर बोले झूट।धर्मी धर्म को दे पूठ ।
लोकार्थि बनी घनी।पोल जो चलावे है
केइ श्वेत वस्त्र धारी।केइ केशरीये भलकारी ।
भगवे काले गुलाबी आबी तन को सजावे है ॥
केइ नग्न रहे सदाइ । केइ भभूती रमाइ ॥
जटा वडा मूंड मुंडाइ । छापा तिलक लगावे है ॥
मोटे मणिये मोटी माला । शिर कर गले वाला॥
मोटा चिमटा चिलम।केइ ढोंग यों जमावे है॥१॥
दोहा छंद चोपाइ । सुना सिद्धांतो बनाइ ॥
केइ धरो घर गाइ।केइ सभामें गुंजावे है ॥
केइ धर रहे ध्यान । केइ वांचे वेद पुराण ॥
केइ स्मरण मांही।आँखों मीच गणणावे है
पूछे कहे शुद्धाचार । हमही है पालन हार ।
और सब ढोंगी जानो हमे आचार्य कहावे है ॥
ऊपर शुद्धता जनावे । अंदर पोल जो चलावे ॥

अहंताममता बिन मारे।माया मोसा जोलगावेहैयुग्म
ऐसे केइ साधु यती।रखे ओगा रू मुहपती।
केइ शुभ्र केइ मैले।वस्त्र धारी ही देखावे हैं॥
ऊंचे पाट पर विराजें। शास्त्र कथा कंथे गाजे।
केइ एकांत उत्सर्ग। केइ अपवाद ठसावे है
पोते पाले न पलावे। श्रद्धा भृष्ट जो करावे॥
चलके बगले की चाल। आल अन्य पे चढावे है॥
आप थापी महापापी।मिले मुक्ति न कदापी।
ऐसे महात्मा कहाइ। माया मोसा जो लगावेहै॥

इन्द्रविजय-छन्द.

बने भक्त राज शिरताज से साज केइ अवाज मधुर उचारे
शुभ्र पोशाक सुपाग धरे तिलक छापे लगाये विचित्रप्रकारे
गले कर माल छोटी बडी गुल बैठे उंची गादी बने गहकारे
बात २ में इश का नाम कहे इस ढोंगसे अपना मतलबसारे
माया मोसीभाइ करत ठगाइ।स्वभाव पडे अडे धर्ममें आ
महीमा बधारन ढोंग रचे केइ होवैठे सागे बगलाके साइ
मोठे जीकारे व्याख्यान सूने श्रद्धे नहीं जरा आंच लगाइ
अकृत्य करे भंडार भरे पापी। ज्ञान गुरू और धर्म लजाइ
सतमंहत को ठगे माया मोसी।वात वनाव करी नम्रताइ

अहार पानी वस्त्र औषधकी । अति आग्रह करी भावनाभाइ
द्वार लगाइ बैठे घर अन्दर।योग्य वस्तू को असुजती ठाइ ॥
गुप्त अपमान करे मुनि राजको।पापी ऐसे वज्र कर्म बंधाइ।
पूर्ण पुण्य से माया मोसी की।कदाक कीर्ती जगमेंफलाही॥
माया मोसा महा पाप सेवनसे।संचित पुण्य खुटे क्षण माही
उसही भवे जो फल लगे तो होय निंदा बहुतही शरमाइ ॥
पर भव में होवे नारी नपूंशक कटुवचन दीनता दुःखपाइ॥
भक्त बने केइ ठगे भगवान को।ढोंगी भक्ती रचे भाव देखाइ
गुणानुवाद करे छंद बंधही।नमन खमन गुणभी दरसाइ ॥
यश सूख लक्ष्मी चहाय धरे।नहीं आत्म के हित की चिंताइ
फीकी भक्ती में शक्ति कहां रहे।माया मोशी ठगे ईसके तांइ

कथा तेंतीसवी

माया मोसाका फल बताने वाली "[illegible] नाइकी"

दोहा—माया मोसी मानवी हित साधन करे पाप ॥
खाडा खोदे और को । उसजें डूबे आप ॥ १ ॥
जग जन सहुकहत हैं । दगा सगा नहीं होय ॥
इनाम पुरोहित को मिला।नाइ नाक दिया खोय॥

चौपाइ

वसंत पुर पिशुन जय राजा राणी [illegible] पुरोहित [illegible] ॥

वाक्य पटुत्व रीझे राजान । नवी २ कथा नित्य सुनेकान
फुरसत राते पुरोहित जी आय।कथा सुना रुका लेजाय ॥
प्राते भंडार से नाणो पाय। उस से सुखे निज खरचचलाय
काल्लूनावीक राजा का दास।राते पग चंपी करावे तस पास॥
रशीली कथा पुरोहित जी सुनाय।निशा उसी में बहू बीताय
पग दाबता नाइ थक जाय।क्रोध पुरोहित प.सो लाय ॥
चिंते करूं नृप विप्र विरोध।कहाडू उपाय ऐसा कोइ सोध॥
एकदा पुरोहित किस कामे गये।नृपति नाविक दोनों हीरये॥
माया मोसा नाविक तब करे । बहुत नरमी वचन प्रचरे ॥
धन्य २ श्वामी आप के ताद।आप जैसे कोइ गुणवंत नाद
अवगुनी ऊपर करो उपकार । जीव से ज्यादा रखते प्यार
पुरोहितजी है गुण के चोर।निंदा करे आपकी ठोरठोर ॥
कहे राजाजी करे मदिरा पान।उसमें मस्त अछे नहीं ज्ञान
मुख भी उनका अति गंधाय । पास मेरसेबैठा नहीं जाय
करूं क्या पडा पेट के वश्य ।कथा सुनाने लगा राय कार
गये ।विना तो चालेही नहीं । मुख बांध अब जावुंगा सही
दूर बैठ देवुंगा कथा सुना ।एसी वात में ने सुनी महाराय
नृपति कहे देखें गे काल।तो सच्च मानेंगें तेरे कहे हाल
सुनकर नाइ मन हर्षाय । अब देवूं पुरोहित को सयजाय

दोहा—पहर निशा ढलतांथका।आया पुरोहित पास।
लूली २ नमन किया।मधुरी करे अरदास ॥ १३।

चोपाइ

रात आपको जगाके आज । सो गुन्हा माफ करो महाराज
आप गुरू मेरे आप हित काज। इस वक्त आया गुत लाज॥
आज आप नहीं पधारे दरवार।आपकी वात करी सिरकार
पुरोहित आता नित्य कांदाखाय।जिससे मुख उसका गंधाय
सदा आकर बैठे मेरे पास । ब्राह्मण जाण न बोलुं तास ॥
समझे नहीं सो पढकर ज्ञान।कल करूंगा मैं तस अपमान॥
यह सुन लागा मुझे अति दुःख। तुर्तही आ कहा आपसन्मुख ।
देखो आपका कहां उपकार। देखो राजा का कैसा विचार ॥ ६
कल से दूर बैठना आप । मुख पर बंध कोइ वस्त्र साफ ॥
यह चेताया आपके हितकाज। रखे बुरा मानो महाराज ॥
तरल विप्र कहे भली चेताइ। उपकार कोइ वक्त करूंगा भाइ
कल मुख बांध आवूंगा शभामांइ । अदबसे रहूंगा अब सदाइ
[illegible]नावी आया निज घरे। कलतो मजा देखूंगा भलीपरे
[illegible]रे दिन विप्रतैसाहि किया।राजा नावी का कहा सच लिया
[illegible]रोहित रसीली कथा सुनाय। राजा क्रोधसें गये भराय ॥
[illegible]का लिख्या सण कर दिया। पुरोहित उठ तब निज घर गया
[illegible]निक भी गया उनके लार। कहे देखा क्रोध नृपका [illegible] ॥
[illegible]रोहित कहे राखी रोजी थें मुझ। आज का इनाम [illegible]
[illegible]रक्का नावीक को दिया। नावी हर्ष कर निज घर गया ॥
[illegible]रोहित सुखे सूते घर सांच । [illegible]

दोहा—प्राते नावी [illegible] । [illegible] ॥

बांची भंडारी अचंभीयो ।छुरी गुप्त कर लेय ॥
एकान्त लेइ नाइ कों । दीनो नाक उडाय ॥
मैंनही मैंनही करतही । नावीक नकटो थाय ॥

चोपाइ

नावीक पुकार राय पे करी । राय कहे क्यों थे चिट्ठी गिरी ॥
नावीकतत्र गयोमन मुरझाय । राजातब पुरोहीत कोंबुलाय
पूछे क्यों रुक्कानाइको दिया । पुरोहितकहे उपकार उसनेकिया
नृपपूछेक्या किया उपकार । विप्र कहेन हुवा आपकागुन्हेगार
मुझ मुख गंध आपका मन दुभाय ।उसने चेताया बैठादूरआय
सुणी नावीक मायामोसीनृपजाण।जानापापीकीपापसेहाण ॥
निकला दियानावीको गामबार । पुरोहीतजीका कियासत्कार
कहे पुरोहीत सुनियोसिरदार।एक दोहा मुझ उपजाइसवार॥
दोहा—दगा किसीका सगा नहीं ।करदेखारे भाइ ॥
रुक्काती भटजी कोंपाया । नाक कटाया नाइ ॥

चोपाइ

योंसुन समजे सवहीमन मांय । सुज्ञमाया मोषादियाछिटकाय
जिसने छोडात्रो सुखिया भया । सुन हुवा दृष्टान्तयह कया ॥
दोहा—किंचित माया मोपासेनावीक पाया दुःख ॥
सदा करे ताकी कागति । जानी तजो वरो सुख ॥



मंजिल सतरवां-"माया मोसा पापोद्धार

उत्तारविभाग-सरलसत्य"

दोहा—आत्म सुखार्थी प्राणीयों। माया मोसा छोड ॥
सरलता सत्य समाचारे। भांगे अनादि खोड ॥१॥

चोपाइ

अंतरंग के शूद्ध परिणाम। सत्य सदा वर्तें सब ठाम ॥
एकांत सब का हित जो चहाय। सद्बोध कथे शसांक सांय ॥
उत्सूत्र का जबर है पाप। फरमाया जिनेश्वर आप ॥
एक अक्षर उलट पलट जो करे। तो अनंत संसारमें फिरे ॥
ऐसे जूल्म से डर गुणवंत। उत्सुत्र कदापि न वदंत ॥
यथा तथ्य जो सुत्र फरमाय। निज दुर्गुण जरा नहीं छिपाय।
जो न पल सके शुद्ध आचार। तो तिसा होवे सुन्न [illegible]॥
पण नहीं दुर्गुण को सद्गुण बनाय। नहीं मन [illegible]

संरलसत्यकोलथे प्रबोध-मनहर छंद

समय के अनुसारी । शक्ति नर के मझारी ॥
बने तैसेही आचारी । आत तैसेही विचारी है॥
जिसमें वशनलगारी । उसमें नहीं गुन्हे गारी ॥
कैसे बजन उठे भारी । जोहीन शक्ति धारी है॥
खपे करण अधिक तारी । गोपे शक्ति न लगारी।
तो भी नहीं पहोंचे पारी । तहां तो दरजा लाचारीहै
मत निन्दो नर नारी । वंदो गुनी वारम्बारी ।
सो अमोल तिरे तारी । कलयुग के मझारी है ॥६
जाने निजात्म सुधारी । सोही पर को उगारी ।
बिना छिद्र की नावारी । पोते तरे पर तारी है ।
कहा साधु कहा संसारी । लिंग तो परमीत कारी ।
नहीं भेष करे पारी । करे गुन भव पारी है ॥
गुन भेष दोनो मिले । तो निश्चय व्यवहार पले ।
शीघ्र भव फेरा टले । ऐसी जिनजी उचारी है ।
वाह्याभ्यन्तर विशुद्ध । येही मत श्री बुद्ध ।
अमोल यों धार पार । पाले गति चारी है॥७॥
कितने ही संसारी । डर उभय भव धारी ।
जो निवारी माया चारी । बने सचेही व्यापारी है ।
फक्त उदर पूर नारी । करे कार्य हो वेजारी ।

रमें धर्म में संसारी । मनसा नमति हारी है ॥
करे निजात्म निन्दारी । रटे गुणी गुण धारी ॥
सोहे जग में साधु सारी।जावूं ताकी वली हारीहै
माया मोषा जो निवारी । सोतो सदाशुद्धाचारी
अमोल यह संसारी । रहे धर्म को दीपारा है ॥ ८

इन्द्र विजय छंद

माया मोसा वस्य लोभ माने कस बातको सत्यनही दरसावे
मानी यश व धारण कारण धारी माया मीटी वातवनावे ॥
लोभी फसी महा आसकी फास खरी मेंखोटी वस्तु मिलावे
ज्ञानी जानी इन गुप्त ठगारों कोआन नदे पास सावध रहावे
पडे मानमें अकड सकड कर । एव छिपा निज श्लाघा उचारे
करे राइ और पहाड वतावत । खोटेको औपदे खर देखाडे ॥
धर्मी इसे जाने दुर्गति कारण । इह भवमें भी सति विगडे ॥
नकरे मान जो माया मोसाधर । अवसर आत्मा जानउद्धारे
सत्य आचर रुसत्य विचार है ; सत्य उचार करे जो नवाडे।
अवगुण गुण यथातथ्य जानत वखाणत उचित अवसर [illegible]
डर खुशामदी नकरे किनकी । नधरे गुनकी मन में [illegible]
मध्यस्त वृति स्मृति वहे लहसो अमोल भंपन [illegible] ।
सोही मुनीज्ञानी ध्यानी जगनमें [illegible] साधु [illegible]
संत महंत पदे सोभित नर सुरगन में [illegible] ॥

शाहा बादशाह की लायकी तामेही गुरु शिष्यसोहीगुणपाइ
जहां नहीं माया मोसा अमोलक तेही पुनित सदा सुखदाइ

कथा--चौतीसवीं

सरल सत्य के फल बतानेवाली-"केशी गोतमकी"

दोहा—अनेक ग्रही साधु गुनी।माया मोसा छोड ॥
आत्म परमात्म रूप करा।हुवे जग जंतु मोड ॥ १॥
अबी चतुर्थ काल में।केशी गौतम महाराज ॥
सरल भावसत्य आदरी।कर चरचा मिला समाज॥
श्रीउत्तराध्येन सूत्र के।तेवीस अध्याय अनुसार ॥
कथाकथुं सो सुणगुणी।करो ते कली में प्रसार ॥

चोपाइ

श्री पार्श्व प्रभुजी मुक्ति गया।श्री महावीर साशनसूरू जबभया
तब पार्श्व प्रभू के संतानिये।केशी कुमार श्रमण बखानिये॥
विद्या चरण गुण के सागर।पांचसो मुनि के संग परिवर ॥
आयेथे सावथी नगरी बारा।उतरै तिंदुक बाग मझार ॥५ ॥
उसी वक्त श्री गौतम स्वाम।महावीरके शिष्य गुण धाम ॥
पांच सो शिष्य सावत्थी बारा।उतरे कोष्टक बाग मझार ॥६
दोनों केसाधु मिल आपसमांय।देख भिन्नता संकित थाय ॥
लोकों केमन में भी भ्रम भया।दोनों जैन सत्य कोनसेरया॥

एक कहेथे महा वृत चार । दूसरे पंच महावृत के धार ॥
एक के वस्त्र है बहु मोल । एक के परिमाणिक धरे तोल॥
दोनों के परूपक जिनराज।दोनोंही खपते मुक्तिके काज ॥
निर्णय इसका होय तो भला।जरूर मिटा चाह गलवला॥
गोतम मन पर्यय ज्ञान धार।जाना साधू श्रावकका विचार॥
निर्णय करन का निश्चय करी।विनय भाव दिल में आदरी।
पहिले हुवे पार्श्व जिन मोटे जान।गोतम गये केशीजी स्थान
केशी गोतमका किया सत्कार।दोनों के मिले साधु हजार ॥
और नर नारी देव भरे अपार।कौतुक धरे केइ मन मझार॥
केशी गोतम दीपे शशी रवी परे।गणी गणधर का पद धरे

दोहा–केशी श्रमण तीन ज्ञानधर।गोतम धरे ज्ञान चार ॥
केशी श्रमण पश्नोकरे।अधिक ज्ञानी तस धार ॥

१ पार्श्व प्रभु कहे महाव्रृतचार।महावीर पंच महाव्रृत उच्चार
दोनों जिनेश्वर फेर क्यों यह।गोतम स्वामी उत्तर [illegible] ॥
पहिले जिन के साधु सरल जड।समझे दुर्लभ [illegible]॥
छेले जिनके मुनिजड और वक्र। दुर्लभ समजे [illegible]
इस लिये पंच महावृत किये। कनक कामणी [illegible] ॥
बाइस जिन मुनि सरल बुद्धिवंत।थोडेमें समझे [illegible] ॥
ममत्व त्याग चोथा महाव्रृत।करी कनक नारी [illegible]
अहो गोतम जी महा बुद्धिवान।पहिले प्रश्न का [illegible]
२ दुसरा प्रश्न वस्त्र आसरी। [illegible] ॥

गोतम कहे धर्म साधनलिंग होय।मूक्तिका कारण नहींहैसोय
लिंग से लोकको परतीत आय।मोक्ष साधन सहायक भीथाय
ज्ञान दर्शन चारित्र मोक्षदेय । दूसराभी मिट गया संदेह ॥
३ अनेक वैरीयोंके गणमें रही।कैसे उन्हेतुम जीतो सही ॥
गोतम कहे एक मनवश करे। तो इंद्रि कषाय सब वैरी डरे॥
४ अहो गोतम इस लोक के मांय।बहूतलोक फासमें रहेबंधाय
तुम फासकोछेदके विचरोकैसे।गोतम कहे सुनो केशीजीऐसे
जिनाज्ञा तीक्षण शास्त्र गिरी।राग द्वेष स्नेह पासछेदकरी ॥
हलका हो में विचरूं सदा । समझे चौथे प्रश्नका मुदा ॥
५ हृदय में लता अति बढ रही।विष भक्षण सम फल तसकही
सभूल नाश तस कैसे किया।गोतम केशी को उत्तर दिया॥
भव तृष्णा वेल अनंतहे ताय।जिनाज्ञा सम शस्त्र साय ॥
तस छेदी संतुष्ट सुखी रहुं । केशी कहे वली प्रश्न कहूं ॥
६ महाप्रज्वलितज्वाला तन मांय।बुद्धि बल सब गुण जलाय।
आश्चर्य तूम कैसे दीनी बूझाय।कहे गोतम सुनो सो उपाय
तीर्थंकर महा मेघ से हुइ बर्षाद।सुत्र धाराशीतल अगाध
कषाय अग्नि वुझा शीतल भयो।प्रश्न छठा को उत्तर कयो
७ दुष्ट अश्व वायू वेगी धाय।अरूढ हो चलावो आज्ञामांय।
आश्चर्य कारी तुम करो उपाय।गोतम तब उपाय बताय॥
मन घोडा सुत्र वचन लगाम।धर्म शिक्षण पलाण सुठाम॥
कुमार्ग तज सुमार्ग चलंत । केशी श्रमण सुणके हर्षंत ॥

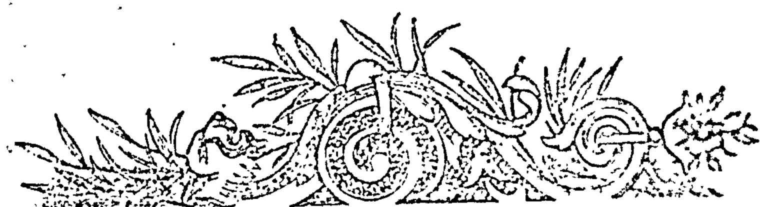
८ बहूत जीव कुमार्गे जाय । सुमार्ग तुम रहे लगाय ॥
कारण किसा? गोतम फरमाय। सो सब मार्ग मूझे जणाय
तीनसो त्रेसठ पाखंड जेह । सर्व उन्मार्ग वरते तेह ॥
जिनाख्यात सन्मार्गे चलुं। कहे केशी कहयो यह भलुं ॥
९ महा पाणीके वेगके मांय। प्राणी तनाय बहूत दुःखपाय
तास शरण को है कोइ स्थान। कहे गोतम हां है जीसुजान ॥
जरा मरण भव सिंधु विषे। जीव बहूत तनाते दिशे ॥
धर्मद्वीप सरण सुख दातार। कहे केशी सत्य आप उचार ॥
१० नांवा एक महा समुद्रमझार। तामें गोतम तुम हो स्वार
किस विध होवेंगे सागर पार। कहे गोतमसुणो केशी कुमार
आत्म नावां में जीव सवार। रोके छिद्र सब आश्रव द्वार ॥
इस विध होवूं भव सिंधु पार। हर्षी केशी और पूछे सार॥
११ महा अंधकार जगत् के मांय। बहूत जीव रहे मुरझाय॥
प्रकाश करनेवाला कोन कहो। एकादश प्रश्नका उत्तर लहो
हूयेजिनेश्वर सूर्यप्रकाश। मिथ्यात्व तिमिर का हूवा नाश ॥
हिताहित देखत लगे भव्य जीव। उलुक सम सो पाखंडीव
१२ शारीरी मानसी दुःख मझार। पडरहे पीड मर्या संसार॥
क्षेम का स्थान कोनसा कहो। बारमें प्रश्न का उत्तर लहो॥
लोकाग्र ध्रुव है सिद्ध स्थान। खेम सिव अक्षय निर्वाण ॥
प्राप्त करन दुष्कर अतिकहा। प्राप्त किया सो सदा सुखी रहा॥
यों द्वादश प्रश्नोत्तर अन्त। केशी गोतम कोनसन ..... ॥

समय पलटा उसके अनुसार । केशी समण सर्व परिवार ॥
चार महावृतके पंच महवृत किये । हजासाधु सर्व एकत्रभये
सर्व लोक अति पाये आनन्द । गुण उचारे गये घर पगवंद ।
गोतम केशीरहेवीर ढिगआय । बहूत उपकार कियाजगमांय
दोनों मोक्ष पाये भगवंत।नाम लिये ही सुख वरतंत ॥

दोहा—माया मोसा तज कर।सरल सत्यता धार ॥
गोतम और केशी गुरू । पाये सुख अपार ॥४३॥
तैसे सब शरल सत्य धर।वरतो जग मझार ॥
तो दोनों भव सुख लहो।आखीर खेवा पार ॥
निज परात्म सुख वरन । माया मोसा पाप उद्धार
ऋषि अमोलख ने रचा।यह सतरवां आधिकार।४५

परम पूज्य श्री कहानजी।ऋषिजी महाराजकी
सम्प्रदायके बाल ब्रह्मचारि मुनि श्री
अमोलख ऋषीजी महाराज रचित
अघोद्धार कथागार ग्रंथका
माया मोसा पापोद्धार नामे
सतरवां—मंजल

समाप्तम्



मंजिल अठारवां
मिथ्यादंशण शल्य पापोद्धार
पूर्वविभाग—"मिथ्यात्व"



दोहा—पाप सतरे शिर शेहरो। मिथ्या दंशण शल्य ॥
काल अनादिसे जीवकोलगा यह महा मल्य ॥१॥
वार अनंती त्यागिये।जीव सत्तरेही पाप ॥
अठारवां त्यागे विना । तरीन आतमा आप ॥ २ ॥

चोपाइ

[illegible]था सो झुटा कहे वाय।दंशाण-श्रद्धा जो मन मांय ॥
[illegible]य रया कॉटे सा खुचाय । अष्टादशवा पाप [illegible] [illegible]॥
[illegible]थ्यात्व के मूल पंच प्रकार।अभिग्रह अनभिग्रही [illegible] ॥
[illegible]भिनिवशिक संशयी अनाभोग।यह अनादि [illegible] [illegible]॥
अभिग्रही मिथ्यात्वी वोही कहाय।निजग्रही मन [illegible]
[illegible]न्य सत्य पक्षीसे मिले नाया[illegible] सर्व श्रद्धा [illegible] [illegible] ॥

२ अना अभिग्रहो निर्बुद्धि होय । सत्यासत्य नहीं समझे सो
सर्वमत को माने एकही सार । समझायो नहीं समझे गींवार
३ अभिनिवेशिक अभीमानी नर । अपनो मत मिथ्याजान कर
गर्धव पूंछ ज्यों छोंडे नहीं । उत्सूत्र की अधिक वढाय ॥
४ संशयिक सत्य पक्षी सही । परन्तु मतिकी नुन्यतालही ॥
सर्वज्ञ कथित को मिथ्य. करे । शंकासे सम्यक्त्व कों हरे ॥
५ अनाभोग अन जाने लगे । चोबीस दंडमें खाली नहीं जा
डूबे इस वश्य में पडेजीव । भोगे अनंत संसार मे रीव ॥ १

दोहा—दोभेद मिथ्यात्य के । लोकीक लोकोत्तर जान
लोकीक लगे अन्य मतमें । स्वमत लोकोत्तर मान
एकेक के भेद तीन तीन । देव गुरु और धर्म ॥
सु-कुभेद मानता विषे । वरणु ताका मर्म ॥ ११

कुदेव गुरु वरणन्—मनहर छंद

मिथ्या मति प्राणी । अज्ञान मदिरा छकाणी ॥
देव गुरु धर्म खोटे । सत्य रहे मानी है ॥
ज्ञानादिक गुन विन । देव गुरु स्थापन किन ॥
हिंसा झूठ चोरी रत । पास राखे रानी है ॥
वस्त्रभूषण सजाय । फल फूल भीचाडाय ॥
धूप दीप अंतरादिक । सोभा बहू सजानी है ॥
भोग उपभोगरत । वहा कैसी वैरग्य मत ॥

देव गुरुये असत्य । अमोल मन ठानी है ॥ १२ ॥
मट्टी कष्ट धातु पाषाण । कारी गर घड ठाण ॥
जडको चैतन्य समान । मानत अज्ञानी है ॥
सजीवन मंत्र सुनाय । सोही ताको गुरु थाय ॥
तोभीज्ञान नहीं आय । रहे बिन ज्ञानी है ॥
जोग मुद्रा ताकी सजे । जाके आगे भोगलेग
ऐसी मोहदिशा जगे । कर्म बल वानी है ॥
कौनदेव कोन गुरु । गुन बिन जान करूं ॥
भरमायो भूलो जग । कैसे समजे ज्ञानी है ॥ १३
गुनसे विचार यार । सत्या सत्य निरधार ॥
कामी है सोही प्रत्यक्ष । जाके पास नारी है ॥
शत्रुवाले शस्त्र धरे । वाजिंत्री उदासधरे ॥
माला वाले बुद्धि हीन । सहाय निरा धारी है ॥
स्नान करे सोमलीन । जीव भक्षी दया हीन ॥
गंध इच्छि अन्नपत । लोभी व्याभिचारी है ॥
रुष्टदुःख तुष्ट सुख । देवे सो राग द्वेष युक्त ॥
लक्षणी जो ऐसे देवे । कैसे वो पुजारी हैं ॥
देवी जग अम्बा बजे । भैरु बाबा जग भजे ॥
मात तात जाग के कही । बनावे भिखारी हैं ॥
बकरे भैंसे कुकडे । घात ताके आगे करें ॥
रक्तको चढाय ताको । आप मांस आहारी हैं ॥

झूला झूली कोहै ख्याल । तामें धर्म माने बाल ॥
महा अनर्थ निपाय । कैसी अक्कल गइमारी है ॥
घूमे अंग देव लाय । केइ ढोंगतहां जमाय ॥
तोभी भोपा रु पुजारे । सदा देखते भिख्या रीहै ॥
जो अन्य को सताय । सोस्वपने नसुख पाय ॥
थापी मानी दो डूबाय । यामे वैम न लगारी है ॥
जड पूतला बनाय । वस्त्र भूषणे सजाय ॥
केइ ठाठ को जमाय । फेरे ग्रामके मझारी है ॥
नाचे हींजडे की तरे । ताता थै लटके करे ॥
गान तान नाना परे । ढोल जंजीरे झणकारी है ॥
छत्र चामर धराय । गुलाल अंतर उडाय ॥
प्रभु कर के बोलाय । खुशी ताकी करण धारी है ॥
धर्म प्रभावना समजाय । देखी आश्चर्य आय ॥
ऐसे बाल ख्याल रचे । कहो कैसे पावे पारी है ॥

कुगुरु लक्षण—मनहर छंद

कहूं गुरु गत भाइ । केत्ते इस जग मांही ॥
साधु शंन्याशी कहाइ । जोगी यति भीवजाइ है
षट काय को हनाइ । मृषा भाषा जो बोलाइ ॥
चोरी करे रुकराइ । करे संघटा जो नारी है ॥
धन का संचय करे । क्रोध मान माया धरे ॥

लोभे रागे द्वेष पडे । कलह कुआल ठारी है ।
चुगली निन्दा जो करे । हर्ष शोक कपट झूठवेर
ऐसे मिथ्यामति ताको कैसे गुरु धारी है ॥ १७ ॥
हुवे जगत् केपूज । रहे जगत् से धूज ॥
पेट के अर्थी अबूज । निज सूजन लगारी है ॥
परम्परा चली आइ । तैसा भेष लेवनाइ ॥
भेद भावन समजाइ । गावे राग ललकारी है ॥
वने कोडीके लाचार । फिरे सदा द्वारो द्वार ॥
साथ छोरा छोरी नार । और भार सिर भारी है॥
तेतो कहलाते महाराज । सजे वेगारी कासाज ॥
ताहे देखे आवे लाज । एक येही रुज गारी है ॥
केइ जटा कों बढाय । केइ मूंड जो मुडाय ॥
केइ भभूती रमाय । केइ नग्नही रेवता ॥
केइ वहू रंगीबने । छ पा टीके दीये घने ॥
केइ रहत हैं वने । केइमठ घर सेवता ॥
भांग धतुरा चडावे । गांजा तमाखू फुकावे ॥
केइ विषय लीला गावे। केइ पूजे केइ सेवता ॥
वेद पुरान सुनावे । अर्थ विस्तारी समजावे ॥
एक दया घट आये विन सर्व भाव सेवता ॥
गच्छाहिप होइ घने । इके अभिमान पने ॥

जोगा जोग नहीं गिने । तने खेंचा तान में ॥
सम्प्रदाय कों बढावे । मूंडे जैसा तैसा आवे ।
सो तो क्लेशही मचावे । नहीं समजे जरा पान में
फिर दोष कों छिपावे । ऐसे स्वडे कों बढावे ।
आगे बहुत बिगड जावे।तो लजावे मत जहान में।
विना वैराग्य भावआये । नहीं मिथ्याभर्ती जावे ।
कहो कैसे मत दीपावे । कैसे आवे शुद्ध ज्ञान में॥
बिना सम दम पन । ज्ञान ध्यान रू नमन ।
अवशान रू खमन । ते तो जानीये अयोग्य है॥
हट ग्राही क्लेश कारी । लोकीक न सुधारी ।
अभिमाने मत विगारी । धारी ईर्षाइ भोग है ॥
जो आप न सूधारी । वो अन्य क्या उगारी ।
लक्ष जाको अनाचारी । भारी कर्म को रोग है॥
गुरू बने न संसारी । यह मिथ्यामत टारी ॥
रे आत्मा निहारी । हारी जाय मां सूजोग है ॥
भेख व्यवहारी वनायो । पक्ष दृढ कर थपायो ।
मत अन्नमत न शायो । ये हीं गायो है पुराण में।
जाने न्याय विसरायो । भेद हाथ नहीं आयो ।
मूल लखी न सकायो । गायो ज्ञानी जो ज्ञान में॥
सत्य मत को छिपायो । सत्य मति को हरायो ।
कली पाखंड वढायो । भुलायो अवशान में ॥

नशो कुप में घोलायो । गुरू सर्व जग पायो ।
ताते चुप भयो डायो । तो समायो खड स्थान में।
एक किरिया सत्य माने । एक किरिया झूट ठाने॥
एक विनय बखाने । एक ताने अज्ञान में ॥
एक कोरा ज्ञान कथे । एक कोरी करणी मथे ।
एक दूर रह सब ते एक नास्तिक ठान में ॥
एक एक के अनेक । मतांतर जग देख ।
लगी सत्यही पे मेख । रेख छिपी घटा भान में ॥
छायो घोर अंधकार । डूबे जग काली धार ।
कहा कथे कथनार । समजावे आत्मान में ॥ २३॥

कुधर्म वरणन-इंद्रविजय छंद.

र्म को मर्म न जानत ठानत। मिथ्यामत कुबुद्धि अनुसार ॥
जीव अजीव को भेद जाने। विन दया मूल धर्म मुख ठ[illegible]
करे घमशाण छः कायको अहोनिशी। हर्षित तांत मन अपार
ऐसो जो धर्म सो भरम रूप नर मुढही धारे [illegible] नाहीं [illegible]
१ मट्टी मरदी धर्म स्थान बनावत। देवालय मठ नानाप्रकार।
खान खोदावत सिला फोडावत। तालिंग त्रस स्थावर [illegible]
धर्म स्थान किये मोक्ष जो पावे तो चक्रवर्ति [illegible]
ऐसो जो धर्म सो भरमरूप नर। मुढही [illegible] नाहीं [illegible] ॥
२ जल में [illegible] अनंत काय [illegible] [illegible]

जल से शुद्धी जो होती कदापि तो अपवित्रकोले पवित्रबना
जलचर वैश्या तीर्थ तटी नरपापी ही मोक्ष पावेंगे क्यारे?।
ऐसो जो धर्म सो भरम रूप नरामुढही धारे रू नाहीं सोतारे
३ दशही दशा का अग्नि है शस्त्र।भक्षती जीवों पडते बहु आरे
खाद्य पदार्थ होमत ता मांही।तो राक्षसी क्या पावे त्रपतारे॥
दीप धूप यज्ञ ढोंग मचावत।करते नहीं जीवों की दयारे॥
ऐसे जो धर्म सो भरम रुपानर मूढ ही धारे रु नाहींसो तारे
४ वायु की रक्षा कही अति मुशकिल अज्ञानी अन थें सोसंहो
देव गुरू का ताप निवारन। लगा ते पंखे के झपटारे॥
ढोल नगारे रु बासरी फूंकत।करना धारे प्रभुकी प्रश्न तारे॥
ऐसो जोधर्म सो भरम रूप नरामुढही धारे रू नाहीं सोतारे॥
५हरी को जान लो हरी मानही भरीअसंख्य अनंतजीवारे
हरी रीं जावन हरी संहारत।कली कूंपली फल पत्र विदारे॥
मंडप अंगीया रचाय नराचत त्यागी केरूप को भोगीकियारे
ऐसोजो धर्म सो भरम रूपनर मुढही धारे रूनहींसो तारे।
६ आर्य खंड में फेली अनार्यता देखत दुःखे धर्मी आत्मारे।
क्षुद्रीकही हणे सरप विच्छु ज्यूं अश्वगो एलक अग्नि मंजारे।
त क्षुद्री तुझ को दुःख देवता तूं महा क्षुद्र जाजीवरे मारे॥
ऐसो जो धर्म सो भरमरुप नरामुढही धारे रुनाहींसो तारे
अग्नि शीतल शशी उष्ण बनेअरु हलाहल कभी जीवउगारे
अभव्य मोक्षरू वांझ तनुजले मृत्यु जीवत नहोवे कोइ वारे

तैसेही हिंसामें धर्म नहोवत देखो कुरान पुरान हूसारे ॥
सोचलो आपही आपके ऊपर । सुखदाता तुमे लागत क्यारे?

छपय छंद—मिथ्या मति प्रभाव, धर्म को मर्म नजाने ॥
पढते वेद पुरान कुरन कथा कथे ज्ञाने ॥
दान शील तप भाव, सर्व मत धर्म बतायो ॥
पुद्गलानन्दी होय । मत्तलबी अर्थ जमायो ॥
अर्थ अनर्थ कर पापीया । भोला जन भरमावीया
गुरू यजमान दोनो जने । अधोगति में सिधावीया
गज गाजी गोदान कन्या को दान ठेरायो ॥
रूतुदान को स्थाप शील को भंग करायो ॥
करो एकादशी तप पेट भर मालही खायो ॥
नाच खेल के मांय भाव को धर्म स्थपायो ॥
यों अनर्थ कर कू गुरू खोटे शास्त्र बनावीये ॥
गुरू यजमान दोनों जने अधोगती में सिधावीये ॥

कुंडलिया-लोकीक यह मिथ्यात्व सोवचते कितने सुजान॥
लोकोत्तर मिथ्यात्व सोवचना मुशकिल जान ॥
वचना मुशकिल जान।भेदतीन ताके वखाने ॥
देव गुरू और धर्म।गुन विन रूप को माने ॥
ताने हट मत पक्षीये।इस लोकार्थ कर ध्यान ॥
लोकोत्तर मिथ्यात्व से वचना मुशकिल जान ॥
कितनेक भोले जीवहे।करते करणी धर्म ।

इस लोक अर्थ लगाय के । उलटे बांधे कर्म ।
उलटे बांधे कर्म । कष्टनिवारणतेला ।
बुद्धि वर्धन आंबिल । कमाइ को सामायिक पहिला
महा निर्जरा के धर्म का।करे लिलाम पडे भर्म ॥
कितनेक भोले जीवडे । करते करणी धर्म ॥ ५॥

मिथ्यात्व कथन—इंद्रविजय छंद.

वीतराग कथन से ओछी अधीकी विपरीतश्रद्धा न करेनरको
ब्रह्मांड व्यापक एक आत्मा मानत कोइ कहे सरसव समहो
कोइ उपजी कहे पंच भुतसे कोइ लोक कर्ता इश्वर चोइ ॥
सत्य तत्व जाने बिन पंडित आत्म परमात्म रूप विगोइ ॥
हिंसा मय अधर्म को [१२]धर्म कहे।सत्यदया धर्म की निंदाकरत
कनक कांता धारीगुरू मानेअरू।निर्ग्रंथके ढिग जाताहीडरत
अजीवको जीवरूजीवको निर्जीवमार्गउन्मार्गउलटहीउचरत
[२०]रूपी अ[२१]रूपी के भेद न जानत।सो मिथ्यात्वी उगति फरत

सामान्य मिथ्यात्वी—अरल छंद.

जिनेंद्र गुरू उपकारी तणा अविनय करे ।
आसा[२३]तना दुःख देत सो दिल में ना डरे ।
[२४]अक्रिय आत्मा को माने, [२५]अज्ञाने रती धरे ॥
यह चउ मिथ्यात्वी जीव भवो दधी नहीं तिरे ॥

कथा—पेंतीसवी.

मिथ्यात्व के फल बतानेवाली–"जमालीकी"

दोहा—अनंत जीव मिथ्यात्व में । डूब रहे संसार ॥
करणी उत्कृष्टी करे । लेखे न लागे लगार ॥
ते स्वरूप दर्शाववा । भगवइ अंग अनुसार ॥
जमाली की कहूं कथा । सूणो स्थिरता चित्तधार ॥

क्षत्री कुंड नगर सोभाय । तहां क्षत्री राजा एक रहाय ॥
धारणी नामें गुणवंती नार । उसके जमाली नामें कुमार ॥
मेंहलो में उदार भोगवे भोग । विविध पंच इंद्रिके सन्योग ॥
सुख में जाता जाने नहीं काल । मशगुल जग में पुण्य विशाल ॥
उस अवसर श्री जिन वृद्धमान । सहश्रो गमसंग मुनिमहान ॥
महाणकुंड नगरकेवार । विराजे बहुशाल बागमझार ॥५॥
क्षत्रीकुंड जन सुनहर्षाय । बहुजन संग सिर वंदन जाय ॥
जमाली दास से जाना भेद । सजी च[illegible]दर्शन की उमेद ॥
द्वादश परिषदा गई भराय । महावीर सद्[illegible]सुनाय ॥
सुनो २ शीघ्र सुखार्थी जन । सामग्री नरतनकी मिली [illegible] ।
ज्ञान दर्शन चारित्र आदर । कर्म हरी [illegible] ॥
अपूर्व बोध सुन भव्य हर्षाय । यथा शक्ति [illegible]
जमालीजी पाये वैराग्य । [illegible]

सुख उपजे सो करो वीर फरमाय धर्म में ढील करोजारनाय
हर्षा वंदी आये निज सदन । मात तात से किया नमन ॥
कहेमें जाना अस्थिर संसार । दोआज्ञा लेंवु संयम भार ॥
मात तात कहे सुन वच्छ बात । तूं नव योवन सुन्दर गात
तुझे पाला तूं हमे देसुख । फिरलें संयम हम होवे मरण मुख
कहे कुमर यह उदारिक शरीर । अकची रोग भरा जरा तीर
विध्वंसन धर्म कोन पहिले जाय । अभी संयमलेवूं बापमाय
कहेमावित्र तुझजैसी आठनार । नवयौबना रूपगुणगणधार
नमणी खमणी संगभोगी भोग । हममरेबाद आदरजो जोग
कहेजमालीनारी तनअपवित्र ।मोक्षविघनी भोगेदुःखविचित्र
मुनिनिन्दे अनंतसंसार बढाय।मरण बिश्वासनहीं दोआज्ञया
अम्मापिता कहे पुत्रसुजान।सातपीडीको संचयो धनधान ॥
सोविलसी फिर संयमधार । इत्नी कहीतोकर अंगीकार १५
कहेकुंमर द्रव्यमें सातसीर।जमीज[१]ला[२]चोर[३]कुटुम्ब[४]राय[५]नीर ॥
अनित्य यह पुर्वे पश्चात जाय।लेवुं दीक्षा ढील कहमें नाय॥
भोग बहुते आमंत्रण कीध।जमालीं चित न चला को विध॥
तब संयम कठणाइ बताय । कोइ भी उपाये रहे घर माय॥
जाया संयम अतिदुक्कर कार । भुजासिन्धु तरे चडे गंग धार
शीत ताप सहे ले निर्दोष आहार।पीछे पस्तावा करेगाकुमार
कुमर कहे कायर अज्ञानी तांय।संयम दुःख कारक लखाय ॥
रम हितेच्छु कों सुख खान।लेवुंगा पालूंगा जीवन प्रान॥

यों निश्चय जानी कुमर तना॥तात मात मन उमंगा घना॥
तीन लक्ष दीनार भंडारे कढाय।ओगा पात्रा दोलक्ष के मंगाय॥
एक लक्ष दे नाविक तांय।मुंडन कराया शिखा रखाय ॥
अभी शेष कर वस्त्र भूषण सज।शिबका रूढ सहस्त्रनरतोकज
सेना स्वजन पुरजन परिवार। आये बाग में वंदे जिनचरणार।
रूदन करत कहे राणी राय।एक पुत्र हम जगसे भय पाय
शिष्य भिक्षा यह करो अंगीकार।प्रभु कहे करजो सुखसार
जमाली हर्ष ईशाण कूण आय।तजे वस्त्राभूषण लियेसोमांय
मुनिका वेष जब धारन किया।मात पिता हित शिक्षणदिया॥
जाया करो पराक्रम तप संयम मांय।मोक्षपावो अन्यमाकरोना(य)
करी वंदना सब निज घर जाय।जमाली के गुन गण गाय॥
पीछे जमालीजी लोचन किया। वीर प्रभुजी ने संयम दिया ॥
पांच सो पुरूष प्रियदंशणानार।जमालीसंग लिया संयमभार
विनय कर पढे इग्यारे अंग । तनमें रूचा संयम कारंग ॥
दुकर तप जप करणी करे । कर्म खपावन इच्छा धरे ॥

दोहा—भव्यो! आगे सांभलो।प्रबल कर्मकी गत ॥
कैसे वैराग्य से नीकले।अब क्या होवे मत ॥

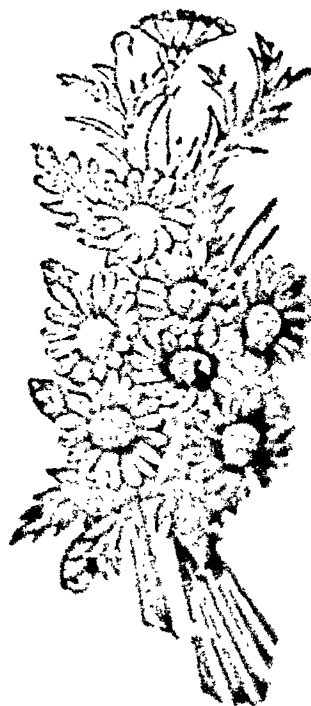
चौपाई

एकदा श्री वीर को वंदना करीपूछे जमाली [illegible] ॥
पांचसोनाथ संग मुझ मैं विहार।[illegible]

उत्तर नहीं दिया पुछा दो तीन वार। तब स्व इच्छा से किया विहार
फिरते सावत्थी नगरी आय। कोष्ठक उद्यान में रहे सूख मांय।
अचिंत अंग दहाज्वर प्रकटाय। शिष्य के पास बिछाना कराय।
पूछे असहाय वेदन से घबराय। किया बिछाना के करो हो भाय
हाल नहीं किया करे है श्याम। यों सुनते उनके फिरे परिणाम॥
वीर "कडे, माणे कडे" कहाय। यह मिथ्या हुवे कार्य किये थाय॥
"केड माणे कडे चले माणे चले"। यह वीर बचन झुटे अटकले
मिथ्यात्व तब उपार्जन किया। हाथ आया रतन गमा दिया॥
सर्व साधु को बोला दे उपदेश। यह वीरकी जाणो मिथ्यारेश॥
नहीं श्रद्धी जो संत बुद्धिवंत। छोड जमाली मिले जा भगवंत॥
कितनके साधु रहे जमालीलार। आये फिरते चंपा नगरमझार
वहां विराजे थे वीर भगवंत। जमाली प्रभू को नहीं मानंत॥
अभीमान धरी बचन यों केय। केवली होकर आयों मेंय॥
गौतम प्रश्नोत्तर पुछंत। लोक जीव शाश्वत के अशाश्वत॥
सुन जमाली चुपकर रहे। तब जमाली से प्रभुजी कहे॥
इस का उत्तर देवे समछ्दमस्तमुनी। केवलीसे क्या छिपा है गुनी॥
द्रव्यास्तिकनय शाश्वता लोक। पर्यायास्तिकनय अशाश्वत थोक॥
ऐसे ही जीव शाश्वता सदा रहे। अशाश्वत गति रूप पलटे है॥
जमाली नहीं श्रधे यह वचन। द्वेष ईर्षा अति व्यापामन॥
धर आहंकार विन वंदे जाय। आप डुबे बहू जीवों डुबाय॥
बहुत वर्ष ऐसे विचरेसोय। अर्धमास अणसण अंत होय॥

लांतक कल्प तेरे सागर स्थिती। किल्बिषी देव हुवा नीचगती
तहां सें आगे चार पांच भव लही। तिर्यंच मनुष्य देवता भइ।
संसार पर्यटन यों पापसे करी। फिर मोक्ष गती पावेगा खरी॥

दोहा—ऋद्धि तज संयम लियो। करणी दुक्कर कीन॥
एक जिन वचन उत्थापते। मिथ्यात्वी भयेहीन॥
तो जो उत्सूत्र भाखके। कुपक्ष बांध करे तान॥
करनी करे सिद्धी तरन। कैसे पाय निरवान॥८२॥
ऐसे डर भव्यातमा। करो जिन वयण प्रमाण॥
खेंचा तानी छोडकर। पालो जिनवर आन॥८३॥





मंजिल अठारवां
"मिथ्यादर्शण—शल्य पापोद्धार"

उत्तर विभाग—"सम्यक्त्व"

दोहा—सम्यक्त्व सर्व का मूल गुन। प्रथम चाहीये एय।
वृत करणी लेखलगे। सम्यक्त्वी शिव लेय॥ १॥

चोपाइ

संख्य असंख्य अनंत प्राकार। सम्यक्त्व केशास्त्र मझार॥
संख्यात-सातपांचर्तीनदोय। असंख्यात-संसारी सम्यक्त्वीहोय
सिद्धआश्रिय अनंतही कहे। सातका अर्थ आगे सुन लहे॥
मिथ्यत्व सम्यक्त्व प्रथम जान। नैगम नय रहे अंशगुनमान।
वेप मिथ्यात्व प्रकृति उपशमाय। कृतव्य सम्यक्त्वी के कराय,
सम्यक्त्वपडवाइकेसास्वादान। जहांलगनहीं।पहों। मिथ्यास्थान
मिश्रसो मनमें गडवड होय। दोनों कर्तव्य एकसम जोय॥

यह तीन सम्यक्त्व है नाम मात। जिस से पूर्ण मानी नहीं जात
सात प्रकृति सम्यक्त्व आवरण। अन्तानुबंधी चौकी गनकरण
क्रोध मान माया लोभ एह। अनंत काल स्थिती से जो रेह ॥
मिथ्यात्व मोहनी मिथ्या समान। मिश्र मोह मिश्र समजान ॥
सम्यक्त्व मोह जो भ्रमित जीव। यह सात क्षय विन पावे रीव ॥
जो यह सात प्रकृति उपसमाय। उपसम सम्यक्त्व तेह कहाय
क्ष तीन दो एक और उपसम। क्षयोपसम सम्यक्त्व रम॥८॥
सात क्षय करे क्षायिक सो जान। विचते वेदक सम्यक्त्व मान ॥
प्रकृति मोड निज स्वभाव अनुसरे। सोही सम्यक्त्व जिन उच्चरे
पांच माने सो मिथ्या। मिश्र तजे क्षयोपशम उपशम क्षायिक तीन भंग
दो सम्यक्त्व सो निश्चय व्यवहार। निश्चय आत्मिक गुन विचार

दोहा—सतसठ लक्षण व्यवहार में। सम्यक्त्व के वखाण।
इनका वारे भेद में। करुं प्रथक् बयान ॥ ११ ॥

१ श्रद्धान चार—मनहर छंद.

परम अरथ जान। स्याद्वाद् कोंपह ज्ञान।
सत्य पक्षी गुनी जनकी। संगत सदा करे ॥
आत्म कल्याण कार। परम अर्थ सार ॥
हित शिक्षा सांग धार। आत्मा नाम [illegible] ॥
सम्यक्त्व वमन हार। मिथ्या पक्षी जो [illegible] ॥
संग ताको खोटो जान। [illegible] ॥

श्रद्धान यह रखे चार । सोही सम्यक्त्व धार ।
अमोल सम्यक्त्व । रत्नउत्तम ही आचरे ॥ १२ ॥

२ लिंग तीन-इंद्रविजय छंद.

जों क्षुधातुर[1] इच्छित भोजन मिले ताहे उत्सुकता से अहारे
ज्यों कामातुर[2] नवयुवति मिले प्रेमोत्सुक भोगे कर प्यारे ॥
ज्योंबुद्धिवंत[3] विद्या इच्छक पण्डित से ज्ञान ग्रहे सत्कारे ॥
त्यों सम्यक्त्वी इच्छे जिनवाणी श्रवण जोग बने अवधारे ।

३ विनयदश-अनुष्टुप छंद

अर्हंत[1] सिद्ध[2] आचार्य[3] उपध्या[4] ।स्थविर[5] तपश्वी[6] सा
गण संघक्रियावंत दशोंका । विनय सम्यक्त्वआराधु

४ शुद्धतातीन-अरल छंद

देव अर्हंत गुरु निर्ग्रंथ, धर्म दया मही ॥
मन[1]से अच्छा जाने, बच[2]ने कीर्ती कही ॥
काया[3] से करे नमन, अन्य इच्छे नहीं ॥
तीनशुद्धता अमोल सम्यक्त्वी राखे सही ॥ १५

५ दूषण पांच -छपय छंद

गहन केवली वचन नसमझे शंका नहीं लावे ॥

देखी अन्यमत ढोंग स्वमत से मन नहिडगावे ॥
निश्चय करणी फल होय अशुभ तज शुभचढावे ॥
हिंसक करणी की महिमा नइच्छे न चरचावे ॥
पाखन्डीका परिचय करेनहीं।पांच दोपनजगुणआचार
अमोल ऋषिसो सम्यक्त्वी । निश्चयभव सागर तरं

६ लक्षण पांच –कुंडलिया छंद

समे जाण सब प्राण कों । करे पतला द्वेपराग ॥
वैराग्य भाव हृदय धरे । शक्ते आरंभें कों त्यागे ॥
शक्तिअरंभ कों त्याग । दुःखो की अनुकम्पांलावे
जन धर्मे धरे अनुराग । आसतों रवे दृढ रहावे ॥
यह लक्षण पांच सम्यक्त्वके धरे सदा महा भाग ॥
समजाने सब प्राण को कर पतला द्वेप राग ॥१०

७ भूषण पांच–उपजाति छंद.

कुशल सदाई धर्म काम मांइ
तीर्थ चारों की सेवा नित्य सजाइ ॥
तीर्थ गुन जाने अस्थिर स्थिर करना ॥
जिनमत दीपावे भुषण पांच धरना ॥ ११ ॥

८ प्रभावना आठ–शार्दूल विक्रीडित.

जोजाणे सर्व शास्त्र निपुण मति, धर्म कथे आडम्बरें
त्रिकाल के ज्ञाता होवे धर्म अपवादें सहू दुरे करे॥
विद्या पारग तप दुक्करकरे, वृत प्रगट आचरे ॥
रचि कविता धर्म दीपावइ। प्रभावक वसू ए खरे ॥

९ यत्ना छः—वसंतिलका.

स्वधर्मी सम्यक्त्वी मिले आपस मांहीं ॥
एक वार बहुवार हर्षी तसे बोलाही
दे इच्छित वस्तु निजकी सन्मान कराही ॥
गुणानुवाद नमन करे छःयत्ना कहाही ॥ २० ॥

१० आगारछः—भुजंगी छंद

करे जबरी राजा जो पंचो दबावे ॥
बली वश्य पडे तास देवों उपजावे ॥
पडे अटवी में तात माता सताइ ॥
आगर छः सम्यक्त्व वट्टा लगाइ ॥ २१ ॥

११ स्थानकछे—हरीगीतछंद

धर्म रूपी वृक्षका सम्यक्त्व मूल हीजाणीयें।
धर्मकू नगरकोट सम्यक्त्व पेटीधर्मकी मानीये।
धर्मकोट वासका नींम सम्यक्त्व हाटहै धर्म मालकी
धर्म भोजन भाजन समकित स्थान षटयेभालकी॥

१२ भावनाछः—शिखरिणी

अस्ति है आत्मा की। नित्य अमर आत्म हैसदा
आत्मा। कर्म की कर्ता। भुक्ता यह नछूटे कदा ॥

मोक्ष आत्मही पावे । ज्ञान चरण आदरे जदा ॥
यह हैं छेही स्थानक । सम्यक्त्वी श्रद्धे मुदा ॥ २२
दोहा—व्यवहार सम्यक्त्वके । सतसठ बोल येहोय ॥
जोइनको आराधेगा । सम्यक्त्वी है सोय ॥ २३

सम्यक्त्व—मनहर छंद

नही वेष जग तारे । नहीं कुपक्ष उगारे ॥
नहीं मत करे पारे । जेबने मत वाले हैं ॥
मतवालता निवारी । मत वालता विदारी ॥
मत माति की सुधारी । मत ताही जग चाले है ॥
पाले रुडो व्यवहार । शुद्ध आत्मा आचार ॥
ऊंडो जाही को विचार । नहीं तुच्छकार हाल है ।
तेही सम्यक्त्व दाता । जगजीवन के भ्राता ॥
सेव चरण हित आता । साता पावत सगले है ॥
जो सम्यक्त्व रंगीले । नही गाले नहीं ढीले ॥
रहेधर्म मेंजो लीले । पीले मोह अरुमिथ्यात्वकों ॥
वने पाखन्ड के कीले । जैन उन्नती में खीले ॥
रहे सर्वही से मिले । तजे हट पक्षपात को ॥
करे सबही के हीले । करुणा रंग में झीले ॥
नही राचे माला टीले । राचे पांचों तत्वे ज्ञानकों ॥

शांत दांत क्षांत शीले । मोह मद माया छीले ॥
ज्ञान ध्यानके रसीले । धन्य अमोल ताकी मातकों

कथा-छत्तीसवी

सम्यक्त्वके फलबतानेवाली-"विजयरायकी"

दोहा-सम्यक्त्व धर्म आराध कर। तरे अनंते जीव ॥
विजयरायजी की कथा । ग्रन्थ सें भणु अतीव ॥

चोपाइ

दक्षिण भरत विजय पुर मझार ।विजयराज सम्यक्त्व केधार
त्रिखंड पति तीन राणी सुन्दर । तीन पुत्र ऋद्धिज्यों पुरंदर
एकदा सुधर्मा पति शक्रेन्द्र । विदेहमें वंदे सीमंधर जिनेन्द्र
पूछे अवी कोइ भरत क्षेत्रमांय । दृढ धर्मी श्रवक रहाय ॥ ३
प्रभु प्रकाशे विजयपुर पति । विजय राय निर्मळ समकिती ॥
देवदानव नहीं सके चलाय । सुनि सुधर्मीपति हर्षाय ॥ ४
निज शभामें किया व्याख्यान । एक मिथ्यात्वी देवान मान
आया भरत में श्रावक बना । जैन पंडित नाम पूजे घना ॥५
फिरता २ विजय पुर आय । राजा की पौषधशाळे उतराय।
धर्म चरचा कर हुये राय प्रसन्न । सत्य मानेसब उसके वचन
एकदा धर्म चरचा के मांय । निगोदादि सुक्ष्म भाव जनाय

श्रीजिन बचन मिथ्या दर्शाय । पण विजयराय नहीं मुरझाय
प्रश्नोत्तर देकिया निराकरण । तब देव कहे राय श्रद्धा हरण
सर्वज्ञ आज्ञा पालन हार । अबी कोइ नहीं जगत् मझार ॥
राय कहे ज्ञानी गुनी महासंत । भगवंत आज्ञा शुद्ध पालंत
पण्डितकहेमेने साधुओं मांय । करी परीक्षा बहुत दिन रहाय
सब ढोंगी कपटी दृष्टी आय । तब संघ मेने दिया छिटकाय
झूठ क दा में नबोलूं लगार । तुमको बतावुंगा कोइवार॥ १०

दोहा—साधु सम्प्रदाय वैक्रय करी । उतरे बाग मझार ॥
रायश्रावक वंदन गये । देखे गुन श्रेयकार ॥ ११

चोपाइ

राते श्रावक कहे चलोजी राज । साधु कपट देखावुं मेंआज
आधी निशी बगीचे में आय। गुप्तवेष श्रावक संगराय ॥१२।
एक मुनि करे मांसका अहार।एकमुनि देखमादिरा पीनार ॥
एक हुवे वैश्यासंग गुलतान ।एक सरोवरसें मच्छी रहे तान ॥
यों सब का देखा व्यभि चार । राय मुनि से कहे ललकार ॥
अहो साधु क्या अनर्थ करो।साधू कहेरे ऊभो रहे परो ॥
श्राप दे देवूंगा राज गमाय।राय कहे यों डरुं में नाय ॥
मुनि कहे हम क्षत्री साधु भये।हम मांस विन नहीं जीवे रहे।
पेट भरण रखें रुढाव्यवहार।अंदर सबका येही आचार ॥
जग के सब साधु ऐसेही जान।किस भरम में भूला[illegible]

सुनराजा मनमें खिन्न होय।हित शिक्षा यहां नहीं चलेकाय
और मुनिश्वर सब गुणवंत।येही टोल। पापीपाप सेवंत ॥
चुप चाप फिर निज घरआय।रस्ते में मुनिकेइ खोटेपाय।
आचार्य निकले अंतेउर मांय।राजा आश्चर्य अतिही लाय॥
श्रावक कहे देखा राजान । जैन मुनि कैसे हैं गुनवान ॥
रायकहे सब खोटे नहीं ।कर्म गाति से विगडे यह सही ॥
सूर्य से कदापि न होयअंधकार।तैसे जिन वचनसदाश्रेयकार
पंडित कहे तुम दृष्टी राग पूर।दूर्गुण गुणकर मानो भूर ॥
सुणी बचन तस मिथ्यात्वजिान।बोलणो बंध कियोराजान।
श्रावक तब कर गये विहार।नृप नहीं पुछो शुद्ध लगार ॥

दोहा—देव चिन्ते पर परिक्षासे । चला नहीं यह राय ॥
अब वीतांवु घर पर । तवही इच्छित थाय ॥ २० ॥

चोपाइ

राय प्रधान मुख्य सामंत तांय । देव कहे स्वपने में आय ॥
सर्प उपसर्ग पुर में होनार । जैसा पहिले हुवा न कोइ वार ॥
इसलिये नाग देवालय जाय । राजा प्रजा पुजो वंदो हितलाय
प्राते सब बैठे समामें आय । तब निर्मिनिक एक आय चेताय
राजा प्रजा पूजो नाग देव । होता उपसर्ग मिटे ततुंखेव ॥
स्वप्न निर्मितक कीमिली एकबात । [illegible]के मनमें निश्चय आत
मंत्री सामंत सर्व पुर लोक। पूजे नाग देव दीनो धोक ॥

फक्त एक नहीं गये विजयारय। तब देव अतिकोपित थाय
सहश्रोंगमे नागरुप बनाय।प्रचन्ड काले क्रोधे धम धमाय॥
राजघरे अंते उरादिस्थाम।फेले डरे राणी रक्षक तमाम॥
डरे रोवे सब इत उत धाय।सरप भी उनके पीछेही जाय॥
प्रधानादि नृप से अर्जि करे।देव कोप आगे:नरका क्या चले
इसलिये आप पूजोनागदेव।लोकीक शरम निजहित धरहेव
वहां एक नरके अंगमें देवआय।कोपातुरहो कहे सुनराय॥
सर्व मुझमाने तुं अवज्ञा करे। मेरी शक्तीसे जरानहीं डरे॥
एक क्षण में सब कुटुम्ब साथ।तुझेयम सदनपहोंचावुं नरनाथ
यों कही देव अंतर ध्यानथाय।ते तले तहां समाचार आय
तीनों राणी तीनों कुमर तांय।अहीकाटा पडे मूरछा खाय
तब गारूडी एक चलआय।सामंत सत्कार करेनमें पाय॥
दया धर गारुडी नृप से कहा।यह महा जहरी फणी प्राणलहे
मंत्र शक्ति से मैं करुं आराम।सब राखो मन में विश्वास॥
कन्या के अंग नाग देव वोलाय।कहेगारुडी जहरहरोनागराय
कोपि देव कहे सून गारुडी वात।सब मुझे पूजे सीस नमात
सुखकाष्ट समनहीं नमेराय। अवज्ञा करहुं छोडुंगा नाय॥
जोनमें तोसत दुःखअवि हरूं। औरउपाय सातानहीं करूं
गारूडीकेहे यहतो सहजवात।नमोना जोहीनाग देवाय।
राजाजी बातधरे नहींकान गारुडीकेहे तुम जैनीनादान॥
मेभीकुछ जानुंजैन काज्ञान अपवादेन तेनहीं दोष प्रमान।

छेछींडी में भी यह आगार। नमो राजेश्वर समय विचार॥
राय कहे कायरों कों आगार।पाप में साद्वाद नहीं लगार र
धन परिवार पाया अनंत वार।धर्म मिलना बहुत दुकर कार॥
प्राणांते न नमुं निजस्वार्थ काज।कु देवगुरु और खोटासमाज
आखीर तूं पस्तावेगा राय।यों कही गारूडी कोपे उठजाय॥
कोंडोंगसे भुजंग उत्पन्नभये।रायपरिवार को लपटी गये॥
एक महा भुजंग अतिविकराल।नृप अंग लपटा जैसा काल॥
दंश किया सर्व अंग करूर।नरक सी वेदना हुइ भरपूर॥
हाहा कारमचा मेहल के मांय।तब सूना राणापुत्र मृत्युपपाय
विजयराय सुमेरूसे धीर। जाने होनहार सोहोवे आखीर॥
सामंत गारुडी बुलाकर लाय।सो कहे क्या करुं नहीं मानेराय
समज २ नृप मत हो धीठ। क्यों गमावे मिली योग्यतानीट
राय कहे ऐसी बात मत कर।जाने तो दे मुझ प्रश्नउत्तर॥
जो किसको ऐसा दंश थाय।कितने दिन सो जीता रहाय॥
कहे गारुडी उत्कृष्ट छः मास।वेदना वधे, सब पायेत्रास॥
राय कहे युगांतर ये दुःख रेय।तोभी धर्म न छंडू मेय॥८२॥
अनंत दुःख भोगे अनंती वार।यह दुःख सब दुःख कापनहार
ध्यानस्त दृढ हो परमेष्टि ध्याय।महा मुनिपर खिन्न न थाय॥
देव देख मन अति अचंबमाय।ततृक्षण सब हीदुःख विरलाय।
पंचद्रव्य की वृष्टी वहां करी। देवप्रगटा अति दिव्य सिरी॥
मुकट धरा नृप चरण के माय। वारंवार अपराध खमाय॥

श्रावक मूनि गारूडी सर्प रूप।मैंने किये तुझे सताये भूप ॥
इंद्र किये तुमारे गुण ग्राम।जिस से अधिक दृढ तुमपरिणाम
धन्य धन्य धन्य अहो नरपत्य।धर्म नर तन पाया तुम सत्य॥
मेरे योग्य फरमावो चाकरी । उरण होवुं सो सेवा करी ॥
कहे नृप धर्म कल्पबृक्ष पाय।बंबूल पास को जाचे जाय ॥
मेरी मानो तोकरो मिथ्यात्व त्याग।जैनीबनोतरोजगमहाभाग्य
देव भी तुर्त सम्यक्त्वी भया।वंदी नृप कुं स्वर्ग में गया॥९८॥
सर्व जन अति आश्चर्य पाय।कीर्ती विश्व में गइ फैलाय ॥
वक्ते दृढ रहे सोही पुजाय।जान बहुत से दृढता लाय ॥

दोहा–विजय नृप उपसर्ग टले । दे जेष्ठपुत्र को राज ॥
सकुटुम्ब धर्म स्थान के । सुधारे आत्माकाज ॥

चौपाइ

एकदा एकले विजय राजान।प्रतिक्रमण कर धरा ध्यान ॥
निश्चय सम्यक्त्व धेय सो ध्याय।अपूर्व उपयोग बढताजाय ॥
निश्चय देव निजात्म सही । शक्ति रूप सब गुण के मही ॥
मणी पाषण भेद प्रगटाय।प्रकट करूं त्योंही आत्म[illegible] ॥
निश्चय गुरू है निजआतमा ।अनाचार तज शुद्ध [illegible] ॥
शुद्धाचार रमुं जग गुरू बनुं ।करी परिश्रम [illegible]
निश्चय धर्म एकात्मही धर्म। मोहादिक कर्म [illegible] ॥
निज रूप रम पर परिणाति तजुं।यह जिन पंथ [illegible] ॥
त्रितत्वे निश्चलात्म होय । सर्व भ्रमणा [illegible] ॥
पृथक्त्व एकत्व विचार । [illegible] ॥

केवल ज्ञान भानु प्रकट भयो।साधु वेष देव आगल ठयो
पहरा वेष देव करे जयकार।जानी सब स्वजन हर्षे अपार
नर सूर की परिषद भराय।जिनजीतबे सद्बोध सुनाय ॥
तीन नारी तीन पूत जय भ्रात।तजी माया सब साधु था
भुमंडमें फिरी कियो उपकार।केवली गये मोक्षमझार ॥
और भी पाये स्वर्ग विमान।आगे पावेंगे सबा निर्वाण ॥
अर्थ दीपिका ग्रंथानू सार । उत्तरार्ध कही कथासार ॥
सम्यक्त्व यह उत्तम फल।आराधी सुखी वनो अमल ॥

दोहा—शुद्ध सम्यक्त्व कों आदरी किया विजयरायकल्या
त्यों सब सम्यक्त्व आदरी।वरो सुख सव जान ॥
निज पर आत्म सूख वरन।निथ्यादंशण उद्धार ।
ऋषी अमोलक ने रचा।ये अष्टदशवा अधिकार॥६१

परम पुज्य श्री कहानजी ऋषीजी महाराज के
सम्प्रदाय के वालब्रह्मचारी मुनि श्री
अमोलख ऋषीजी महाराज रचित
अघोधार कथागार ग्रंथका
मिथ्यादंशण शल्योद्धार नामें
अष्ट दशवां मंजल

समाप्तम्



शिखर उपसंहार—"सर्व पापोद्धार"

पूर्व विभाग-"पाप"

दोहा—एकेक पाप सेवन करी। पाये दुःख अपार ॥
जोअठारह सेवन करे। उनके क्या हवाल ॥ १ ॥

चोपाइ

१ एकाइ राठोड जीवोंदुभाय। मृगा लोढाहोकर दुःखपाय।
आगे भी भमे वहूत संसार। दुःख विपाक सूत्रे अधिकार १
२ वसुराय ममत्व गृही करी। पाप थापा असत्य उच्चरी ॥
अकाले मर नरके जाय। शलाका गूंथ में कथाये पाय ॥ २ ॥
३ अभग्गसेन चोर सत्तावंत। चोरीसे दुःख पाया अत्यन्त ॥
कुटुम्ब साथ मर नरके गया। वीपाक सूत्रमें [illegible] कथा॥
४ काम कुमरकुशील प्रभाव। लाज सुखगमा किया [illegible]

दोनों भव सो दुःख पावीया । कथा सुणी जैसी गावीया ॥
५ सागर शेठ महा परिग्रह धार । तृष्णा से डूबा समुद्र मझार
मरके नरक में पची याजाय । गौतम कुलके कथा कथाय ॥
६ क्रोध कुबचन बंधुमति कहे । बाल विवाहो बहूदुःखसहे ॥
दोनों भवमें विपि पाय । गौतम पृच्छा से कथा कहाय ॥
७ सभुमचक्री मानमें चढ़ा । सप्तमखंड साधन समुद्रे पड़ा ।
नरक गया भमेगा जगमांय । शलाका चरित्रे येकथाय ॥
८ पातलसुंदरी माया करी । अत्यन्त दुःख भोगी नरक पडी
अर्थदीपीका अंतरगत कथा । माया के फल बताये यथा ॥
९ लोभवसकोणिकभाइसेलडा । चक्रहोवनइच्छासेबलमरा
भाग्यविन मनकीचलेही नहीं । निर्यावलीसूत्र रग्रंथे सेकही
१० रागवश्यपुष्पनन्दी कुमार । चारसेनिन्याणवेराणीसंहार
दोनोंभव पाया दुःख अपार । विपाक सूत्रमें यह अधिकार
११ द्वेषसे दुर्योधन कोटवाल।बहूते दुःख पायाविकराल ।
भव भ्रमणमें दुःखीया भया । विपाक सूत्रसे कथनये कया॥
१२ क्लेशसे चारों मित्र खेत मांय । बांधेकृषी दीइज्जत गमाय॥
जिनदास चरित्र अंतरगन कथा । फूटहोवे दुःख दायी यथा
१३ सती पर कुआल भवभूत दिया । अपयशी होदुर्गति गया
कहानियों की पुस्तक में कथा । मतानुसार कहीये यथा ॥
१४ चक्रदेव मित्र चुगली करी । मान गमाया दुःख सेमरी ।
भवो भव दुःख अतिही लिया । रत्नप्रकरणे दृष्टान्त दिया ॥

१५ संत की निन्दाकरी वेगवति । सीताजीहोदुःख सहेअति
सीता चरित्रमें यहअधिकार । परपरीवाद पापदुःख कार ॥
१६ भोगरति दुःख अरतिधर । ब्रह्मदत्तचक्री गयेनरक मर ॥
उत्तराध्ययन सूत्र अधिकार ।पापकी गती विचित्र प्रकार ॥
१७ मनमेला मिष्ट बचन उचारी।कालुनाइ नाकइज्जतहरी॥
जगमें प्रचलित यहहै कथा । मायामोसा काफल है यथा ॥
महावैरागी जमाली अनगारानिन्हव बने गये किल्विषमझार
मिथ्यादर्शण से दुःख पावीया ।भगवती सुत्र में यह गावीया
यों अठारे ही पाप ऊपरी । एकेक कथा की रचना करी ॥
अनंत जीव दुःख भोगे संसार।ऐसेही सब जानो पाप चार ॥

दोहा–पाप फल को देखने।सोचो यह दृष्टांत ॥
सहज कमावे कर्म कों।पावे दुःख प्राणांत ॥ २१ ॥
पाप प्रभावे प्राणीया । दूर्गति मांहे जाय ॥
नरक तीर्यंच नर देवता । रहे दूःख बहु पाय ॥२२॥

नरक का वरणन्–चोपाइ

अधो लोक में नरक स्थान सात।महाअंधकार भयनरककहात
रत्नप्रभामें कालेरत्न झलकार।शरकरप्रभा जैसीअर्गाकीधार॥
वालुप्रभा में उष्णभोमी ज्यों दव।पांकप्रभामें रक्तमांसकादव।
धुमप्रभाधूम्रतीक्षण भरा । तम प्रभामें भरा अंधेरा ॥ २४ ॥
तम तमा प्रभामें घोर अंधकार।ये सात नरक नाम गुणविचार

यांनाना विध कर्म कर जिन ।तैसे हीं यम तहा दूःख चखावे
तीसरी नरक के नीचे यम नहीं ।तहां आपस में लडत सदा
जैसे कोइ नन्ना कुत्ता आयेसा।अन्य कुत्ते पडे उसपर जाइ
पंज्ज दाँतों से तन तस फाडत । मारके आति त्रास उपजाइ ।
त्यों तहां नरक में एकेक नरी येकों।आपस में मार ताड सता
पिपालिका सम कीडे बनाते।वज्र मुख तास अति तीक्षण ताइ
आपस में एकेक के तन में उन कों भरी आरपरा भेदाइ ॥
चालणी से छिद्र पडे सबतन मेंक्रोडों विच्छु दंश सा सोदुखा
पाप प्रभाव पापी नरक में ।अनंतानन्त दुःख भोगे सदाइ ।

तीर्यंच के दुःख का वरणन–मनहरछंद.

तेंतीस सागर तांइ । सातमी नरक मांइ ।
उत्कृष्ट दुःख भाइ । पापी जीव पावे है ॥
आँख के टमकारे मांही । समय असंख्य थाइ ॥
तेंतीस साग के तो।समय केते थावे हैं ॥
एक एक समयपर तेंतीस सागर दुःख ।
सागर तेंतीस के सम यों का दुःख किती भावे है
तासेही अधिक दुःख निगोद एक भव मांही ।
तीर्थंच के दुःख का तो पार कहा आवे है ॥
सूइ अग्र भाग जित्ती साधारण वनस्पति
यथा दृष्टांत तामे जीव वास पावे है ॥
श्रेणि यों असंख्य श्रेणी [illegible] में प्र[illegible] ।
प्रतर २ गोले असंख[illegible] है[illegible]

एकएक गोले मांही । असंख्य शरीर राही ॥
प्रेतेक शरीरे जीव । अनंत भरावे है ॥
एक श्वाश मांहे साडी सतरे जन्म मरण ॥
तिर्यंच के दुःख कातो । पार कहा आवे है ॥३९॥
पृथवी पाणी रुअग्नि । वायु अरु वनस्पति ॥
एकेके शरीर जीव । असंख्य रहावे है ॥
छेदन भेदन अरु । खांडन पीसन मांहीं ॥
प्रतिकुल द्रव्य काजो । संयोग मिलावे है ॥
अहो निशी जगत् में । स्थान वर संहार होत ॥
ताको दुःख कौन कहो । गिनतीमें लावे हैं ॥
असंख्य काल तांइ । पापी पचे ताके मांही ॥
स्थावर केदुःख । एसे ज्ञानी दर्शावे हैं ॥ ४० ॥
स्थावर सजीव निर्जीव का आश्रय लइ ॥
कीडों कीडी षटमल । जूंवा दिक रहावे हैं ॥
ताको संहारत तेतो । मरत है वांच मांही ॥
केइक अज्ञानी जान । मारत मरावे हैं ॥
हलन चलन लेत देत । केइ मरे जीव ॥
प्रवाहीक वस्तु मांही। पड दुःख पावे हैं ॥
शीत उष्ण धुम्रजल । आगी आदिसे मरन कर ।
विकेंद्रीमे दुःख एसे । पापीजीव पावे हैं ॥ ४१ ॥
थलचर गज गाजी गाइ । बैल भैंस आदिमांई ॥

परवश्व पडे बध धन्धन में बंधावे हैं ॥
वक्कसिर पेट पूर मिलनहींआहार पाणी ॥
तुच्छ थोडा मिले जब खाय के सो रहावे हैं ॥
पहाड खाड झाड बीच काँटे भाटे मांहे खीच ॥
अतिभार भरकर । ताकोही फिरावे है ॥
तीव्रमार मार । कितने कोस नविचारे ॥
पापीजीव पशुहोके । ऐसे दुःख पावे है ॥ ॥ ६
हिरन सुसले आदि केइ । वनचर जीव ॥
बृक्ष गिरी कन्दरा के आश्रय से रहावे हैं ॥
मिलेवन माहें उतना खान पान कर रहे ॥
शीत ताप बृषाऋतु । तीनही सतावे हैं ॥
आपसमें मार खाय । शीकारी भी मारजाय ॥
अग्नि पाणी वायु अदि । विघन केइ आवे हैं ।
रोग सोग मांय तस शरणन कोई थाय ॥
पापके प्रभावे पशुहो कर दुःख पावे हैं ॥ ४२
जल वासी प्राणी तड फड मेरे जल खुटे ॥
धीवरादि गृही मारेपचावे रखावे हैं ॥
पक्षीको जाल तीर गोली से गिरावे मारे ॥
अन्डे बच्चे पीछे भूखे प्पासे मरजावे हैं ॥
पीजरे में बान्धे खान पान कीन सार पुरी ॥
साप उंदर घंस आदि इन भीसतावे हैं ॥

तिर्यंच गति के मांही । ऐसे दुःख केइ भाइ ॥
पापीजीव उपज के । पाप फल पावे हैं ॥ ४४ ॥

मनुष्य गति के दुःख का वरण —मनहर छंद

पाप के उदय मनुष्य गतिमें जो आते जीव ॥ ।
समुर्छिम होत एक स्थान असंख्याते हैं ॥
अंतर मुहुर्त आयु मर मर उपजे तांही ।
संघटा होतेहीं असंख्यात मर जाते हैं ॥
गर्भज मनुष्य मांहीं उपजे पापी जीव आइ ॥
नव लक्ष मांहि एक दोय जीते राहते हैं ॥
केइ घडी दिन मांस अंतर चवत जीव ।
केइ दुःख भोग आडे आय के कटाते हैं ॥ ४५ ॥
जन्मत अंधे बेरे लंगडे लूले अंगहीन ।
कुष्ठ आदि राज रोग केइ उपजते हैं ॥
येही दुःख पीछे सें उदय होत केइपोंके ।
जन्मते तात मात केइ के मरतहे ॥
केइ दरिद्रता के जोग पचत हैं दिन रात ॥
भूख प्यास शीत ताप सहन करता हैं ॥
गुलामी हमाली महा कष्ट के व्यापारी बन ॥
हाय तोया कर ताका आयु गुजरत हैं ॥ ४६ ॥
केइ परिवार [illegible] केइ दुःखी धन बिन ॥

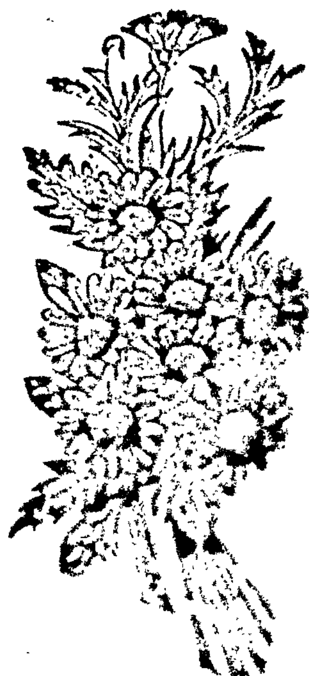
केइ तन बल दीनअहो निशी झुरत हैं ॥
लेने का देने का अरु रहने का सहने का दुःख ॥
इज्जत रखन केइ करे हिफाजत हैं ॥
केइ म्लेछ देश मांही उत्पन्न हुवे जाइ ॥
पशुसा आचार जाका नगन फिरत हैं ॥
पाप कर पाये दुःख पापही कमावे मुख्य ॥
आगेही दुःखी सो होय पाप फल भरत हैं ॥

देवगति के दुःखका वरणन-मनहर छंद

अकाम कष्ठ के जोग पापी पाय देव गत ॥
वांही सदा दुःख सोगे काल गुजरत हैं ॥
अभी योगी देव होय सदा तस कामें चोंय ॥
भोगन भोगी सकत मनमें झुरत हैं ॥
देव होय पशुबने नोकरी में सदा घने ॥
नाट किये नाचतरु गंधर्व गावत हैं ॥
किल बिषी हीन जात । रुप सुख हीन पात ॥
देव हुवेतोभी ऐसे । पाप को भरत है ॥ ४८ ॥
अन्याय करत देव । दूजे धरे तत्खेत्र ॥
वज्र प्रहार इन्द्र तहे को लगा वता ॥
षटमास तांइ तसतन अग्नि सा दझाइ ॥
रोवत अरडाइ तव महा दुःख पावता ॥

सामान्य ऋद्धि के धीरी ज्यादे बुद्धिवंत निहारी ॥
करणी नकरी ऐसे मन पस्ता वता ॥
ऐसे देव गति मांही । दुःख है अनेक भाइ ॥
पापी पाप उदय करी जन्म कों गमा वता ॥

दोहा—पाप रभावे जीवडा । यों चारों गति मांय ॥
दुःख से जन्म गमात हैं । शिव सुख कदी नपाय
भगवइ अंगे जिन कहे। रूपी अठा रहपाप॥
चउस्पर्शी पुद्गलयह । लगते जीवके आप ॥ ५१॥
प्रकृति स्थिती अनुभाग युत । प्रदेश बंध पडंत ॥
अवाधा काल वीते पछे । जीवजी फल भोगत ॥
कडुवे फल हैं पापके । प्रत्यक्ष यह देखाय ॥
ज्ञाने जान प्रत्याख्यानले । तेही जीव सुखपाय ॥





शीखर–उपसंहार–"सर्व पापोद्धार"

उत्तर विभाग 'धर्म

दोहा–एकेक धर्म अराध के पाये सुख अपार ॥
जो आठरह आचेरे तो निश्चय तरे संसार ॥

चोपाइ

१ परेवा पाला मेघरथ राय । दया धरी अर्पि निज काय ॥
वो हुवे उत्तम छः पद्वी धार । शांति चारित्र में ये अधिकार॥
२ सुनन्द व्यक्ष सातों सेवतो । एक सत्यवृत द्दढ लेवतो ॥
धर्मीत्मा वना नृप प्रधान । धर्म कथा कोषे में वयान ॥
३ खोटाशाह दारिद्री हीरया । चोरी तजी चोखाशाह भया
धर्मे धन पाया सुख सार । धर्म कथा कोष अधिकार ॥४॥
४ सुदर्शन शेठशील खन्डानाहीं । शूली फिटी सिंहासन थाइ

यशः फेलाया तरे संसार। योगशास्त्र ग्रन्थ में अधिकार ॥
५ लक्ष्मी पति रहे सुखी सदा। किंचित दुःखे तजी संपदा॥
तवही पाये केवल ज्ञान। दिगम्बर गृंथ में यहवयान ॥ ६ ॥
६ खंधकमुनिकी उतारी चमाडी। महा परिसहेक्षमा आचरी
तेरे क्रोडभवका वैर चुकाय।मोक्ष गये कहा धर्मकथामांय ॥
७ महा विनयवंत नन्दी षेण। देवभी नहीं चला सका तेण
वसुदेव हो सुख पाविये। हरीवंश चरित्र में गाविये ॥८॥
८ विमल सुख पाये शरल ताकर।देव अरी हरा के ऋद्धिवर
समल कपट से गया आपमर।धर्मकथा कोषमें उचर ॥ ९ ॥
९ सोमचंद गरीब संतोषधरा।तो घर वैठही धन आपडा ॥
धर्म आराधी सुख पावीया।धर्म कथा मुजवदर्शाविया॥१०॥
१० वैराग्य धर पृथवीचंद राज। ग्रही वेशे केवल पायाज ॥
तरण तारण हुवे सो संसार। रत्नप्रकरण में आधिकार ॥
११ समता धारी दमदंत मुनिराय।दुर्गुणी पररहे समलाय
तो भव व्याधी दीनी गमाय।पांडव चरित्र में यहकथाय॥
१२ धन दत्त शेठ रहेसम्प कर।लक्ष्मीयक्ष हुवे चाकर ॥
यशःसुख पाये सो यथा।जिनदास चरित्रे अंतर कथा ॥
१३ मौन वृत धरा सर्वांग सुंदरी।कलंकगमया केवलश्रीवरी
सर्व जन पाये हर्षअपार।जैनकथा रत्नकोषे अधिकार॥१४
१४ धरी गंभीरता प्रदेशीराय।महा पापथोडे में दियाखपाय
धर्मारम एका अवतारी होय।राय प्रसेणी सुत्र में लोजोय॥

१५ गुणानुवाद किया कृष्ण नरेश दुर्गंधी श्वानी को प्रशंश।
तीर्थंकर गोत्र उपजिया । जैन कथा रत्न कोष दर्शावीया॥
१६ निव्रत्ति भाव धरे जंबुकुमार।आप तरे बहुतोंको तार॥
चरम केवली इस कालमें भये।जंबूपइना में यों कथे ॥
११ शरल सत्य केशी गौतम धरी।धर्म चरचा से एक श्रद्धकरी
जगत् में धर्मज फेलादीया । उत्तराद्धेन सूत्रे फरमावीया ॥
१८ दृढ सम्यक्त्वी विजयराजान।ग्रहस्थ श्रमें लिया केवलज्ञा
सम्यक्त्व धर्म अतीफेलावीया।जैनकथा रत्न कोष गाइया ॥
यों अठारेही धर्म ऊपरी । एकेक कथाकी रचना करी ॥ २०॥
अनंतजीव सुख पाये संसार।एसा ही जानो धर्म उपकार ॥

दोहा—धर्म फलकों दाखने।सोचे यह दृष्टान्त ॥
मूशकिल से निपजेखरो ।पण सुख देत अनन्त ॥
पाप तजो धर्म आचरो । शुद्ध आचार विचार ॥
करो तारो निज आत्मा । जन्म पाया को सार ॥
धर्मी धर्म प्रशाद से । सदा रहे सुख मांय ॥
आगेभी सद्गति वरे । छेवट मोक्ष सो पाय ॥ २३

नरक में सुख का वरणन—चोपाइ छंद.

धर्मी जन नहीं नरक में जाय । निश्चय मनुष्य देव गति पाय
परन्तु पहिले आयु बंध किया। ताजोगे कभी नरक में गया॥
वो पूर्व पाप के संच प्रभाव । क्षेत्र वेदना सहे समभाव ॥
जिससे दुःख थोडासा लगे । कर्म क्षय करने उमंग जगे ॥

कर्म उदय जान समता धरे । अन्य को पीडा नहीं सो करे ।
अन्य उसे पीडा नउपजाय । यम देव भीतस छिटकाय ॥
स्वल्य काल पूरा कृत भोग । सम से थोडे में होय निरोग ॥
आगे उंचगति सो पाय । धर्म करणी के फल प्रगटाय ॥ २ ॥

तिर्यंच के सुखका वरणन्—छपय छन्द

धर्मी जीव मर कर तिर्यंच गति में नहीं जावे ॥
पूर्व आयु बन्ध जोग अरु वृत भंग प्रभावे ॥
कदापि होय तिर्यंच सो जुगल पनाही पावे ॥
देव जैसे सुख भोग तीन पल्य तहां रहावे ॥
फिर मर होवे देवता । आगे सुधर गति सही ॥
धर्म सदा सूख कार । जावे तहां साथ रही ॥२८॥
कर्म भुमी में होय तो।पशु उंच पद धारे ॥
अश्व रू गज रतन । देव सेवा तस सारे ॥
मिले इच्छित खान पान सयनादि सुख कारे ॥
काम विशेष ना पडे काल यों सुखे गुजारे ॥
कुगति में सुगति समां. धर्म सुख दाता होवे नहीं ॥
धार सुखेच्छू धर्म, जावे तहां साथही रहीं ॥ २९ ॥

मनुष्य गति के सुख का वरणन्—मनहर छंद.

उत्तराध्यायन तीजामही । किया जिन फरमाइ ॥

दशबोल जोग तहां धर्मी जीव आवे है ॥
बाग रु सदन बहुत, धन धान पूर्ण होत ॥
गोआश्वादि पशु दास बोलएक कहावे है ॥
मित्र न्याति गोती घने, ऊंच गोत्र रुपवंत ॥
निरोगी बदन महा प्रज्ञा बुद्धि पावे है ॥
अभीजात यशवंत बलिष्ट यह बोल दश ॥
होय तहां धर्मी जीव आकर सुखी रहावे है ॥३०॥
तीर्थंकर पद पाय । इन्द्रा दिकों से पूजाय ॥
जुगली यों की इच्छा सदा कल्प वृक्ष पुरावे हैं ॥
चक्रवर्ती बने बलदेव वासुदेवपने ॥
मंडलिक सामान्यराज सेना पति थावे है ॥
शेठ गथापति रुपटेल आदि ऊंच पद ॥
पाकर सुख संपति सदैव विलसावे है ॥
आचार्य उपाध्याय । मुनि श्रावक समदृष्टी ॥
ज्ञान ध्यान तप कर । मुक्ति सो सिधावे है॥३१॥

देवगति का वरणन्-चोपाइ छंद

देवताकेहैं चारप्रकार । भवनपति व्यंन्तर जोतीषी धार ॥
विमानिक रहतेहैं उर्द्धलोक । स्वर्ग छव्वीसका है थोक ॥
सुधर्मा इशान सनंतकुमार।महेंद्र ब्रह्म लांतक शुक्रसहसार ॥
आनं पान अरण अरु अचुत।यहकल्प बारह मर्यादि सुत ॥

भद्रे[1] सुभद्र[2] सुजात[3] सुमानस[4] । सुदंशण[5] पियदंसण[6] वास ॥
आमोए[7] पडिभद्र[8] जसोधर[9] । यह नव ग्रीवेकउच्चर ॥ ३४ ॥
विजय[10] विजयंत[11] जयंतवर[12]।अपराजित[13] सर्वार्थसिद्ध[14] अनुत्तर ॥
यहच्छउदह कल्पातीतजान ।अहमेंद्र स्वेच्छारहे सुखमान ॥
अधोलोकमें भवनपतीरहे । मध्यमें व्यं .र जोतिषीकहे ॥
परमाधामी भवनपतीमांय । त्रिझमक व्यन्तरमे समाय ॥
लोकांतीक छट्टस्वर्गपास । किलाविषी एकदो छट्टेवास ॥
ऐसेदेवके रहनेका स्थान । उपजतजीव करनीपरमान ॥
भवनवासी आयुएकसागर । व्यन्तरका आयुष्यपल्यभर ॥
पल्यझाझेरा जोतिषीकाजान । विमानिकका आगेवयान ॥
दोसागर पहिले दूसरे देवलोक।सातसागर तीसरे चोथेरोक ॥
पांचमेंदश चउदेहैंछह । सातमेंसतरेवर एकएकअधिकलेह ॥
सर्वार्थसिद्धमें सागरतेतीसा।येउत्कृष्टआयु जघन्यवरणीश ॥
दशसहश्रवर्ष पहिलेदोस्थान।जोतषीमें पल्पआठ भागमान॥
दोस्वर्गमें एकपल्यजान।आगेनीचे उत्कृष्टसो जघन्यवखान॥
जो अधिक करणी धर्म की करे।सो उंचा जायअधिक सुखवरे॥

देवताके सुख का वरणन–मनहर छंद.

धर्मी पावे देवगत । कल्पोंपन्नमें उपजत ।
देव देवी जाने नच । आय के वधावे हैं ॥
अभिशेष कराय, वस्त्र भूषण सजाय ॥

तहां नाटीक निपाय । सहश्रों बर्ष ही वीतावेहैं ॥
सामानिक आत्मरक्ष । त्रयांत्रीस परिषद् ।
सात सेना अग्रम हर्षी।आदि ऋद्धि बहु आवे है॥
रत्नो के विमान । रूप करत इच्छा फरमान ॥
ऐसे देवता के सुख धर्मीजन पावे है ॥ ४२ ॥
जितने सागर आय उतने सहश्र बर्ष मांय ॥
होत भूख की इच्छाय ।तृर्तीही तब आवेहैं ॥
सागर जे ते पक्षजान।लेतें श्वासोस्वास मान ।
होत भोग में गुलतान।सहश्रों बर्षही बीतावे हैं ॥
कल्पातीत मांय फक्त साधुजी मरके जाय ।
ताके भोग इच्छा नाय।ज्ञान ध्यान मग्न रहावे हैं॥
यह तो कहा कूछ सार।सुख देव के अपार ॥
निजकरणी अनूसार । तहां धर्मी जन पावे हैं ॥

मोक्षके सुख का वरणन्.—अरल छन्द

आराधक उत्कृष्ट धर्म पाप तजतहै ॥
वोसब कर्म खपाय मुक्ति पद भजत है ॥
मुक्ति के सुख अनंत अनोपम जिन कहे ॥
पुनरावर्ति नाकरे जोसिद्ध स्थाने रहै ॥ ४४ ॥
अक्षय अव्याधाव चल[illegible] शिव स्थान है ॥

वर्ण गंध रस स्पर्श वेद नहीं वान है ॥
जन्म जरा राग सोग मरण सब दुःख दहीं ॥
अनंत ज्ञान दर्शन परणामिक पण रहीं ॥ ४५ ॥
दोहा—धर्म प्रशाद से जीवयों चारों गति के मांय ॥
सुख अनुभव लेतहै । आगे सो मोक्ष पाय ॥ ४६॥
भगवइ अंग जिन कहे । पाप अठारह त्याग ॥
अरूपी आत्मिक गुण है । प्रगटे तेसुभाग ॥ ४७ ॥
मिष्ट फल यों धर्म के । प्रत्यक्षही देखाय ॥
ज्ञाने जान हितेसे ग्रहे । सोही सदा सुख पाय ॥

अंतिमसार-इन्द्रविजय छंद

इत्यादि वोधसुनी महावी को । भव्य हृदय अमृत सेभरायो ॥
त्यागय मिथ्यात्व अवल जिने । सम्यक्त्व रत्न प्रिते द्रढसायो ॥
देशसे त्याग हुवे केइश्रावक । सर्व तजे सो मुनिपद पायो ॥
श्रवन पठन मनन कोसारये । धार अमोल जन्म सुधरायो ॥
केइक भारी कर्मी पाषाणसे । जिन वोधसे नहीं हृदयभेदायो
पुद्गला नन्दमें राच रहे जेह । ताको आत्मानन्द नाहींसुहायो
निश्चय भव्यतव्य तासो होवइ । तहां कहा चाले संत उपायो
दवीर गइ परिषदा तब । सदा रहो यह आनन्द छायो ॥



विज्ञाप्ति—हरगीत छंद.

अघोद्धार कथा आगार यह ग्रन्थ रचनाजोकरी
कितनी सूत्रानुसार ग्रन्थाधार सूनि गुनि उचरी
आशय पाप उद्धार आत्म सूधार की मन मेंधरी
यह लक्ष धर पाठक श्रोता गुण ग्रहो दुर्गुणपरी
प्रत्यक्ष पाप प्रभाव से वृतमान में दुःख वढ रया।
अनेक रोग दुष्काल दुःखसेभारत खंड पीडित भ
कुसम्प और कदाग्रह कर सत्य प्रेम मन से गया
अनूभवे यह सत्य समजो जो सद्बोध इस में कथा
प्रत्यक्ष धर्म प्रभाव से वृतमान में सूखी देखिये॥
दया सत्य शीलवंत के घर कूटुंब संपती पखिये॥
सन्मान ले राज पंच में चित्त निर्मल हर्ष विशे
अनुभव लखी अंतस में यों धर्म के फल लेखीये
अहो भव्य गणो! सुख इच्छको! विशेष कहो क्याकिजी
दुःख सुखके पंथ यह बताये।इच्छा होवे सो लीजीये ॥
दुर्गुण तजो सद्गुण भजो यह विनंति चित्त दजीये ॥
अमोल जामीन आपका धर्मात्मा सुखी रीजीये ॥
चोवीस में जिन महावीर को चोवीस सो वर्ष होगया
अडतीसवी दीपवाली को यह ग्रंथ सव पूरा भया ॥

थान चारकमान हैद्राबाद, (दक्षिण.)देश में ॥
ला सुखदेव शाहय दीहै जगह रहे यहां सदा एस में॥
महावीर के पाटानुपाट आचार्य पद्वी पाविया ॥
य कहानजी ऋषिकी सम्प्रदाय जग में धर्म दीपावीया।
ात्मा खूबाऋषिके शिष्य केवल ऋषिजी गुनि ॥
में रहे अघोद्धार कथागार रचा अमोलक मुनि ॥६ ॥
राज ज्ञान विरुद्ध अशुद्ध लेख जो इस में किया ॥
मिथ्या दुष्कृत ऊचरी शुद्ध करुं निजपर जिया ॥
ा श्रोता के आनन्द मंगल जय विजय धर्म की रहो ॥
ात्मिक सुख सम्पति वर कर सर्व परमानंद लहो ॥७ ॥

र पुज्य श्री कहानजी ऋषीजी महाराज के सम्प्रदायक
ाहात्मा श्री खूबा ऋषीजी महाराज के शिष्यवर्य
आर्यमुनिश्री चेना ऋषीजी महाराजके शिष्यबाल
ब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलक ऋषि जी रचित

अघोद्धार
कथागार
नामक
ग्रंथ

समाप्तम



अघोद्धार कथागार ग्रंथका–शुद्धिपत्र.

☞ पाठक गणों ! अव्वल निम्न लिखे मुझव शुद्धकर फिर यत्नासे पढियेजी.

पृष्ठ.	ओली.	अशुद्ध.	शुद्ध
१	७	व्रद्ध	वृद्ध
२	१६	ननरकेकंआं	नरक के अं
३	२१	मुख ।	सुखम
४	८	स्समृद्धी	स्मृद्धि
५	१	अल्य	अल्प
,,	२	है	तहां
,,	१६	बहुतगा	वहूतगांव
,,	१९	वहु	बड
६	२०	म ाल	तमाल
,,	६	ढोर ढोर	ठोर ठोर
,,	८	टेंक	ढेंक
,,	९	चलि	चील
,,	,,	पपय	पपैया
,,	१०	हादे	होद
,,	,,	झरणा	झरणी
,,	१५	सपर्थवीशाल	पृथवी शिला
८	१	विघारात	विघारति
,,	२	सधन	साधन
९	२	वोपये	बोध पाये
,,	४	दशवकोझो	दे सर्व कोशा
,,	१६	वयु	वपु
१२	१४	शद्द	शब्द
१३	१८	इभ	इंभ
,,	१९	भाग	जग
१४	२	केइक	केइक
,,	२	नुन	न्युना
,,	१२	पारिग्रहजापितां	परिग्रहजापित
१६	१२	क्षद्र	[illegible]
१८	१८	अंाडगा	आइंओं
,,	१९	नप्ता	नप्ता
२२	१८	फना	[illegible]
२३	१४	निगमें	[illegible]
२४	१	[illegible]	[illegible]
२५	३	[illegible]	[illegible]
,,	८	वदन	वंदन
,,	,,	स्थंभ	स्थंभन
२९	१०	रे	०
२९	११	का॥	करे
३१		प्रणा	प्रणाति
३२	११	अपक्षतं	अपेक्षंत
३५	१०	जमडी	चमडी
३७	३	स्रष्ट	भृष्ठ
३९	१९	जिन	जित
४१	२०	डिके	फंडि
४७	२०	मगा	मृगा
४८	६	गौतमजी	गोतमजी
५१	१७	जीनसाया	जान लिया
,,	नोट	भागव	भोगवं
५६	१०	पथ	पथ्यं
,,	१३	पत्ना	यत्ना से
६२	७	छाडे	छोडो
६३	७	छ.डा	छोडो
६४	२१	काल	कालमें
६५	१४	अमनम	[illegible]
	१५	आमन्न	[illegible]
,,	[illegible]	[illegible]	[illegible]
७०	४	[illegible]	[illegible]
[illegible]	१३	[illegible]	[illegible]
७६	७	[illegible]	[illegible]
८०	६	[illegible]	[illegible]
८४	१४	[illegible]	[illegible]
[illegible]	४	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

पृष्ठ	ओली	अशुद्ध	शुद्ध
११९	१४	खच्च	सच्च
,,	१६	हेवु	देवु
१२१	३	सवोट	सचोट
१२३	८	दाता	पात
१२५	१	जो	ज्यों
,,	२	जहैनके	जनके है
१२५	५	ऐसे	से ऐसे
,,	१२	अचम्मो	अधम्मो
,,	२०	यैहेतसि	ये है तीस
१२६	१७	जावों	जीवो
,,	२०	वायडु	डुवाय
१२८	११	वनरअरूय	वने अरू
,,	१२	भृनने	भृङ्गवने
१२९	४	सर मावे	सा रमावे
,,	७	राज	राग
१३९	७	एकगाथाकम है देखो शुद्धिपत्र- के अन्त में	
१४४	१	कुकछ	कुछ
१५५	१४	टल	टले
१५८	१७	काल	कार
१६६	६	इ	राइ
१६८	२	खूम	खुश
१७५	८	श्रोता	श्रोता
१७७	७	स्व	स्वर
१८९	१७	निकाजित	निकाचित
१९५	३	अपमान	असमान
१९६	९	जैव	जीव
१९७	२	पाय	पाप
,,	,,	ओ	वो
,,	१२	सा	सो
२००	३	अलाओ	वताओ
२०९	१०	मुखा	मुखी
२१६	१७	घता	घात
२२१	२१	लाके	लोक
२२२	९	सलम	सम्मल
२२४	१२	उक्ष	उष्ण
२२५	६	बोहिर	बाहिर
,,	१५	भाट	भट
२३१	१	ये है	गये हैं
२३२	१७	नामराय	नामरख
२३४	१२	आपेन	आपने
२३६	४	कंकर	कंकर
२३७	११	भय	भया
२३८	१४	जम	जब
२४०	१०	टूट	टुटे
२४३	६	ऊपरर	ऊपर
२४४	२०	निकाल	निकालन
२४५	१०	मठ्ठा	मही
,,	१५	चेरू	चरू
,,	१७	चुपक	चुपका
,,	२०	लेनधवा	लेवोधन
२४६	१४	हवीली	हवेली तेह
२४७	३	प्रकारन	प्रकार के
२५२	११	निन्यणाव	निन्य णवे
,,	१६	राहीड	राहीड
,,	१८	दवदत्ता	देवदत्ता
,,	२०	केन्या	कन्या
२५३	५	वैठाव	वैठाय
,,	१८	तर्यिच	तिर्यच
,,	,,	याय	थाय
,,	२०	थाम	थाय
२५४	४	ऊक	एक
२५७	१५	दहा	दोहा
२६४	२	व्देष	द्वेष
२७१	७	प्रगममावे	प्रगमावे
२७५	१७	यगया	मन गया
२७९	५	भइ	भाइ
२८१	१४	जुगमें	जूग हिंदमें
२८६	११	शास्त्र	शास्त्र
२८९	१६	उसक	उसके
२९०	१	वधाइ	वंधाइ
,,	८	कु;व	कुटुम्ब
२९१	१४	देखाइ	देखाड
२९२	७	ढकेरू	ढकेरू
,,	१५	हप	हर्ष
,,	१७	घरतल	घटंत

पृष्ठ	ओली	अशुद्ध	शुद्ध
२९३	५	आन	आय
"	१६	दुन्त	दृष्टांत
"	"	दान	दाय
"	१७	रुदाय	सहाय
२०६	६	भक्षसी	भक्षी
२१६	७	दूरर्षी	हर्षी
२१७	१	दोखावे	देखावे
"	१७	क्ष्वाहे	क्ष्वारीहे
२१८	१७	विंधय	विषय
२९९	१५	हायेप	होप
३०२	७	रमा	रमाइ
"	१०	नारय	नार
३०५	१	आवह	आवेहे
३०७	९	विकारीर	विसारी
३०८	१६	प्रकटेरे	प्रकटे
	२०	जय	जाय
३१०	३	धाप	घोप
३११	१७	पत्रखान	पच्चखान
३१४	१०	यढें	वढे
३१५	१	ठर्प	हर्पे
"	८	जे	जे जे
३१६	३	यगद्ब	यग्देष
३१७	४	किं ।	किपा
		जिय	ज्ञिया
"		गहो	गयो
३१९	१५	मे चोर	मे चोरि
३२०	१	जिहव	जिव्हा
"	११	दुन्स	दुःख
३२२	६	योगायोग	योग्य
३२४	७	टेल	टले
"	९	शनु	शन
३२५	८	दसद	देसीगे
३२८	१६	सुनबोध	मुनिबोध
३२९	१३	तताजा	तालजा
"	"	चिद	चिह्न
"	१५	टेग	ढिंग
३३३	५	थो	थी
"	६	[illegible]	दै इत
[illegible]	[illegible]		

पृष्ठ	ओली	अशुद्ध	शुद्ध
”	१४	खद्राइ	कद्राइ
३४४	३	लाने	लीनी
३४५	८	पद्रलों	पुद्गलों
३५१	२	दू:र	दु:ख
"	१६	गो	घो
३५२	४	लाय	आय
३६०	६	म'टा	मोटा
३६१	१८	आया	भादा
३६४	१७	सुना	सूनाय
"	११	सयजाय	समजाय
३६८	१२	संसरी	संसारी
"	"	परमीत	परतीत
"	१७	पाले	पावे
३६९	१	संसारि	सदारी
३७२	३	जान	ज्ञान
३७३	१४	लहोत्त	लहो
३७४	१	सर्य	सर्व
३७६	४	नहीं	नाय
३८१	१४	छपा	छापा
३८५	१५	सब्दाध	सद्बोध
३८६	६	अकर्ची	अगुनी
३८९	७	तरन	परन
३९१	८	क्षायिद्र	क्षायिक
३९३	१०	जन	जैन
३९४	१५	धर्मक्	धर्म
	१८	धर्मफाट	धर्म
"		मम पे	[illegible]
३९८	१५	कोप	कोपो
३९९	१६	[illegible]	[illegible]
	१५	[illegible]	[illegible]
"	१८	[illegible]	[illegible]
"	१९	[illegible]	[illegible]
"	२१	[illegible]	[illegible]
"	२	[illegible]	[illegible]
४००	१	[illegible]	[illegible]
४०२	३	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	५	[illegible]	[illegible]

पृष्ठ.	ओलि.	अशुद्ध	शुद्ध.
„	१८	क्यों	त्यों
४०६	२	नीच	नीचे
४०६	१	कतहां	तहां
„	„	दुःखपातीर	दुःखपात
„	३	दूजी	दुजी
४०९	९	स्थानवर	स्थावर
४१०	६	मार	मारे
४११	३	मयह	मनहर
४१३	१	बुद्धि	ऋद्धि
४१४	७	वोहुयेउत्तम	शांतिनाथहुवे.
११६	२	उर्पाजत	उपार्जित
„	५	श्रद्धकरी	श्रधत्करो
„	७	केवलज्ञ	केवलज्ञान
४२०	२	धर्म	पुण्य
„	४	फरमान	परमान

पृष्ठ १३९ की ७ वी ओली के नीचे दो ओलीयो रहगइसो।

जोकरेतो शील नाशाही पाय।ज्यों छाछपीकर प्रदेशी सरजाय।

नित्यप्रत नहींकरेसरस आहार।जिससेजागृत होवेकामविकार

☞ इन अशुद्धियों सिवाय औरभी ह्रस्व दीर्घ काना मात्रा अक्षर चरणरेखा वा पिंगल सम्बन्धि बहुतही अशुद्धियें स्वल्पबुद्धि दृष्टिदोष वकंपो जिष्टर की अविज्ञता से रहगइहै उन सब को स्वमत्युनुसार सुधार कर ग्रंथ कर्ताके आशयकी तरफ लक्ष रख सर्व दुर्गुणों कों त्याग कर पढिये और सद्गुणों का स्वीकार कीजीये पापका त्याकर धर्मात्मावन अखन्डा नन्दिवमिनेथ ! येही नम्र विनंती हैजी.

वीरसंवत्सर २४३९ अमोलखऋषि.

भाद्रव पूर्णीमा जैनस्थान चारकमान हैद्राबाद.

